उपदेश और बाइबल अध्यन

सब युगों के लिए

पुस्तक 1

यह सब बातें द्दष्टान्त की रीती पर हुयी और हमरे लिए लिखी गयी थी।

1 कुरिन्थियों 10:11

रेव. डॉ. जेरी श्मोयेर

Jerry@ChristianTrainingOrganization.org

ChristianTrainingOrganization.org

© 2007, 2020

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मॉयर डलास थियोलोजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में थिओलोजी में मास्टर डिग्री (ऍम.टीअच) प्राप्त की और 2006 में सेवकाई में डॉक्टर(डी.ऍम) की डिग्री प्राप्त की । उन्होंने 2016 तक 35 वर्षों तक संयुक्त राज्य अमेरिका में एक चर्च पादरी के रूप में कार्य किया। वह मसीही प्रशिक्षण संगठन के संस्थापक हैं जहां वह विवाह, परिवार, और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है और पादरियों को परामर्श और सलाह देने में सक्रिय है। वह 2006 से भारत में पादरियों की सेवा कर रहा है।

1979 से उसने नैन्सी नाम की एक नर्स से शादी की। वे अपने बहुत बड़े परिवार और कई पोते-पोतियों के साथ आनंदित जीवन बसर करते हैं ।

उस से **Jerry@ChristianTrainingOrganization.org** पर संपर्क किया जा सकता है

उपदेश और बाइबिल अध्यन

सब युगों के लिए

पुस्तक 1

I. उपदेश की रूपरेखा

1. यहोशू: लड़ाई यहोवा की है (यहोशू 1:1-9)
2. क्षमा किया हुआ (लूका 7:36-50; यूहन्ना 8:1-11)
3. अब्राहाम और मेमना - परमेश्वर का मेमना 1 (उत्पत्ति 22)
4. मेमने का लहू - परमेश्वर का मेमना 2 (इब्रानियों 9:22; लैव्यव्यवस्था 17:11)
5. परमेश्वर का मेमना - परमेश्वर का मेमना 3 (निर्गमन 12)
6. योग्य है मेमना - परमेश्वर का मेमना 4 (प्रकाशितवाक्य 5)
7. मृत्यु के बाद का जीवन (विभिन्न शास्त्र)
8. आध्यात्मिक विकास के लक्षण (विभिन्न शास्त्र)

II. बाइबिल अध्ययन (और संभावित उपदेश) - यीशु का जीवन

1. यहुना का जन्म
2. यीशु के जन्म की घोषणा
3. यीशु का जन्म
4. माजुसिओं का उपहार देतें है
5. यहुना बप्तिस्मा देने वाला
6. यीशु का बपतिस्मा
7. यीशु की परीक्षा
8. निकोदीमुस
9. यीशु के चेले
10. समुद्र में चमत्कार

11. लोगों को खाना खिलाना

12. यीशु का रूपान्तरण

13. मरियम, मार्था और लाजर

14. उदासी भरा प्रवेश

15. यीशु का अंतिम भोजन

16. गिरफ्तारी और सुनवाई

17. सूली पर चढाए जाना

18. जी उठना

19. असमान में उठाये जाना

I. उपदेश की रूपरेखा

परमेश्वर के वचन की सच्चाई को साझा करना एक विशेषाधिकार और सम्मान है। हम "अपना सर्वश्रेष्ठ करने" और "सत्य के वचन को सही रीति से काम में लाने " के लिए जिम्मेदार हैं (2 तीमुथियुस 2:15)। जितना बड़ा विशेषाधिकार है, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी है । परमेश्वर के सत्य की दूसरों के साथ घोषणा करने से बड़कर कोई सम्मान या उच्च जिमेदारी नहीं है। यीशु ने पतरस से तीन बार कहा "मेरी भेड़ों को चरा" (यूहन्ना 21)। इस पुस्तक का उद्देश्य है आपको परमेश्वर के वचन का एक बेहतर संचारक बनने में सक्षम करना।

मेरी किताब " बाइबल का अध्यन " सिखाती है कि बाइबल की आयतों का विश्लेषण कैसे करें, इसको समझने के लिए, कि परमेश्वर क्या कह रहा है। इसके बाद वाली पुस्तक, "बाइबल का प्रचार करना और सिखाना," बताती है कि बाइबल के अंशों से उपदेश और संदेशों को कैसे विकसित किया जाए। उस पुस्तक में पादरियों के लिए 22 उपदेशों की रूपरेखा शामिल है। इस पुस्तक में उपदेश की रूपरेखा लंबी और पूरी तरह से विकसित है। आप इन पुस्तकों को मेरे अन्य सभी पुस्तकों के साथ https://www.christiantrainingonline.org पर प्राप्त कर सकते हैं। भारत पर जाएं, फिर पुस्तकें डाउनलोड करें।

ये सिर्फ रूपरेखा हैं। वे आपको अपने स्वयं के उपदेशों को बेहतर ढंग से विकसित करने के लिए सीखने में मदद करने के लिए हैं। ये तैयार उपदेश प्रदान करने के लिए नहीं हैं, कि आपको तैयारी करने की आवश्यकता ना हो। वे आपकी तैयारी में आपकी मदद करने के लिए हैं, ताकि आप सीख सकें कि अपने स्वयं के उपदेशों को बेहतर तरीके से कैसे तैयार करना है ।

ये उपदेशों के लिए रूपरेखा हैं और आपके लोगों के लिए आपका अपना संदेश बनाने के लिए इन में कुछ जोड़ा जाना चाहिए, या बदला जाना चाहिए। यदि आप को लगता है कि इसमें एक उपदेश के लिए बहुत अधिक जानकारी है, तो आप एक उपदेश को 2 या 3 में विभाजित कर सकते हैं। आप इसके भागों को हटा सकते हैं या अन्य भागों को बदल सकते हैं। कृपया उन्हें बदलें और उन्हें अपनी आवश्यकताओं के लिए अनुकूल बनाए। कई चीजें जो मैंने शामिल की हैं, उन्हें अधिक विस्तार से समझाने की आवश्यकता हो सकती है। आपको निश्चित रूप से उन दृष्टांतों और अनुप्रयोगों को इसमें जोड़ने की ज़रूरत होगी जो आपके दर्शकों पर लागू होते हैं।

चित्रण, कहानियां या उदाहरण हैं जो सच्चाई को समझाने में मदद करते हैं ताकि आपके लोग इसे आसानी से समझ सकें। एक उपदेश की शुरुआत में एक कहानी का उपयोग करने से सभी का ध्यान आकर्षित होता है और लोगों को पता चलता है कि आपका मुख्य विचार क्या होगा। एक उपदेश के अंत में एक अच्छा दृष्टांत संक्षेप में बता सकता है कि आप क्या सिखा रहे हैं और इस से आपके लोगों को आपके संदेश को आपने जीवन में लागू करने के लिए मदद कर सकता है।

प्रत्येक उपदेश एक छोटे सारांश के साथ शुरू होता है जिस से आप को पता होगा के आप क्या चाहते हैं की आप के लोग जाने और करें, उसके के करण जो वे जानते हैं । आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक उपदेश या संदेश के लिए इसका ज्ञान होना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक संदेश के केंद्र में एक मुख्य विचार होना चाहिए।

जब तक आप बोलने से पहले ठीक से नहीं जानते कि आप क्या चाहते हैं की वे सीखें इसे कैसे लागू करें,संदेश प्रभावी रूप से जीवन को नहीं बदलेगा। यह मनोरंजक, दिलचस्प और यहां तक कि बाइबल अधारित भी हो सकता है, लेकिन यह आपके श्रोताओं को उतना प्रभावित नहीं करेगा जितना इसे करना चाहिए। इस पुस्तक के दूसरे खंड के परिचय में इसके बारे में और भी बहुत कुछ है, जो बच्चों, किशोरों और वयस्कों के लिए बाइबल अध्ययन के बारे में है। इनमें से अधिकांश उपदेशों के लिए मेरे पास मेरे अपने संपूर्ण नोट्स उपलब्ध हैं और कुछ के लिए मेरे पास पावरपॉइंट स्लाइड भी हैं। यदि आप मुझे ईमेल करते हैं और मुझे बताते हैं कि आप किस उपदेश में रुचि रखते हैं, तो मैं ख़ुशी से आपको ये भेजूंगा।

उपदेशों में आपको निम्नलिखित दिशाएँ मिलेंगी:

जानने के लिए, **करने के लिए**: यह आपका काम है कि आप ठीक से जाने कि आप उपदेश में किस बात पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। यह आपका लक्ष्य है जिसकी तरफ संदेश हर बात में संकेत करता है।

चित्रण: सिखाए गए सत्य को समझाने और लागू करने में मदद करने के लिए कहानी या उदाहरण। आप उन्हें छोड़ सकते हैं या जहाँ चाहें संदेश में और जोड़ सकते हैं।

(अनुप्रोयोग) अपने श्रोताओं के जीवन पर यह सत्य कैसे लागू होता है, उसे स्पष्ट करें, उसे विशिष्ट बनाएं।

पढ़ें: अपनी बाइबल से हिस्सा पढ़ें या किसी और को इसे पढ़ने के लिए कहें।

संक्रमण आपको एक विषय के बारे में बात करते करते अगले विषय के बारे बात करने में मदद करता है ताकि लोग साथ चल सकें और इसके सम्बन्ध को समझ सकें।

<u>1. यहोशू: लड़ाई यहोवा की है</u>

यहोशू 1:1-9

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

(इसे एक या दो उपदेशों या फिर बाइबल अध्ययन की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है)

<u>जानने के लिए:</u> मसीही जीवन एक लड़ाई है। इसे केवल बाइबल में परमेश्वर के वादों को जानने और उन पर विश्वास करने के द्वारा ही जीता जा सकता है। देश में प्रवेश करने से पहले यहोशू को परमेश्वर के वादे दिए गए थे।

<u>करने के लिए:</u> उन वादों के बारे में कुछ जान लें जो परमेश्वर ने हमारे लिए किए हैं और यह भी कि आपने जीवन में उन्हें कैसे लागू कीया जाए ताकि हम आज अपनी आध्यात्मिक लड़ाई में जीत हासिल कर सकें।

परिचय

उदाहरण: एक नौजवान ने सोचा कि एक सैनिक बनना बहुत अच्छा होगा। लोग उसका सम्मान करेंगे, वह दुनिया की यात्रा करेगा, उसे कपड़े और भोजन उपलब्ध कराया जाएगा और सब कुछ अच्छा होगा। वह सेना में शामिल हो गया लेकिन उसे जल्द ही पता चला कि सैनिकों की एक और सेना थी जो उसे मारने के लिए हर संभव कोशिश कर रही थी। यह उतना आसान नहीं था जितना उसने इसे सोचा था।यह परमेश्वर के लोगों के बारे में भी यही सच है।

हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं और उद्धार प्राप्त करते हैं

हम उम्मीद करते हैं कि अब जीवन आसान हो जाएगा क्योंकि हम परमेश्वर की सेना में हैं

लेकिन हम खुद को पाप, शैतान और अपने आसपास की दुनिया के साथ लड़ाई में देखते हैं

उद्धार का अर्थ यह नहीं है कि हमारी लड़ाई समाप्त हो गई है

इसका अक्सर मतलब होता है कि यह सब अभी शुरू ही हुआ है

उद्धार से पहले हम पाप में मरे हुए थे, अब हमारे पास जीवन तो नया है लेकिन हमारे पास स्वभाव अभी भी पापी है

हमारा एक दुश्मन है जो हमें नष्ट करने की कोशिश कर रहा है

हम शैतान की सेना को छोड़कर परमेश्वर की सेना में शामिल हो गए हैं, और शैतान हम पर क्रोधित है

हम एक लड़ाई में हैं और हमें सीखना चाहिए कि कैसे लड़ना है और कैसे जीत हासिल करना है

यहोशू की किताब

यहोशू की पुस्तक युद्ध के बारे में एक पुस्तक है

यहोशू और यहूदियों ने उन कनानियों से लड़ाई की, जिन्होंने तलवार और भाले से हमला किया था

हम अपने पापी स्वभाव और शैतान के राक्षसों से लड़ते हैं जो भय, क्रोध, लोभ, अभिमान और अन्य पापों के साथ हम पर हमला करते हैं

यहोशू से हम सीख सकते हैं कि आज की आत्मिक लड़ाइयों में कैसे विजय प्राप्त की जा सकती है

यहोशू नाम

इब्रानी भाषा में यहोशू का अर्थ है "परमेश्वर उद्धार है" (पुराना नियम इब्रानी में लिखा गया है)

मिस्र में दास के रूप में उसके माता-पिता ने उसे यह नाम दिया क्योंकि उन्हें परमेश्वर में विश्वास था

(अनुप्रोयोग : चाहे कितना भी कठिन समय क्यों ना हो हमें हमेशा परमेश्वर में विश्वास रखना चाहिए)

यूनानी भाषा में यीशू का अर्थ है "परमेश्वर उद्धार है" (नया नियम यूनानी में लिखा गया है)

यीशु और यहोशू दोनों का मतलब एक ही है, "परमेश्वर उद्धार है"

यहोशू यीशु का एक चित्र है, क्योंकि इनमें बहुत सी समानताएँ हैं

यहोशू ने कनानियों पर विजय प्राप्ती के लिए अगुवाई की जैसे यीशु शैतान पर विजय प्राप्ति की अगुवाई करता है

यहूदियों को जीत के लिए यहोशू का अनुसरण करना पड़ा जैसे हमें यीशु का अनुसरण करना चाहिए

दोनों अपने अनुयायियों को परमेश्वर की विजय और आशीष के स्थान पर ले जाते हैं

दोनों ही परमेश्वर के लोगों को हराने और नष्ट करने की कोशिश कर रहे शत्रुओं के खिलाफ अगुवाई करते हैं

परमेश्वर ने यहोशू को विजय की प्रतिज्ञा दी और यीशु ने हमें विजय की प्रतिज्ञा दी

यहूदी शारीरिक रूप से जिन चीज़ों से गुज़रे, वे इस बात की चित्र हैं कि हम आध्यात्मिक रूप से क्या कर रहे हैं

पुराने नियम में शारीरिक लड़ाई हमें सिखाती है कि आज आत्मिक युद्ध कैसे जीतें

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 10:11-12; रोमियों 15:4

युद्ध की शुरुआत

अदन में पाप और शैतान के साथ युद्ध आदम और हव्वा के पाप करने पर शुरू हुआ था

उत्पत्ति 3:15 पढ़ें

परमेश्वर ने कहा कि शैतान और यीशु के बीच तब तक युद्ध होगा जब तक यीशु शैतान को हरा नहीं देगा,शैतान यीशु को घायल कर देगा, लेकिन यीशु ने शैतान को पूरी तरह से सलीब पर हर देता है । शैतान परमेश्वर पर हमला नहीं कर सकता इसलिए वह उसके लोगों पर हमला करता है और उन्हें सताता है: यहूदीओं और मसीहीओं को।

(अनुप्रोयोग : जब हम एक मसीही बन जाते हैं, हम यीशु का अनुसरण करने के लिए पाप और शैतान से लड़ते हैं)

वह हमें वे हथियार देता है जिनकी हमें विजय प्राप्ति के लिए आवश्यकता होती है, लेकिन हमें उनका उपयोग करना सीखना होगा।

दृष्टांत: कल्पना कीजिए किसी को सेना में शामिल कीया जाता है और एक दुश्मन से लड़ने के लिए भेजा जाता है, लेकिन इस्तेमाल करने के लिए कोई हथियार नहीं दिया जाता है। आप अपने शत्रु को हरा नहीं सकते हैं । या कल्पना कीजिए कि एक हथियार तो दिया जा रहा है लेकिन इसका इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षित नहीं कीया गया है। तब भी आप हार जायेंगे।

(अनुप्रोयोग : बहुत से मसीही पाप और शैतान से पराजित हो जाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए हथियारों का उपयोग करना कभी नहीं सीखते हैं। उस के हथियार हैं ,उसके वचन, प्रार्थना, आराधना, संगति, आदि।)

संक्रमण: यहोशू की पुस्तक से, हम उन हथियारों के बारे में जानेंगे जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं और यह कि उनका उपयोग कैसे करना है

I. यहूदियों की पीढ़ी # 1

यहोशू एक दास के रूप में

यहोशू ईफ्राईम के गोत्र में से नून का ज्येष्ठ पुत्र था

वह मिस्र में एक दास माता-पिता के घर पैदा हुआ था, जो परमेश्वर में विश्वास करते थे (जिन्होंने उसका नाम रखा था "परमेश्वर उद्धार है")

उसके पिता ने फसह की रात को उसके घर के द्वार पर निर्दोष मेमने का लहू डाला

यदि उसने ऐसा ना किया होता तो यहोशू उस रात मर गया होता

(अनुप्रयोग : परमेश्वर की आज्ञाओं की पालना करने वाले एक ईश्वरीय माता-पिता होना बहुत महत्वपूर्ण है)

यहोशू अन्य यहूदियों के साथ लाल समुद्र में सूखी भूमि पर चला गया

उसने मिस्र में और सिनाई पर्वत के रास्ते में परमेश्वर के चमत्कारों को देखा - जैसे कि खाने के लिए मन्ना का किलना , कपड़े ना फटना आदि।

यहोशू एक सैनिक के रूप में

यहोशू ने मिस्र में फिरौन की सेना में सेवा की होगी

यहीं पर उसने सैनिकों का नेतृत्व करना सीखा होगा और हो सकता है कि वह पहली बार मूसा से मिला होगा

लाल समुद्र पार करने के 2 महीने बाद अमलीकियों ने यहूदियों पर हमला किया

मूसा पहाड़ पर खड़ा हुआ और प्रार्थना करता था , जबकि यहोशू ने सैनिकों को जीत के लिए प्रेरित कीया करता था

(अनुप्रयोग :हमारे शत्रुओं, पाप और शैतान, पर विजय पाने के लिए प्रार्थना और कार्य दोनों की आवश्यकता होती है । हमें ऐसे प्रार्थना करनी है जैसे कि सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर करता है और हमें ऐसे काम करना है जैसे कि सब कुछ हम पर निर्भर करता है।)

उदाहरण: परमेश्वर से प्रार्थना करने और परमेश्वर के लिए काम करने, दोनों का उदाहरण दें

यहोशू एक दास के रूप में

यहोशू मूसा का मदद करने वाला , उसका सहायक अफसर बन गया

नेतृत्व करने से पहले, यहोशू के लिए एक वफादार अनुयायी बनना सीखना जरूरी था

(अनुप्रयोग : अगुओं को एक अच्छा अगुवा बनने से पहले दूसरों का अनुसरण करने में सक्षम होना चाहिए)

यहोशू एक भेदी के रूप में

मिस्र से निकलने के एक साल बाद यहूदी वहाँ पहुंचे जहाँ से वे वादा किए गए देश में दाखिल हो सकते थे

उन्होंने प्रवेश की तैयारी करने के लिए प्रत्येक गोत्र से एक एक करके 12 भेदियों को भेजा

10 भेदिये देश के कनानियों और दानवों से डरते थे

केवल यहोशू और कालेब ने उन्हें विजय दिलाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया

लोगों ने अंदर जाने से इनकार कर दिया क्योंकि वे देश के दैत्यों से डरते थे

देतों पर विजय प्राप्त करना उन्हें बहुत कदीन लगता था

दृष्टांत: दाऊद और गोलियत की कहानी बताओ (1 शमूएल 17)

(अनुप्रयोग : जब हम देतों का सामना करते हैं तो हमें परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करना चाहिए, ना कि अपनी ताकत पर

लोग मूसा, यहोशू और कालेब को मार कर मिस्र को लौटना चाहते थे

उन लोगों के अविश्वास के कारण परमेश्वर ने कहा कि उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में भटकना होगा

(अनुप्रयोग: भय शैतान के सबसे प्रभावशाली हथियारों में से एक है। यह हमें आनंद लेने से रोकता है, परमेश्वर का आशीशें हमारे लिए है)

तब तक पुरानी पीढ़ी जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करती थी, मर चुकी होगी

अगली पीढ़ी तय कर सकती है कि क्या वे परमेश्वर का अनुसरण करेंगे और देश में प्रवेश करेंगे

यहोशू एक पथिक के रूप में

यहोशू और कालेब को शेष यहूदियों के साथ वादे के देश में प्रवेश करने के लिए 40 वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी

भले ही यह उनकी गलती नहीं थी, उन्हें दूसरों के पापों का परिणाम भुगतना पड़ा

(अनुप्रयोग : हम भी दूसरों के पापों का परिणाम भुगतते हैं)

(हमारे पाप दूसरों को, हमारे परिवार को और हमारी कलीसिया को चोट पहुँचाते हैं, इसलिए पाप से दूर रहें)

परमेश्वर ने वादा किया कि यहोशू और कालेब देश में प्रवेश करेंगे और उन्होंने किया

(अनुप्रयोग: उन्होंने परमेश्वर के वादे पर भरोसा किया और प्रवेश करने के लिए 40 साल इंतजार किया, कभी हार नहीं मानी प्रार्थना करते रहे और धैर्यपूर्वक परमेश्वर पर भरोसा करते रहे)

संक्रमण: जब प्रवेश करने से डरने वाले सभी यहूदी मर गए, तो परमेश्वर ने अगली पीढ़ी को उनका मौका दिया

II. यहूदियों की पीढ़ी # 2

अब यह यहूदियों पर निर्भर है कि वे परमेश्वर पर भरोसा करें जब उनके माता-पिता असफल हों गए

(अनुप्रोग : प्रत्येक पीढ़ी को वहीं से आगे बढ़ना चाहिए जहां पिछली पीढ़ी असफल रही हो)

(अनुप्रयोग : परमेश्वर के लिये हम पर अपने माता-पिता से भी बेहतर सेवक होने की जिम्मेदारी है)

परमेश्वर , एक प्यार करने वाले माता-पिता की तरह, अपने बच्चों को दूसरा मौका दे रहा है

(अनुप्रोग : परमेश्वर हमें दूसरा मौका देता है, हमें जितने भी मौके चाहिए)

भूमि पर मजबूत कनानी सैनिकों का कब्जा था, कुछ जो दानव थे

(अनुप्रयोग: परमेश्वर की आज्ञा मानने का अर्थ है उन लोगों से युद्ध करना जो हमारा विरोध करेंगे)

संक्रमण: इससे पहले कि यहूदी देश में प्रवेश कर सकते , परमेश्वर के लिए जरूरी था कि वह यहोशू को उनके अगुवा के रूप में तैयार करता

(अनुप्रयोग : परमेश्वर हमें जिम्मेदारी देने से पहले तैयार करता है, इसलिए सुनें और सीखें)

<u>III. परमेश्वर यहोशू से बात करता है यहोशू 1:1-9</u>

यहोशू 1:1-9 पढ़िए

आइए इस विशेष हिस्से में से एक समय एक आयत को ही देखें

क. परमेश्वर यहोशू से बात करता है - यहोशू 1:1 पढ़ें

मूसा मर चुका है लेकिन परमेश्वर का काम जारी रहना चाहिए

(अनुप्रयोग : जब परमेश्वर का सेवक मर जाता है तो परमेश्वर का कार्य समाप्त नहीं होता, अन्य इसे जारी रहते हैं)

मूसा एक उत्कृष्ट, कुशल अगुवा था और यहोशू के लिए उसका अनुसरण करना बहुत कठिन था

परमेश्वर वह था, जिसने मूसा का उपयोग किया था और वह यहोशू का भी उपयोग करेगा यदि यहोशू भरोसा करता है और उसका पालन करता है

(अनुप्रयोग : किसी विशेष व्यक्ति का तबादला करना हमारे लिए कठिन हो सकता है लेकिन परमेश्वर हमारे साथ रहेगा)

(अनुप्रयोग : हम उन जिम्मेदारियों का सामना करते हैं जो हमें बहुत कठिन लगती हैं लेकिन परमेश्वर हमारे साथ रहेगा

दृष्टांत: उस समय के बारे में बताएं जब परमेश्वर ने किसी को कुछ ऐसा करने में मदद की जो उन्हें लगा होगा कि यह बहुत कठिन है

यहोशू इस समय कम से कम 80 वर्ष का था

(अनुप्रयोग : परमेश्वर बुजुर्ग लोगों का उपयोग करता है ; हम परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाने के लिए कभी भी बूढ़े नहीं होते हैं)

संक्रमण: परमेश्वर स्वामी होकर , दास यहोशू को उनके निर्देश देता है

ख. यार्दन को पार करने के लिए तैयार हो जाओ - यहोशू 1:2 पढ़ें

जैसे परमेश्वर ने मूसा बात की थी उसने यहोशू से भी ऐसे बात की ताकि यहोशू को अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति का अहसास हो जाये

(अनुप्रयोग : जब परमेश्वर हमें कुछ करने के लिए बुलाता है तो वह हमेशा हमें निर्देश देतता है कि यह काम कैसे करना है)

यहोशू ने परमेश्वर की वाणी को पहचाना और उसकी आज्ञा मानी

(अनुप्रयोग : जब परमेश्वर हमसे बात करता है तो हमें उसे पहचानना चाहिए और फिर उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए)

परमेश्वर यहोशू से कुछ ऐसा करने के लिए कहता है जो वह नहीं कर सकता

यार्दन नदी में बाढ़ आई हुयी थी और उस समय और स्थान को पार नहीं किया जा सकता था

(अनुप्रोग : परमेश्वर हमें ऐसी चीजें देता है जो उसकी सहायता के बिना मानवीय रूप से असंभव लगती हैं)

संक्रमण: परमेश्वर ने यहोशू को आश्वासन दिया कि वे उस भूमि को जीत लेंगे जो उसके पास उनके लिए है

ग. परमेश्वर वादा करता है कि वह उन्हें भूमि देगा - यहोशू 1:3 पढ़ें

इब्रानी भाषा में "मैं दूंगा" का शाब्दिक अर्थ है "मैंने तुम्हें पहले से ही दिया हुआ है" - परमेश्वर ने पहले ही कर दिया है, परमेश्वर पूरी दुनिया के मालिक हैं और जो चाहे उसे जमीन दे सकते हैं, परमेश्वर ने अब्राहाम , इसहाक, याकूब, यूसुफ और मूसा को भूमि देने का वचन दिया था

(उत्पत्ति 12:1-7; व्यवस्थाविवरण 11:24)

परमेश्वर हमेशा अपने वादे पुरे करता है

परमेश्वर उनसे कहता है कि वे जहां भी अपना पैर रखेंगे, वह उन्हें दे देंगा - उन्हें उस पर चलने की जरूरत है

लोगों को भूमि में प्रवेश करना चाहिए और उस पर अधिकार में लेना चाहिए

वहाँ पर ऐसे लोग हैं जो उन्हें ज़मीन से दूर रखने के लिए उनसे लड़ेंगे

यहूदी आराम से बैठकर परमेश्वर की प्रतीक्षा नहीं कर सकते कि वह उनके लिए सब कुछ करे

(अनुप्रयोग : हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकते और "इसे नाम दें और दावा करें," हमें दुश्मनों का सामना करना होगा)

(अनुप्रयोग : जिन आशीषों का परमेश्वर ने हमसे वादा किया है वे पहले से ही हमारी हैं लेकिन हमें पाप से लड़ना होगा)

संक्रमण: यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह समझता है, परमेश्वर यहोशू को बताता है कि भूमि कितनी बड़ी होगी

घ . दी गई भूमि की सीमाएँ - यहोशू 1:4 पढ़ें

जिस भूमि का वादा किया गया है वह किसी भी समय यहूदियों की तुलना में बहुत बड़ी है

उनके पास इसे पाने के लिए उन्हें वहां चलना होगा जिसका अर्थ है विश्वास में लड़ना

जब वह लौटेगा तो क्या उनके पास यह सब होगी

(अनुप्रयोग : परमेश्वर के पास हमारे लिए कई आशीशें हैं जो हमें इस जीवन में नहीं मिलेंगी)

संक्रमण: परमेश्वर यहोशू से वादा करता है कि वह परमेश्वर की सहायता से विजय प्राप्त करेगा

ङ. उनके खिलाफ कोई भी खड़ा नहीं हो सकता - यहोशू 1:5 पढ़ें

जब परमेश्वर आज्ञा देता है ("अपना पैर जमाओ") तो वह हमेशा इसके साथ अपनी मदद देने का वादा भी देता है।

इस आयत में परमेश्वर बहुत सी बातों की प्रतिज्ञा करता है:

1. कोई भी उनके खिलाफ खड़ा नहीं हो पाएगा - यहां तक कि गढ़वाले शहरों में दैंत भी नहीं।

जमीन उनकी होगी लेकिन उसे पाने के लिए उन्हें संघर्ष करना होगा

(अनुप्रयोग : परमेश्वर ने हमारे लिए कई आध्यात्मिक आशीषों का वादा किया है, लेकिन उन्हें पाने के लिए , हमें पाप से और शैतान से लड़ना होगा । वे पाप, भय, निराशा, प्रलोभन आदि के विरुद्ध युद्ध जीते बिना नहीं आते)

2. परमेश्वर यहोशू के साथ वैसे ही रहेगा जैसे वह मूसा के साथ था - परमेश्वर ने विजय दिलाई थी, मूसा ने नहीं।

3. वह उन्हें ना कभी छोड़ेगा और ना त्यागेगा - यहोशू कभी अकेला नहीं लड़ेगा

मूसा को भी यह प्रतिज्ञा दी गई थी (व्यवस्थाविवरण 31:8)

(अनुप्रयोग : यह प्रतिज्ञा हमें भी दी गयी है। इब्रानियों 13:5 पढ़िए)

आयतें जो बताती हैं कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है -उत्पत्ति 28:15; रोमियों 8:38-39; निर्गमन 33:14)

संक्रमण: परमेश्वर के पास और भी अधिक आज्ञाएं और वादे हैं

च. मजबूत और साहसी बनो - यहोशू 1:6 पढ़ें

आदेश: मजबूत और साहसी बनो, डरो मत

(अनुप्रोग : भय यहोशू का बहुत बड़ा शत्रु था और हमारा भी हो सकता है)

डर से लड़ने के लिए बाइबल की आयतें उत्पत्ति 15:1; 26:24; निर्गमन 14:13; भजन संहिता 118:6; यशायाह 41:10; व्यवस्थाविवरण 31:6; मत्ती 14:27; 2 इतिहास 32:7-8)

प्रतिज्ञा 1: वे अपने दुश्मनों को हरा देंगे और देश में रहेंगे

प्रतिज्ञा 2: परमेश्वर हमेशा से इसकी प्रतिज्ञा करता रहा है (उत्पत्ति 13:14-17; 15:18-21; 17:7-8; 22:16-18; 26:3-5; 28:13; 35:12; निर्गमन 6;8)

(अनुप्रयोग : परमेश्वर के वादे आज भी हमारे लिए सच हैं; हमें विश्वास करना चाहिए और भरोसा करना चाहिए)

(अनुप्रयोग : जब आप बाइबल पढ़ते हैं तो हमेशा प्रतिज्ञाओं की तलाश करें और उन्हें लिख लें।

वे पाप और शैतान के विरुद्ध हमारे सर्वोत्तम हथियार हैं।

संक्रमण: परमेश्वर अपनी आज्ञाओं और प्रतिज्ञा को दोहराता है

छ. परमेश्वर बताता है कि सफलता कैसे प्राप्त करें - यहोशू 1:7 पढ़ें

आदेश 1: मजबूत और बहुत साहसी बनो - दोहराया गया है क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है

आदेश 2: बाइबल का पालन करें, यह विजय की कुंजी है

आदेश 3: परमेश्वर के वचन से जरा सा भी इधर उधर जांएं

प्रतिज्ञा: जब वे ये काम करते हैं, तो उन्हें सफलता की गारंटी होती है

सफलता को धन , संपत्ति या लोकप्रियता से नहीं मापा जाता

सफलता हमारी आज्ञाकारिता की मात्रा से मापी जाती है

(अनुप्रयोग : यदि हमें विजय प्राप्त करनी है तो हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को जानना और उनका पालन करना चाहिए)

दृष्टांत: किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण दें जिसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसकी आज्ञा का पालन किया और वह धन्य था।

संक्रमण: भगवान सफलता के लिए अपना सूत्र दोहराते हैं

ज. सफल होने के लिए परमेश्वर के वचन का पालन करें - यहोशू 1:8 पढ़ें

यहोशू को सफल होने के लिए परमेश्वर 3 बातों की आज्ञा देता है

1. हमेशा परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में बात करें ताकि हर कोई उसका पालन करे (व्यवस्थाविवरण 6:6-9)

2. दिन रात इसके बारे में सोचो, इसे सबसे पहले दिमाग में रखो (भजन 1:2; 119:97)

3. परमेश्वर के वचन के बारे में सोचें और बात करें ताकि वे पूरी तरह से उसका पालन करें

(अनुप्रयोग : हमें भी परमेश्वर के वचन को जानना चाहिए और इसे अपने जीवन में लागू करना चाहिए)

प्रतिज्ञा: वे समृद्ध और सफल होंगे

(अनुप्रयोग: पाप और शैतान पर विजय पाने की कुंजी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना और उसके वचन का पालन करना है)

(अनुप्रयोग : हम पाप और अवज्ञा में रह कर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के लागू होने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं)

संक्रमण: परमेश्वर यहोशू के लिए अपने निर्देशों का समापन करता है

I. डरो मत क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा - यहोशू 1:9 पढ़ें

क्या मैंने तुमको आदेश नहीं दिया है? परमेश्वर उन्हें याद दिलाता है कि आज्ञाकारिता ही विजय प्राप्ति का एकमात्र रास्ता है

आदेश 1: तीसरी बार मजबूत और साहसी बनो क्योंकि डर हमेशा हमें हरा देता है

आदेश 2: दुश्मन कितना भी मजबूत हो या लड़ाई कितनी भी कठिन क्यों ना हो, उससे डरो मत

आदेश 3: निराश कबी ना हो, चाहे लड़ाई कितनी भी कठिन या लंबी क्यों ना हो

(अनुप्रयोग : निराशा शैतान का एक मजबूत हथियार है और हम इसका सामना आपने विश्वास से करते हैं)

प्रतिज्ञा : लड़ाई कितनी भी कठिन या लंबी क्यों ना हो, परमेश्वर उनके साथ रहेगा

(अनुप्रयोग : परमेश्वर हमारे जीवन में बाधाओं को दूर या कम नहीं करता है, हम अभी भी उनका सामना करते हैं)

(अनुप्रयोग : परमेश्वर बाधाओं के खिलाफ बने रहने में हमारी मदद करने के लिए अपनी उपस्थिति देने की प्रतिज्ञा करता है)

अन्य प्रतिज्ञाए जिन पर हम निर्भर रहेंगे (वैकल्पिक, केवल तभी उपयोग करें जब आप इसका उपयोग करना चाहते हैं)

हमारी सारी ज़रूरतें पूरी हुईं: भजन संहिता 84:11; भजन संहिता 23:1-3; मत्ती 6:33; फिलिप्पियों 4:19; इब्रानियों 13:5

मसीह में सुरक्षा: यूहन्ना 10:9

जरूरत पर मार्गदर्शन: भजन 48:14; 23:1-3; 32;8; नीतिवचन 3:5-6; यशायाह 42:16

जो कुछ भी हमारे विरूद्ध उठता है उसका सामना करने के लिए सामर्थ: फिलिप्पियों 4:13; 2 कुरिन्थियों 12:9; व्यवस्थाविवरण 33:25; यशायाह 40:29

प्रलोभन पर विजय: 1 कुरिन्थियों 10:13

परमेश्वर का प्रेम और स्वीकृति: भजन संहिता 103:8

सत्य हमें स्वतंत्र करता है: यूहन्ना 8:32

परमेश्वर शैतान से शक्तिशाली है: 1 यूहन्ना 4:4

शैतान का साम्हना करो तो वह भाग जाएगा: याकूब 4:6-8; 1 पतरस 5:8-9

परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है: याकूब 5:16

यीशु हमें दुष्टात्माओं पर अधिकार देता है: लूका 10:18-19

परमेश्वर का अनुग्रह पर्याप्त है: 2 कुरिन्थियों 12:9-10

निष्कर्ष

यहोशू 1:1-9 पढ़िए

यहोशू 1:1-9 को सारांश करे

अनुप्रयोग : उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें यदि आपने पहले से नहीं किया है (उद्धार की योजना की व्याख्या करें)

आप अपने मसीही जीवन में जो सामना कर रहे हैं उसके लिए परमेश्वर पर भरोसा करें और उसका पालन करें

विजय प्राप्ति के लिए परमेश्वर के वादों पर भरोसा रखें

समापन प्रार्थना

2. क्षमा किया हुआ

लूका 7:36-50; यूहन्ना 8:1-11

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

(यह एक उपदेश हो सकता है या दो छोटे उपदेशों में विभाजित किया जा सकता है।)

जानने के लिए: यीशु प्रत्येक व्यक्ति को वैसे ही स्वीकार करता है जैसे कोई होता है, चाहे उसका पाप कोई भी हों, और वह उन सभी को क्षमा करता है जो विनम्रतापूर्वक आपने पापों को स्वीकार करते हैं और उस से क्षमा मांगते हैं।

करने के लिए: यदि किसी का कोई पाप है जिसे उसने यीशु के सामने स्वीकार नहीं किया है, तो अभी करे और वह आपको पूरी तरह से माफ कर देगा और आपको पुनर्स्थापित करेगा।

परिचय

दृष्टांत: एक दिन एक छोटा लड़का पत्थर फेंक रहा था। उसने पक्षियों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। फिर उसने अपनी दादी के पालतू पक्षी को देखा और सोचा कि वह एक पत्थर फेंकेगा और उस पक्षी को डरा देगा, लेकिन पत्थर पक्षी को लगा और उसे मार डाला। लड़के से जो भी हुआ उसके लिए उसे बहुत बुरा लगा। उसकी बहन ने उसे पक्षी को मारते हुए देखा था और आपने भाई से कहा कि वह अपनी दादी को तब तक कुछ नहीं बताएगी जब तक वह वो सब कुछ करेगा जो वह उस से करने को कहेगी। कई दिनों तक उस लड़के को अपनी बहन के लिए उसका सारा काम करना पड़ा। उसे वह सब करना पड़ा जो उसने उसे करने के लिए कहा था, और वह दुखी था। अंत में, उसे इतना बुरा लगा कि उसने अपनी दादी से कहा कि उसने उसके पालतू पक्षी को मार डाला है। उसने कहा कि वह जानती थी क्योंकि उसने उसे ऐसा करते देख लिया था । उसने उसे माफ कर दिया लेकिन वह आपने सामने उसे आपना पाप कबूल करने की प्रतीक्षा कर रही थी। तब लड़के को बहुत अच्छा लगा। जब हम पाप करते हैं, तो हमें परमेश्वर को बताना चाहिए ताकि हम भय और अपराध बोध के बंधन में ना पड़ें। वह हमें भी तुरन्त क्षमा कर देगा।

अपने पापों को स्वीकार करना और क्षमा माँगना कठिन हो सकता है

हमारा अभिमान हमें परमेश्वर से क्षमा माँगने से दूर रखता है क्योंकि हम यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि हमने पाप किया है

हमारा डर हमें परमेश्वर से क्षमा मांगने से रोकता है क्योंकि हमें डर है कि वह हमसे नाराज हो सकता है

यीशु हमें यह दिखाने के लिए पृथ्वी पर आए कि जब हम अपने पापों को स्वीकार करेंगे तो वह हमें क्षमा करेगा

उसने बहुत से लोगों को क्षमा किया, उनसे भी ज्यादा जिनको उसने चंगा किया था

<u>I. क्षमा प्राप्त करना - लूका 7:36-50</u> एक पापी स्त्री

यीशु गलील में है

यीशु ने अभी-अभी सूबेदार के सेवक को चंगा किया था जो मृत्यु के निकट था (लूका 7:1-10)

अगले दिन उसने जनाजे एक के जुलूस को रोक दिया और एक विधवा के मृत बेटे को जीवित कर दिया (लूका 7:11-17)

हर कोई यीशु और उसके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बात कर रहा था

पिछली बार जब वह वहाँ था तो उसने एक आराधनालय में प्रचार किया था और धार्मिक अगुवे ने उनकी आलोचना की

उसने बहुत से पापी लोगों को क्षमा किया, लेकिन धार्मिक शासकों ने कहा कि वे इतने बुरे थे जिनको क्षमा नहीं कीया जा सकता था

शमौन नाम के एक धार्मिक अगुवा ने यीशु को अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया ताकि वह यीशु को जान सके

पढ़ें लूका 7:36-50

लूका 7:36-37 पढ़िए 36-37

भोजन एक खुले आंगन में परोसा जाता था ताकि गली में चलने वाले लोग उन्हें देख सकें

यह धार्मिक अगुवों का दिखावा करने और सभी को प्रभावित करने का एक तरीका होता था

भोजन की शुरुआत में एक बिन बुलाई मेहमान, एक महिला जो एक वेश्या थी, यीशु के पास आती है

क्योंकि वह एक महिला थी और उसके पाप के कारण उसका स्वागत नहीं किया गया था

यहूदियों का उससे कोई लेना-देना नहीं होता था , वे उससे बात नहीं करते थे या उसकी ओर देखते भी नहीं थे

यीशू और अन्य मेहमान खाने के लिए अपने स्थानों पर बैठे हुए थे जो उनकी प्रथा थी

औरत आती है और यीशु के पीछे खड़ी हो जाती

लूका 7:38 पढ़िए 38

नौकरों द्वारा मेहमानों के पैर धोए जाने का रिवाज था

जिस गली में गंदगी और कूड़ा पड़ा था, उस गली में चलने से पैर बहुत गंदे हो जाते थे

शमौन के लिए यह बहुत बुरी बात थी कि वह किसी नौकर से यीशु के पैर ना धोलाये

औरत उसके पैरों के पास खड़ी थी और उसने यह देखा, तो उसने उसके लिए उसके पैर धोना शुरू कर दिया

वह जानती थी कि उसे अस्वीकार कर दिया गया था और उसका स्वागत नहीं कीया गया था लेकिन फिर भी उसने उसे छुआ

यीशु के लिए उसका प्यार दूसरों से अस्वीकृति के डर से ज्यादा मजबूत था

वह यीशु के बारे में जानती थी और भरोसा करती थी कि वह उसे स्वीकार करेगा और उसे अस्वीकार नहीं करेगा (भजन 103:8-14)

उसके आँसू अपराधबोध, शर्म और भय से थे, लेकिन यीशु के लिए प्रेम से भी भरे हुए थे

अपने बालों को नीचा गिरना अनैतिकता थी और इसके लिए उसकी आलोचना भी की जाएगी

महिलाए अपना पैसा इत्र में निवेश करती थी और इसे अपने साथ ले जाती थी ताकि यह सुरक्षित रहे

उसका इत्र बहुत महंगा था, दुनिया में उसके पास बस यही सम्पति के तौर पर था

लूका 7:39 पढ़िए 39

क्योंकि यीशु ने उसे बाहर जाने को नहीं बोला था , शमौन ने सोचा कि यीशु नहीं जानता कि वह एक वेश्या थी

इसलिए, उसने सोचा कि यीशु नबी नहीं था, और निश्चित रूप से मसीहा नहीं था

शमौन का मानना था कि यदि वह मसीहा होता, तो वह आपने आप को अशुद्ध स्त्री को छूने नहीं देता

लूका 7:40-44 40-44 पढ़िए

यीशु कहते हैं कि वे दोनों कर्जदार थे और अपना कर्ज नहीं चुका सकते थे

महिला पर बड़ा कर्ज था और साइमन पर छोटा कर्ज था, लेकिन दोनों अभी भी कर्जदार थे

यीशु उनके दोनों ऋणों को क्षमा कर देंगे यदि वे उससे पूछें

केवल महिला ने पूछा, साइमन ने नहीं तो उसका कर्ज माफ नहीं किया गया

लूका 7:44-47 पढ़िए 44-47

शमौन आपने आप में धर्मी मानुष था और उसने अपने पापों को वैसा नहीं देखा जैसा परमेश्वर ने देखा था

महिला जानती थी कि वह एक भयानक पापी है, लेकिन उसने खुद को विनम्र किया और क्षमा मांगी

बहुत कम आत्म-धर्मी लोग यीशु के पास आते थे , उसके अधिकांश अनुयायी वे थे जो पाप में जी रहे थे

यीशु ने कहा कि उसने वही किया है जो शमौन को करना चाहिए था

शमौन ने सोचा कि वह स्त्री से बेहतर है, लेकिन यीशु कहता है कि वह स्त्री उससे बेहतर थी

लूका 7:48 48 पढ़ें

बाइबल यह नहीं बताती कि कब उसने अपने पापों को क्षमा करने के लिए कहा था

यूनानी भाषा यह स्पष्ट करती है कि उसने कुछ समय पहले पूछा था और परिणाम अभी भी जारी है

उसे इस लिए क्षमा नहीं किया गया क्योंकि उसने उसके चरण धोए और उसका अभिषेक किया था

उसने उसके पैर इस लिए धोए और उसका अभिषेक किया था क्योंकि उसे क्षमा कर दिया गया था - और वह उसे धन्यवाद देना चाहती थी

परमेश्वर माफ कर देता है और सब भूल जाता है

हमारा पाप (1 यूहन्ना 2:1-2, 12)

लूका 7:49 पढ़िए 49

वे सभी जानते थे कि यीशु, यह कहकर कि उसके पापों को क्षमा कर दिया गया था, वह काम कर रहा था जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है

लूका 7:50 पढ़ें 50

वह यीशु के पैर धोने से नहीं बचाई गयी थी , बल्कि उसके पास आने से पहले उस पर विश्वास करने के द्वारा बचाई गयी थी

दूसरे उसे कभी स्वीकार नहीं कर सकते, लेकिन यीशु उससे प्यार करता है और उसे पूरी तरह से स्वीकार करता है

यीशु के लिए यह ऐसा है जैसे उसने कभी पाप नहीं किया था

हमारे लिए सबक

उद्धार और क्षमा हमें स्वतंत्र रूप से दिए जाते है , यदि हम यीशु में अपना विश्वास रखते हैं , पाप चाहे कितना भी भयानक क्यों ना हो

दृष्टांत: किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में एक कहानी बताएं या उदाहरण दें जिसे यीशु ने उसके पापों के लिए और उसके बाद से उसके जीवन में परिणामों के लिए क्षमा किया था।

संक्रमण: यीशु हमेशा क्षमा प्रदान करते हैं

इसी तरह का एक और उदाहरण उसके सलीब पर चढ़ने से कुछ समय पहले हुआ था:

II. क्षमा कीये जाने पर प्रतिउतर - यूहन्ना 8:1-11 व्यभिचारन स्त्री

क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ समय पहले यीशु यरूशलेम में हैं

धार्मिक शासक उसे मारने का उपाय खोज रहे हैं क्योंकि वे उसकी लोकप्रियता से ईर्ष्या करते हैं

यह तम्बू के पर्व का समय है जब दुनिया भर से यहूदी यरूशलेम आते हैं

यीशु हैकल में उपदेश दे रहा था जब धर्मगुरुओं ने उसे फंसाने की कोशिश की

यूहन्ना 8:1-11 पढ़ें

यूहन्ना 8:1-6क पढ़िए

पुराने नियम के कानून में कहा गया था कि व्यभिचार में पकड़े गए किसी भी व्यक्ति को पत्थर मारकर मौत के घाट उतार दिया जाना चाहिए

वे इसे यीशु के लिए एक जाल के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे इसलिए वे उसे उसके पास ले आए

तथ्य यह है कि वे केवल महिला को ही लाए थे, पुरुष को नहीं, उनका ऐसा कारन यह दर्शता है कि वे निष्पक्षता नहीं चाहते थे, बस एक जाल बिशाते थे

अगर वह उसे मारने के लिए कहता , तो वह प्रेम और क्षमा के बारे में उसकी शिक्षाओं का खुद ही खंडन करता साबित होता

अगर वह उसे मारने के लिए कहेगा , तो वह रोमी सरकार के साथ मुसीबत में पड़ेगा और वे उसे गिरफ्तार कर लेंगे

यदि वह उसे जाने देने के लिए कहता है, तो वह परमेश्वर का नियम तोड़ रहा होगा और मसीहा नहीं हो सकता

महिला को बहुत शर्मिंदगी और बेइजती महसूस हुई क्योंकि सभी धार्मिक शासकों और यीशु ने उसे देखा था

यीशु क्या करेगा?

यूहन्ना 8:6ख पढ़िए

हम नहीं जानते यीशु क्या लिख रहा था

शायद वह उन आदमियों के नाम और पाप लिख रहा था जो उपस्थित थे

वे भी पाप के दोषी थे और मर दिए जाने के योग्य थे

यूहन्ना 8:7-9 पढ़िए 8:7-9

वे जानते थे कि वे पाप के दोषी हैं; बस यह कि वे इसमें पकड़े नहीं गए थे

दसवीं आज्ञा कहती है कि लालच ना करें, और वे जानते थे कि वे सभी लालची थे और लालच करते थे

हो सकता है कि उन्होंने व्यभिचार नहीं किया हो, लेकिन उन्होंने अपने दिल में वासना की और यह उतना ही पाप है जितना के व्यभिचार

उमर्द्राज़, जो अधिक परिपक्क लोग थे वे जानते थे कि उन्होंने अपने अतीत में कब पाप किया था इसलिए वे पहले चले गए

जब दूसरों ने उनके जीवन के बारे में सोचा, तो वे जानते थे कि वे भी मरने के योग्य हैं इसलिए वे भी चले गए

यूहन्ना 8:10-11 पढ़ें 8:10-11

यीशु ने उसके पाप को मान्यता प्रादान नहीं की या उसे नज़रअंदाज़ नहीं किया

लेकिन उसने उसे ना तो अस्वीकार किया और ना ही उसके पाप के लिए उसे शर्मिंदा/लजित किया

यीशु ने उसके पाप से नफरत की, लेकिन उससे नफरत नहीं की

हमें पाप से घृणा करना सीखना चाहिए लेकिन पाप करने वाले व्यक्ति से नहीं

यीशु ने उसे एक विकल्प दिया: वह अपने पाप से फिर सकती है या वह पाप में जीवन व्यतीत कर सकती है

कमाने या इसके लायक होने के लिए वह कुछ नहीं कर सकती थी

यदि उसने पश्चाताप किया और क्षमा माँगी तो वह क्षमा की जाएगी (इफिसियों 2:8-9)

बाइबल हमें नहीं बताती कि उसने क्या किया

मुझे उम्मीद है कि हम उसे स्वर्ग में देखेंगे और उसकी बाकी की कहानी वहां सुन सकते हैं

यूहन्ना 8:12 पढ़िए

यीशु ने इस घटना का उपयोग सभी को यह बताने के लिए किया कि यदि वे उसके पास आए तो उन्हें क्षमा किया जा सकता है

हमारे लिए सबक

इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमने क्या किया है, अगर हम यीशु के पास आते हैं, तो वह दया दिखाएगा और क्षमा करेगा

यदि हम अपने पाप को स्वीकार करते हैं और परमेश्वर से हमें क्षमा करने के लिए कहते हैं, तो वह हमेशा करेगा (भजन संहिता 32:5; 1 यूहन्ना 1:9)

निष्कर्ष

इन कहानियों में हम शमौन और धार्मिक शासकों को देखते हैं जिन्होंने सोचते थे कि उन्हें यीशु की आवश्यकता नहीं है

उन्होंने अपने आप को उसके सामने कभी दीन नहीं किया और इस लिए उन्हें क्इषमा नहीं कीया गया

अनुप्रयोग : कोई भी इतना अच्छा नहीं है कि उसे यीशु की क्षमा की आवश्यकता ना हो

इन कहानियों में हम वेश्या और व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री को भी देखते हैं जो दोनों यीशु के पास आई

अनुप्रयोग : यदि हम अपने पाप को स्वीकार करते हैं और यीशु से क्षमा मांगते हैं तो कोई भी पाप इतना बड़ा या बुरा नहीं है जिसकी क्षमा ना कीया जा सकता हो

दृष्टांत: सूखी घास और जंगली पौदों के खेतों में आग लग सकती है। वे तेजी से जलते हैं और हर जगह फैलते हैं, अपने रास्ते में सब कुछ और हर किसी को मारते हैं। सुरक्षित रहने का एक ही तरीका है कि जब आप किसी बड़ी आग को आते हुए देखें तो वहां आग लगा दें जहां आप खड़े हों। आग को अपने आस-पास के क्षेत्र को जलने दें और जले हुए हिस्से में खड़े हो जाएं। जब बड़ी आग आएगी तो तुम सुरक्षित रहोगे क्योंकि वह वहां नहीं जलेगी। आग एक बार किसी स्थान को जला देती है, तो वह उसे दोबारा नहीं जला सकती। जब हम क्रूस पर आते हैं तो हमारे लिए ऐसा ही होता है। परमेश्वर ने अपने न्याय की आग यीशु पर भेजी जिसने हमारे पापों के लिए भुगतान किया। जब हम क्रूस पर जाते हैं तो कोई न्याय नहीं होता, क्योंकि यीशु ने सब कुछ ले लिया है।

<u>3. अब्राहम और मेमना</u>

परमेश्वर का मेमना - उपदेश - 1

उत्पत्ति 22

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

जानने के लिए: यीशु धरती पर आया और हमारे पापों का विकल्प बनने के लिए क्रूस पर चढ़ गया। वह इस लिए मरा ताकि हम हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ जी सकें।

करने के लिए: यीशु को आपने पाप के भुगतान के विकल्प के रूप में स्वीकार करें। उस पर भरोसा करके और उसकी आज्ञा मानकर उसकी आराधना करें

परिचय

चित्रण; ऑशविट्ज़ पहला जर्मन बंदी शिविर था जो हजारों यहूदियों को मारने के लिए एक विनाश शिविर बन गया था। गैस कक्ष /चैंबर लगातार इस्तेमाल कीये जा रहे थे। लेकिन प्रतिदिन नए कैदियों के भारी संख्या में प्रवेश के कारण, जर्मनों ने भी फायरिंग/गोली बरूद दस्तों का उपयोग करना भी शुरू कर दिया था। एक दिन, कमांडेंट ने एक बैरक से दस लोगों को फायरिंग दस्ते द्वारा मौत के घाट उतार घात उतार दिए जाने के लिए चुना। चुने गए लोगों में से एक बड़े परिवार का पिता था। जब उसे लाइन में से उसकी स्थान से उसे खींच लिया गया, तो वह जमीन पर गिर गया, कमांडेंट से अपनी जान बख्शने की भीख माँगने लगा। कमांडेंट तब तक खामोश था जब तक कि गिरे हुए व्यक्ति के बगल में खड़ा व्यक्ति, एक मसीही , अपने घुटनों पर झुकर कर उस व्यक्ति के बदले में अपने जीवन की पेशकश करने के लिए आगे नहीं बढ़ा। हैरानी की बात यह है कि कमांडेंट ऐसी व्यवस्था के लिए राजी हो गए। लेकिन, फायरिंग दस्ते के पास ले जाने के बजाय, मसीही व्यक्ति को एक छोटे से नम कोठरी में फेंक दिया गया, जहाँ उसे भूख से दर्दनाक मौत का सामना करना पड़ा। उसे सम्मानित किया जाता है क्योंकि वह एक आदमी के स्थान पर मर गया।

जरूरत पड़ने पर वह एक विकल्प बन गया था जब विकल्प की जरूरत थी : शिक्षक बीमार हो जाता है

एथलीट जख्मी हो जाता है

नुस्खे में एक मसाला गायब है

शब्दकोश: विकल्प: 'दूसरे की जगह लेने के लिए'

संक्रमण: हम में से प्रत्येक को एक विकल्प की भी आवश्यकता होती है

<u>I. समस्या</u>

परमेश्वर पवित्र है, सिद्ध है - लेकिन हम नहीं हैं

हमारा पाप न्याय की मांग करता है

हम परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते

हम अपने पाप को दूर नहीं कर सकते

हम खो गए हैं

<u>II. आवश्यकता</u>

मानव जाति की सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकारयोग्य   होना है।

जरूरत दुनिया भर में है, हर पीढ़ी, हर जाति, हर पंथ, हर धर्म में फैली हुई है।

हमें स्वीकारयोग्य बनाने के लिए किसी की आवश्यकता है क्योंकि हम खुद को स्वीकारयोग्य नहीं बना सकते हैं

एक विकल्प के बिना हम हमेशा के लिए नरक के लिए दोषी हैं

अधिक प्रयास करने से काम नहीं चलेगा

बेहतर करने से भी ऐसा नहीं होगा

ज्यादा पैसा देने से काम नहीं चलेगा

हमें एक विकल्प की जरूरत है - कोई हमारी जगह ले

संक्रमण: अब्राहम को भी यही चाहिए था - जैसा कि अपने बेटे इसहाक की बलि चढ़ाने में दिखाया गया है

<u>III. प्रावधान</u>

क. पुराना नियम

अब्राहम की परिवारिक पृष्ठभूमि

(अब्राहाम के ऊर नगर को छोड़ने और परमेश्वर का अनुसरण करने की कहानी बताओ - उत्पत्ति 12:1-9)

परमेश्वर ने अब्राहाम से उतने ही बच्चों की प्रतिज्ञा की थी जितने आकाश में तारे और पृथ्वी पर रेत थी

लेकिन वह और सारा बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके थे

परमेश्वर ने उन्हें एक पुत्र " इसहाक "दिया, जब अब्राहाम 100 वर्ष का था (उत्पत्ति 21:1-7)

अब्राहाम और सारा बहुत खुश थे

जब इसहाक नौजवान ही था तब परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा कि वह इसहाक को उसे वापस दे दे

पढ़ें 22:1-14

उत्पत्ति 22:1-2 पढ़िए

मोरिय्याह का क्षेत्र: इसका अर्थ है "जहां यहोवा प्रदान करता है"

यह यरूशलेम के चारों ओर के पहाड़ों को संदर्भित करता है, वही पहाड़ जहां यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था

अब्राहाम को वहाँ पहुँचने में दो या तीन दिन लगे होंगे, उसके बारे में सोचने के लिए बहुत समय रहा होगा

अब्राहाम को सिखाने के लिए परमेश्वर के पास एक महत्वपूर्ण सबक है - विश्वास और आज्ञाकारिता

परमेश्वर अपने कारण नहीं बताता; वह हमें कभी नहीं बताता कि वह जो कर रहा है वह क्यों कर रहा है

अब्राहाम इसहाक से प्यार करता था। यह पहली बार है जब बाइबल में "प्रेम" शब्द का प्रयोग किया गया है।

नए नियम में पहली बार "प्रेम" यीशु के लिए परमेश्वर के प्रेम के बारे में दर्ज कीया गया है (मत्ती 3:17)

परमेश्वर और अब्राहाम दोनों अपने इकलौते बेटों से प्यार करते थे जो बलिदान के रूप में मरने वाले थे

• जैसे अब्राहाम का एक ही पुत्र था, वैसे ही परमेश्वर का एक ही पुत्र है।

• जैसे अब्राहाम ने इसहाक से गहरा प्रेम किया, वैसे ही परमेश्वर ने यीशु से बहुत प्रेम किया।

• जैसे इब्राहीम इसहाक को बलिदान करने के लिए तैयार था, वैसे ही परमेश्वर यीशु को बलिदान करने के लिए तैयार था।

• जैसेअब्राहाम को इसहाक को मोरिया (यरूशलेम की भावी जगह) में एक पहाड़ पर बलिदान करना था, ठीक उसी तरह

परमेश्वर बाद में यरूशलेम के ठीक बाहर एक पहाड़ पर यीशु का बलिदान करेगा - कलवारी।

• जैसेअब्राहाम ने होमबलि की लकड़ी इसहाक के कन्धों पर रखी, वैसे ही परमेश्वर ने यीशु के कंधों पर सलीब रख दी ।

• जैसे अब्राहाम मोरिय्याह जाने के लिए जल्दी उठा, वैसे ही परमेश्वर ने कलवारी के क्रूस को भी पूर्वनिर्धारित कर दिया यहाँ तक कि संसार के निर्माण से पहले।

• हालांकि, दोनों कहानियों में एक स्पष्ट अंतर है। अंतर घटनाओ के अंत में देखा जाता है। इसहाक को मृत्यु से बचाया गया था, लेकिन यीशु को नहीं। अब्राहाम बहुत दुखी और भ्रमित हुआ होगा जब परमेश्वर ने उसे अपने बेटे को मारने के लिए कहा था

"परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा?"

"मेरे लिए कई वंशजों वाले परमेश्वर के वादे के बारे में क्या होगा ?"

"मैं अपने कपड़ों पर इसहाक के खून के धब्बे के साथ घर कैसे जा सकता हूं?"

"मैं सारा को कैसे बताऊंगा कि मैंने क्या किया है ?"

उत्पत्ति 22:3 पढ़िए 3

अब्राहाम शायद एक रात पहले सोया नहीं था, उसने अपनी आत्मा में परमेश्वर के साथ कुश्ती की

-पड़ोसी क्या कहेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि उसने इतने लंबे समय से इंतजार कीये बेटे को मार डाला है ?

-परमेश्वर के उन वादों के बारे में जो उसे कई वंशजों से आशीषित करने के लिए थे, कहाँ गए ???

- वैसे भी परमेश्वर यहाँ क्या कर रहा था?

-इसका सारा पर क्या असर पड़ेगा ? क्या वह उसे हमेशा के लिए नफरत करेगी?

सारा को इस बारे में कुछ पता नहीं था

अगर उसे पता होता तो शायद वह अब्राहाम लिए जाना और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना बहुत कठिन बना देती

यह सिर्फ अब्राहाम के लिए एक परीक्षा थी

उत्पत्ति 22:4-5 4-5 पढ़ें

अब्राहाम ने 3 दिन यह सोचकर बिताए, इसहाक को युवावस्था में उत्साह से भरा देखता था ,

उसके पास सोचने और अवज्ञा करने का बहाना खोजने के लिए बहुत समय था

आराधना : यह कैसी आराधना है ? क्योंकि यह परमेश्वर को उसकी आज्ञाकारिता से सम्मानित करता है, वह इसे प्रेम से करता है

हम वापस आएंगे: अब्राहम को विश्वास था कि परमेश्वर इसहाक को फिर से जीवित करेगा (इब्रानियों 11:17-19)

अपने ही बेटे को मारना कितना भयानक है!

परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र यीशु के साथ ऐसा किया

उत्पत्ति 22:6 पढ़िए 6

यह यीशु को उसी पहाड़ पे क्रूस पर जाने की तस्वीर बनता है जहाँ उसका पिता उसकी जान ले लेगा

प्रत्येक अपने पिता का विशेष रूप से प्रिय इकलौता पुत्र था (यूहन्ना 3:16)

लकड़ी: क्रूस की एक तस्वीर है जिस पर यीशु की मृत्यु हुई थी (फिलिप्पियों 2:8)

आग: क्रूस पे यीशु पर आने वाले पाप के लिए न्याय की एक तस्वीर है

छुरी: सूली पर यीशु के शरीर में कीलों को ठोंके जाने की एक तस्वीर, तलवार का उसके शरीर में मार दिए जाने की तस्वीर है

उत्पत्ति 6:7-8 पढ़िए 7-8

इसहाक को नहीं पता था कि वह बलिदान होने जा रहा है, लेकिन यीशु जानता था कि उसका पूरा जीवन खत्म हो जायेगा

उसने संसार की सृष्टि से पहले स्वर्ग में स्वेच्छा से पाप के लिए मरने के लिए अपनी तरफ से पहल की (इफिसियों 1:4)

स्वयं परमेश्वर: परमेश्वर ने इसहाक के लिए मेमना प्रदान किया जैसे उसने हमारे लिए यीशु को प्रदान किया था

उत्पत्ति 6:9 पढ़िए 9

इसहाक की आयु लगभग 16 वर्ष और इब्राहीम GENESIS 6:7-8 READ 7-8की 116 वर्ष थी

अब्राहाम इतना मजबूत नहीं था कि इसहाक को बलि चढ़ने के लिए मजबूर कर सकता

इसहाक सहमत हो गया क्योंकि उसे परमेश्वर और आपने पिता में बहुत विश्वास था, वह बहुत आज्ञाकारी था

अनुप्रयोग : माता-पिता को अपने बच्चों को सिखाने के लिए स्वयं परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके एक उदाहरण स्थापित करनी चाहिए

उत्पत्ति 6:10-11 पढ़िए 10-11

प्रभु का दूत: यह ट्रिनिटी का दूसरा व्यक्ति था, यीशु के जन्म से पहले

उसने इसहाक के लिए एक विकल्प प्रदान किया जैसे उसने हमारे लिए एक विकल्प प्रदान किया - स्वयं को

उत्पत्ति 22:12 पढ़िए 12

अब्राहाम को अपने बेटे को मारने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन अगर परमेश्वर चाहता तो उसे ऐसा करने के लिए तैयार रहना पड़ता

अनुप्रयोग : हमें वह सब कुछ करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए जो परमेश्वर कहता है

उत्पत्ति 22:13-14 पढ़िए

मेमना : विकल्प एक नर भेड़ थी। बाद में यीशु को "परमेश्वर का मेम्ना" कहा जाएगा।

प्रभु प्रदान करेगा: इब्रानी भाषा में परमेश्वर के लिए यह महत्वपूर्ण नाम "यहोवा यिरेह" है

इसहाक को एक भौतिक विकल्प की आवश्यकता थी, जिसे मरना होगा और परमेश्वर ने एक प्रदान किया

अनुप्रयोग : हमें एक विकल्प की आवश्यकता है हम आध्यात्मिक रूप से मरेंगे और अनंत काल के लिए परमेश्वर से दूर रहेंगे

उदाहरण: डिकेंस का नावल ए टेल ऑफ़ टू सिटीज़ में, एक युवा फ्रांसीसी अफसर को फ्रांसीसी क्रांति के दौरान गिलोटिन द्वारा मरने सजा सुनाई गई थी। उसकी सजा पूरी तरह से उनके पूर्वजों के किसानों के खिलाफ अपराधों पर आधारित थी। उसके फाँसी से एक घंटे पहले एक युवा अंग्रेज मित्र ने उससे मुलाकात की थी जो उसके जुड़वां के रूप में आपने आप को उससे   पारित कर सकता था। गार्ड के जाने के बाद, दोस्त ने एक बेहोश आदमी पर काबू पा लिया और उसके साथ कपड़ों का आदान-प्रदान किया जिसको मौत की सजा मिली हुयी थी । फिर, मौत की सजा पाए व्यक्ति होने का नाटक करते हुए, उसने जेलर को बुलाया और कहा कि उसके बेहोश दोस्त ," को दुःख से दूर कर दिया जाए, उसे हटा दिया जाए और उसके घर भेज दिया जाए। इस प्रकार उस व्यक्ति को मृत्यु से बचा लिया गया। गिलोटिन के रास्ते में, युवा अंग्रेज ने ये अंतिम शब्द बोले: "यह अब तक की तुलना में कहीं अधिक बेहतर है, जो मैंने किया है ..." यीशु हमारे लिए पाप के विकल्प के रूप में मरा ।

ख. नया नियम

अनुप्रयोग : हमें एक विकल्प की जरूरत है

क्योंकि यीशु पापरहित मनुष्य होने के साथ-साथ स्वयं परमेश्वर भी था, वह हमारा स्थान ले सकता था

वह हमारा विकल्प है (1 पतरस 3:18)

पाप के लिए भुगतान किया जाना चाहिए, इसे ना अनदेखा कीया जा सकता है और ना भुलाया जा सकता

यदि परमेश्वर पाप को दंड नहीं देता, तो वह स्वयं पवित्र नहीं होता

लेकिन कोई तो विकल्प हो सकता है जो हमारे लिए भुगतान करेगा

यीशु हमारा विकल्प था (2 कुरिन्थियों 5:21)

दृष्टांत: एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय शासक ने अपने लोगों के पालन करने के लिए कानूनों की एक श्रृंखला स्थापित की। एक दिन उसकी माँ ने एक नियम तोड़ा और पकड़े जाने के बाद उसे शासक के पास लाया गया। जुर्माना बीस कोड़े का था। वह शासक अपनी माँ के प्रति अपने प्रेम की माँगों को पूरा करता हुआ एक न्यायी शासक कैसे बना रह सकता था ? उन्होंने अपनी पीठ पर कोड़े खा लिए। न्याय संतुष्ट था, जबकि प्रेम पूर्ण रूप से कायम बना रहा था।

निष्कर्ष

मेमने से सबक

1. हमें एक विकल्प चाहिए

हम सब मृत्यु दंड के अधीन हैं (रोमियों 3:23; 6:23)

2. परमेश्वर ने एक विकल्प प्रदान किया है

पाप का एक ही विकल्प है और वह है यीशु (रोमियों 6:23; इब्रानियों 9:22; प्रेरितों के काम 4:12)

उदाहरण: ब्रिटेन और फ्रांस के बीच युद्ध के दौरान, पुरुषों को फ्रांसीसी सेना में शामिल किया गया था। जब किसी का नाम लिया गया तो उसे युद्ध में जाना पड़ा। एक समय की बात है, अधिकारी एक निश्चित व्यक्ति के पास आए और उससे कहा कि वह उन लोगों में से है जिन्हें चुना गया था। उसने यह कहते हुए जाने से इनकार कर दिया, "दो साल पहले मेरी गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।" पहले तो अधिकारियों ने उनकी दिमागी हालत पर सवाल उठाया, लेकिन उसने जोर देकर कहा कि वास्तव में ऐसा ही हुआ था। उसने दावा किया कि फौज के रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह कार्रवाई में मारा गया था। "ऐसे कैसे हो सकता है?" उन्होंने सवाल किया। "अब तुम जीवित हो!" उसने समझाया कि जब उसका नाम पहली बार आया, तो एक करीबी दोस्त ने उनसे कहा, "आपका एक बड़ा परिवार है, लेकिन मैं शादीशुदा नहीं हूं और कोई भी मुझ पर निर्भर नहीं है। मैं आपका नाम और पता लूंगा और आपके स्थान पर जाऊंगा। " और वास्तव में रिकॉर्ड यही दिखाता था । वह स्वतंत्र था। वह दूसरे के व्यक्ति के रूप में मर गया था!

3. हमें पहुंचना चाहिए और विकल्प लेना चाहिए

जब तक वे इसे एक विकल्प के रूप में नहीं लिया तब तक झाड़ियों में मेढ़े का कोई मतलब नहीं बनता था

विकल्प हमारे लिए भी उपलब्ध है, लेकिन हमें परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना चाहिए

प्रार्थना करें

उसका धनयवाद करो

उसकी प्रशंसा करो

उसकी आराधना करो

उसकी सेवा करो

4. मेमने का खून

परमेश्वर का मेमना - उपदेश - 2

इब्रानियों 9:22; लैव्यव्यवस्था 17:11

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

जानने के लिए: जानवरों के बलिदान के कारण को निर्दोष लहू के बहाए जाने की तस्वीर के रूप में समझें, और आपने लिए क्रूस पर यीशु की मृत्यु के महत्व को समझें।

करने के लिए: यीशु के उद्धार के उपहार को स्वीकार करें और उसकी आज्ञाकारिता में रहें।

परिचय

उदाहरण: एक महिला एक बिक्री के लिए गई और उसने केवल 100 रुपए की कीमत में एक सुंदर प्राचीन तांबे की केतली देखी। यह बुरी तरह से कलंकित था, इसलिए उसने बिक्री करने वाली महिला से पूछा कि क्या गंदगी निकल जाएगी। उसने खुशी-खुशी उस पर कुछ तांबे का क्लीनर आज़माने की पेशकश की और उसे घर में ले गई। चमकदार साफ केतली के साथ फिर से प्रकट होकर, उसने उसे खरीदार को निरीक्षण के लिए सौंप दिया। यह वास्तव में एक अधिक आकर्षक वस्तु बन गयी थी, साथ ही इसमें एक नया रेट टैग भी लग गया था। जिस में लिखा था :नया जैसा कीमत 1000 रुपए।"

हम अपने पापों के कारण अधिक मूल्यवान नहीं हैं, परन्तु यीशु का लहू हमें शुद्ध करता है और हमें मूल्यवान बनाता है।

आपने खून और इसका हमारे शरीर में होने के महत्व के बारे में बात करें। उस समय के बारे में एक कहानी बताएं जब आपका खून बह रहा था और आपको कैसा लगा था ।

I. खून एक सफाई करने वाले के रूप में

इब्रानियों 9:22 "... बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।"

खून हमें शारीरिक रूप से शुद्ध करता है: शरीर में ऑक्सीजन और स्वस्थ सैल ले जाता है और फालतू चीज़े और अशुद्धियों को बाहर निकलता है

लहू हमें आत्मिक रूप से शुद्ध करता है: पूरे पुराने नियम में लहू का बलिदान हमारे लिए यीशु का लहू बहाए जाने का एक चित्र है। ब्लीच की तरह पाप को ब्लीच करने की तरह

II. लहू जीवन देने वाले तत के रूप में

यीशु का लहू हमारे लहू से अलग नहीं है, इसमें जादुई कुछ भी नहीं है

खून का मतलब है जीवन। यीशु ने अपना लहू बहाते हुए इसका उल्लेख किया की यीशु ने अपना जीवन दीया है।

हम यीशु के लहू की आराधना नहीं करते हैं; हम यीशु की आराधना करते हैं जिन्होंने अपना जीवन दिया

लैव्यव्यवस्था 17:11 क्योंकि प्राणी का प्राण लोहू में होता है, और मैं ने उसे तुझे दिया है, कि अपने लिये वेदी पर प्रायश्चित्त कर; यह लहू ही है जो किसी एक के जीवन का प्रायश्चित करता है।"

पाप मृत्यु लाता है - पाप की मजदूरी मृत्यु है रोमियों 6:23

परन्तु परमेश्वर अपना लहू बहाकर और मरकर हमें जीवन देता है। उसकी मृत्यु हमें जीवन देती है - **परन्तु परमेश्वर का उपहार हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है। रोमियों 6:23**

III. खून पाप की कीमत के रूप में

एक खून की बलिदान का मतलब था कि किसी को तो मरना होगा

यह लोगों को पाप की भयंकरता और पाप को दूर करने के लिए चुकाई जाने वाली भयंकर कीमत को दिखाता है

जब -जब कोई यहूदी पाप करता , वह निर्दोष खून बहाने के लिए एक जानवर को मारते

पशु का लहू उनके पाप को साफ़ ना करता - इब्रानियों 10:4

यह यीशु की ओर इशारा करता था जिसकी मृत्यु होनी थी - 1 यूहन्ना 1:7

पुराने नियम के बलिदान ऐसे थे जैसे फर्श पर एक दाग को छिपाने के लिए उस पर एक गलीचा डाला जाता है

क्रूस पर यीशु की मृत्यु ने कलंक को धोकर हटा दिया

IV. यीशु का लहू

पढ़ें इब्रानियों 9:11-28

अपने शब्दों में समझाएं कि पाप की कीमत चुकानी पड़ती है। इसे ना तो नजरअंदाजकीया जा सकता है और ना ही भुलाया जा सकता। परमेश्वर धर्मी और पवित्र है। क्योंकि वह सिद्ध है, वह पाप को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। इसके लिए भुगतान करना पड़ता है, जैसे कि जब कोई अपनी सरकार का कानून तोड़ता है तो उसे करना पड़ता है। यीशु के लहू में पाप को दूर करने की शक्ति होने का कारण यह है कि इसमें उसका जीवन था जो हमारे लिए दिया गया था। जब यीशु की मृत्यु हुई, तो परमेश्वर ने उसे हर

उस व्यक्ति के हर पाप के लिए अनन्त दंड दिया जो हमेशा के लिए जीवित रहेगा। यीशु उसी दर्द से गुज़रा जैसे हम नरक में अनंत काल बिताने से गुज़ते। यीशु पापरहित था इसलिए उसके पास स्वयं का कोई पाप नहीं था जिसका उसे कोई भुगतान करना था। क्योंकि वह हमारे जैसा एक व्यक्ति था, यीशु हमारी जगह ले सकता था और हमारा विकल्प बन सकता था। परमेश्वर होते हुए वह एक व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक दर्द सह सकता था।

परमेश्वर ने एक विकल्प के रूप में एक मेढ़ा प्रदान किया ताकि इसहाक को मरना ना पड़े (उत्पत्ति 22:12-14)। यह उसी पहाड़ पर हुआ जहां यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था। एक व्यक्ति ही केवल एक दूसरे व्यक्ति के लिए मर सकता है, लेकिन क्योंकि यीशु परमेश्वर के साथ-साथ मनुष्य भी था , वह क्रूस पर अपने घंटों के दौरान प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनन्त पीड़ा को सह सकता था । यह मन्षित था और उस पर उंडेल दिया गया था। पशु बलि को तो बार-बार चढ़ाया जाना था, परन्तु यीशु को केवल एक बार ही पाप के लिए मरना था (इब्रानियों 10:11-14)।

अनुप्रयोग

1. उद्धार - उद्धार की योजना दो, समझाओ ताकि हर कोई समझ सके

2. शिष्यता - उद्धार के बाद हमें प्रत्येक दिन यीशु के लिए जीने, उसकी आज्ञा मानने और उसकी सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए

3. पाप के लिए पश्चाताप करें - जो मसीही हैं उन्हें अपने पाप को परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए - 1 यूहन्ना 1:9

4. आराधना- परमेश्वर की स्तुति और आराधना करें कि उसने हमारे लिए अपना जीवन दिया है

प्रार्थना में समाप्त करें

<u>5. परमेश्वर का मेमना</u>

परमेश्वर का मेमना -उपदेश - 3

निर्गमन 12

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

जानने के लिए: जानवरों की बलि और फसह का मेमना इस बात की तस्वीर है जो यीशु हमारे लिए करता, जिसने परमेश्वर का मेमना बन कर हमारे सारे पापों को उठा लिया।

करने के लिए: यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें, उसको को आपना प्रभु मानते हुए उसके लिए जिएं और जो उसने हमारे लिए किया है उस सब के लिए उसकी आराधना करें और उसकी प्रशंसा करें।

<u>परिचय</u>

यीशु के लिए कुछ नामों की सूची बनाए। इतने सारे नाम क्यों? आपका मनपसंद कौन सा है? क्यों?

जब यीशु ने अपनी सेवकाई शुरू की उसका पहला नाम था परमेश्वर का मेमना

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने उसे एक महत्वपूर्ण कारण से इस नाम से पुकारा था

<u>I. पुराना नियम - फसह</u>

<u>क. पशु बलि की शुरुआत - अदन वाटिका</u>

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उन्होंने अपनी लज्जा को पत्तों से ढकने की कोशिश की, लेकिन ढक नहीं सके

परमेश्वर ने एक निर्दोष जानवर को मार डाला और उसकी चमड़ी से उन्हें ढक दिया

परमेश्वर यह दिखा रहा है कि पाप मृत्यु लाता है, पाप को ढकने के लिए निर्दोष खून का बहाया जाना जरूरी है

तब से लेकर जब कोई पाप करता है या परमेश्वर की आराधना करना चाहता है तो खून बहाया जाता

मनुष्य पाप को ढकने के लिए निर्दोष खून बहाने के द्वारा ही परमेश्वर के पास जा सकता है

जानवरों के खून से पाप ना ढँका, इसलिए उन्हें जानवरों को मारते रहना पड़ा

यह यीशु के जीवन के लहू की एक तस्वीर थी जो पाप के लिए अंतिम भुगतान था

आदम, हाबिल, नूह, अय्यूब, अब्राहाम, इसहाक, याकूब, यूसुफ और दुसरे सब पशु बलि करते थे

पशु की मृत्यु स्वयं व्यक्ति की मृत्यु का विकल्प थी

इसहाक पाप के लिए मरने के योग्य था, परन्तु इससे पहले कि अब्राहम उसे मार पाता, परमेश्वर ने एक विकल्प प्रदान किया (उत्पत्ति 22:1-19)

यह उसी पहाड़ पर हुआ जहां यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया था।

<u>ख. पशु बलि का विकास - फसह</u>

पढ़िए निर्गमन 12:1-13

परमेश्वर इस बारे में अधिक शिक्षा दे रहा है कि जब यीशु पृथ्वी पर आएगा तो वह क्या करेगा

यीशु के चित्र के लिए एक मेमने का उपयोग किया जाता है

चुना हुआ मेमना (निर्गमन 12:3,5)

मेमने बिल्कुल यीशु की तरह मासूम, कोमल और नम्र होते हैं

इसे निष्कलंक होना चाहिए था, जैसे यीशु निष्पाप और सिद्ध था

यह एक जवान पुरुष होना चाहिए था, यीशु की तरह जब वह हमारे लिए मर गया

मारा गया मेमना (निर्गमन 12:6)

जीवित मेमने ने उनकी मदद नहीं की, उसे मरना पड़ा, जैसे यीशु को हमारे लिए मरना पड़ा

परिवार का मुखिया परिवार में सभी का प्रतिनिधित्व करता

वह जानवर पर हाथ रखता और अपने पापों का अंगीकार करता, और अपने पाप को मेमने के ऊपर जाते हुए देखता था

क्योंकि मेमने के पास यह पाप होता और उसे मरना पड़ता , पाप का दिखाया जाना मृत्यु लाता है - याकूब 1:15

यह ठीक उसी दिन और समय पर किया गया था जब यीशु क्रूस पर मरा था

मेमने का लहू (निर्गमन 12:7)

मेमने की गर्दन काटने और खून बहने से मौत हो जाती थी

लहू पशु के जीवन को चित्रित करता है - लैव्यव्यवस्था 17:11

यह हमारे लिए यीशु के बहाए गए लहू को चित्रित करता है - इब्रानियों 9:22

अंगूर के रस के प्याले और अख्मीरी रोटी फसह में इसका चित्रण करते हैं

जब यीशु ने अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज (फसह) किया तो उसने इसका अर्थ बदल दिया

पेय मेमने के खून की तस्वीर नहीं थी

यह हमारे लिए उसके बहाए गए लहू की तस्वीर थी

रोटी अखमीरी रोटी की तस्वीर नहीं थी

यह हमारे लिए उसके पापरहित शरीर के तोड़े जाने का चित्र था

जो यहूदी भेड़ के बच्चे को मार देते , उन्हें उसके खून को अपने घर की चौखट पर लगाना होता था

फिर उन्हें खून से सुरक्षित रूप से ढके रहने के लिए अंदर जाना पड़ता ताकि कोई मर ना जाए

जब मृत्यु का दूत आता , तो वह उन्हें "पार" कर जाता - इसलिए इसे फसह कहा जाता है

हमें उद्धार के द्वारा , उसके प्रेम और अनुग्रह में प्रवेश करके यीशु के लहू को अपने जीवन में लागू करना चाहिए

तब हम आत्मिक मृत्यु और न्याय से सुरक्षित रहेंगे - रोमियों 8:1

बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती" इब्रानियों 9:27

छूट का अर्थ है किसी कर्ज को मिटा देना

हमारा पाप हमें परमेश्वर के कर्ज में डाल देता है जो पापरहित है और उसकी उपस्थिति में पाप ठहिर ही नहीं सकता

हमारे भले काम हमारे पापों को कभी मिटा नहीं सकते

परमेश्वर कहता है कि हमारे भले काम गंदे चिथड़ों और कूड़ाकरकट के समान हैं - यशायाह 64:6, फिलिप्पियों 3:8

यदि हमारे अच्छे कार्य इतने बुरे हैं, तो पाप परमेश्वर के सामने हमारे कितने भयानक होंगे!

यीशु के लहू के द्वारा उद्धार के बारे में इनमें से कुछ आयतें पढ़ें और उनके बारे में बात करें:

इफिसियों 1:7; 1 यूहन्ना 1:7; 1 पतरस 1:19; मत्ती 26:28; इब्रानियों 9:12; रोमियों 5:8-9

मेमने का शरीर (निर्गमन 12:8-10, 46)

मेमने का शरीर खाया जाना था; प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से पोषण के लिए इसमें भाग लेता है

यीशु को हमारे लिए मृत्यु और न्याय का सामना करते होने को चित्रित करने के लिए , इसे आग में भुना जाना था

इसे उबाला नहीं जा सकता था, क्योंकि प्यास लगने पर यीशु के लिए पानी नहीं था

कोई हड्डी नहीं तोड़ी जानी थी, क्योंकि सलीब पर यीशु की कोई हड्डी नहीं तोड़ी गयी थी - भजन संहिता 34:20

मेमने के शरीर में से कुछ भी नहीं बचाया जाना था , क्योंकि यह यीशू के शरीर को पुनर्जीवित होने और खराब ना होने को चित्रण करते हुए

इसे उसी रात खाया जाना था, भाग लेना बंद नहीं किया जा सकता था, इसे तुरंत किया जाना चाहिए

घर के अंदर

यहूदियों को कपड़े पहनना और जल्दी से जाने के लिए तैयार रहना था, क्योंकि मिस्र उनका घर नहीं था

अखमीरी रोटी इसलिए बनाई गई क्योंकि खमीर उठने का समय नहीं था

अख्मीर एक उली है जो बढ़ता और सड़ता है, यह पाप का चित्र है - 1 कुरिन्थियों 5:6-8

बिना खमीर की यह रोटी यीशु के पापरहित शरीर की तस्वीर थी - 1 कुरिन्थियों 11:23-32

अपने अंतिम भोज (फसह) में यीशु ने कहा कि यह रोटी अब उसके पापरहित शरीर को दर्शाती है

घर के बाहर

परमेश्वर मिस्र और उसके झूठे देवताओं का न्याय सब पहिलौठों को मारकर कर रहा था

अमीर हो या गरीब, अच्छा हो या बुरा, शिक्षित हो या अशिक्षत हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, केवल खून मायने रखता था

<u>II. नया नियम - यीशु</u>

यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाला

जब यीशु पहली बार बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आया, तो यूहन्ना ने उसे 2 बार "परमेश्वर का मेमना " कहा -यूहन्ना 1:29, 36

यह पहला नाम था जब यीशु ने अपनी सेवकाई शुरू की थी

इसने यीशु को पाप के लिए एक बलिदान के रूप में दर्शया - लैव्यव्यवस्था 4:32; 5:6

यीशु की भविष्यवाणी मेमने के समान बलि किए जाने के लिए की गई थी - यशायाह 53:7

दूसरे लोग यीशु को मेमना कहते हैं

फिलिप्पुस : कुशी खोजा यशायाह 53:7-8 पढ़ रहा था और फिलिप्पुस ने उसे बताया कि यह यीशु है - प्रेरितों के काम 8:32

पौलुस यीशु को हमारा फसह का मेमना कहता है - 1 कुरिन्थियों 5:7

पतरस कहता है कि यीशु एक सिद्ध मेमना था - 1 पतरस 1:19

निष्कर्ष

आप उसे क्या कहते हैं?

क्या आप उसे आपने लिए परमेश्वर का मेमना मानते हैं ? - अगर आप मानते हैं तो उसे धन्यवाद दें

यदि आपने उसे अनन्त न्याय के विकल्प के रूप में स्वीकार नहीं किया है, तो अभी करें।

प्रार्थना

<u>6. योग्य है मेमना</u>

परमेश्वर का मेमना - उपदेश - 4

प्रकाशितवाक्य 5

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

जानने के लिए: स्वर्गदूत और सारी सृष्टि यीशु की आराधना और स्तुति करेंगे क्योंकि,वह फसह के मेमने की तरह मर गया ताकि हम जीवन प्राप्त कर सकें।

करने के लिए: यीशु की स्तुति और आराधना करें जैसे हम अनंत काल के लिए स्वर्ग में करते रहेंगे।

<u>परिचय</u>

दृष्टांत: एक मेमने की कहानी बताओ जो अपनी माँ की आज्ञा का उल्लंघन करता है और एक खतरनाक जंगल में चला जाता है। एक बाघ ने हमला किया लेकिन मां उनके बीच कूद गई और बाघ ने मां को खा लिया ताकि मेमना बच सके। इसकी तुलना यीशु ने जो हमारे लिए क्या किया, उस से करें।

<u>उपदेश की समीक्षा 1, 2, 3</u>

पाप मृत्यु लाता है, जब मनुष्य ने पाप किया एक निर्दोष जानवर को मरना पड़ा, यह अदन में शुरू हुआ

पशु बलि ने पाप को दूर तो ना कीया, लेकिन इसने यीशु को चित्रित किया जो ऐसा करता

फसह का मेमना यीशु की एक तस्वीर है: निर्दोष, निष्कलंक, परुष जो जवानी के आलम में हो

इसे आपने ऊपर लागू करने के लिए हमें परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना चाहिए

हमने गुजरे समय में मेमने को देखा था। अब हम मेमने को वर्तमान और भविष्य में देखेंगे।

<u>I. वर्तमान काल में मेमना प्रकाशितवाक्य 5:5-7</u>

<u>पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:5-7</u>

<u>प्रकाशितवाक्य 5:5</u> - यीशु एक शेर के रूप में सारी सृष्टि पर शासन कर रहा है

प्रकाशितवाक्य 5:6 - यीशु स्वर्ग में कैसा दिखाई देता है

मेमना : स्वर्ग में यीशु की पहली तस्वीर , प्रकाशितवाक्य में, मेमने के रूप में है, हम एक शेर की उम्मीद करेंगे

मनुष्य के रूप में यीशु का पहला आगमन बलिदान के लिए आने वाले मेमने के समान था

वह दूसरी बार आएगा जब वह अपने शत्रुओं का न्याय सिंह के समान करेगा

एक मेमने के रूप में, वह हमारा नम्र उद्धारकर्ता था जो हमारे पापों के लिए न्याय पाने के लिए आया था

एक सिंह के रूप में, उसकी महिमा और अविश्वासियों के न्यायाधीश के रूप में उसकी संप्रभु होने की भूमिका देखी जाएगी

घात कीया गया : सूली पर चढ़ाए जाने के निशान देखे गए; यीशु बलि के मेमने के रूप में बलि किया गया

यीशु का सलीब पर चढ़ने के निशान ही, केवल स्वर्ग में ,पीड़ा के एक मात्र चिन्ह होंगे

हम उन्हें अनंत काल तक देख सकेंगे और उसके बलिदान के लिए उसकी आराधना करेंगे

खड़ा है : झूठ ना बोलता हुए कि मानो जैसे मार दीया गया था , लेकिन जीवत खड़े होकर पाप का बदला लेने के लिए तैयार

ध्यान का केंद्र : यीशु स्वर्ग में सभी के ध्यान और आराधना का केंद्र है

प्राचीन : आदम से अंत तक सभी विश्वासी

चार जीवित प्राणी: परमेश्वर की शक्ति और हर चीज पर संप्रभु और नियंत्रण के प्रतीक हैं

सात सींग: कुल, पूर्ण शक्ति और सर्वशक्तिमान होने की तस्वीर - दानिय्येल 7:13-14

सात आंखें: सर्वज्ञानता की तस्वीर, कि जो कुछ भी होता है उसे दिखाई देता है

प्रकाशितवाक्य 5:7 - यीशु क्या करता है

यीशु ने वह वापस ले लिया जो आदम ने खो दिया था क्योंकि वह क्रूस पर पाप के लिए मर गया था, अब वह फिर से इसका मालिक है

जो आदम ने अदन में किया, जब उसने पाप किया था,यीशु ने उसे मिटाया

II. हमारे द्वारा उसकी आराधना प्रकाशितवाक्य 5:8-10

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:8-10

प्रकाशितवाक्य 5:8

नीचे गिरना /जमीन तक झुकना : हम मेमने के सामने खुद को दीन करेंगे, स्वर्ग में कोई घमंड नहीं है

वीणा: यीशु की स्तुति गाने के लिए

धूप के कटोरे: सभी विश्वासियों के लिए सभी समय के लिए सभी प्रार्थनाओं को चित्रित करता है

छुटकारे के लिए प्रार्थना, पाप और बुराई का अंत, आदि जल्द ही उत्तर दिया जाएगा

परमेश्वर कभी कोई प्रार्थना नहीं भूलता , हम प्रार्थना करते हैं, वह हर एक को याद रखता है और उत्तर देता है

प्रकाशितवाक्य 5:9-10 - यीशु की आराधना करते हुए हम स्वर्ग में क्या कर रहे होंगे

गीत: हम स्तुति गान करेंगे क्योंकि यीशु पाप, बुराई और शैतान को दूर करेगा

नया: छुटकारे का गीत, जो स्वर्ग में पहले कभी नहीं गाया गया होगा

स्वर्गदूत इस गीत को नहीं गा सकते क्योंकि उन्होंने पाप से छुटकारे का अनुभव नहीं किया है जैसा कि हम ने कीया है

योग्य: योग्य है केवल मेमना जो अनंत काल के लिए हमारी स्तुति का विषय होगा

जो मारे गए थे: हम अपने पापों के लिए यीशू के मरने के लिए और हमें छुड़ाने के लिए यीशु की स्तुति करेंगे

अपने लहू से तू ने आदमियों को ख़रीदा: उसके लहू ने पाप की क़ीमत चुकाई, क़ीमत चुकाई जा चुकी है

उदाहरण: कई साल पहले, एक व्यक्ति को स्पेन की एक अदालत ने मौत की सजा सुनाई थी। चूंकि वह एक अमेरिकी नागरिक था, इसलिए अमेरिकी सरकार ने हस्तक्षेप करने का फैसला किया। उन्होंने घोषणा की कि स्पेन के अधिकारियों को उसकी जान लेने का कोई अधिकार नहीं है, लेकिन उनका विरोध अनसुना कर दिया गया। अंत में, उन्होंने जानबूझकर कैदी को संयुक्त राज्य अमेरिका के झंडे में लपेट दिया। जल्लाद को ललकारते हुए, उन्होंने यह चेतावनी जारी कर दी : "अगर तुम्हारी हिम्मत है तो गोली मारो ! लेकिन अगर तुम ऐसा करते हो, तो तुम इस महान राष्ट्र की शक्ति को अपने ऊपर ले आओगे!" वह दोषी के रूप में वहां खड़ा था। लेकिन राइफलमैन ने गोली नहीं मारी। ध्वज और सरकार द्वारा संरक्षित जिसका यह प्रतिनिधित्व करता है; आदमी की सुरक्षित था । इसी तरह यीशु का लहू हमें ढक लेता है और हमें परमेश्वर के न्याय और दण्ड से सुरक्षित रखा जाता है।

उन्हें एक राज्य बना दिया: हम सभी यीशु के आने वाले राज्य का हिस्सा हैं

आपने परमेश्वर की सेवा करने के लिए याजक : परमेश्वर तक पहुंचें और दूसरों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करें

पृथ्वी पर राज करें: जब यीशु पाप को हटा देगा और पृथ्वी को अदन की वाटिका में पुनर्स्थापित करेगा, तो हम उसके साथ राज्य करेंगे और उसकी सेवा करेंगे

<u>III. स्वर्गदूतों द्वारा आराधना प्रकाशितवाक्य 5:11-12</u>

ना केवल हम हमेशा के लिए यीशु की आराधना करेंगे, बल्कि स्वर्गदूत भी करेंगे

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:11-12

प्रकाशितवाक्य 5:11

स्वर्गदूत हर जगह पर हैं

वे अब हमारे आसपास हैं लेकिन हम उन्हें देख नहीं सकते

उन्होंने देखा था कि शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया है, यीशु को सूली पर चढ़ाया गया है और विश्वासियों को सताया गया है

प्रकाशितवाक्य 5:12

योग्य है मेमना : केवल यीशु ही स्वर्गदूतों और लोगों की आराधना लेने का हकदार हैं

ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने हमारे लिए आपने आप को परमेश्वर के बलि के मेमने के रूप में पेश कीया है

कौन मारा गया था : जिंदा मेममें ने उन्हें नहीं बचाया, उसकी मौत से ही हम बच गए हैं

फसह के मेमने को मरना था ताकि उसका खून दरवाजे पर लगाया जा सके

फिर लोगों को न्याय से सुरक्षित रहने के लिए लहू में से गुजरना पड़ता था

यीशु को अपना लहू बहाकर मरना पड़ा ताकि हम न्याय से सुरक्षित रह सकें

शक्ति प्राप्त करने के लिए: "डायनामाइट" शब्द इसी शब्द से आया है

उसके पास सारी शक्ति है और वह सारे ब्रह्मांड पर शासन करता है (मत्ती 28:18)

हमें उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसकी शक्ति की आवश्यकता है

धन: ब्रह्मांड में सब कुछ उसी का है, इसलिए वह हमारी किसी भी जरूरत को पूरा कर सकता है

वह हमारी सभी जरूरतों को पूरा करने का वादा करता है (फिलिप्पियों 4:219)

ज्ञान: क्योंकि वह परमेश्वर है, यीशु भूत, वर्तमान और भविष्य सब कुछ जानता है

इसलिए, वह हमेशा वही कर सकता है जो सही और सर्वोत्तम है

ताकत: यीशु के पास परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए जो कुछ भी करने की ज़रूरत है वह करने की ताकत है

इस बल का कोई साम्हना नहीं कर सकता, क्योंकि इसकी कोई सीमा नहीं (इफिसियों 3:20)

आदर: वह किसी के भी सबसे बड़े मूल्य और सम्मान का हकदार है (फिलिप्पियों 2:9-11)

महिमा: वह ब्रह्मांड में सर्वोच्च प्रताप है और उसका प्रताप सूर्य से भी तेज चमकता है

प्रत्येक सृजे गए प्राणी को सार्वजनिक रूप से अपने महान मूल्य की घोषणा करनी चाहिए (भजन संहिता 29:2; 57:5)

स्तुति: उसके छुटकारे के अद्‌भुत कार्य के कारण उसकी स्तुति की जानी चाहिए

सभी आशीषें उसी की ओर से आती हैं इसलिए हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए (भजन संहिता 100:4; यशायाह 25:1)

संक्रमण

यही वह है जिसके लिए स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं

सभ सृष्टि को इस आराधना में शामिल होना चाहिए

IV. सारी सृष्टि द्वारा आराधना- प्रकाशितवाक्य 5:13-14

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:13-14

प्रकाशितवाक्य 5:13

जब आदम और हव्वा ने आज्ञा नहीं मानी और पाप ने संसार में प्रवेश किया, और इसने सारी सृष्टि को प्रभावित किया (उत्पत्ति 3:14-18)

सारी प्रकृति अभी भी पाप के बन्धन में है (रोमियों 8:18-24)

जब यीशु सारी सृष्टि को श्राप से मुक्त करेगा , तो प्रकृति भी स्वयं परमेश्वर की स्तुति गाएगी

प्रकाशितवाक्य 5:14

प्राचीन: यह हमें और स्वर्ग में परमेश्वर के सभी लोगों को संदर्भित करता है

आमीन: का अर्थ है "ऐसा ही हो।" यह कह रहा है कि हम उन सभी बातों से सहमत हैं जो स्वर्गदूत यीशु की स्तुति में कह रहे हैं

निष्कर्ष

यीशु के बारे में स्तुति, आराधना, गवाही और गीत गाने के साथ अपनी सेवा समाप्त करें

7. मृत्यु के बाद का जीवन

विभिन्न शास्त्र

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

जानने के लिए: जो लोग उद्धार के लिए यीशु में अपना विश्वास रखते हैं उन्हें मृत्यु का कोई भय नहीं है और वे यीशु के साथ स्वर्ग में अनंत काल बिताएंगे

करने के लिए: यीशु में अपना विश्वास रखो और आज यीशु के लिए ईमानदारी से जियो और मृत्यु से मत डरो

परिचय

उदाहरण: जब हम किसी यात्रा पर जाते हैं, तो हम यात्रा की तैयारी करते हैं और इसलिए समय आने पर तैयार रहते हैं

हमें दिशा-निर्देश मिलते हैं, जो हमें लेने की आवश्यकता होती है उसे इकट्ठा करते हैं और योजनाएँ बनाते हैं

यात्रा जितनी लंबी होगी, तैयारी उतनी ही अधिक होगी

जीवन में एक बड़ी यात्रा है जिसे सभी लोग करेंगे लेकिन कई लोग उसकी तैयारी नहीं करते हैं

यह तब होता है जब वे इस दुनिया से दूसरी दुनिया में जाते हैं

कुछ लोगों को यकीन नहीं होता कि उनके मरने के बाद क्या होता है

वे योजनाएँ नहीं बनाते क्योंकि उन्हें नहीं लगता कि मृत्यु के बाद कोई जीवन है

मनुष्य के सबसे बड़े प्रशनो में से एक यह है कि क्या मृत्यु के बाद जीवन है ? - अय्यूब 14:14 पढ़ें

यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हम जानते हैं, क्योंकि यदि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है तो हम जो मानते हैं वह सब गलत है (1 कुरिन्थियों 15:19)

यह जीवन अस्थायी है, हम सब एक दिन मरेंगे - उत्पत्ति 3:19 पढ़ें

परमेश्वर मृत्यु लाता है ताकि हमें उस से हमेशा के लिए अलग होकर पृथ्वी पर दुख और पाप में ना रहना पड़े

मृत्यु का मतलब है कि हम उसके साथ फिर से जुड़ जाएंगे

मृत्यु का मतलब यह भी है कि हम जानते हैं कि हम उसके प्रति जवाबदेह हैं

लेकिन यीशु पर विश्वास करने वालों के लिए मृत्यु के श्राप को दूर करने के लिए यीशु आया - पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:21-22

संक्रमण

हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि मृत्यु के बाद जीवन है?

<u>I. मृत्यु के बाद जीवन का प्रमाण</u>

<u>क. कारण से सबूत</u>

1. परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में यह विश्वास करने के लिए डाल दिया है कि इस जीवन के अलावा और भी बहुत कुछ है

लोगों ने हर जगह हमेशा अनंत जीवन पाने का रास्ता खोजा है (सभोपदेशक 3:11)

2. परमेश्वर ने मनुष्य में एक ऐसे समय की इच्छा भी डाली है कि किसी समय न्याय होगा और बुराई दूर हो जाएगी

इस जीवन में ऐसा नहीं होता है इसलिए इस जीवन के बाद एक जीवन का होना जरूरी है

3. मरने वाले कुछ लोगों के अंतिम शब्द यह होते है कि स्वर्ग खुला हुआ है और यीशु उनकी प्रतीक्षा कर रहा है

पौलुस ऐसे लोगों में से एक था (1 कुरिन्थियों 12:2-5)

4. कुछ लोग जो मर गए और जिन्हे फिर से जीवित किया गया है, मृत्यु के बाद के जीवन की बात करते हैं

मसीही स्वर्ग को यीशू को और अपने लोगों को देखने की बात कहते हैं

अविश्वासी नर्क की भयावहता को देखकर रोते या चिल्लाते हैं

ख . बाइबल से प्रमाण

जानकारी का सबसे अच्छा स्रोत बाइबल है क्योंकि यह सत्य है और प्रेरित है

परमेश्वर सब कुछ कर सकता है, और इस लिए हमें एक किताब दे सकते है जो सत्य है

यदि वह ऐसा ना करता है, तो हम उसके बारे में या हमारे लिए उसकी योजना के बारे में कुछ भी नहीं जान पते/पाएंगे

यीशु ने बाइबल को सत्य और प्रेरित माना (मरकुस 10:6-9; मत्ती 19:4-5; 23:35; आदि)

पौलुस (रोमियों 9:22-29) और पतरस (यशायाह 28:16) भी ऐसा ही मानते थे ।

हजारों किताबें लिखी गई हैं जो साबित करती हैं कि यह परमेश्वर का प्रेरित वचन है

कई पूर्ण भविष्यवाणियाँ साबित करती हैं कि बाइबल केवल परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है जो भविष्य जानता है

आइए देखें कि मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में बाइबल क्या कहती है

1. पुराना नियम कहता है कि मृत्यु के बाद भी जीवन है

दाऊद जानता था कि वह हमेशा परमेश्वर के साथ रहेगा - भजन संहिता 23:6 पढ़ें; 49:15; 16:10

सुलैमान जानता था कि वह हमेशा परमेश्वर के साथ रहेगा - सभोपदेशक 12:7 पढ़ें; भजन संहिता 73:24

अय्यूब जानता था कि वह हमेशा परमेश्वर के साथ रहेगा - अय्यूब 19:25-27 पढ़ें

2. यीशु कहता है कि मृत्यु के बाद भी जीवन है

उसने लोगों से कहा कि वह अब्राहाम का परमेश्वर है क्योंकि अब्राहाम अभी भी जीवित है (मरकुस 12:26-27)

उसने लाजर को फिर से ज़िंदा किया - यूहन्ना 11:25-26 पढ़ें

उसने नाईन की विधवा के पुत्र को ज़िन्दा (लूका 7:11-17)

उसने सन्मानित व्यक्ति की मृत बेटी को फिर से जीवित किया (मरकुस 5:21-43)

यीशु ने क्रूस पर चढ़े चोर से कहा कि वह उसी दिन उसके साथ स्वर्ग में होगा - लूका 23:43 पढ़ें

3. यीशु का पुनरुत्थान साबित करता है कि मृत्यु के बाद भी जीवन है

हम जानते हैं कि यीशु जीवन में वापस आया (यूहन्ना 20; लूका 24)

-वह 500 से अधिक लोगों के सामने 10 बार प्रकट हुआ (1 कुरिन्थियों 15:3-8)

-उनके चेले बदल गए हैं, वे अब नहीं डरते थे (प्रेरितों के काम 4:13)

-पौलुस ने यीशु को दमिश्क के मार्ग पर देखा (प्रेरितों के काम 9:1-19; 22:6-21; 26:12-18)

-स्टीफन ने यीशु को देखा जब उसे पत्थरवाह किया गया था (प्रेरितों के काम 7:54-60)

-मसीही लोगों ने अपना आराधना करने का दिन रविवार में बदल दिया क्योंकि यीशू उस दिन जीवन में वापस आया था (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)

संक्रमण

इस बात के पर्याप्त से अधिक प्रमाण हैं कि मृत्यु के बाद भी जीवन है

अब बात करते हैं कि मरने के बाद क्या होता है

II. मरने के बाद क्या होता है

हमारा शरीर मर जाता है और नष्ट हो जाता है, लेकिन हमारी आत्मा/प्राण , जो हमारे अंदर का असली रूप है, स्वर्ग में हमेशा परमेश्वर के साथ रहता है - सभोपदेशक 12:7 पढ़ें

क. अविश्वासियों के लिए नरक

जो लोग उद्धार के लिए यीशु की ओर नहीं मुड़ते वे अनंत काल नरक में व्यतीत करेंगे।

उनके पास एक ऐसा शरीर होगा जो हमेशा जीवित रहेगा, लेकिन अनंत काल तक नरक में रहेगा

उनकी आत्मा/प्राण इस शरीर में हमेशा के लिए नर्क में रहेगी

(प्रकाशितवाक्य 20:10, 15; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9; मत्ती 25:41-42; लूका 16:23-24)

ख. विश्वासियों के लिए स्वर्ग

हमारे पास पुनरुत्थान का शरीर होगा जैसा यीशु का पुनरुत्थान के बाद था - पढ़ें फिलिप्पियों 3:21

(2 कुरिन्थियों 5:1-8; यशायाह 26:19)

जब यीशु हमें घर बुलाने के लिए बादलों में आता है (रैप्चुर), तो जीवित मसीहिओं के शरीर को शाश्वत शरीर में बदल दिया जाएगा और धरती में मसीही लोग के मृत शरीर को जो पहले ही मर चुके हैं, उन्हें शाश्वत शरीर के रूप में पुनर्जीवित किया जाएगा, जैसे यीशु का पुनरुत्थान शरीर था - पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18

विश्वासियों के लिए कभी भी कोई न्याय या दंड नहीं होगा, क्योंकि यीशु ने सब कुछ ले लिया - रोमियों 8:1 पढ़ें

ग. विश्वासयोग्य विश्वासियों के लिए पुरस्कार

परमेश्वर मसीही लोगों को पुरस्कृत करेगा

-जो उसके लिए अपना सांसारिक जीवन जीते हैं (1 कुरिन्थियों 9:25)

-जो दूसरों को उद्धार की ओर ले जाते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 2:19)

- जो एक धर्मी और पवित्र जीवन जीते हैं (2 तीमुथियुस 4:8; 1 यूहन्ना 3:3; 2:29)

8. आध्यात्मिक विकास के लक्षण

विभिन्न शास्त्र

द्वारा : रेव डॉ. जेरी श्मोयर

© 2021

(इस उपदेश को कई उपदेशों में तोड़ा जा सकता है या बाइबल अध्ययन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।)

जानने के लिए: यह समझना कि जब हम आध्यात्मिक रूप से विकसित होते हैं तो हमारे जीवन में क्या परिवर्तन होते हैं

करने के लिए: यह देखने के लिए , स्वयं का मूल्यांकन करें , कि क्या वे परिवर्तन हमारे जीवन में हो रहे हैं

परिचय

उदाहरण: बच्चे जल्दी बड़े हो जाते हैं। हम उन्हें हर साल लम्बाई में बड़ते होते हुए देख सकते हैं। उनका बढ़ना स्वाभाविक है। अगर वे नहीं बड़ते है तो इसका मतलब उन के साथ कुछ तो समस्या है । मसीही लोगों का भी यही हाल है। हमें भी हर साल बढ़ना है।

पढ़िए 2 पतरस 3:18

हम अपने बच्चों को तो लम्बाई में बड़ते हुए देख सकते हैं, लेकिन हम यह कैसे जान सकते हैं कि हम आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं?

संक्रमण

हम 10 तरीकों पर गौर करेंगे जिनसे हम यह बता सकते हैं कि क्या हम आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं

1. क्या आप पहले से कहीं ज्यादा स्वर्ग के बारे में सोचते हैं?

पढ़ें फिलिप्पियों 1:21-24 और तीतुस 2:11-13

पौलूस ने यह आयते तब लिखी थी जब वह एक लम्मबे समय से मसीही जीवन जी रहा था

स्वर्ग के बारे में अधिक सोचने से पता चलता है कि वह अपने विश्वास में बढ़ रहा था

क्या आप अब पहले से कहीं अधिक स्वर्ग की ओर देख रहे हैं?

जैसे-जैसे आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ते हैं, आप स्वर्ग के बारे में अधिक सोचेंगे और अधिक से अधिक इसकी प्रतीक्षा करेंगे। जब हम नए नए मसीही विश्वास में होते हैं, तो स्वर्ग एक अच्छी लेकिन अस्पष्ट जगह महसूस होती है, लेकिन हम परमेश्वर के जितने करीब आते हैं, उतना ही अधिक हम उसके साथ स्वर्ग में रहने की आशा करते हैं।

जैसे-जैसे हम यीशु के समान होते जाते हैं, यह संसार और इसकी चीजें कम महत्वपूर्ण होती जाती हैं

पाप और दुख हमारे लिए अधिक से अधिक बेस्वाद हो जाते हैं

इस धरती की चीजें फीकी पड़ जाती हैं लेकिन हमारा स्वर्गीय घर अधिक से अधिक वास्तविक हो जाता है

क्या आप पहले से कहीं अधिक स्वर्ग के लिए तरसते हैं? यह एक संकेत है कि आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं

2. क्या आप दूसरों के साथ व्यवहार करने में, प्यार से पेश आने वाले बन रहे हैं?

मत्ती 22:36-40 और 1 यूहन्ना 4:20-21 पढ़ें

अच्छे सामरी की कहानी बताओ (लूका 10:25-37)

जब आप एक मसीही के रूप में विकास करते हैं तो आप दूसरों के प्रति अधिक धैर्यवान और दयालु होंगे

जैसे-जैसे हम यीशु के समान होते जाते हैं, हम दूसरों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे वह प्रेम करता है - पूरी तरह और बिना शर्त।

यह स्वाभाविक ही है कि जैसे-जैसे हम उसके जैसे और अधिक बनते जाते हैं, हम आपने आप को लोगों से अधिक प्रेम करने वालों के रूप में देखतें हैं।

क्या आप देखते हैं कि आप लोगों के प्रति अधिक दयालु, अधिक धैर्यवान और दयालु होते जा रहे हैं?

क्या आप दूसरों की जरूरतों और दुखों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं?

क्या आप दूसरों की परीक्षाओं और कठिनाइयों के लिए दुःख महसूस करते हैं?

यह एक और संकेत है कि आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

3. क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य के बारे में अधिक अवगत हैं?

फिलिप्पियों 3:10 और गलातियों 2:20 पढ़ें

जैसे-जैसे हम बढ़ते हैं, हम अपने जीवन में अधिक से अधिक परमेश्वर के हाथ को पहचानेंगे।

हम इसके प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं कि हमें परमेश्वर की कितनी आवश्यकता है। सबसे पहले, हम उसके द्वारा किए जाने वाले बड़े कामों को देखते हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम उसके करीब होते जाते हैं, हम यह देखना शुरू करते हैं कि जो कुछ भी होता है वह सब उसके नियंत्रण में होता है।

क्या आप इस बात से अधिक अवगत हैं कि जो कुछ भी होता है, कठिनाइयाँ और अच्छी चीजें सब उसके नियंत्रण में हैं?

क्या आप अच्छी चीजों के लिए परमेश्वर को श्रेय देने के लिए कम चाहवान हैं?

क्या आप अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में परमेश्वर के कार्य करने के बारे में अधिक से अधिक जागरूक हो रहे हैं?

यह आध्यात्मिक विकास का प्रतीक है।

4. क्या परमेश्वर के वचन का आपके जीवन में पहले से कहीं अधिक स्थान है?

1 पतरस 2:2-3 और भजन संहिता 119:9-11पढ़ें

एक अच्छी भूख एक अच्छे स्वास्थ्य शरीर की निशानी है

आध्यात्मिक रूप से भी यही सच है - विकास कर रहे मसीही लोग परमेश्वर के वचन को जानना चाहते हैं

क्या आप देखते हैं कि आप जितने पुराने मसीही हैं , बाइबिल आपके लिए उतनी ही अधिक महत्वपूर्ण होती जाती है?

क्या आप इसकी सराहना करते हैं और पहले से अधिक इसकी ओर आपना रुझान रखते हैं?

क्या आपके लिए बाइबल पढ़ने में व्यतीत किया जाने वाला समय आपके लिए अधिक महत्वपूर्ण बनता जाता है?

क्या आप परमेश्वर के वादों को याद करते हैं और दिन में उनके बारे में सोचते हैं?

क्या आपके पास कठिन समय में पसंदीदा वचन के हिस्सों की बढती हुई संख्या है?

जैसे-जैसे हम बढ़ते हैं वैसे-वैसे हमारी भूख भी बढ़ती जाती है। यह बच्चों में सच है, और यह मसीहिओं के लिए भी सच है।

सभी बढ़ती चीजों को पोषण के स्रोत की आवश्यकता होती है, और बाइबल हमारी आत्मा के लिए भोजन का स्रोत है।

क्या आप देखते हैं कि बाइबल के प्रति आपका प्रेम बढ़ता जा रहा है?

क्या यह आपके जीवन में पहले की तुलना में अधिक प्रभावशाली है?

यदि ऐसा है, तो यह आध्यात्मिक विकास का एक और संकेत है।

5. क्या आपका आराधना करना पहले की तुलना में अधिक ईश्वर-केंद्रित और गिनती में अधिक बार होता है?

अय्यूब 1:20-21 और भजन 100 पढ़ें

जब आप बाइबल में अब्राहाम के बारे में पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि वह जितना बड़ा होता गया, अक्सर उतना ही जयादा उसने परमेश्वर की आराधना के लिए एक वेदी बनाता था ,

जब हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, तो हम उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो उसने हमारे लिए किया है, जिन चीजों को हम देखते हैं और पसंद करते हैं।

लेकिन जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, तो हम परमेश्वर पर और उसकी महिमा और सम्प्रभुता में ध्यान केंद्रित करते हैं, ना कि उस पर जो वह करता है

क्या आप स्वयं को पहले से अधिक परमेश्वर की आराधना करते हुए देखते हैं?

क्या आप खुद को पहले की तुलना में, परमेश्वर और उसकी महानता के बारे में, अधिक सोचते हुए देखते हैं?

जब आप अपने लिए उसके प्रेम के बारे में सोचते हैं तो क्या सारा दिन उसकी आराधना स्वाभाविक रूप से आपके अन्दर से अदा होती है?

क्या परमेश्वर की स्तुति करनाम आपके मन में स्वाभाविक रूप सेआता है?

जब आप पूजा करते हैं तो क्या आप पहले की तुलना अब परमेश्वर के करीब महसूस करते हैं ?

यह एक अच्छा संकेत है कि आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

<u>6. क्या आप पहले की तुलना में पाप के प्रति अधिक संवेदनशील हैं?</u>

पढ़ें रोमियों 12:1-2

जब पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को लुभाया, तो वह भाग गया।

जब बैथशेबा दाऊद के लिए प्रलोबन बनी , तो वह गिर गया और उसने पाप किया

यूसुफ दाऊद से छोटा था, परन्तु वह आत्मिक रूप से बढ़ रहा था और पाप से मुड़ गया था

युवा मसीहीयों के रूप में हम उन चीजों से अवगत हैं जो पाप हैं, जिन चीजों के बारे में हमें ना सोचना चाहिए और ना ही उन्हें करना चाहिए

लेकिन जैसे-जैसे हम अपने विश्वास में करीब आते हैं, हम अपने जीवन के अधिक से अधिक क्षेत्रों में पाप को देखना शुरू करते हैं

हम यह पहचानने लगते हैं कि हमारे स्वार्थी उद्देश्य और अभिमानी व्यवहार पाप हैं

हम इसके प्रति अधिक जागरूक होते जाते हैं कि हम परमेश्वर की पूर्णता से कितनी दूर हैं।

क्या आप अपने जीवन में पाप के प्रति पहले की तुलना संवेदनशील हैं?

क्या आप इस बारे में अधिक जागरूक हैं कि आप कब पाप करते हैं और इससे अधिक परेशान कब होते हैं?

क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के लिए उसको ज्यादा से ज्यादा धन्यवाद देते हैं?

क्या आप पहले की तुलना में उसकी मुफ्त क्षमा के लिए उसकी अधिक सराहना करते हैं?

आपका अपने जीवन में पाप के प्रति अधिक संवेदनशील होना एक संकेत है कि आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं

<u>7. क्या आप दूसरे लोगों को क्षमा करने के लिए जल्दी करते हैं जिन्होंने आपको चोट पहुंचाई हो ?</u>

मत्ती 6:14-15; मरकुस 11:25; कुलुस्सियों 3:13 पढ़ें

जब यीशु क्रूस पर गहरे दर्द और पीड़ा में था , तो उसने उन्हें क्षमा कर दिया जिन्होंने उसे वहां लटका दिया था

यीशु की तरह और अधिक बनने का अर्थ है कि हम दूसरों को शीघ्रता से क्षमा कर देंगे

क्या आप देखते हैं कि कुछ साल पहले की तुलना में आप लोगों को जल्दी माफ कर देते हैं?

क्या आपके अन्दर उन लोगों के खिलाफ बहस करने या बदला लेने की संभावना कम हैं जिन्होंने आपको चोट पहुंचाई है?

जैसे ही लोग आपको चोट पहुँचाते हैं क्या आप उन्हें क्षमा कर देते हैं, और उनके द्वारा पहले क्षमा माँगने का इंतज़ार नहीं करते हैं ?

इसी तरह यीशु हमें क्षमा करता है, और यदि हमें उसके जैसा और अधिक बनना है तो हमें भी ऐसा ही करना चाहिए

क्या आप अपने आप को पहले की तुलना में जल्दी क्षमा करने वाले के रूप में देखते हैं?

यह एक अच्छा संकेत है कि आध्यात्मिक विकास हो रहा है।

<u>8. परमेश्वर कितना महान है, क्या आप इसके प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं?</u>

भजन 19:1 और फिलिप्पियों 4:13 पढ़ें

एक बात जो एक मसीही जन के रूप में विकसत होने पर होनी चाहिए वह है यह महसूस करना कि परमेश्वर कितना महान हैं

जब हम अपने विश्वास में बढ़ते हैं, तो हम इस बात के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं कि वह कितना अद्‌भुत और निराला है

क्या परमेश्वर आपको अब पहले की तुलना में महान लगता है?

क्या आप लगातार अधिक से अधिक तरीके देख रहे हैं जो इस बात का सबूत देतें हो कि सब कुछ उसके नियंत्रण में है?

जब परमेश्वर आपके जीवन में महान बनता है, तो उस पर आपका विश्वास और भरोसा भी बढ़ता है

महान परमेश्वर में हमारा विश्वास भी महान है, लेकिन एक छोटे परमेश्वर में केवल एक छोटा सा विश्वास ही होता है। क्या आप परमेश्वर को एक महान या छोटा देखते हैं?

क्या परमेश्वर में आपका विश्वास और विश्वास भी बढ़ रहा है?

इससे पता चलता है कि परमेश्वर आपके जीवन में महान और बहुत महान होता जा रहा है

यदि आप पहले की तुलना में अधिक जागरूक होते हैं कि परमेश्वर कितना महान हैं, तो आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

9. क्या आपका प्रार्थना जीवन अधिक व्यक्तिगत और अर्थपूर्ण होता जा रहा है?

याकूब 5:16 और यिर्मयाह 29:12-13 पढ़ें

दानिय्येल विश्वासी व्यक्ति था क्योंकि वह प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था

यीशु स्वयं अक्सर प्रार्थना करता था, कभी-कभी रात भर जागकर प्रार्थना करता था

जब कोई रिश्ता बढ़ता है तो लोग बेहतर तरीके से बातचीत करना सीखते हैं।

क्या आप देखते हैं कि आपका प्रार्थना जीवन अधिक व्यक्तिगत और मजबूत होता जा रहा है?

क्या आप खुद को पहले की तुलना में परमेश्वर के साथ अधिक बात करते हुए देखते हैं?

क्या प्रार्थना अधिक स्वाभाविक है, कुछ ऐसा जो आप दिन भर करते हैं और कभी-कभी उसे ना जानते हुए भी नहीं करते?

क्या चीजों के बारे में परमेश्वर से बात करना आपके लिए स्वाभाविक रूप से होता है, कुछ ऐसा जो अपने आप होता है?

क्या आप स्वयं को परमेश्वर से कई अलग-अलग चीजों के बारे में बात करते हुए देखते हैं, ना कि केवल उसे आपके लिए काम करने के लिए कहते हुए ही?

क्या आपकी प्रार्थना स्वयं परमेश्वर पर अधिक केंद्रित होती है बजाये इसके कि जो आप चाहते हैं की वह आप के लिए करे ?

क्या आप पहले की तुलना में अब उससे बात करने में अधिक सहज महसूस करते हैं?

यदि हां, तो आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

10. जब परमेश्वर आपसे बात करता है तो क्या आप उसकी आवाज को बेहतर ढंग से पहचान पाते हैं?

यूहन्ना 14:26 और यूहन्ना 10:4, 16, 27 पढ़ें

क्या आपने आप को परमेश्वर की आवाज़ को सुनने में, उससे सुनने की इच्छा में अधिक चाहवान होता देखते हैं, बजाय उसे बस यह बताने के कि आप क्या चाहते हैं कि वह आपके लिए करे ?

क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर को आपसे जो कहना है वह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जो आपको उससे कहना है?

जब परमेश्वर आपसे बात कर रहा होता है तो क्या आप बेहतर ढंग से पहचान पाते हैं?

जब परमेश्वर आपको मार्गदर्शन, दृढ़ विश्वास या सच्चाई का संचार कर रहा होता है तोआप इसकी पहचान कैसे करते है?

क्या आपके पास उससे सुनने और वह जो कहता है उसे सुनने की एक मजबूत और दृढ इच्छा है ?

यदि आप बेहतर ढंग से पहचानने में सक्षम हैं जब परमेश्वर आपसे बात करता है तो आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष

समीक्षा

1. क्या आप पहले से ज्यादा स्वर्ग के बारे में सोचते हैं?

2. क्या आप दूसरों के साथ व्यवहार करने में पहले से अधिक प्रेममय होते जा रहे हैं?

3. क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य के बारे में अधिक जागरूक हैं?

4. क्या आपके जीवन में परमेश्वर के वचन के लिए पहले से कहीं अधिक स्थान है?

5. क्या आपकी आराधना पहले की तुलना में अधिक ईश्वर-केंद्रित और बार-बार अदा है?

6. क्या आप पहले की तुलना में पाप के प्रति अधिक संवेदनशील हैं?

7. क्या आप दूसरों को जल्दी माफ कर देते हैं जिन्होंने आपको चोट पहुंचाई है?

8. क्या आप इसके प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं कि परमेश्वर कितना महान हैं?

9. क्या आपका प्रार्थना जीवन अधिक व्यक्तिगत और अर्थपूर्ण होता जा रहा है?

10. जब परमेश्वर आपसे बात करता है तो क्या आप उसकी आवाज को बेहतर ढंग से पहचान पाते हैं?

ये 10 मानक आपको यह देखने में मदद कर सकते हैं कि आप कैसे और कहाँ बढ़ रहे हैं।

प्रत्येक को ध्यान से देखें, प्रार्थना करें कि आप कहां हैं और अगर आप इस क्षेत्र में बढ़ रहे हैं ।

यदि आपको कोई ऐसा क्षेत्र मिल जाता है जहाँ आप नहीं बढ़ रहे हैं जैसा कि आपको बढना चाहिए तो आप उस पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं ताकि आप उस क्षेत्र में बढ़ सकें।

पढ़ें फिलिप्पियों 1:6

II. उपदेश और बाइबिल अध्यन सब युगों के लिए

इन्हें उपदेश के रूप में कैसे उपयोग करें

निम्नलिखित सबक यीशु के जीवन में विभिन्न घटनाओं के बारे में कहानियाँ हैं। उन्हें एक उपदेश के हिस्से के रूप में बताया जा सकता है या विस्तृत किया जा सकता है और एक पूर्ण उपदेश के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि ऐसा है, तो कहानियों से मिले सबक को विशेष रूप से सुनने वालों पर लागू किया जाना चाहिए। हर कोई कहानियों को प्यार करता है और उनसे सीखता है। जब मैं इनका इस्तेमाल करता था , तो मैं उन लोगों जैसे वेशभूषा बनता जिन्हें मैं चित्रित कर रहा होता था और कहानी को इस तरह बताता था जैसे कि मैं ही इसका अनुभव कर रहा था। आप भी ऐसा कर सकते हैं। या आप कहानी को अपने शब्दों में बता सकते हैं या इसे वैसे ही पढ़ सकते हैं जैसे यह है।

इन्हें बाइबल सबक के रूप में कैसे उपयोग करें

हमारे लिए यीशु के अलावा, परमेश्वर का सबसे बड़ा उपहार है उसका लिखित वचन। इसमें हमारे पास उसकी सारी सच्चाई है और उसके लिए जीने के लिए हमें जो कुछ जानने की जरूरत है वो दर्ज है (2 तीमुथियुस 3:16-17)। इस पुस्तक से सीखना हमारा सौभाग्य और कर्तव्य है। यह जीवन भर के लिए हमारा मार्गदर्शक है। जब हम उसका वचन सीखते हैं, तो हम आत्मिक रूप से ज्ञान और विश्वास में बढ़ते हैं। इसके बिना हम खो जाएंगे। पादरी, चर्च के अगुवा , माता-पिता और सभी मसीही लोग दूसरों को बाइबल सिखाने के लिए जिम्मेदार हैं। ऐसा करना हमारे लिए खुशी और सम्मान की बात है। उसके वचन के ज्ञान से बड़ा कोई उपहार नहीं है जिसे हम अपने बच्चों सहित दूसरों को दे सकते हैं। लेकिन कई बार, हम यह नहीं जानते कि यह अछे ढंग से कैसे करना है।

हम उपदेशों को सुनकर बाइबल सीखते हैं, पर व्यक्तिगत या सामूहिक बाइबल अध्ययन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बाइबल अध्ययन में बातचीत, प्रश्न और उत्तर, विचारविमर्श शामिल होते है। आमतौर पर इसमें अधिक से अधिक सहभागिता और व्यक्तिगत अनुप्रयोग होते है। यह दूसरों को यह सिखाने का भी एक तरीका है कि बाइबल का अध्ययन कैसे करने है। इसमें सहभागिता और व्यक्तिगत प्रोत्साहन भी होता है। बुद्धि परमेश्वर के वचन को जानने के द्वारा आती है (नीतिवचन 2:9-11)। बाइबल अध्ययन से यह सब कुछ और बहुत कुछ पूरा हो सकता है।

इस पुस्तक के इस भाग का उद्देश्य है ,बच्चों, युवाओं और वयस्कों को बाइबल अध्ययन सिखाने में, आपकी मदद करना। यीशु के जीवन के बारे में ऐसी कहानियाँ हैं जिनका उपयोग किसी भी उम्र के लोगों के साथ किया जा सकता है। पृष्ठभूमि का अध्ययन आपके लिए किया गया है, इसलिए अंत में उपयोग करने के लिए अबुप्रयोग प्रशन हैं। यह सबक व्यक्तिगत रूप से या एक श्रृंखला के भाग के रूप में पढ़ाए जा सकते है।

प्रत्येक सबक के अंत में ऐसे प्रशन होते हैं जिनका उपयोग उन्होंने जो सीखा उसकी समीक्षा करने के लिए किया जा सकता है, उन्हें अधिक सीखने में मदद करने के लिए, विचारविमर्श करने के लिए, उन्हें प्रशन पूछने और सामग्री को अपने जीवन में लागू करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक की

मदद के लिए प्रशन के बाद उत्तर दिए जाते हैं, लेकिन जिन लोगों को आप पढ़ा रहे हैं, उनसे पहले प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहें।

बाइबल का अध्ययन कैसे करें, इस बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक "बाइबल का अध्ययन" पढ़े । अपने स्वयं के बाइबल अध्ययन सबकों को विकसित करने में आपकी मदद करने के लिए, मेरी पुस्तक, "बाइबल का प्रचार करना और सिखाना" का उपयोग करें। वे https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/ पर मिल सकते हैं या आप मुझे Jerry@ChristianTrainingOrganization.org पर ईमेल कर सकते हैं और मैं आपको रिटर्न ईमेल द्वारा एक पीडीएफ कॉपी भेजूंगा।

बहुत छोटे बच्चों को बाइबल पढ़ाना (उम्र 2-5)

परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम अपने बच्चों को उसका वचन सिखाए   (भजन 78:1-6)। यह पूरे दिन में किया जाना चाहिए जैसे मौका मिलता है (व्यवस्थाविवरण 6:5-7; 11:18-19)। इसे नियोजित बाइबल अध्ययनों के रूप में भी किया जाना है, या तो आमने-सामने या समूह के साथ।

यीशु ने अपनी सेवकाई का एक बड़ा भाग बच्चों पर केन्द्रित किया। उसने उनकी परवाह की (मत्ती 19:13-15; लूका 18:15-17; मरकुस 10:13-16)। उसने उन्हें उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया (मत्ती 8:1-6; मरकुस 9:33-37) और उनके लिए चमत्कार किए (मरकुस 5:21-42; मत्ती 15:21-28; 17:14-22; लूका 7:11) -16)। वह उन्हें वैसे ही सिखाता जैसे वह वयस्कों को सिखाता था।

बच्चे सीखने के लिए उत्सुक होते हैं और सीखने में तेज होते हैं। वयस्कों की तुलना में उन्हें पढ़ाना अक्सर आसान होता है, जो शायद नए सत्य के प्रति उतने खुले नहीं होते हैं । बच्चों के लिए निम्नलिखित बाइबल अध्ययनों का उपयोग किया जा सकता है। प्रतेक बाइबल में किसी ना किसीका प्रथम विवरण है। शिक्षक सबक को कहानी के रूप में पढ़ सकता है। वह ऐसे ही पोशाक पहन सकते हैं और व्यक्ति व्होही ने का दिखावा कर सकते हैं, या केवल सामग्री सीख सकते हैं और इसे एक व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

3 साल या उससे कम उम्र के बच्चों के लिए, उनके लिए जो यीशु के प्रेम है उस पर ध्यान केंद्रित करें। याद रखें कि उनके पास बहुत कम रूचि समर्थ और सीमित शब्दावली है। वे प्रतीकवाद या मसीही शब्दावली को नहीं समझते हैं, इसलिए चीजों को स्पष्ट और सरल बनाएं। दोहराने का उपयोग करें, गाने सिखाएं और उनकी रुचि बनाए रखने के लिए कई तरह की क्रियाएं करें।

उपयुक्त सबक विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए (उम्र 6-8)

जब बच्चे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो उनकी सीखने और शब्दावली में इजाफा   होता है। उन्हें अभी भी गाने और कलाकारी पसंद होती हैं, इसलिए जब भी संभव हो इनका उपयोग करें। सुनिश्चित करें कि आप उनसे बहुत अधिक की उम्मीद नहीं करते हैं, बस इसे सरल रखें और सुनिश्चित करें कि वे इसे मज़े में करते हैं । सरल कहानियों को सिखाने के लिए सरल शब्दों का प्रयोग करें। किसी भी अन्य तरीके से बेहतर, वे कहानियों से सीखते हैं। वे चिन्ह और निशान नहीं समझते हैं, इसलिए उनके लिए बाइबल की सच्चाई को स्पष्ट करें। इसे समझाने के लिए उदाहरणों और कहानियों का प्रयोग करें। वे जो सीख रहे हैं

उन्हें इसका एक चित्र बनाने के लिए कहें, इससे उन्हें समझने और याद रखने में मदद मिलेगी और उनका ध्यान अधिक समय तक उसमे बना रहेगा। उन्हें प्रार्थना करना सिखाएं ताकि वे स्वयं यीशु का धन्यवाद कर सकें। उन्हें प्यार करें और उन्हें खुश रखे, और वे बहुत अच्छी प्रतिक्रिया देंगे।

उपयुक्त सबक विशेष रूप से बड़े बच्चों के लिए (उम्र 9-12)

बड़े बच्चे बेहतर ढंग से सीखने में सक्षम होते हैं, लेकिन फिर भी सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब इसमें क्रियाएं , दृश्य और कहानियां शामिल हों। उनसे यह देखने के लिए प्रशन पूछें कि क्या वे आपकी बात को समझ रहे हैं। प्रशन उन्हें यह सोचने के लिए भी प्रेरित करते हैं कि आप क्या पढ़ा रहे हैं। उन्हें प्रशन पूछने के ढेर सारे अवसर दें, क्योंकि यह उनके लिए सीखने में मदद करने का एक शानदार तरीका होता है। सुनिश्चित करें कि आप सबक को सरल और बच्चों की आयु के अनुसार रखते हैं। उन चीजों के बारे में बात करें जो वे समझते हैं और जो उनके जीवन में महत्वपूर्ण हैं: जैसे कि परिवार, दोस्त, स्कूल, आज्ञाकारिता, आदि। वे भी उन्हीं समस्याओं का सामना करते हैं जिनका हम सामना करते हैं: भय, क्रोध, लालच, आलसीपन , निराशा और आत्म-केंद्रितता। अपने सबक को उस पर आधारित करें जिसका वे अपनी आयु के अनुसार सामना कर रहे हैं।

युवाओं और वयस्कों को बाइबल सिखाना

युवाओं और वयस्कों को सिखाते समय, उन लोगों की ज़रूरतों पर ध्यान देना याद रखें, जिन्हें आप सिखा रहे हैं। अध्ययन को उनके जीवन पर आधारित करें ताकि वे रुचि बनाए रखें, ताकि जो सिखाया जाता है वह उसे याद रखें और इसे अपने दैनिक जीवन में उपयोग करें। अपने आप को एक तीरंदाज के रूप में

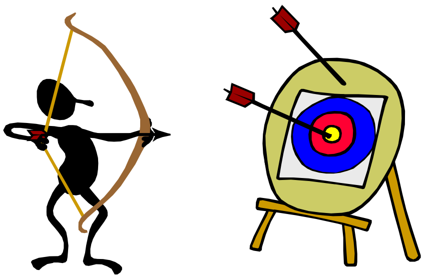

सोचें जो आपके तीर को आपके लक्ष्य पर लगा रहा है। आपका लक्ष्य उन लोगों की जरूरतों को पूरा करना है जिन्हें आप सिखा रहे हैं। प्रत्येक अध्ययन में एक आवश्यकता पर ध्यान दें। एक साथ बहुत सारे विषयों को कवर करने की कोशिश करने से भ्रम पैदा होता है और वास्तव में कुछ भी नहीं सिखा जाता है। जिन्हें आप सिखाते हैं उन्हें जानें और अपने बाइबल अध्ययन को उन पर और उनकी ज़रूरतों पर केंद्रित करें।

बाइबल अध्ययन तीर आपका है, यह वह सच्चाई जो आप चाहते हैं कि वे जानें और याद रखें। अपने आप से पूछें, "यदि यीशु इस बाइबल अध्ययन का नेतृत्व कर रहा होता , तो वह क्या कहता ?" "उनके जीवन की किन जरूरतों को वह संबोधित करता?" "वह कैसे सिखाता?" वह कभी भी ना डांटता, ना क्रोधित होता और ना बेसभर होता। वह हमेशा उन्हें प्रोत्साहित करता और जो कुछ वे सीखते उसके लिए उनकी सराहना करता ।

यह धनुष ही है जो तीर को लक्ष्य की ओर ले जाता है। धनुष उन विधियों को दर्शाता है जिनका उपयोग आप बाइबल अध्ययन सिखाने के लिए करते हैं। इस पुस्तक के शेष भाग में ऐसे सबक हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हैं। मैंने शोध कीया है; आपको बस इतना करना है कि इसका संचार करना है । मैंने सबक को ऐसे लिखा है जैसे कि अध्ययन का विशेष व्यक्ति कहानी सुना रहा है, इसलिए आप इसे अपने छात्रों के लिए ऐसे ही पढ़ सकते हैं जैसे मैंने इसे लिखा है। आप इसे जहां चाहें वहां जोड़ सकते हैं। आप

यीशू का जीवन		
घटना	**विषय**	**धर्मशास्त्र**
1. यहुना का जन्म होना	परमेश्वर में भरोसा	जकरिया- लूका 1:5-25 इलिशबा- लूका 1:57-80
2. यीशू के जन्म की घोषणा	परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना	मरीयम – लूका 1:26-38 यूसफ – मत्ती 1:18-25
3. यीशू का जन्म होना	परमेश्वर का मनुष्य बनना	लूका 2:1-20
4. मजूसिओं का भेटें पेश करना	भेटों के साथ यीशू की आराधना करते है	मत्ती 2:1-18
5. यहुना बपतिस्मा देने वाला	यीशू के लिए गवाही देता है	मत्ती 3:1-12; 4:1-12 मरकुस 1:1-8,14; 6:14-29 लूका 3:1-18; 9:7-9
6. यीशू का बपतिस्मा	बपतिस्मा दर्शता है की हम यीशू को प्यार करते हैं	मत्ती 3:13-17 मरकुस 1:9-11,Luke 3:21-23
7. यीशू की परीक्षा	परीक्षा	मत्ती 4:1-11 मरकुस 1:12-13 लूका 4:1-13
8. निकोदीम्स	दूसरा जन्म	यहुना 2:23 – 3:21
9. यीशू के शिष्य	शिष्यत्व	मत्ती 4:18-22; 9:9-13; 10:24-42; 16:24-28 मरकुस 1:16-20; 3:13-19 लूका 5:10-11; 6:12-16 यहुना 1:19-51
10. समुन्द्र पर चमत्कार	चमत्कार – यीशू लोगों की फिक्र करता है	मरकुस 4:35 – 5:43 लूका 8:22-48
11. लोगों को खाना खिलाना	यीशू छोटे बच्चो का उपयोग करता है	5000 को-मत्ती 14:13-21; Mark 6:30-44; Luke 9:10-17 4000 को-Mt 15:32-38; Mark 8:1-9
12. यीशू कर रूपान्तार्ण	यीशू परमेश्वर है	मत्ती 17:1-8 मरकुस 9:2-8

		लूका 9:28-36
13. मरियम, मारथा और लाज़र	यीशू को सुनते है	लूका 10:38-42 यहुना 11:1-44 यहुना 12:1-11
14. आंसू-भरा प्रवेश	यीशू राजा है	मत्ती 21:1-17 मरकुस 11:1-11 लूका 19:29-44 यहुना 12:12-19
15. यीशू का आखरी भोजन	यीशू जानता है की वह म्हारे लिए मरेगा	मत्ती 26:17-30 मरकुस 14:12-26 लूका 22:7-38 यहुना 13:1 – 14:31
16. ग्रिफ्तारी और पेशी	जब अनुचित काम होते हैं	मत्ती 26:47 – 27:26 मरकुस 14:43 – 15:15 लूका 22:47 – 23:25 यहुना 18:2 – 19:16
17. सलीब दिया जाना	यीशू हमारा पापों के लिए मरता है	मत्ती 27:31-66 मरकुस 15:20-47 लूका 23:26-56 यहुना 19:16-42
18. जिन्दा हो जाना	यीशू और हमारा आनंत जीवन	मत्ती 28:1-10 मरकुस 16:1-14 लूका 24:1-49 यहुना 20:1-20
19. असमान पर उठाये जाना	हम एक दिन स्वर्ग जायेगे	मरकुस 16:19-20 लूका 24:50-53 प्रेरितों के काम 1:3-14

बाइबल की पोशाक भी पहन सकते हैं और दिखावा कर सकते हैं कि आप बात करने वाले व्यक्ति हैं। यह वास्तव में श्रोताओं के लिए सबक को जीवंत बनाने में मदद कर सकता है। अध्ययन को रोचक बनाएं। इसे साथ साथ बना रहने दें। अध्ययन का नेतृत्व करते समय अपने विद्यार्थिओं से आँख का सम्पर्क बनाये रखें।

सबक के मुख्य बिंदुओं को दृष्टांतों, या कहानियों द्वारा समझाया जा सकता है। यीशु दृष्टांतों का इस्तेमाल करता था ताकि लोगों को सीखने में मदद मिल सके। नाथान ने दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया जिसकी एकमात्र भेड़ भी ले ली गई थी (2 शमूएल 12:1-12)। महत्वपूर्ण सत्यों को समझाने के लिए वस्तुओं का उपयोग करना भी महत्वपूर्ण होता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ता आध्यात्मिक सत्य को देखने के लिए मिट्टी, मिट्टी के बर्तनों, एक कमरबंद/पेटी और अन्य वस्तुओं का उपयोग करते थे । हमें भी अपने शिक्षण में ऐसा ही करना चाहिए।

एक और याद रखने वाली बात यह है कि हर कोई एक जैसा नहीं सीखता। कुछ लोग जो सुनते हैं उसे याद करते हैं। अगर कुछ जोर से कहा जाता है, तो वे उसे समझ सकते हैं। हालांकि, दूसरों को वास्तव में इस पे पकड़ बनाने के लिए कुछ देखने की जरूरत होती है। दृश्य, भौतिक सबक , चित्र या मानचित्र उनकी बहुत मदद कर सकते हैं। फिर कुछ और लोग भी हैं जो सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे अपने लिए कुछ करते हैं। विद्यार्थियों को किसी व्यक्ति या घटना के रूप में अभिनय करने के लिए कहना भी उनके लिए मददगार साबित हो सकता है । गीत गाना, कुछ ज़ोर से समझाना, ज़ोर से पढ़ना, नोट्स लेना, चित्र बनाना या चित्र को रंगना या कलाकरी बनाना सीखने को प्रबल बनाने में लाभकारी हो सकता है ।

यदि आपके पास कोई प्रशन या टिप्पणी हैं, तो कृपया मुझसे यहां संपर्क करें

Jerry@ChristianTrainingOrganization.org

1. यहुना का जन्म

(लूका 1:5-25, 57-80)

जोर आवाज़ से पढ़ें: लूका 1:57-66

द्वारा: जकर्याह

"देख, मैं अपने दूत को भेजूंगा, जो मेरे आगे आगे मार्ग तैयार करेगा। तब यहोवा जिसे तू ढूंढ़ रहा है, वह एकाएक अपने मन्दिर में आएगा; वाचा का दूत, जिसे तू चाहता है, आ जाएगा," सर्वशक्तिमान यहोवा की यही वाणी है। "देख, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले मैं एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को तेरे पास भेजूंगा। वह पितरों का मन उनकी सन्तान की ओर, और पुत्रों के मन को उनके पितरों की ओर फेर देगा; नहीं तो मैं आकर एक अभिशाप के साथ भूमि को मारूंगा।" (मलाकी 3:1; 4:5-6)

इन शब्दों के साथ पुराना नियम समाप्त हो गया। 400 साल तक मौन के अलावा कुछ भी नहीं था। कई लोगों ने सोचा कि परमेश्वर इस्राएल से किए गए अपने वादों को भूल गया है, लेकिन सभी ने ऐसा नहीं सोचा था। मेरे माता-पिता अब भी मानते थे। उन्होंने मेरा नाम जकरिया रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर याद करता है।" मेरी पत्नी का नाम , इलीशिबा रखा गया जिसका अर्थ है "परमेश्वर की प्रतिज्ञा"। उसके माता-पिता भी मानते थे। उन्होंने हमारे साथ अपना विश्वास पारित किया। हमें उस सारे विश्वास की ज़रूरत थी जो हमें मिल सकता था, क्योंकि जब हम निःसंतान थे तब परमेश्वर पर भरोसा करना आसान नहीं था। दूसरे लोग सोचते थे कि यह हमारे साथ परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रमाण है। अगर मेरे ऊपर परमेश्वर की अस्वीकृति की मुहर लगी होती तो मैं एक याजक और रब्बी के रूप में उनकी सेवा कैसे कर सकता था? ओह, निश्चित रूप से, हमने वर्षों तक एक बच्चे के लिए प्रार्थना पर प्रार्थना करते रहे लेकिन कुछ भी नहीं बदला। तब सबसे अविश्वसनीय बात हुई (लूका 1:5-10)।

याजकों का समूह, जिसका मैं हिस्सा था, वर्ष के 8वें महीने के दौरान यरूशलेम के मंदिर में सेवा करता था। शेष वर्ष हमने अपने स्थानीय समुदायों में सेवा की। उस दिन का सबसे महत्वपूर्ण काम यह था जब एक याजक को पवित्र स्थान में जाने के लिए चुना गया था कि वह दीवट पर बत्ती को काटे और सोने की वेदी पर धूप छिड़के। हम में से एक को भोर में जाने के लिए और दूसरे को दोपहर में जाने के लिए चुना गया था, जो दोनों में अधिक विशेष था। इसके लिए चुना जाना जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर था। कई याजकों को कभी मौका ही नहीं मिला था । मुझे अपने सभी वर्षों की सेवा में ऐसा करने का सौभाग्य कभी नहीं मिला था।

फिर एक दिन कुरा मुझ पर गिर गया! (पर्ची मेरे नाम से निकली) मैं खुशी से झूम उठा। मैं भी शांत था, क्योंकि मुझे याद था कि यदि यह मेरे लिए परमेश्वर की कृपा और दया के लिए नहीं होता, तो मैं उनकी उपस्थिति के निकट आने के लिए मर सकता था। पहले तो सब ठीक हो गया, लेकिन फिर जैसे ही मैं धूप की वेदी पर राष्ट्र की प्रार्थना कर रहा था, अचानक वहाँ एक महान, अद्भुत व्यक्ति आ खड़ा हुआ जो मुझसे बात कर रहा था! मैं डर गया था, यह सोचकर कि मेरी मौत हो गई। फिर यह जाहिर हुआ कि यह जिब्राईल था (लूका 1:11-17)।

"आपकी प्रार्थना सुन ली गई है" मुझे बताया गया था। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि वह किस बारे में बात कर रहा है। फिर मुझे याद आया : बच्चा! मैंने 20 साल पहले उसके लिए प्रार्थना करना बंद कर

दिया था जब इलिशबा बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढी हो गई थी। हलाकि, मुझे नहीं लगता कि उसने कुछ साल पहले तक बच्चे के लिए प्रार्थना करना बंद कर दिया होगा ।

अब मैं सुन रहा था कि हमें एक बच्चा मिलने वाला है , एक बेटा किसी से कम नहीं। मैंने सोचा था कि मेरी कई प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर का जवाब था "नहीं" लेकिन मुझे यह पता चला कि यह वास्तव में "रुको" प्रतीक्षा करो। और तो और, यह पुत्र वही होना था जिसने मसीहा के आगे आगे जाना था , और सभी को उसके आने के लिए तैयार होने के लिए कहने था। फिर भी, इस सारी खुशखबरी के बावजूद, मेरे अंदर बहुत सारी अनसुलझी कड़वाहट और आत्म-दया थी क्योंकि परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने में कितनी देर कर दी थी। अब जब हम बूढ़े हो गए हैं तो परमेश्वर यह अद्भुत काम करने जा रहा है। पहले क्यों नहीं कीया ? जब हम जवान थे तो क्या वह हमें एक बेटा नहीं दे सकता था , तो अब वह यह कैसे कर सकता है जब हमारे शरीर बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हो गए हैं? क्योंकि मैंने अपने भाषण का उपयोग परमेश्वर से प्रशन करने के लिए किया था, उसने मेरी बात करने की क्षमता को छीन लिया (लूका 1:18-20)।

जब तक यह वाद-विवाद /बातचीत समाप्त हुई और मैं वापस बाहर गया, लोग हैरान हो रहे थे कि यह क्या हो रहा है (लूका 1:21-22)। मैं उन्हें बर्खास्त करने का आशीर्वाद भी नहीं दे सका। मुझे बस उन्हें वहां से हट जाने के लिए इशारा करना पड़ा था। जब यरूशलेम में मेरी सेवा का समय समाप्त हुआ, तो मैं घर वापस चला गया (लूका 1:23)।

जब मैं घर पहुंचा तो मैं भावुक हो गया था: खुशी और उत्साह, लेकिन मेरे संदेह के कारण अपराध-बोझ और पश्चाताप भी। इलीशिबा ने केवल आनन्द का अनुभव किया (लूका 1:24-25)।

अगले कई महीने मैंने बैठकर सोचने में बिताए। मैं बात नहीं कर सकता था, मैं सेवा नहीं कर सकता था, मैं यह भी नहीं बता सकता था कि मंदिर में मेरे साथ ऐसा कब हुआ था। मैंने इसे इलिशबा के लिए लिखा और उसने सभी को बताया। मेरे पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के लिए उसका विश्वासयोग्य होने के बारे में सोचने के लिए बहुत समय था, जैसे कि यशायाह 49:14-15: "क्या एक माँ अपने दूध पिलाने वाले बच्चे को भूल सकती है और कि वह अपने बच्चे पर दया ना करे ? हालाँकि वह भूल सकती है, मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा!"

पहले महीने इतने बुरे नहीं थे। तब मरियम मिलने आई और इलीशिबा को इस तरह कोई मिल गया जिस से वह बात कर सकती थी। अंत में, हालांकि, यह लंबा हो गया! यहूदी महिलाएं गर्भावस्था के अंतिम पांच महीने घर में ही एकांत में रहती थीं, इसलिए उन्हें मिलने या देखने के लिए सब को वहीं आना पड़ता था। महिलाए लगातार आती जाती रहती थी : बात करती और हंसती हसती रहती थी। मैंने एक हजार जन्म कहानियां सुनीं, जिनमें से प्रत्येक इससे पहले की तुलना में अधिक गंभीर थी। हर दर्द और तकलीफ का विश्लेषण किया गया। वो सब, टखनों में सूजन, पेट खराब, झुक नहीं सकती अदि के बारे में बात करती थी - आपको लगता होगा कि यह पहली बार था जब कोई महिला गर्भवती हुई थी! इससे भी बुरी बात यह है कि मैं कुछ नहीं कर सकता था, लेकिन बस वहां बैठकर सब कुछ सुन ही सकता था! इलीशिबा को सभी को बताना था कि परमेश्वर ने क्या कहा था। उस साल आपने बगीचे में काम करने के लिए मुझे बहुत कुछ मिला - वास्तव में यह मेरे पास अब तक का सबसे अच्छा रखा हुआ बगीचा था।

अंदर ही अंदर , हालांकि, मैं वास्तव में उसके लिए और अपने लिए रोमांचित था। बस सोचने के लिए -- मेरा सच में एक बेटा होगा !!! मैं अक्सर अब्राहाम के बारे में सोचता था, जिसके अपने संदेह के बावजूद भी उसके बुढ़ापे में परमेश्वर से एक विशेष पुत्र प्राप्त हुआ। मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर हमारी

प्रार्थनाओं का जवाब देता है लेकिन अपने समय में, हमारे समय में नहीं। देरी होने का मतलब इनकार नहीं होता है। मैंने परमेश्वर के उत्तरों को अपने तरीके से सीखा। हमें समस्या की प्रार्थना करनी है, समाधान बताने की नहीं। मैंने सीखा कि वह अपनी शक्ति में उत्तर देता है: यही एकमात्र तरीका है जिससे उसे महिमा मिलती है। एकमात्र व्यक्ति जिससे मैं बात कर सकता था, वह था परमेश्वर, और मैंने बहुत बात की !

फिर वह दिन आया जब मेरे पुत्र का जन्म हुआ (लूका 1:57-58)। मैंने इतनी उत्साहित महिलाओं का झुंड कभी नहीं देखा! हालांकि, मुझे लगता है कि मैं उनसे भी ज्यादा उत्साहित था। यीशु के अलावा नए नियम में एकमात्र मेरे बेटे का जन्म दर्ज था। उसके जन्म के बाद का पूरा पहला हफ्ता लगातार उत्सव जैसा था। हर हरकत, हर खांसी, हर सहवास, हर भरा हुआ डायपर एक बड़ी घटना थी!

फिर यूहन्ना के जन्म के 8वें दिन, लड़के के खतने का दिन आया। परंपराओं के विपरीत, मैंने अपने नाम पर बच्चे का नाम जकारिया नहीं रखा। यह लगभग वैसा ही था जैसे मैं उसके पिता होने का दावा नहीं कर रहा था। ऐसा नहीं था, यह सिर्फ इस लिए था कि मेरे ऊपर उसका एक पिता था, जिसने पहले ही उसका नाम चुन रखा था (लूका 1:59-66)। "उसका नाम यहुना है" मैंने लिखा। 'यहुना ' का अर्थ है 'प्रभु दयालु है,' और वास्तव में वह है! आज्ञाकारिता के उस कार्य के तुरंत बाद परमेश्वर ने मेरी मूर्खता को हटा दिया और मैं बात करने लगा । मेरे पहले शब्द परमेश्वर की स्तुति के शब्द थे , जिनका पिछले नौ महीनों से मेरे ह्रदय में निर्माण हो रहा था (लूका 1:68-79)। मैं उस्की परवरिश करने के विशेषाधिकार और जिम्मेदारी से चकित और नम्र था,जो मसीहा का अग्रदूत होगा । क्या ही आशीष है!

वह छोटा बच्चा हमारे घर के साथ-साथ हमारे पूरे गांव में आने वाले कुछ समय के लिए ध्यान का केंद्र और बातचीत का मुख्य विषय बन गया था। मुझे नहीं लगता कि इससे ज्यादा प्यार किया जाने वाला कोई और बच्चा था! कितनी खुशी थी। हमें फिर से जवानी जैसा महसूस हो रहा था ! हम जानते थे कि हमारी बड़ी उम्र के कारण हमारे पास उसके साथ रहने के लिए बहुत साल नहीं होंगे, लेकिन परमेश्वर ने आशीश दी और हमारे हर हर मिनट का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने हमें काफी देर तक जीवित रखा ताकि वह परमेश्वर के लिए विश्वास और प्रेम में बढ़े, और यही हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण था (लूका 1:80)।

जहाँ तक मेरा सवाल है , मैंने फिर परमेश्वर पर कभी संदेह नहीं किया। मैं जानता था कि वह भी जानता था कि वह क्या कर रहा है। परमेश्वर ने मेरे छोटे विश्वास का इस्तेमाल किया और इसे बढ़ने में मदद की। मैंने अपनी उम्र के बावजूद उस्की परवरिश करने में मदद करने के उसके वादों पर भरोसा किया। आप भी अपने जीवन में परमेश्वर के वादों पर भरोसा कर सकते हैं। आप सामर्थ के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं (व्यवस्थाविवरण 33:25; यशायाह 40:29), विश्राम के लिए (मत्ती 11:28), पाप पर विजय पाने के लिए (1 कोर 10:13), पाप की क्षमा के लिए (रोमियों 8:1; 1 यूहन्ना 1:) 9) और शांति के लिए (भजन 118:6; 23:4; यशायाह 41:10)। परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। परमेश्वर भरोसे के योग्य है। उसे परखे और देखें !

छोटे बच्चों के साथ उपयोग के लिए: यहुना के जन्म की कहानी बताएं और समझाएं कि परमेश्वर हर बच्चे को जन्म से पहले कैसे बनाता है। वह उन्हें प्यार करने और उनका पालन-पोषण करने के लिए सही परिवार में सही बच्चे को रखता है। बच्चों को बताएं कि भगवान ने उन्हें अपने परिवार में रहने के लिए चुना है। उसने उन्हें प्यार करने और उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए माता-पिता दिए।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: इस बात पर ध्यान दें कि परमेश्वर प्रत्येक बच्चे के जन्म से पहले उसकी योजना कैसे बनाता है। वह चुनता है कि वे लड़के होंगे या लड़कीयां , लम्बे या छोटे, वे कैसे दिखेंगे और उनका कौशल क्या होगा। वह उन्हें उस परिवार में रखता है जो वह उनकी परवरिश और प्रशिक्षित करना चाहता है, इसलिए अपने माता-पिता पर भरोसा करें और उनकी आज्ञा का पालन करें। या आप उसके वचन पर संदेह करने के बजाय परमेश्वर पर विश्वास करने और उस पर भरोसा करने के महत्व के बारे में बात कर सकते हैं।

1. यहुना का जन्म

उत्तर देने के लिए प्रशन

जब जिब्राईल उसे दिखाई दिया, तब जकर्याह कहाँ था?

यरूशलेम में पवित्र स्थान में धूप की वेदी के सामने मंदिर में।

वह वहाँ क्यों था? वह क्या कर रहा था?

वह सोने की वेदी पर धूप चढ़ा रहा था। धूप का धुवां, परमेश्वर के पास जा रही प्रार्थनाओं की एक तस्वीर है।

क्यों परमेश्वर ने इलीशिबा और जकर्याह को कोई संतान नहीं दी थी ?

शायद उनके विश्वास को बढ़ाने के लिए, कठिन समय में भी उन्हें उस पर भरोसा करने के लिए।

तब तक उनको बच्चे देने का उसका समय नहीं आया था।

क्यों परमेश्वर हमें वह सब कुछ नहीं देते जो हम चाहते हैं जब हम चाहते हैं?

वह चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें और धैर्यपूर्वक उसके समय की प्रतीक्षा करें।

जकर्याह ने परमेश्वर के वादे पर संदेह क्यों किया?

वह और इलिशबा बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके थे और उसने विश्वास खो दिया था कि परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं।

परमेश्वर के कुछ वादों के नाम बताइए:

यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कोई घटी ना होगी। वह मुझे हरी चराइयों में ले जाता है, वह मुझे निर्मल पानी के पास ले जाता है, वह मेरी आत्मा को पुनर्स्थापित करता है। वह अपने नाम के निमित्त नेकी के मार्ग में मेरी अगुवाई करता है। भजन सहिता 23:1-3

परन्तु पहिले उसके राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें दी जाएंगी। मत्ती । 6:33

और मेरा परमेश्वर अपनी महिमा के धन के अनुसार जो मसीह यीशु में है, तेरी सब आवश्यकताओं को पूरा करेगा। फिलपियों . 4:19

मैं तुम्हें कभी ना छोड़ूंगा और ना तुम्हें कभी त्यागूगा । इब्रानियों 13:5

परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल पाएंगे । वे उकाबों के समान पंखों पर चढ़ेंगे; वे दौड़ेंगे और थकेंगे नहीं; वे चलेंगे और मूर्छित ना होंगे। यश्याह 40:31

उसके जरिए मैं सब कुछ कर सकता हूं , जो मुझे शक्ति देता है।

फिलपियो 4:13

मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी शक्ति निर्बलता में सिद्ध होती है। 2 कुरंथियों 12:9

पूरे मन से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा ना लेना; अपने सब कामों में उसको मान ले , तब वह तेरे मार्ग को सीधा करेगा। नीतिवचन 3:5-6

चाहे मैं मृत्यु की छाया की तराई में होकर चलता हूं, तौभी मैं किसी विपत्ति से ना डरूंगा, क्योंकि तू मेरे संग है; तेरी सोटी और लाठी, वे मुझे दिलासा देते हैं। भजन सहिता 23:4

क्या हम हमेशा उन पर विश्वास ही करते हैं या कभी-कभी हम उन पर भी संदेह भी करते हैं?

हमेशा विश्वास करना सबसे अच्छा है लेकिन कभी-कभी हम भी परमेश्वर पर संदेह करते हैं।

आपको अभी किस बात के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने में कठिनाई हो रही है?

(स्वास्थ्य, वित्त, मित्र, स्कूल, आदि)

इस समय में परमेश्वर के कौन से वादे आपकी मदद कर सकते हैं?

(जवाब अलग होंगे)

2. यीशु के जन्म की घोषणा

(लूका 1:26-38; मत्ती 1:128-25)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 1:18-25

जिब्राईल द्वारा, मरियम द्वारा और यूसफ द्वारा

इस सबक के साथ उपयोग करने के लिए कई कहानियाँ हैं। आप उन सभी का उपयोग कर सकते हैं या जो आप उपयोग करना चाहते हैं उसे चुन सकते हैं। आप इस सबक को एक सप्ताह से अधिक समय तक भी चला सकते हैं।

जिब्राईल द्वारा

"डरो मत!" इस तरह मैं इंसानों के साथ अपनी बातचीत शुरू करता हूं। जब कभी मैं स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होता हूं तो लोग डर जाते हैं, इतने भयभीत होते हैं कि वे शायद ही बोल पाते हैं। वे मानते हैं कि मैं न्याय दण्ड लेकर आया हूँ। क्या उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि स्वर्गदूत केवल उन्हीं को दिखाई देते हैं जिन्होंने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कीया है? क्या उन्हें याद नहीं है कि जो लोग यीशु के हैं, उन्हें परमेश्वर के न्याय से कभी भी नहीं डरना पड़ेगा (रोमियों 8:1)?

मेरा नाम जिब्राईल है। मैं प्रभु की हाजूरी से आया हूं। जब हम स्वयं को मनुष्यों के बीच प्रकट करते हैं, तो हम स्वयं को एक मनुष्य का रूप धारण कर लेते हैं ताकि हम गुप्त में कार्य करने में सक्षम हो सकें और आप यह भी ना जान सकें कि हम कौन हैं (इब्रानियों 13:2: उत्पत्ति 18:2-10; 19 :1)। वैसे, मैंने आपके द्वारा बनाए गए कुछ चित्रों को देखा है जिसमें आप लोग हमें एक बच्चे, स्त्री रूप, कोमल और शांत रूप में देखते हैं ! हम बाहुबली हैं , जो परमेश्वर की सेना के शक्तिशाली सैनिक हैं ! हम राक्षसों से लड़ते हैं!

हम दूत हैं - यूनानी भाषा का शब्द 'एंजेल' का वास्तव में यही अर्थ है। हम धरती पर परमेश्वर के लोगों की मदद करने और उनकी रक्षा करने के लिए आते हैं, खासकर शैतान के राक्षसों और उनके हमलों से। हम हमेशा आपके आस-पास होते हैं, आपको देख रहे होते हैं - लेकिन आप हमें नहीं देख सकते हैं! हमारा उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है, अपनी महिमा नहीं। परमेश्वर को छोड़ अगर कोई हमारी महिमा करता है या हम पर ध्यान केन्द्रित करता है तो वह सरा - सर गलत है । आखिर कौन ऐसा होगा जो आपने उपहार देने वाले का धन्यवाद ना करके जिसने दस लाख रुपए का तोफा भेजा हो वो डाकिये की महिमा करेगा जिस ने आप तक लिफाफा पहुचाया हो ? सारी महिमा परमेश्वर को मिलती है, हम तो बस उसकी सेवा कर रहे हैं, जैसे आप करते हैं।

परमेश्वर ने हमें सबसे पहले बनाया, फिर हमने उसे 6 दिनों में पुरे ब्रह्मांड का निर्माण करते देखा - तब से हम उसकी प्रशंसा करना और उसकी आराधना करते आ रहें हैं इस लिए कि जो वह है और जो उसने कीया है (और कर भी रहा है)।

परमेश्वर ने हमें अरबों -खरबों की गिनती में बनाया (इब्रानियों 12:22; प्रकाशितवाक्य 5:1)। हम वे लोग नहीं हैं जो मर चुके हैं। हम इंसानों की तरह हैं जिसमें हमारे पास मन, इच्छा और भावनाएं हैं। हम एक

समय में केवल एक ही स्थान पर हो सकते हैं और हमारे पास सारा ज्ञान या शक्ति नहीं है, केवल वही है जो हमें परमेश्वर से मिलता है। हालांकि, जैसे आप है उसके विपरीत, हम एक भौतिक शरीर तक सीमित नहीं हैं। हम सभी पुरुष तो हैं पर प्रजनन नहीं करते हैं और हमारे पास अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने का केवल एक बार का मौका ही था। वह तब था जब लूसिफर (जिसे अब शैतान कहा जाता है), परमेश्वर का बनाया सबसे बड़ा स्वर्गदूत, परमेश्वर के अधीन होने के विरूद्ध विद्रोह करने लगा और अपने घमंड और विद्रोह में परमेश्वर की शक्ति को चुनौती दे बैठा (यशायाह 14; यहेजकेल 28)। फिर क्या था, उसे तुरंत स्वर्ग से निकाल बाहर कर दिया गया और लगभग 1/3 स्वर्गदूटन को भी जो उसके कहने में आ गए थे (प्रकाशितवाक्य 12:4)। अब उन्हें राक्षस कहा जाता है मतलब नीचे गिराए हुए स्वर्गदूत।

वे हमारी नकल करते हैं और मानव जाति को गुमराह करने के लिए प्रकाश के स्वर्गदूतों के रूप में कार्य करने की कोशिश करते हैं, और कई बार अपनी झाल्साजी में सफल भी होते हैं! वे परमेश्वर के राज्य का विरोध करते हैं और, अपने नेता शैतान की तरह, चाहते हैं कि लोग उनका अनुसरण करें और उनकी आराधना करें। चूँकि पृथ्वी उनका राज्य क्षेत्र है (आदम ने पाप में पड़ कर इसे शैतान को हाथ में जाने दीया था), वे बहुत सफल हैं। जब कोई परमेश्वर के परिवार में जन्म लेता है, तो वह खुद को शत्रु के इलाके में रहते देखता है, जो कि शैतान के अंधेरे के बीच एक प्रकाश का स्रोत हो जाता है। यही कारण है कि हमें इस अदृश्य शत्रु से जो बेशक केवल परमेश्वर की अनुमति देने पर ही आपको यातना देगा और मार डालेगा, आपकी सहायता और रक्षा करने की आवश्यकता होती है।

बेशक, आप जानते हैं कि इस पृथ्वी और पूरे ब्रह्मांड पर अंततः शासन कौन करेगा, इस बारे में कोई सवाल ही नहीं है। चूँकि परमेश्वर स्वयं एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया जो (यीशु कहलाता है) और उसने शैतान और उसकी सभी ताकतों को वापस जीत लिया, उन्हें पाप के लिए भुगतान करके क्रूस पर हरा दिया और उन सभी राक्षसों पर काबू पा लिया जो उस पर आरोप लगा सकते थे, उनकी अंतिम हार निश्चित है। ब्रह्मांड का वास्तव में महान शासक कौन है, इसका कोई सवाल ही नहीं है। हालाँकि, परमेश्वर अभी भी अंतिम शुदिकर्ण की कारवाई में देरी कर रहा है, जब तक कि वे सभी जो उसके उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार नहीं करेंगे सवीकार नहीं कर लेते। तो सारा नर्क टूट जाएगा!

इस बीच, हमारे मिशन आम तौर पर इस चल रहे बचाव कार्यक्रम से संबंधित कार्यों को रोक रहे हैं। हम एक क्षेत्र में चले जाते हैं और दुश्मन के हस्तक्षेप से संचालन की परिणिति को सुरक्षित करते हैं। एक समय एलीशा का घर दोथान, सीरियाई सेना से घिरा हुआ था। एलीशा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मीकाईल स्वर्गदूत की एक फौजी टुकड़ी को तैनात किया गया था। कमान अधिकारी ने एलीशा को सूचित किया कि हम वहाँ हैं, लेकिन उसके सेवक को यह नहीं पता था और वह घबरा गया था। एलीशा ने हमें आपने आप को प्रगट करने के लिए एक विशेष अनुरोध भेजा, इसलिए हमने आंशिक रूप से आपने आप को जाहिर किया जिससे नौकर बहुत प्रभावित हुआ! (2 राजा 6)

जब हम पृथ्वी पर नहीं लड़ रहे होते हैं तो हम स्वर्ग में सिंहासन पर होते हैं और परमेश्वर की आराधना और स्तुति कर रहे होते हैं (भजन 103:20-22; 148:1-14; प्रकाशितवाक्य 5:11-13; 7:11-12)। हां, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि हम ब्रह्मांड के पुलिसकर्मी हैं, जो परमेश्वर के आदेशों को पूरा कर रहे होते हैं और उन्हें पूरा कर रहे होते हैं और यह सुनिश्चित कर रहे होते हैं कि सभी गिराए हुए स्वर्गदूत भी उनका पालन करते हैं। केवल एक बार जब हम ऐसा करने में असमर्थ हुए वो तब था जब यीशू को सूली पर चढ़ा दिया गया था तब हमें अंधेरे में पीछे रखा गया था ताकि शैतान और उसकी सेनाएँ यीशु को नष्ट करने की पूरी कोशिश कर सकें। वे जानते थे कि उनकी अंतिम जीत या पतन उसे हराने में है - और हम मदद नहीं कर सकते थे ! वह एक बुरा सपना था! परमेश्वर की महिमा, हालांकि,

वह विजयी रहा। उस जीत के कारण, सन्देशवाहक के रूप में, हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं (दानिय्येल 10)। हम प्रार्थना के उत्तर लाते हैं, दुर्घटनाओं को रोकते हैं और विश्वासियों और बच्चों को चोटिल होने से बचाते हैं (जब तक कि परमेश्वर खुद इसकी, केवल उसकी ज्ञात योजना और उद्देश्य के लिए, अनुमति नहीं देता)। जब आप चीजें खो देते हैं तो हम आपको उन्हें खोजने में मदद करते हैं। हम आपसे आगे बढ़ते हैं और आपकी दैनिक गतिविधियों के लिए रास्ता तैयार करते हैं। हम आपको देखते हैं जब आप अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा को क्रियाशील देखने की चाहत रखते हैं , और यह हमें चकित करता है! सच कहूं तो, हम जो स्फ़वर्रिगदूत हैं, आप इंसानों और आपके स्वार्थी पापीपन से, बहुत प्रभावित नहीं हैं। हम यह नहीं समझते हैं कि परमेश्वर आपसे इतना प्यार क्यों करता है, लेकिन आप खुश हो सकते हैं कि वह ऐसा करता है नहीं तो आप कहीं के भी नहीं रहोगे ! क्योंकि जिस तरह से वह आपके साथ व्यवहार करता है, हम परमेश्वर और उसकी दया से बहुत प्रभावित हैं। चूँकि अब हमारे पास स्वतंत्र इच्छा नहीं है, हम उसकी क्षमा और बहाली का अनुभव नहीं कर सकते हैं, इसलिए इसे आपके जीवन में देखना सबसे प्रभावशाली है! मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे कि आपके पास क्या आशीष है, आप पर परमेश्वर के प्रेम और दया के कितना करजाई है! मुझे पता है कि आप इसे तब समझेंगे जब आप इसे हमारे नजरिए से देखेंगे। तब तक....

खैर, कोई बात नहीं -मैं वापस अपनी कहानी पर आता हूँ । मेरा नाम जिब्राईल है, जैसा मैंने कहा। मेरे नाम का अर्थ है "परमेश्वर महान है।" मीकाईल और मैं परमेश्वर के दो सर्वोच्च श्रेणी के स्वर्गदूत हैं। परमेश्वर ने हम सभी को सेना के रूप में जनरलों, कर्नलों, प्रमुखों, आदि के साथ निजी लोगों के रूप में विभाजित किया है। हमें सिंहासन, प्रभुत्व (करूब और सेराफिम), प्रधानताएं और शक्तियां (रोमियों 8:37-39) भी कहा जाता है।

मुझे लोगों के लिए कई विशेष घोषणाएं करने का सौभाग्य मिला हुआ है । मैंने दानिय्येल को परमेश्वर के प्रकाशन की व्याख्या की थी (8:16; 9:21)। मैं मंदिर में जकर्याह को दिखाई दिया था (लूका 1:11-19)। मेरे पास खुशखबरी थी - बुढ़ापे में उसका एक बेटा होगा और वह लड़का आने वाले मसीहा का अग्रदूत होगा। हालाँकि, वह संपर्क इतना अच्छा नहीं चला, क्योंकि उसने मुझ पर विश्वास नहीं था। छह महीने बाद, मैं मरियम नाम की एक युवती को यह बताने के लिए प्रकट हुआ कि उसका एक बेटा, मसीहा होगा, जबकि वह अभी भी कुंवारी ही होगी (लूका 1:26-29)। कुछ ही समय बाद, मैं उसी खबर के साथ उसके पति के पास गया (इससे पहले कि वे एक साथ रहना शुरू कर दें या शादी को पूरा कर लेते) (मत्ती 1:20-21)।

पृथ्वी पर मेरा एक और निर्धारित प्रकटीकर्ण है, और वह है जिसकी मैं उतनी ही इंतजार करता हूँ जितना कि आप करते हैं। मैं अपनी तुरही के साथ इसकी घोषणा करूंगा। आप इसे मेगारोहण(रैप्चुर) कहते हैं। हम इसे अपने   बदले और न्याय का दिन कहते हैं। सदियों से दुश्मन ताकतों को परेशान हमें करते और हर तरह की बुराई करते हुए देखने के बाद, हम आखिरकार उन्हें हमेशा के लिए हटा देने में सक्षम होंगे। परमेश्वर की शक्ति से कौन जीतेगा इसमें तो कोई संदेह की बात ही नहीं है ! फिर हम मिलकर अनंत काल तक एक साथ राज्य करेंगे। आप हम से बहुत ऊंचे पद पर होंगे और वास्तव में हम पर शासन करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:3; इब्रानियों 5:2)। आखिरकार, आप मसीह की दुल्हन हैं और हम केवल सेवक, दूत हैं। फिर भी, हम सभी सर्वदा के लिए परमेश्वर की स्तुति और आराधना करेंगे। हम दिन-रात उसकी महिमा का प्रचार करेंगे। क्यों ना अभी से ऐसा करना शुरू करें? जो कुछ उसने किया है, कर रहा है और आपके लिए करेगा उसके लिए उसकी महिमा करें! वह आपकी सभी प्रशंसा का हक़दार हैं और भी बहुत कुछ का । देखते रहें कि वह इसे प्राप्त करता है!

द्वारा: मरीयम

मेरा नाम मरीयम ('मिरयम') है। इसका अर्थ है कड़वाहट। यह मेरे समय में सबसे आम लड़कियों का नाम था क्योंकि कई माता-पिता चाहते थे कि उनकी बेटियां बड़ी होकर मरियम की तरह धर्मी महिला बनें। मेरे या मेरे परिवार के बारे कुछ खास नहीं था। खास बात यह थी कि परमेश्वर ने मुझे इस्तेमाल करने के लिए चुना। मैं यह कभी नहीं भूलूंगी कि यह सब कैसे शुरू हुआ।

मेरा पिता खेत में काम करने गया हुआ था और मां बाजार गई हुयी थीं। मैं घर पर अकेली थी , कपड़े ठीक कर रही थी , और यूसुफ के बारे सपने देख रही थी , जिस से मेरी शादी होने वाली थी। मैंने उसके साथ ज्यादा समय अकेले नहीं बिताया था, लेकिन हम साथ-साथ बड़े हुए थे। हम दोनों अपनी किशोरआवस्था में थे। मैं जानती थी कि यूसुफ दयालु और ईश्वरीय बन्दा था। वह सुन्दर भी था!

अचानक मैं चौंक गयी ! आप जानते है कि कभी कभी आप किसी को आपने पास में खड़ा महसूस करते है जिसको आप ने पहले अभी ना देखा हो तो अचानक से चौंक जाते है ? दरवाजे पर एक अजनबी खड़ा था। मुझे लगा कि वह मेरे पिता को ढूंढ रहा है। हालाँकि यह बहुत अलग सा दिखाई देता था। वह बिन बुलाए ही अंदर चला आया! यह थोड़ा डरावना था क्योंकि पुरुषों के लिए अकेली महिलाओं से संपर्क करना अनुचित और गलत मना जाता था। उसके बात करने पर यह और भी अजनबी लगने लगा। "जय हो नारी, धन्य है, यहोवा तुम्हारे साथ है।"

"यह कौन है?" मैंने सोचा। "वह क्या चाहता है? क्या मैं खतरे में हूँ? वह धमकी तो नहीं दे रहा है, लेकिन..." उसने निश्चित रूप से मेरा पूरा ध्यान खींच लिया था!

हर धर्मी यहूदी लड़की की तरह, जब मैं छोटी थी, मैंने सपना देखती थी कि मैं मसीहा को जन्म देने वाली भाग्यशाली महिला बनूंगी। उन दिनों अधिकांश धार्मिक अगुवा मसीहा के बारे में भूल गए थे और इस बात मूर्ख लड़कियों की कल्पनाओं के रूप में देखते थे। हमारा राष्ट्र परमेश्वर से बहुत दूर भटक गया था, पाप की ओर। नासरत में तो विशेष रूप में बुरा हाल था जहाँ मैं रहती थी। यह एक भ्रष्ट फौजी नगर था जहाँ यहूदियों से अधिक अन्यजातियों के लोग रहते थे ।

जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गयी , मैं उन सभी सपनों को भूल गयी थी। मुझे उस आदमी का मतलब बहुत जल्दी समझ में नहीं आया। ऐसा होना नामुमकिन सा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह ठीक-ठीक जानता था कि मैं क्या सोच रही थी।

"डरो मत," उसने मुझसे कहा। "तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है।" मुझे पता था कि मेरे पास जो कुछ भी है वह ईश्वर की कृपा से है, कि मैंने इसे अर्जित करने या इसके लायक होने के लिए कुछ भी नहीं किया है। वह मुझे यह क्यों याद दिला रहा था?

फिर उसने कहा: “तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, और उसका नाम यीशु रखना।” 'यीशु' एक सामान्य नाम था, जो हमारे इब्रानी नाम 'यहोशू' के समान यूनानी में है। जिसका अर्थ था "यहोवा हमारा छुड़ानेवाला है।"

जब स्वर्गदूत जो कह रहा था मैं उस में खो गयी तो मुझे आश्चर्य हुआ कि यह कब होने वाला है। क्या यह पहली बात नहीं है कि महिलाओं को आश्चर्य होता है जब उन्हें पता चलता है कि वे गर्भवती हैं? क्या उसका

यह मतलब था कि मैं शादी से पहले ही गर्भवती हो जाऊंगी? फिर से, उसने मेरे दिमाग को पढ़ा और मेरे पूछने से पहले जवाब दिया। यह लगभग ऐसा था जैसे उसने जानबूझकर इसे इतना कह कर छोड़ दिया हो , इसलिए कि मुझे आश्चर्य होगा और वह इस बात को और खोल सकता है।

"पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और परमप्रधान की शक्ति तुम पर छाया करेगी। इसलिए, जो पवित्र जन जन्म लेने वाला है, वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। यहाँ तक कि तुम्हारी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बुढ़ापे में एक बच्चा होने वाला है, और वह जिसे बंजर कहा गया था, उसका छठा महीना है। क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।"

परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मानव पिता के बिना भी बच्चा होगा?

आप जानते हैं, कुछ लोग मुझे एक सुप्रसिद व्यक्ति के रूप में देखते हैं और यहां तक कि मेरी पूजा भी करते हैं। वास्तव में मैं तो एक नौकर थी। एक नौकर अपने मालिक की संपत्ति होता /होती है जिसे वह अपने मर्जी के अनुसार उपयोग करता है। इसके लिए समर्पण और विनम्रता के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। आप सोच सकते हैं कि यह कहना आसान था कि मैं परमेश्वर की दासी थी क्योंकि वह मुझे एक महान आशीश दे रहा था।

हालाँकि, उस समय उस आशीष के सभी उलझने मेरे लिए स्पष्ट नहीं हुयी थी। स्पष्ट रूप से इसमें कौशल की कीमत शामिल थी: मेरी इज्जत और यूसफ का नुकसान , अधिकांश लोगों द्वारा आलोचना और अस्वीकृति, गर्भावस्था की असुविधाएं और बिना बाप के एक परिवार। मैंने परमेश्वर को अपने से पहले स्साथान पर रखा और तुरंत जान गयी कि मुझे आज्ञा का पालन करना है जो भी हो । यहाँ ऐसी ही पूर्ण आज्ञाकारिता होनी चाहिए, कोई सौदेबाजी या झिझक नहीं।

मैं हमेशा वह करने के लिए तैयार थी जो परमेश्वर चाहता था, हमेशा पूरी तरह से उसका अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध थी । "मैं यहोवा का दासी हूँ," मैंने उत्तर दिया। "जैसा आपने कहा है वैसा ही मेरे साथ हो।" अब आप एक नौकर के बारे सोचे जो सहमती से निर्धारित मजदूरी के लिए घंटों काम करता है, और काम पूरा होने के बाद फिर वह जो चाहता है उसे करने के लिए आपने घर जाता है। उस समय ऐसा नहीं होता था। दास बस दास ही था। उसके पास उसका आपना कोई समय नहीं होता था , एक भी खाली समय नहीं था। उसके पास कोई आवाज़ नहीं होती थी , कोई घर नहीं होता था, कोई राय नहीं होती थी - कुछ भी नहीं । मैं परमेश्वर के लिए यही बनने के लिए सहमत हो रही थी - उसकी सेविका जैसा भी उसने चुना है उसके द्वारा उपयोग किये जाने के लिए। मैं स्वाभाविक रूप से विनम्र व्यक्ति नहीं थी , लेकिन मुझे पता था कि परमेश्वर यही चाहता है और मुझे क्या करना है । परमेश्वर ने मुझे चुना और मैंने आपने आप को उसके सामने समर्पण कर दीया ।

यह बताना तो मुश्किल है कि गर्भावस्था कैसे शुरू हुई। यह मेरे साथ हुई अब तक की सबसे कोमल, दर्दरहित, प्रेमपूर्ण घटना थी। यह कोमल लेकिन शानदार रोशनी मेरे चारों ओर आ गई। मैं इतनी गर्मी और सुरक्षित महसूस कर रही थी , बस पूर्ण शांति से भरी हुयी थी । यह मदम पड़ गया और जितनी जल्दी आया उतनी ही जल्दी चला गया। पूरी बात इतनी नाजुक और दया-भरी थी।

फिर भी, यह सब आसान नहीं था। मुझे इसके बारे में बात करने के लिए किसी की जरूरत थी। यूसुफ घर बना रहा था। हमारा संपर्क वैसे भी यहूदी परंपरा के कारण बहुत सीमित था। जब मैंने आपने मेरे माता-पिता को बताया कि क्या हुआ है, तो उन्होंने विश्वास किया और मेरा समर्थन भी किया, लेकिन उनके लिए यह समझना कठिन था।

एक दिन मैं बाजार गई । मैंने अपने दिल में प्यार की बड़ी भावनाओं के साथ घर छोड़ा। मैं एक गरीब किसान घर की लड़की थी, मेरे लिए परमेश्वर ने जो कुछ किया, उसके लिए मैं उसकी आभारी हूं। इसने मुझे अभिभूत कर दिया। लेकिन बाज़ार में मेरी खुशी ग़म और शर्म में बदल गई क्योंकि लोगों नज़रों और फुसफुसाहटों ने मेरी आत्मा में कच्चापन मल दिया था । मैं अपनी खरीदारी भी पूरी नहीं कर पा रही थी। मैं अपनी टोकरी अभी भी आधी खाली लेकर घर की ओर चल पड़ी । मुझे आपने घर से दूर जाना पड़ा। वास्तव में कौन समझेगा? इलीशिबा !

मेरे माता-पिता ने मुझे हमारे आराधनालय के कुछ लोगों के साथ भेजा जो यरूशलेम जा रहे थे और मैंने उनके साथ 4 दिन की यात्रा की। मैं वास्तव में इलीशिबा से बात करने के लिए उत्सुक थी। यह ऐसा था जैसे दूत ने ही मेरे दिमाग में यह विचार रखा था जब उसने मुझे उसकी चमत्कारी गर्भावस्था के बारे में भी बताया था ।

जैसे-जैसे मैं करीब आती गई , वैसे-वैसे मैं और अधिक भयभीत होती गयी। अगर उसने मुझ पर विश्वास नहीं किया या मेरा मज़ाक उड़ाया तो क्या होगा? वह बहुत बड़ी थी, एक धर्मी और सम्मानित याजक की पत्नी थी। वह एक अविवाहित गर्भवती किशोरी के बारे में क्या सोचेगी? क्या कभी कोई मेरी कहानी पर विश्वास करेगा?

मेरे पहुचने पर वह घर पर खाना बना रही थी। उसने मेरी दस्तक का जवाब देते पूशा "कौन है?" "नासरत की मरियम, हेली की बेटी," मुझे अंदर नाम के लिए कहा । मेरे साथ जो हुआ उसके बारे में उसे तत्काल प्राकाशन दिया गया था। उसका बच्चा खुशी से उछल पड़ा और उसे लात मारी। उसकी खुशी और मेरे प्रति स्वीकृति पूर्ण और बिना शर्त थी। उसने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के लिए उसकी स्तुति की। मुझे बड़ी राहत मिली! जैसे-जैसे मैं उनके घर में करीबी महसूस करती थी , मुझे उस 'भाषण' का इस्तेमाल नहीं करना पड़ा, जिसको मैं अपने दिमाग में बना रही थी।

हमने एक साथ में बहुत अच्छा समय बिताया। परमेश्वर ने वही दिया जो मुझे चाहिए था। हालांकि, जल्द ही मेरे घर जाने का समय हो गया। उसका बच्चा पैदा होने वाला था और मुझे लौटना था। घर की ओर यात्रा करते हुए मेरे दिमाग में वास्तविकता वापस आ गई। यूसुफ के बारे में क्या? उसने सुना होगा कि मैं अब तक गर्भवती थी। पर उसके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं होगा कि यह परमेश्वर का बच्चा है। वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? मुझे वह सब परमेश्वर पर छोड़ना पड़ा। लेकिन मैं बच्चे का समर्थन कैसे करूं? सब कुछ नया था और इतनी तेजी से हो रहा था। मैं एक ही समय में दरी हुई भी थी और उत्साहित भी थी । आपने अन्दर बच्चे की हलचल महसूस करना बिल्कुल रोमांचकारी था! फिर भी, मैं कभी-कभी सोचती थी कि क्या मैं उतनी अच्छी माँ बन सकती हूँ जितनी उसे चाहिए। क्या मैं उसकी जरूरतों को पूरा कर पाऊंगी ? मेरी ज़रूरतों के बारे में क्या है -- मुझे उन्हें पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना होगा। मेरा बेटा कैसा होगा? उसका जीवन किया होगा? किसी तरह, मैं समझ सकती थी कि दर्द भी होगा, खुशी भी होगी, दुख भी होगा और आनंद भी होगा। समय पर यह सब प्रकट करेगा।

अभी के लिए, मैं परमेश्वर की सेविका बनने के लिए तैयार थी , ताकि वह मुझे इस्तेमाल करे, जैसा उसने चुना था । एक व्यक्ति के पास इससे बड़ा विशेषाधिकार क्या हो सकता है? इस छोटे से जीवन को पृथ्वी पर बिताने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता था?

द्वारा: यूसफ

मेरा नाम यूसफ (यूसफ) है। मुझे जानने वाले मुझे योसी कहते थे। कुछ लोगों का कहना था है कि मैं बाइबल का सबसे भूलाया हुआ व्यक्ति हूँ। क्रिसमस का नाटक करने वाले , सराय के कर्मचारिओं को भी मुझसे लोगों के ध्यान का बड़ा हिस्सा मिलता है (और सच तो यह है कि बेथलहम में कोई सराय कर्मचारी था ही नहीं)। मैं अक्सर मरीयम के पीछे सिर्फ एक चलता -फिरता सहारा हूं। एक आदमी के लिए यह एक कठिन भूमिका है, इतना विनम्र होना। फिर भी, यीशु के जन्म की कहानी में मेरी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। यदि आपके पास एक मिनट हो तो मैं आपको इसके बारे में बताना चाहूंगा। मेरी कहानी मेरे हाथों के इर्द-गिर्द घूमती है। मेरे हाथ देखो। वे आपको बताते हैं कि मैं लकड़ी और पत्थर से काम करता हूं। आप उनमें मेरे काम का इतिहास देख सकते हैं: निशान, धुल के कण और कटे-फटे हाथ । आप एक आदमी के बारे में उसके हाथों से बहुत कुछ बता सकते हैं। मछुआरों की तुलना में किसानों के हाथ अलग होते हैं। एक आदमी के लिए हाथ महत्वपूर्ण हैं। तुम लोग समझते हो। हम अपने हाथों से ही कोई चीज बनाते और उत्पन करते हैं। हाथों के बिना हम क्या होंगे ?

मैंने अपने हाथों का इस्तेमाल घरों और इमारतों को बनाने में किया। मुख्य रूप से हम पत्थर का इस्तेमाल करते थे, लेकिन खिड़कियों, दरवाजों और छत की लकड़ी के लिए लकड़ी का भी इस्तेमाल करते थे। मैंने अपने पिता के साथ काम किया, पहले उनसे सीखा और फिर 12 साल की उम्र में `के बाद उनके साथी के रूप में काम किया। हम कोई बड़ी 'सफलता' पाए हुए नहीं थे जैसा कि दुनिया वाले सोचते होंगे । लेकिन परिवार और दोस्त मेरे पिता के लिए लंबे समय और ढेर सारे पैसे से ज्यादा महत्वपूर्ण थे। मुझे खुशी है कि वह ऐसा सुभाव का था। मैं उससे सहमत था। एक आदमी को अपनी तृप्ति अपनी पत्नी और परिवार में ढूंढनी चाहिए, नौकरी में नहीं।

आप देख सकते हैं कि मेरे हाथ मेरे लिए इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं। मैंने उनका इस्तेमाल अपने परिवार को पालने, प्यार करने और अपने बच्चों की परवरिश करने के लिए किया। हालाँकि, इन हाथों ने जो सबसे अच्छा काम किया, वह था मसीहा को थामना, परमेश्वर स्वयं एक बच्चे के रूप में पृथ्वी पर आया। ये उसे छूने वाले पहले हाथ थे। मैं उसे इन्हीं हाथों से दुनिया में लाया! आप जानते हैं कि एक बच्चे को जन्म लेते हुए देखने के लिए एक आदमी के लिए बहुत दिल दहलाने वाली बात होती है। जब वह महिला जिस से एक आदमी अपनी जान जैसे प्यार करता हो , उसका दर्द , उसकी सभी भावनाओं को देखता है तो बहुत भावुक हो जाता है, जिनसे बचने के लिए हम पुरुष लोग आमतौर वहां से हट जाते हैं। मेरे लिए भी उनके दौरान वहां होना आसान तो नहीं था , लेकिन उनका अनुभव करना अच्छा ही था। जीवन में सब कुछ उचित नजरिये में पाने के लिए नवजात शिशु को अपने हाथों में पकड़ने से अच्छा कुछ नहीं है! जरा सोचिए, परमेश्वर ने अपने बेटे को पालने के लिए इन्हीं हाथों का इस्तेमाल किया! मैंने कभी नहीं सोचा होगा कि बड़े होने पर ऐसा होगा।

नासरत एक बहुत ही अधर्मी, मूर्तिपूजक नगर था। यह अन्यजातियों और रोमन सैनिकों से भरा एक छोटा सा शहर था। यह एक धर्मनिष्ठ यहूदी परिवार के लिए जगह नहीं थी, लेकिन यही वह जगह है जहाँ परमेश्वर ने मेरे परिवार को रखा था। मेरा पिता परमेश्वर के जन के रूप का एक अच्छे आदर्श था । मैंने भी खुद को, परमेश्वर के लिए जीवन जीने के लिए, प्रतिबद्ध किया था । मैंने उसकी व्यवस्था का पालन करता था और मेरे पापों का भुगतान करने के लिए आने वाले मसीहा के बारे उसके वादों में विश्वास

करता था। नासरत में परमेश्वर के लिए जीना आसान नहीं था। हममें से बहुत से लोग ऐसे नहीं थे जो परमेश्वर से प्रेम करते थे, यहाँ तक कि यहूदियों में भी नहीं थे।

मेरी एक हमउमर रिश्तेदार थी जो परमेश्वर से प्यार करती थी जैसा मैं करता था । उसका नाम मिरियम था। आप उसे मरीयम कहते हैं। हमारे माता-पिता एक दुसरे के दोस्त थे और जब भी हम आराधनालय में जाते थे तो हम एक-दूसरे को देखते थे, भले ही हमने एक साथ बहुत कम समय बिताया हो। किसी तरह हम यह समझ गए कि एक दिन हमारी शादी होगी। हम साथ साथ बड़ते गए और हम एक साथ रहने की उम्मीद कर रहे थे। हम एक दुसरे के साथ बहुत कुछ साझा करते थे । जैसे-जैसे हम किशोर होते गए, हमारी दोस्ती एक-दूसरे के लिए गहरे प्यार में बदल गई। हमें एक साथ ज्यादा निजी समय की अनुमति नहीं थी, लेकिन स्वाभाविक रूप से हमारी आत्माओं का गहरा संबंध हो चुका था। यह ऐसा था जैसे हम जानते थे कि दूसरा क्या सोच रहा है, इसलिए हमें हमेशा बात करने की ज़रूरत नहीं थी। हम में से प्रत्येक ने परमेश्वर को उसके अद्भुत प्रावधान के लिए धन्यवाद दिया और उत्सुकता से उस समय का इंतजार किया जब हम अपने परिवार को एक साथ शुरू कर सकते थे।

जब हमारी शादी हुई थी तो दहेज दिया गया था और वादे कीये जाते थे । यह सभी कानूनी तौर से बंदन थे। एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। हम कानूनी रूप से शादीशुदा थे, जिन्हें पति-पत्नी कहा जाता था, लेकिन बाद में साथ नहीं रहेंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए वह गर्भवती नहीं है 9-12 महीने की प्रतीक्षा अवधि होती थी और इससे मुझे अपने परिवार के घर में उपयोग करने के लिए एक कमरा बनाने के लिए समय मिल गया था । यह इस समय के दौरान था कि मेरी दुनिया पूरी तरह से बदल गई!

आप जानते हैं कि चुगली कैसे फैलती है। मैं काम करने को घर से दूर गया था और मैं ने मरीयम के गर्भवती होने के बारे में बहुत भद्दे तरीके से सुना। जितना अधिक मैंने इसकी जाँच की, उतना ही मैंने इसे सच पाया। मै क्या करता ? मुझे उससे शादी करने के लिए परमेश्वर के कानून अनुसार मैं उस से शादी नहीं कर सकता था । कानून के अनुसार उसे पत्थरवाह किया जाना चाहिए, लेकिन यह अब और लागू नहीं था। मैं उसे सार्वजनिक रूप से गलत और शर्मिंदा साबित कर सकता था ताकि मैं अपना दहेज वापस पा सकूं और अपनी प्रतिष्ठा को साफ कर सकूं। सभी ने यही कहा कि मुझे यह करना चाहिए। हालाँकि, एक और तरीका था। मैं निजी तौर पर और चुपचाप उसे तलाक दे सकता था, अपना दहेज और प्रतिष्ठा खो सकता था, लेकिन उसे बेइजती से और आलोचना से बचा सकता था। यह वही है जो मैंने करने का फैसला किया था जब जिब्राईल मुझे सपने में दिखाई दिया और कहा कि आगे जाकर मरीयम से शादी करना ठीक रहेगा। उसने वास्तव में कानून नहीं तोड़ा था क्योंकि वह अभी भी कुंवारी थी। बच्चा परमेश्वर का था! क्या मैं खुश था! मुझे नहीं लगता था कि कोई मुझ पर विश्वास करेगा, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। कल्पना कीजिए कि अन्य निर्माण श्रमिकों ने क्या कहा जब मैंने उन्हें बताया कि मरीयम अभी भी एक कुंवारी है, यह परमेश्वर का चमत्कारी -बच्चा था! इस पर विश्वास करने के लिए उन्होंने वास्तव में मेरा मज़ाक उड़ाया।

मेरा बस एक ही सपना था कि मैं आगे बढ़ूं। क्या था अगर मैंने इसकी कल्पना की थी, या इसे इतना चाहता था कि मुझे लगा यह हो ही गया है? मैंने प्रार्थना की, मैं ने अपने माता-पिता और मरीयम के माता-पिता से बात की, और आगे बढ़ने और उससे शादी करने का फैसला किया जैसा कि मैं हमेशा से करना चाहता था।

हमारा अंतिम विवाह समारोह था। हालाँकि, परिस्थितियों के अधीन इसमें एक विशेष गंभीरता थी। मरीयम के साथ रहने और हमारे कमरे में एक साथ बात करने और प्रार्थना करने में सक्षम होना अच्छा था। शारीरिक रूप से करीब ना आ सकना निराशाजनक था, लेकिन हम दोनों इसमें सहमत थे कि यह

सबसे अच्छा है इसलिए इसमें कोई संदेह की जगह ना रहे कि यीशु परमेश्वर का बच्चा था नाकि मेरा। बाद में हमारे अपने 4 बेटे और 2 बेटियां हुईं, लेकिन वह समय इंतजार करने का था। उन पुत्रों में से दो, याकूब और यहूदा, आरम्भिक कलीसिया में अगुवे बने थे और उन्होंने ऐसी पुस्तकें लिखीं जो बाइबल में हैं।

हालाँकि, अभी बहुत अधिक समय नहीं हुआ था, इससे पहले कि हम यह सुनते, कि मुझे जनगणना और कर चुकाने के लिए बेथलहम जाना था। केवल आदमी को जाना होता था, लेकिन मरीयम ने लोगो की चुगलीबाजी से दूर रहने और मेरे साथ होने के लिए साथ जाने पर जोर दिया। 90 मील की यात्रा करने में एक सप्ताह का समय लगा। हम टेंट में सोते थे। अंत में, हम बेथलहम में पहुंचे और देखा कि यह पहले से ही जनगणना के लिए आ चुके अन्य लोगों से भरा हुआ है। एक आदमी ने हमें आश्रय के लिए अपने घर के नीचे की गुफा का उपयोग करने की अनुमति दी। यहाँ पर उन्होंने अपने पशुओं को रखा हुआ था। एक आदमी अपनी पत्नी के लिए जो चीज सबसे अच्छी होती है उसे चाहता है, और मुझे बहुत बुरा लगा कि मैं अपनी पत्नी को उस समय इस से बेहतर कुछ नहीं दे सकता था । हालाँकि, हम संतुष्ट थे।

हमें मरियम को प्रस्व करने में मदद करने के लिए एक दाई मिली, जो हमारे आने के तुरंत बाद आई थी । हो सकता है कि लंबी यात्रा के कारण बच्चा जल्दी आया हो , लेकिन यह एक सुरक्षित प्रसव था और माँ और बेटा दोनों ठीक थे। जब बच्चा पैदा हुआ तो मैं ने सबसे पहले उसको उठाया था - इन्हीं हाथों से!

मैंने दीवार में बनी एक शेल्फ को साफ किया जहां भोजन को नम, गंदे फर्श से दूर रखा जा सकता था और हमने उसी को बच्चे के बिस्तर के रूप में भी

इस्तेमाल किया। यह आश्चर्यजनक था कि दुनिया में उसका प्रवेश और दुनिया से उसका बाहर निकलना कितना समान था। भयानक दर्द और अंधेरा था, उसका खूनी शरीर कपड़ों में लिपटा हुआ था, इत्र से अभिषेक किया गया था, और एक गुफा के अंदर एक पत्थर की शेल्फ पर रखा गया था - दोनों वकत यूसफ नामक आदमीओं के द्वारा हुआ था ! मेरे हाथों ने पहली बार किया था, लेकिन अरिमथिया के यूसुफ के हाथों ने यीशु के मरने पर ऐसा किया था, क्योंकि मैं तब जीवित नहीं था। वैसे भी, यह ऐसा था जैसे वह शुरू से ही क्रूस की छाया में था!

तीस साल तक यीशु और मैं पिता और पुत्र थे, फिर भी घर में , काम पर और आराधनालय में सबसे अच्छे दोस्त भी थे। हमने एक-दूसरे से विचारों को उछालते और उतने ही करीब थे जितना कि कोई भी दो इंसान हो सकते हैं। मैं उसे किसी और की तुलना बेहतर जानता था। मेरे हाथों ने उसके हाथों को छुआ और 30 साल तक काम किया। मैं वास्तव में कभी नहीं समझ पाया कि वह मनुष्य और परमेश्वर दोनों कैसे हो सकता है, लेकिन मुझे पता है कि वह ऐसा था । वह मेरा दोस्त, मेरा बेटा, मेरा उद्धारकर्ता था। क्या वह आपका भी उद्धारकर्ता है? दूसरा कोई नहीं है। मैं जानता हूँ।

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: जैसा कि आप यह कहानी सुनाते हैं, स्वर्गदूतों पर ध्यान केंद्रित करें। इस बारे में बात करें कि वे परमेश्वर की सेवा कैसे करते हैं। वे हमारी रक्षा करते हैं और हमारी मदद करते हैं जैसे उन्होंने बालक यीशू के लिए कीया था। आप मरीयम की आज्ञाकारिता के बारे में भी बात कर सकते हैं।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उनसे इस कहानी में स्वर्गदूतों की भूमिका के बारे में बात करें और यही लि कैसे परमेश्वर उनका उपयोग हमारी रक्षा और सहायता के लिए करता है। उन्हें सिखाओ कि

फ़रिश्ते हमेशा मौजूद रहते हैं, वो अब भी है जैसे तुम सिखा रहे हो। हम उन्हें नहीं देख सकते हैं, और ना ही हम उनसे बात करने या उनको प्रार्थना करने के लिए है, लेकिन वे हमेशा हमारी देखभाल करने के लिए मौजूद रहतें हैं।

2. यीशु के जन्म की घोषणा की जाती है

उत्तर देने के लिए प्रशन

स्वर्गदूत क्या हैं और वे क्या करते हैं?

परमेश्वर ने दुनिया बनाने से पहले स्वर्गदूतों को बनाया। वे परमेश्वर की आराधना और सेवा करते हैं।

स्वर्गदूत हमें जाने बिना हमारी मदद करते हैं। वे हमारी रक्षा करते हैं और हमारी देखभाल करते हैं।

शैतान और दानव ऐसे फरिश्ते हैं जिन्होंने विद्रोह किया और परमेश्वर का अनुसरण करना नहीं चाहते थे इसलिए उसने उन्हें स्वर्ग से बाहर फेंक दिया।

किस प्रकार मरियम को दी गयी घोषणा जकर्याह को दी गयी घोषणा के समान थी?

जिब्राईल दोनों बार प्रकट हुआ और उसने कहा, "डरो मत।" फिर उसने परमेश्वर का सन्देश दिया

कि उनके पास एक विशेष बच्चा होगा, भले ही यह असंभव था (जकर्याह बहुत बूढ़ा था, मरीयम एक कुंवारी थी)

मरीयम की घोषणा किस प्रकार जकर्याह की घोषणा से भिन्न थी?

जकर्याह याजक था और मन्दिर में था। उसने परमेश्वर के वचन पर संदेह कीया । उसका बेटा एक दूत होगा। मरियम एक युवती थी और घर में थी । वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास कीया । उसका बेटा मसीहा होगा।

आपको क्या लगता है कि मरीयम को आश्चर्य हुआ होगा जब स्वर्गदूत ने उससे कहा कि वह एक बच्चा पैदा करने वाली है?

वह शादीशुदा नहीं थी और उसका कोई पति नहीं था। परमेश्वर को चमत्कार करना ही होगा।

मरीयम ने कहा कि वह परमेश्वर की दासी बनने के लिए तैयार हैं और जो कुछ भी वह चाहता है, उसे करने के लिए तयार है , चाहे वह कुछ भी हो। क्या आपने कभी परमेश्वर से ऐसा कहा है? यदि नहीं, तो क्यों ना उसे अभी बता दें।

(उन्हें खुद से प्रार्थना करने दें)। वे वही शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं जो मरीयम ने इस्तेमाल किए थे)

मरीयम इलीशिबा से मिलने क्यों गई?

उसे एक दोस्त की जरूरत थी जो उसे समझ सके और जिस से वह बात कर सकती थी ।

जरूरत पड़ने पर आपकी मदद करने के लिए परमेश्वर ने आपको कौन से दोस्त दिए हैं?

(यह हर एक के लिए अलग होगा)

यूसुफ ने कौन-से काम किए जो हमें दिखाते हैं कि वह एक धर्मी व्यक्ति था?

वह वही करने के लिए तैयार था जो मरियम के लिए सबसे अच्छा था, ना कि जो उसके खुद के लिए अच्छा था । उसने ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की।

क्या परमेश्वर की आज्ञा मानना हमेशा आसान होता है?

नहीं

ऐसे समय कब आते हैं जब परमेश्वर की आज्ञा मानना कठिन होता है?

(जब हम डरते हैं, जब लोग हमारी आलोचना करेंगे, आदि)

हम यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते हैं कि हम हमेशा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं ?

हर दिन उसकी मदद और ताकत के लिए प्रार्थना करना शुरू करें, कुछ भी करने से पहले प्रार्थना करें, आदि।

यूसुफ और मरीयम ने अपने विवाह के लिए जो योजनाएँ बनाई थीं, उन्हें परमेश्वर ने पूरी तरह से बदल दिया था । उस समय के बारे में सोचें जब परमेश्वर ने आपकी बनाई योजनाओं को बदल दिया। वह हमारे साथ ऐसा क्यों करता है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

3. यीशु का जन्म होना

(लूका 2:1-20)

जोर आवाज़ से पढ़ें: लूका 2:1-20

द्वारा: चरवाहों की जुबानी, द्वारा: शिमोन की जुबानी

इस सबक के साथ उपयोग करने के लिए कई कहानियाँ हैं। आप उन सभी का उपयोग कर सकते हैं या फिर जिनका आप उपयोग करना चाहते हैं उसे चुन सकते हैं। आप इस सबक को एक सप्ताह से अधिक समय तक चलने वाला भी बना सकते हैं।

चरवाहों की जुबानी

ओह मुझे माफ करें। मैंने आपको हमारी आग के पास आते नहीं देखा। आगे आईये, पास आईये । बहुत सर्दी की रात है, आओ मिलकर आग तापते हैं । हमें यहां बहुत अधिक लोग मिलने नहीं आते हैं। कोई हमें परेशान नहीं करता है। आप तो जानते हैं ,चरवाहे बहुत लोकप्रिय नहीं होते हैं ।

मुझे आशा है कि बदबू आपको बहुत परेशान नहीं करेगी। हमें तो इसके साथ रहने की आदत ही पड़ गयी है और अब ज्यादा मालूम ही नहीं होती है। हमारे पास ना तो नहाने धोने के बहुत अवसर होते हैं -- और न ही भेड़ों के लिए ! ओह, ठीक है, कम से कम हम खुली हवा में तो रहते ही हैं!

मुझे ये अंधेरी, कुरकुरी रातें पसंद हैं, आप को है या नहीं ? तारे इतने करीब लगते हैं कि आप उन तक पहुंच सकते हैं और उन्हें छू सकते हैं। तुम्हें पता है, यह मुझे इसी तरह की एक और रात की याद दिलाता है: अंधेरी , ठंडी और शांतिपूर्ण रात। उस समय भी हमारे पास आश्चर्यजनक रूप से कोई मिलने आया था । वे केवल स्वर्गदूत थे। कहो, तुम फरिश्ते नहीं हो, के तुम हो ? नहीं, मैंने ऐसा नहीं सोचा था!

बहरहाल, मैं अपनी कहानी पर वापस अत हूँ। कहाँ था मैं? अरे हाँ। मैं आपको उस खास रात के बारे में बताने जा रहा था। आप जानते हैं, जब भी कोई महत्वपूर्ण घटना घटती है, तो परमेश्वर हमें बता देता है । अगर परमेश्वर ने हमें नहीं बताया होता तो हमें यह पता ना होता कि वह रात खास थी। ना किसी और को यह पता होता!

क्योंकि हम चरवाहे थे, हमारे पास कोई नागरिक अधिकार नहीं थे। हम अदालत में गवाह नहीं बन सकते थे क्योंकि जज सोचते थे कि हम भरोसे के लायक नहीं हैं। हम अपने भेड़-बकरियों से ऊन या दूध नहीं बेच सकते थे; लोग यह मानेंगे कि हमने इसे चुराया होगा । हमारे नियमों और कानूनों की पुस्तक मिशना में लिखा था , "गड़े में गिरे हुए चरवाहे को बचाने के लिए किसी को भी अपनी जिमेदारी महसूस नहीं करनी चाहिए।'

सौभाग्य से, परमेश्वर को हमारे बारे में ऐसा नहीं लगा था , नहीं तो हम कभी नहीं जान पाते कि उस रात क्या हुआ था। जैसा कि यह बात खुली कि इसका

पता लगाने वाले केवल हम लोग ही थे। परमेश्वर ने उन चरवाहों को क्यों चुना जिन्हें उसने यह अद्‌भुत समाचार दिया था? क्या ऐसा हो सकता है कि हम विनम्र और खुले खियलों वाले होते है , प्रकृति और परमेश्वर के करीब होते हैं? शायद यह इसलिए था क्योंकि दाऊद स्वयं इन्हीं पहाड़ियों में यहाँ एक चरवाहा हुआ करता था। यहीं पर उसने परमेश्वर की स्तुति के अपने कई भजन लिखे थे ।

वैसे भी, हम कई मालिकों के लिए भेड़ें की रखवाली करते थे । हमारी कई भेड़ें मंदिर की बलि के लिए थीं। संभवत: अगला फसह का मेम्ना हमारे झुंड में ही था। हम चरवाहे बलिदान और निर्दोष खून बहाने के बारे में जानते थे। बलिदानों ने हमें उन याजकों की तुलना में बहुत अधिक चोट पहुंचाई जिनका भेड़ों से कोई संबंध नहीं होता था। हम उन्हें नाम से जानते थे, उन्हें जन्म से ही हाथ से पाला होता था, और हर एक के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए रहते थे।

जिस रात के बारे में मैं आपको बता रहा था वह एक ठंडी रात थी, बर्फीली ठंड से भी कुछ ज्यादा । हमारे पास गर्म रहने के लिए आग थी। हमारे विशेष सन्देशवाहक साथियों के जाने के बाद, हमने इस बारे में बात की कि यह सब कैसे हुआ होगा। संभवत: स्वर्गदूत चुपचाप पृथ्वी की ओर नीचे की ओर झुके, मँडराते हुए और निर्धारित आसनों में बात गए । तब जिब्राईल ने आगे बढ़कर आज्ञा दी। वे एक दम सभी के सभी पूरी तरह से एक चमकीली रौशनी की तरह दिखाई दे रहे थे! चमकती रौशनी पृथ्वी पर चमकने वाली परमेश्वर की महिमा थी। यह अब तक का सबसे चमकीला नज़ारा था, लेकिन इसने मेरी आंखों को चोट नहीं पहुंचाई। यह एक सुकून देने वाली , शांतिपूर्ण रौशनी थी। भेड़ें भी इससे नहीं डरती थीं।

तब वहां जिब्राईल था। मैं आपको बता रहा हूँ कि वह आदमी बहुत बड़ा था! उसने हमसे कहा कि डरो मत, क्योंकि वह हमारे लिए सभी के लिए बहुत खुशी की खुशखबरी लेकर आया है। वह कहने लगा 'आज दाऊद के नगर में तुम्हारा एक उद्धारकर्ता उत्पन्न हुआ है; वह मसीह प्रभु है,' । 'तुम्हारे लिए यह एक निशान होगा। तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटे और चरनी में लेटे हुए पाओगे।'

सब फ़रिश्ते यह कहते हुए शामिल हो गए, 'परमेश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर उन मनुष्यों को शान्ति, जिन पर उसकी कृपा है।'

हमारी प्रतिक्रिया बस स्तुति और आराधना में घुटनों के बल गिर जाने की ही थी। ऐसा हम से स्वाभाविक रूप से हुआ , वास्तव में हम ने इसके बारे में सोचा नहीं था । उसकी विश्वासयोग्यता और मसीहा को भेजने के उसके वादों को पूरा करने के लिए हमने परमेश्वर की प्रशंसा की। हमने एक बच्चे के रूप में आने में उसकी शक्ति के लिए परमेश्वर की स्तुति की। हमने मसीहा को भेजने में उसके अनुग्रह, दया और प्रेम के लिए परमेश्वर की स्तुति की। हम इस अद्‌भुत समाचार के लिए परमेश्वर की स्तुति करने में स्वर्गदूतों के साथ शामिल हुए। हम अक्सर परमेश्वावर द्वारा वादा किए गए मसीहा के बारे में बात करते थे और अनुमान लगाते थे: क्या वह हमारे जीवनकाल में आएगा? अगर वह आया तो क्या हम यह जान भी पाएंगे? क्या राष्ट्र उसे प्राप्त करेगा? अधिकांश अब परमेश्वर के वादों की परवाह नहीं करते थे । हमारे पास उस सब के बारे में सोचने का समय नहीं था -- सब कुछ बहुत जल्दी हो रहा था !

स्वाभाविक रूप से, हमें इस मसीहा बच्चे को देखने में बहुत दिलचस्पी थी। हालाँकि, यह असंभव लग रहा था कि मसीहा एक गुफा में एक चारा कुंड में पाया जाएगा! यरूशलेम में सबसे प्रशंसनीय महल क्यों नहीं? हमने नहीं पूछा, हम बस शहर को चले गए।

हमने भेड़ों को देखने के लिए एक आदमी को छोड़ दिया। वे बाड़े में तब तक सुरक्षित थी जब तक एक आदमी प्रवेश द्वार पर बैठा रहता था। हममें से बाकी लोग मसीहा को देखने गए। यीशु को खोजने के लिए आपको अपने पास जो कुछ भी है उसे छोड़ने के लिए तैयार होना चाहिए: व्यवसाय, संपत्ति, यहां

तक कि अपनी खुद की नींद और जरूरत पड़ने पर आराम करना भी । वहाँ वह एक चरनी में था, ठीक है! ऐसा लगता है कि केवल हमें ही बताया गया था। क्या ही सोभाग्य है! मैं चकित था कि वह कितना छोटा और असहाय लग रहा था। वह आदम की तरह एक पूर्ण विकसित व्यक्ति के रूप में क्यों नहीं आया? हमें उसके चमत्कारी गर्ब-प्रवेश के बारे में बताया गया था, लेकिन उसका जन्म स्वाभाविक और सामान्य था जैसे किसी भी आम इन्सान का होता है। सच कहूं तो, दाऊद के सिंहासन पर सदा के लिए बैठे हुए, पूरी सृष्टि द्वारा पूजे जाने वाले, परमेश्वर के रूप में उसकी कल्पना करना एक कठिन कल्पना थी ।

मरियम और यूसफ के साथ बातचीत और परमेश्वर की स्तुति करते हुए हमारा बहुत अच्छा समय व्यातीत हुआ । उनके लिए यह उत्साहजनक था कि उनके पास कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ वे अपनी खुशी बाँट सकते थे । स्वर्गदूतों ने हमें जो कहा था, उसे दोहराते हुए सुनना उनके लिए एक प्रकार की पुष्टि थी। इसके साथ ही, उनसे मिलना और उन्हें जानना हमारे लिए प्रेरणादायी था। हम परमेश्वर की सेवा पूरी तरह से वैसे ही करना चाहते थे जैसे वे करते थे। आने वाले महीनों में हमने उनके साथ कई घंटे बिताए। हमारे बीच एक खास बंदन बन गया था जो उनके चले जाने के बाद भी लंबे समय तक बना रहा।

यह पूरी शाम ऐसी थी जिसे हम कभी नहीं भूलेंगे। हम वहाँ से चले गए, लगातार दूसरों को बता रहे थे कि हमने क्या देखा था। हम यह कहानी सुनाते नहीं थकते थे । कई साल बाद तक भी हमें पूरी कहानी की परिणति का एहसास नहीं हुआ कि यह बच्चा कितना महत्वपूर्ण होगा।

मेरी कहानी सुनने और हमारी आग को साझा करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। हालाँकि, आपके जाने से पहले, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ। यह सिर्फ एक इतिहास का सबक नहीं है। यह आपको यीशु की आराधना और स्तुति करने के महत्व को दिखाने के लिए है। हम परमेश्वर की महिमा करने के लिए ही बनाए गए हैं।

जब हम उद्धार का मुफ्त उपहार प्राप्त करते हैं तो हम परमेश्वर की महिमा करते हैं। हर बार जब हम पाप को स्वीकार करते हैं और उसे अंगीकार करते हैं, तो हम पाप को अपनी गलती का नतीजा मानते हैं। जब हम बहाने बनाते हैं, तो असल में, हम अपने पाप के लिए परमेश्वर को दोष दे रहे होते हैं। अपने स्वयं के पाप का दोष लेने से परमेश्वर की महिमा होती है। जब हम आपने कहने और करने में परमेश्वर की महिमा करने की मनोवृत्ति के साथ जीते हैं, तो हम अपने आप को पहले रखने के बजाए हम परमेश्वर की महिमा और आराधना कर रहे होते हैं। बेशक, दूसरों को गवाही देना भी परमेश्कवर की महिमा करने जैसा ही होता है । परमेश्वर पर भरोसा करना, चाहे हमारे प्यार और विश्वास को दिखाने का कोई भी तरीका क्यों ना हो। यह उसकी संप्रभुता को मान्यता देने का पूरक है। उसी तरह, प्रार्थना हमारी ज़रूरतों को बताकर परमेश्वर की महिमा करती है। ये सभी परमेश्वर की पूजा करने के तरीके हैं।

जीवन में जो आनंद परमेश्वर की आराधना करने में मिलता है उससे बड़ा कोई आनंद नहीं होता। अपना समय बिताने का इससे बेहतर तरीका कोई नहीं है। परमेश्वर निश्चित रूप से इसके योग्य और इसका हक़दार है। हम इसे अनंत काल तक करते रहेंगे, तो क्यों ना अभी शुरू करें। पृथ्वी पर स्वर्ग का थोड़ा स्वाद लो - परमेश्वर की आराधना और स्तुति करो! ”

शिमोन की जुबानी

हेलो। मेरा नाम शिमोन, या साइमन है। यह एक ही नाम है, बस अलग तरह से लिखा गया है। यह एक सामान्य नाम है: शमौन पतरस, शमौन फरीसी (लूका 7:36-50), बैतनिय्याह का शमौन कोढ़ी, यहूदा का पिता शमौन और मैं खुद शिमोन। मेरा एक सामान्य, रोज़मर्रा का नाम था, और एक सामान्य, रोज़मर्रा की ज़िंदगी जीता था। मेरी कोई विशेष या बड़ी सामाजिक स्थिति नहीं थी, कोई पद नहीं था, कोई खास वजूद नहीं था। मैं एक याजक था और इसे एक महान विशेषाधिकार/सोभाग्य मानता था, हालांकि अधिकांश अन्य पुजारी इसे एक उपद्रव और बोझ मानते थे। हमरा एक छोटा समूह था जो यहोवा के प्रति वफादार रहता था , उसके वचन से प्रेम करता था, और प्रतिज्ञात आने वाले मसीहा की प्रतीक्षा कर रहा था। हालाँकि, अन्य, धार्मिक कार्य करने की गतियों से होकर गुजर रहे थे ।

जबकि जकर्याह और बहुत से अन्य याजक फिलिस्तीन के विभिन्न हिस्सों में रहते थे और मंदिर में बारी-बारी से आते थे, मैं पूरा साल यरूशलेम में रहता था। मैंने इसे एक महान विशेषाधिकार/सोभाग्य मानता था और मैं संभव किसी भी तरह से परमेश्वर की सेवा करना पसंद करता था। मैं अक्सर उस वादा किए गए उद्धारकर्ता के बारे में सोचता रहता था जिसे परमेश्वर भेजता, और मैं मंदिर में समर्पित बच्चों को अक्सर देखता और सोचता था कि हो सकता है कि उनमें से कोई वही हो ।

मैं विशेष रूप से बहुत सावधान हुआ जब मैंने देखा कि पवित्र स्थान से आने के बाद जकर्याह के साथ क्या हुआ था कि वह बात नहीं कर सकता था । यह बात फैल गई थी कि एक स्वर्गदूत ने उस के साथ मंदिर के अंदर बातचीत की थी। मुझे पता था कि यह आने वाली महान चीजों का पूर्वाभास था। मैंने महसूस किया कि परमेश्वर ने मुझे अपनी आत्मा के माध्यम से आश्वासन दिया है कि मसीहा मेरे जीवनकाल में आएगा, और मैं वास्तव में उसे देखूंगा! मैं उसे कैसे पहचानूंगा, मुझे नहीं पता था, मैंने इसे परमेश्वर पर छोड़ दिया।

एक दिन वास्तव में ऐसा हुआ। यह हर दिन की तरह शुरू हुआ। मैं मंदिर में अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा था: बलिदान प्राप्त करना, सुबह और दोपहर में याजको की मण्डली में संगीत साज बजानेवालों के साथ गीत गाना , बच्चों को समर्पित करना, शुद्धता की भेटों को स्वीकार करना, और किसी भी तरह से सेवा करना। एक युवा जोड़ा, किसी कोई खास नहीं, खोया हुआ और भ्रमित दिख रहा था। मैं तुरंत उनके पास यह देखने गया कि अगर मैं उनकी कुछ मदद कर सकता हूं। वे बच्चे के जन्म से माँ के शुद्धिकरण और बच्चे के समर्पण के लिए आए थे। जब मैंने उनसे बात की तो मुझे एक गहरा अहिसास हुआ कि यह मसीहा था! सबसे पहले, मैं उलझन में था: यह आम परिवार और बच्चा उन हजारों से अलग नहीं थे जिनको मैंने यहां पर आते देखा था। हालाँकि, भावना इतनी प्रबल थी कि मैं इसकी सच्चाई से इनकार नहीं कर सकता था। मैंने तुरंत पहचान लिया कि परमेश्वर मेरी आत्मा के लिए सत्य प्रकट कर रहा था और जो कुछ हो रहा था मैंने उसमें मेंआनंद कीया । मेरी ज्ञान इन्द्रियां `तेज हो गईं और जो कुछ हो रहा था उसमें मैं और अधिक गंबीर हो गया था ।

भीड़ के दबाव , तुरही की आवाज, गाना के आवाज़ , लोगों के चिल्लाने और उसके चारों ओर घूमने वाले जानवरों के चलने फिरने के बावजूद ऐसे लगता था जैसे यहाँ केवल हम चारों लोग ही हों।मैं ने माँ की शुद्धि के लिए भेंट प्राप्त की । यह मानक प्रक्रिया थी। प्रसव और उसके साथ होने वाली पीड़ा महिलाओं को पाप और अशुद्धता की निरंतर याद दिलाती थी जो हव्वा से सभी महिलाओं तक आई थी। निर्दोष लहू

की भेंट, परमेश्वर के आने वाले मसीहा की एक तस्वीर थी, जो सभी पापों के लिए अपना निर्दोष लहू बहा रहा था। वे गरीब थे और केवल माँ और बेटे के लिए भी न्यूनतम बलिदान दे सकते थे।

यह वैकल्पिक था, लेकिन कुछ यहूदी जोड़ों अपने पहलौठे पुत्रों को प्रभु को समर्पित करने का विकल्प चुनते थे जब वे 40 दिन के हो जाते थे । यह इस बात का सबूत था कि पहलौठा परमेश्वर का था क्योंकि उसने मिस्र में उसकी जान नहीं ली थी।

जैसे ही मैंने बच्चे को पकड़ लिया, इस सब की वास्तविकता मुझ पर छा गई। "प्रभु, प्रभु," मैंने उसे समर्पित करते हुए कहा, "जैसा कि आपने वादा किया है, अब आप अपने सेवक को शांति से बर्खास्त कर दें। क्योंकि मेरी आंखों ने तेरा उद्धार देखा है, जिसे तू ने सब लोगों के साम्हने तैयार किया है, जो अन्यजातियों के लिए प्रकाश और तेरी प्रजा इस्राएल की महिमा के लिए उजियाला है (लूका 2:29-30)।मेरी आत्मा में एक अनोखी शांति और ख़ुशी उत्पन होने लगी जो मणि ने इस से पहले पहले या बाद में कभी नहीं हुयी था।

मैंने देखा कि माता-पिता जानते थे कि यह मेरे लिए बहुत खास समय था। मैंने उन्हें वर्णन कीया कि परमेश्वर मुझे क्या दिखा रहे हैं। उन्होंने मुझे बच्चे के गर्भाधान और जन्म के बारे में अपनी कहानी सुनाई। मुझे चरवाहों को मिले संदेश में विशेष रूप से दिलचस्पी थी। मैं जानता था कि बेथलहम क्षेत्र के बहुत से चरवाहे, सड़क से सिर्फ 5 मील नीचे, ईश्वरीय अवशेष का हिस्सा थे, वे कुछ अभी भी परमेश्वर से प्यार करते थे और उनके मसीहा के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्य चाहते थे कि मसीहा आए, लेकिन उन्होंने विद्रोह का नेतृत्व करने और रोमन बंधन के जुए को दूर करने के लिए एक सैन्य नेता के रूप में उस्की प्रातीक्षा के थी । हम बेहतर जानते थे। क्या ही अच्छा समय था जब हम वहाँ बात कर रहे थे, हमारी अपनी दुनिया में। मैं उसके बाद के वर्षों में उस बातचीत के बारे में कई बार सोचता रहूँगा।

यह स्पष्ट था कि परमेश्वर ने हमें उद्देश्य पर एक साथ रखा था। ना केवल वह अपना वादा निभा रहा था और मुझे एक बहुत ही खास तरीके से आशीर्वाद दे रहा था, बल्कि वह इस युवा जोड़े के लिए दोस्ती और प्रोत्साहन प्रदान कर रहा था, जो शोर और उथल-पुथल के इतने बड़े भ्रम में इतना बेकार महसूस कर रहा था। मैं कह सकता था कि उन्होंने तुरंत राहत पाई और हमारे बीच एक करीबी रिश्ता बन गया।

जैसे-जैसे हमारी बातचीत की तीव्रता कम होती गई, मैं चारों ओर की गतिविधियों के बारे में और अधिक जागरूक होने लगा। मैं अब पूरी तरह से अपने आप में सीमित नहीं रह गया था बल्कि उन लोगों के बारे में सोचने लगा था जो इस मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं उन्हें यह बताने के लिए इंतजार नहीं कर सकता था कि वह यहाँ था!

फिर मैंने अपनी आंख के कोने से अन्ना को देखा, जो एक बहुत ही बूढ़ी औरत थी, जो किशोरावस्था से ही विधवा थी। वह एक शिक्षित, प्रतिभाशाली महिला थी जिसे परमेश्वर से गहरा प्रेम था। वह हर पल मंदिर में ही होती थी, द्वार खुले रहते थे, लगातार परमेश्वर की पूजा करती थे । वह शायद ही कभी खाना छोड़ती थी, अपने सृष्टिकर्ता और निर्माता तो प्रार्थना और उसकी प्रशंसा के दौरान अक्सर उपवास करना पसंद करती थी। हम अक्सर परमेश्वर के वादों के बारे में बात करते थे और दाऊद के पुत्र के जल्द आने की अपनी आशा को एक साथ साझा करते थे ।

जाहिर है, उसने मुझे सबसे पहले देखा था, और मेरे ध्यान का केंद्र देखकर भीड़ के माध्यम से हमारे पास आने के लिए अपना रास्ता बनाना शुरू कर दिया। परमेश्वर की आत्मा ने उसके मन में पहले से ही यह विचार रखा था कि यह मसीहा है, ताकि मुझे परिचय या स्पष्टीकरण के रूप में शायद ही कुछ कहना पड़े। परमेश्वर के प्रति उसके वर्षों के समर्पण और प्रतिबद्धता ने उन्हें एक विशेष निकटता प्रदान की थी

, एक अंतर्दृष्टि जो कुछ लोगों को उसके कार्यों में थी। हमने बच्चे के माता-पिता की प्रशंसा और प्रोत्साहन के उसके शब्दों को मोहित होकर सुना। वह कितनी खास महिला थी! अपने आनंद को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बांटना मेरे लिए अतिरिक्त सौभाग्य की बात थी, जो अन्ना के रूप में परमेश्वर के सभी लोगों को प्रिय है।

हालांकि, बहुत पहले मुझे अपने कर्तव्यों पर वापस जाना पड़ा। अन्ना ने शेष दिन उनके साथ बिताया, उन्हें मंदिर के चारों ओर दिखाया और उनके साथ परमेश्वर के कार्य में आनन्दित हुई ।

मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा, लेकिन हम उस खास समय को कभी नहीं भूले, जो हमने साथ में बिताया था। मैंने जीवन भर दिन में कई बार इसके बारे में सोचता । मैंने इसके बारे में दूसरों से बात की और अन्ना ने भी। कुछ युवा याजक बहुत रुचि रखते थे, और मैंने उन्हें परमेश्वर में अपना विश्वास बनाए रखने और पाखंड और खाली अनुष्ठान के तौर तरीकों में नहीं पड़ने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश की, जो हर जगह इतने आम थे। नीकुदेमुस और अरिमथिया के यूसफ जैसे युवक विशेष रूप से रुचि रखते थे, और मैं अक्सर प्रार्थना करता था कि जो शब्द हमने उनसे बोले वे अंकुरित हों और उनके दिलों में जड़ें जमा लें। कौन जानता था कि भविष्य क्या होगा? मुझे पता था कि जब यह बच्चा बड़ा हो जाएगा तो मैं जीवित नहीं रहूंगा, और ना ही अन्ना, लेकिन शायद कुछ लोगों को हमने ये बातें बताई थीं, जब उन्हें उसके उदेश्य के बारे में बताया तो वे उसे पहचान पाएंगे और उनका अनुसरण कर पाएंगे। उनके पास क्या ही धन्य विशेषाधिकार/सोभाग्य होगा। मैंने उनसे ईर्ष्या की, लेकिन उस दिन परमेश्वर ने मुझे अपने पुत्र, मेरे उद्धारकर्ता से मिलने और उसे आपने हाथों में पकड़ने के अवसर से अशीश्त कीया था जिस के लिए मैं बहुत आभारी था।

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग करने के लिए: इस बारे में बात करें कि कैसे यीशु एक बच्चे के रूप में आया और उनकी तरह ही एक बच्चे के रूप में बड़ा हुआ। उसके माता-पिता, भाई और बहनें थीं और आपने आप कपड़े पहनना और खाना खिलाना सीखना था जैसे वे करते थे । वह जानता है कि यह कैसा है क्योंकि वह एक बार छोटा बच्चा था।

बड़े बच्चों के साथ उपयोग करने के लिए: इस बारे में बात करें कि कैसे यीशु एक बच्चे के रूप में आया और एक बच्चे के रूप में बड़ा हुआ। आज जिस दौर से सभी बच्चे गुजर रहे उस पर ध्यान केंद्रित करें । उसे अपने माता-पिता की आज्ञा मानना, अपने भाइयों और बहनों के साथ मिलना, दूसरों के प्रति दयालु होना और घर के काम में मदद करना सीखना था। यह कभी-कभी कठिन हो सकता है, लेकिन हम यीशु से मदद मांग सकते हैं क्योंकि वह जानता है कि यह हमारे लिए कैसा है क्योंकि वह स्वयं यह सब कर चुका है।

3. यीशु का जन्म होना

उत्तर देने के लिए प्रशन

परमेश्वर स्वयं हमारे जैसा व्यक्ति बनने के लिए पृथ्वी पर क्यों उतरा ?

क्रूस पर हमारे पापों के लिए मरने को उसे परमेश्वर होते हुए भी हमारे जैसा एक मनुष्य बनना पड़ा ।

परमेश्वर स्वयं एक वयस्क के बजाय एक बच्चे के रूप में पृथ्वी पर क्यों आया?

हमारी तरह जीवन के हर हाल में से गुजरने के लिए ताकि हम जान सके कि कि वह यह सब समझता और जानता है।

यीशु का जन्म राजा के महल के बजाय जानवरों के साथ एक गंदे तबेले में क्यों हुआ था?

वह बहुत विनम्र बना और केवल अमीर और शक्तिशाली ही नहीं, बल्कि आम लोगों के पास आया था ।

आपको क्या लगता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को प्रकट करने के लिए चरवाहों को क्यों चुना?

क्योंकि बाकि सब लोग उन्हें नीच निगाह से देखते थे और फालतू लोग समझते थे , लेकिन ऐसा नहीं करता था । उन्होंने परमेश्वर का अनुसरण किया।

आपको क्या लगता है कि परमेश्वर के पुत्र को देखकर चरवाहों पर क्या प्रभाव पड़ा? इसने उन्हें कैसे बदल दिया?

वे जान गए थे कि परमेश्वर उन्हें याद रखता है और उनकी परवाह करता है। आशापूर्व वे उसके लिए जीते थे।

यदि आपने तबेले में बच्चे यीशु को चरनी में देखा होता तो आपने क्या सोचा होता ?

(उत्तर अलग-अलग होंगे, सभी को उत्तर देने दें जैसे कि वे भी वहां थे)

क्या आपको लगता है कि एक तबेले में पैदा होने और बहुत अधिक धन के बिना बड़े होने से यीशु को यह जानने में मदद मिलती है कि हम क्या कर रहे हैं क्योंकि वह भी इससे गुजरा है?

हां, वह जानता है कि हम किस दौर से गुजर रहे हैं, केवल परमेश्वर होने के करण नहीं क्योंकि वह सब कुछ जानता है, बल्कि इसलिए वह जानता है क्योंकि वह स्वयं इससे गुजरा है।

अब आप किन कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं जिनका यीशु ने भी कीया और समझता है?

(बच्चों को उनके सामने आने वाली कठिनाइयों को साझा करने दें)

शिमोन और अन्ना कौन थे?

यह लोग परमेश्वर पर विश्वास करने वाले थे कि परमेश्वर शीघ्र ही अपने पुत्र को मसीहा के रूप में भेजेगा। अन्ना एक बूढ़ी औरत थी जिसने अपना सारा समय मंदिर में परमेश्वर की स्तुति करने और जैसे भी हो सकता था उसकी सेवा करने में व्यतीत करती थी । शिमोन मंदिर में काम करने वाला याजक था।

उसने परमेश्वर द्वारा इसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए लंबे समय तक प्रतीक्षा की थी लेकिन धैर्यपूर्वक परमेश्वर पर भरोसा करना जारी रखा था । जब आपको किसी चीज का इंतजार करना पड़ता है तो क्या आप कभी बेदिल हो जाते हैं?

(लोगों को उदाहरण और अनुभव साझा करने दें)

अधिक धैर्यवान बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

प्रत्येक दिन पवित्र आत्मा के फल के लिए प्रार्थना करें, विशेषकर धैर्य के लिए (गलातियों 5:22-23)

4.मजूसिओं का आना

(मत्ती 2:1-18)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 2:1-18

मजूसिओं के द्वारा

ईसा पूर्व के अंतिम वर्षों में आने वाले राजा के लिए एक अजीब तरह की उम्मीद थी। अधिकांश शिक्षित और प्रशिक्षित लोग इस पूर्वाभास से अवगत थे। उन्होंने सोचा कि वह यहूदा के माध्यम से आएगा। इसने हर जगह राष्ट्रों के पूरे महौल को प्रभावित किया। पश्चिम (रोम) और पूर्व (पारस) दोनों ने इसे महसूस करते थे । मैं आपको इस बारे में बताना चाहता हूं कि ब्रह्मांड के इस राजा को आमने-सामने देखकर कैसा लगा जब वह आया! वह क्या ही विशेषाधिकार/सोभाग्य था!

यशायाह उसका वर्णन इस प्रकार करता है: "जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा की मृत्यु हुई, उस वर्ष मैं ने यहोवा को ऊंचे और ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा, और उसके वस्त्र की माला से मन्दिर भर गया। उसके ऊपर फ़रिश्ते थे, और प्रत्येक के छ: पंख थे; दो पंखों से उन्होंने अपना मुंह ढांप लिया, और दो से अपने पांव ढांपे, और दो से उड़ रहे थे। और वे एक दूसरे को पुकार रहे थे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है' (यशायाह 6:1-3)।"

यूहन्ना ने भी उसे देखा और हमें इसके बारे में बताता है: "मैं तुरन्त आत्मा में था, और मेरे साम्हने स्वर्ग में एक सिंहासन था, जिस पर कोई बैठा था। और जो वहां बैठा था, वह सूर्यकांत मणि और कारनीलियन का रूप था। पन्ना के सदृश एक इंद्रधनुष ने सिंहासन को घेर लिया। ... सिंहासन से बिजली की चमक, गड़गड़ाहट और गड़गड़ाहट की गड़गड़ाहट आई। (प्रकाशितवाक्य 4:2-11)।" मैं यहां आपको यह बताने के लिए हूं कि वह राजा स्वर्ग छोड़ कर पृथ्वी पर आने के लिए, घर से दूर एक युवा जोड़े के लिए एक गुफा में पैदा हुआ । मुझे पता है। मैंने उन्हें देखा! मैं हूं एक मजूसी हूँ ।

'मैगी' एक यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद मोटे तौर पर "बुद्धिमान पुरुष जो राजायों की स्थपना करते हैं।" हम तीन नहीं बल्कि सैकड़ों थे, हम राजे तो नहीं बल्कि राजायों को बनाते थे, और पूर्व से नहीं बल्कि पूर्व के निकट थे। "मजूसी " मादियों के याजकीय गोत्र का नाम है, जैसे लेवी यहूदियों में है। हम कुशल, सक्षम, सम्मानित और उच्च शिक्षित पुरुष थे। हम वहां तक का ज्ञान रखते थे जहाँ दूसरों की कोई पहुंच नहीं होती थी, इस प्रकार आपका शब्द 'जादू' हमारे नाम से आया है। हम इतने सम्मानित थे कि डाकू भी हमें नहीं लूटते थे । हम एक संगठन के रूप में शासन करते थे । हमने पूर्व के राजाओं को चुना और प्रशिक्षित किया।

हम बहुत धार्मिक थे, विशेष रूप से दानिय्येल के आने तक और बाबुल में अपने समय के दौरान शीर्ष जादूगर बनने तक जोरोस्टर की पूजा करते थे। उसने हमें यहोवा के बारे में सिखाया (दानिय्येल 2:10,27,48; 4:7,9; 5:11; 6:4) और दानिय्येल के समय से लेकर अब तक, 600 साल बाद तक हमारे बीच एक ईश्वरीय अल्पसंख्यक ने उसका अनुसरण किया है। हम जानते थे कि ब्रह्मांड के इस राजा के जन्म का समय आ गया है। दानिय्येल की भविष्यवाणी कि यहूदियों को इस्राएल में लौटने की अनुमति देने के 483 साल बाद उसे काट दिया जाएगा (दानिय्येल 9:24-27)। हम जानते थे कि बड़े होने और उस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए उन्हें जल्द ही जन्म लेना होगा, क्योंकि समय लगभग पूरा हो चुका

था। हम एक तारे को उसके आने की घोषणा करने के लिए आसमान को देखते रहते थे। बिलाम ने याकूब में से एक तारे की भविष्यवाणी की थी (गिनती 24:17) और उसी को हम खोजते रहते थे ।

जब यह दिखाई दिया, तो हम जानते थे कि यह कोई प्राकृतिक घटना नहीं थी जैसे कि ग्रहों का संयोग, नोवा या धूमकेतु। यह वास्तव में एक 'तारा' नहीं था, लेकिन शाब्दिक रूप से 'ऐसा कुछ जो चमकता, अविश्वसनीय तरीके से चमकता था।' यही कारण है कि बाइबल इसका वर्णन करने के लिए 'तारे' के लिए सामान्य शब्द का उपयोग नहीं करती है (मत्ती 2:2)। यह वास्तव में परमेश्वर की शिक्कनाह/ महिमा का पृथ्वी पर एक बार फिर से आना था।

प्रशिक्षित खगोलविदों के रूप में, हम इस आयोजन में बहुत रुचि रखते थे। परमेश्वर में विश्वास रखने वालों के रूप में, हम खुद इस राजा से मिलना चाहते थे। हम जानते थे कि वह इस्राएल में आ रहा है, इसलिए हम उसकी राजधानी यरूशलेम गए। वह 1,000 मील की 5 महीने की यात्रा थी। आपूर्ति एकत्र करने में महीनों लग गए और व्यवसाय का ध्यान रखा गया ताकि हम इस साल की लंबी यात्रा कर सकें। हम में से दर्जनों चले , दुनिया के एक हजार सबसे अच्छे कलवारी, नौकरों, सामान आदि द्वारा संरक्षित। हम सभी शानदार घोड़ों की सवारी करते थे; हम उस समय दुनिया के सबसे अच्छे घुड़सवार थे। हजारों ऊंटों हमारा सामान ढोय रहे थे ।

जब हम यरूशलेम पहुंचे, तो हमने मान लिया कि यह नया राजा नगर में चर्चा का मुख्य विषय होगा । हमारे आश्चर्य की कल्पना कीजिए जब कोई उसके बारे में जानता भी नहीं था और किसी को इस बात का कोई अता -पता ही नहीं था ! लोग अपने राजा के जन्म से ज्यादा हमारी यात्रा के बारे में चिंतित थे! हेरोदेस विशेष रूप से परेशान था, और कोई नहीं जानता था कि वह क्या करेगा।

आप देखिए, हमारा देश पारस बहुत बड़ा और शक्तिशाली था जबकि रोम इस समय कमजोर था। यरूशलेम लगभग रक्षाहीन था क्योंकि उसके अधिकांश सैनिक आर्मेनिया में लड़ने गए थे। तीस साल पहले घुड़सवार सेना पारस से आई थी और हेरोदेस का रोम तक पीछा किया था जहां उसे अपने राज्य पर कब्जा करने के लिए एक बड़ी सेना की जरूरत थी। हम यहां 63 ईसा पूर्व, 55 ईसा पूर्व और 40 ईसा पूर्व में फ़िलिस्तीन में रोम से लड़ने के लिए आए थे। हेरोदेस के लिए हालात को बदतर बनाने के लिए, अगर हम एक विद्रोह शुरू कर देते तो यहूदी लोग जरूर हमारा समर्थन करते । वैसे भी, हमारे पास क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए पर्याप्त से अधिक सैनिक थे। हर कोई जानता था कि हम पारस के लिए एक नए राजा की तलाश कर रहे थे, और बूढ़ा हेरोदेस मानसिक रूप से इतना बीमार था कि वह किसी भी चीज को नष्ट कर देता था जो उसे एक खतरे की तरह लग रहा होता था। यहूदी हमारे बारे में या आपने राजा के जन्म से ज्यादा इस बात से परेशान थे कि वह उनके साथ क्या करेगा।

ओह, वे उसके बेतलेहेम में पैदा होने के बारे में भविष्यवाणियों को जानते थे (मीका 5:2) और जब हमें धार्मिक शासकों से यह जानकारी मिली, तो हम बेथलहम चले गए। अजीब बात यह है, उनमें से किसी ने भी अपने राजा को देखने के लिए 5 मील की यात्रा करने की जहमत नहीं उठाई। हमारे लिए यह समझना कठिन था कि हम उनके राजा को देखने के लिए इतने बड़े खर्च के रूप में कब आए थे!

हम बेथलहम की सामान्य दिशा तो जानते थे, लेकिन यह नहीं पता था कि लड़का कहाँ होगा। परमेश्वर की शिकनाह/ महिमा हमारे सामने चलती हुई और हमें बेतलेहेम में उसके घर तक ले जाती हुई दिखाई दी, ठीक उसी तरह जैसे शिकनाह / महिमा यहूदियों से पहले चली गई थी जब वे मिस्र से अपने वादा किए गए देश में जाने के लिए गए थे।

मरीयम और यूसफ बेथलहम में जकर्याह और इलिशबा जैसे दोस्तों के साथ पास में रहे थे। नासरत में घर वापस आने पर उन्हें आलोचना और अस्वीकृति का सामना करना पड़ेगा। यहां उन्हें शांति और स्वीकृति मिलती थी । वे बहुत पहले एक स्थानीय घर में चले गए थे क्योंकि यीशु एक बच्चे से एक चलने वाला बच्चा हो चूका था। जब हम पहुंचे तो उन्हें वहां रहते लगभग एक साल हो गया था।

इसे देखकर बहुत अच्छा लगा, जिसे हम ब्रह्मांड के राजा के रूप में जानते थे: परमेश्वर स्वयं मानव रूप में था । हमने उन्हें प्रणाम किया और उनकी पूजा की और उनके माता-पिता के साथ बात करने और साथ रहने में बहुत अच्छा समय बिताया। हमें इतना आगे आना उनके लिए बहुत सार्थक और उत्साहजनक लगा। मुझे लगता है कि उनके बेटे की स्थानीय अज्ञानता और यहां तक कि जिस अस्वीकृति का वे सामना कर रहे थे, वह हतोत्साहित करने वाली और भ्रमित करने वाली थी वे काफी छोटे था ; उनमें उतनी ही परिपक्वता देखकर जितनी हम में थी हमें आश्चर्य हुआ ।

जब आप किसी से प्यार करते हैं, तो आप उसे उपहार देना चाहते हैं। हमने तब और वहीं अपने परमेश्वर को उपहार दिए। हमारे देश में हम उससे और अधिक अलग हो गए थे, अब हम उसकी भरपाई कर सकते हैं। हमने शाही उपहार दिए: सोना (मुकुट सोने के बने होते थे), लोबान (शुद्ध धूप, हमारे शुद्ध परमेश्वर की पूजा में इस्तेमाल किया जाता था) और लोहबान (मृतकों के लिए मरहम, यह पहचानते हुए कि यह परमेश्वर भी एक आदमी था)। हमने ये उपहार उनके महत्व के कारण दिए। हम चाँदी, हीरे या पैसे दे सकते थे लेकिन हमें लगा कि ये हमारे दिल में उसके लिए हमारी स्तुति और पूजा को बेहतर तरीके से व्यक्त करते हैं। हमें नहीं पता था कि वे कितने गरीब थे, या कि उन्हें उस रात इन धन की आवश्यकता होगी ताकि वे मिस्र के लिए अपनी अचानक उड़ान भरने और कई वर्षों तक वहां रहने के लिए वित्त पोषण कर सकें। परमेश्वर यह जानता था, और हमारे माध्यम से प्रदान कर दीया था इससे पहले कि वे अपनी आवश्यकता को जान सकें और उसके प्रावधानों के लिए बोल सकें।

सुबह जब पड़ोसियों ने हमें जाते हुए देखा, और राजा के साथ परिवार भी चला गया, तो उन्होंने माना कि हम उन्हें वहां राजा बनाने के लिए पारस ले गए थे। काश हम ऐसा कर पाते, लेकिन यह परमेश्वर की योजना नहीं थी। जब हेरोदेस ने उसे मारने की कोशिश की, तो परमेश्वर ने उसे पहले ही बचा लिया था। परमेश्वर की अपनी योजना है और कुछ भी इसे विफल नहीं करेगा। हेरोदेस के सैनिकों ने बेथलहम में अन्य युवा लड़कों को मार डाला जब वे वहां पहुंचे, लेकिन यीशु को नहीं। यह बहुत बुरा था उन 2 दर्जन या ज्यादा लड़कों को मरना पड़ा। वे परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच युद्ध के इस चरण में पहले हताहत हुए थे। मुझे बहुत खुशी है कि मैं राजा की तरफ था!

वर्षों बाद हमने सुना कि उसने स्वयं को राजा के रूप में प्रस्तुत किया था (मत्ती 21:5, आदि) परन्तु उसे अस्वीकार कर दिया गया था। काँटों का ताज ही दिया था। एक दिन, हालांकि, वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में लौटेगा (प्रकाशितवाक्य 19) और फिर सभी को उसकी पहचान में झुकने के लिए मजबूर किया जाएगा। मुझे खुशी है कि हम स्वेच्छा से प्यार और भक्ति के आगे झुक सकते हैं, चाहे इसकी कीमत हमें कितनी भी क्यों ना चुकानी पड़े । आप क्या कहते हैं? क्या वह आपका राजा है? उसका राज्य अब उसके लोगों के दिलों और जीवन में है। क्या वह आपके हृदय और जीवन के राजा के रूप में शासन करता है? हम राजा-निर्माता थे, लेकिन आप भी हैं। केवल आप ही उसे अपने जीवन का राजा बना सकते हैं!

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग करने के लिए: इस बारे में बात करें कि मजूसी कितनी दूर आए थे ताकि वे यीशु को उपहार दे सकें। हमें यीशु के जन्मदिन पर उपहार मिलते हैं, लेकिन हम उसे क्या दे सकते हैं? वह हमारा प्यार चाहता है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग करने के लिए: मजूसीयों द्वारा उपहार देने और यीशु की पूजा करने के लिए उनके बलिदान पर ध्यान केन्द्रित करें । हम उसके लिए क्या बलिदान कर सकते हैं और आज उसे क्या दे सकते हैं? यूहन्ना 3:16 पढ़ें कि परमेश्वर ने हमें क्या दिया है।

4. मजूसिओं का आना

उत्तर देने के लिए प्रशन

मजूसी लोग (बुद्धिमान पुरुष) कौन थे?

वे पूर्व (पारस) के विशेष पुरुष थे जिन्होंने अपने देश में राजाओं को नियुक्त और प्रशिक्षित करते थे ।उन्होंने दानिय्येल से मसीहा के बारे में सुना था और उसकी आराधना करने आए थे।

आपको क्या लगता है कि उन्होंने क्यों आपना काम धंधा बंद करके, अपने परिवारों को छोड़ कर, यीशु को देखने के लिए अपना सारा समय और पैसा लगा दिया?

वे परमेश्वर से प्रेम करते थे और उसका सम्मान करना चाहते थे और साथ ही उसके पुत्र, अपने उद्धारकर्ता को देखना चाहते थे।

धार्मिक शासक बालक यीशु को देखने के लिए बेथलहम क्यों नहीं गए, जबकि वे जानते थे कि वह वहीं पैदा हुआ था?

वो बहुत घमंडी थे और खुद को विनम्र करने में तयार नहीं थे। हालांकि वे केवल खुद के बारे में ही चिंत्त रहते थे।

आपको क्या लगता है कि मजूसिओं (बुद्धिमान पुरुषों) ने यीशु को देखकर कैसा महसूस किया?

यह उनके जीवन का सबसे खास दिन था और उन्होंने अपने उद्धारकर्ता के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। मजूसिओं (बुद्धिमान पुरुषों) ने यीशु की पूजा की और उसे उपहार दिए।

क्या आप उसकी पूजा करते हैं? क्या आप उसे उपहार देते हैं? वह हमें क्या उपहार देना चाहता है?

(लोगों को जवाब देने दें)

यीशु क्यों चाहता है कि हम उसकी आराधना करें और आज उसे उपहार दें?

यह एक तरीका है जिससे हम उसे धन्यवाद दे सकते हैं और उसे दिखा सकते हैं कि हम उससे प्यार करते हैं। इससे उसे खुशी मिलती है।

यीशु आपको क्या उपहार देता है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

यीशु ने आपको अब तक का सबसे अच्छा उपहार क्या दिया है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

क्या आपने इसके लिए उसे धन्यवाद दिया है? यदि नहीं तो कृपया उसे अभी धन्यवाद दें।

(उसने उनके लिए जो किया है उसके लिए उन्हें प्रार्थना करने दें और परमेश्वर को धन्यवाद देने दें)

5. यहुना बप्तिस्मा देनेवाला यीशु की ओर इशारा करता है

(मत्ती 3:1-12; 4:1-12; मरकुस 1:1-8, 14; 6:14-29; लूका 3:1-18; 9:7-9)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 3:1-12

द्वारा: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले

तुम्हें पता है, कि जब भी मैं पृथ्वी के बारे में सोचता हूं, मेरी गर्दन में यह अजीब सा दर्द होता है! मुझे यह अभी होने लगा है । मुझे आश्चर्य होता है कि इसका क्या कारण है? हो सकता है कि इसका संबंध उस आखिरी घटना से हो, जो उस वक्त घटी जब मैं धरती पर था। आइए देखें, मुझे क्या याद आ सकता है? मुझे याद है कि मैं एक साल से अधिक समय तक एक अंधेरे, शिविर, ठंडी और गंदी कालकोठरी में रहना बंद रहता था । मुझे याद है कि मैंने खुद को दुखदायक परिस्थितियों में होने के बावजूद भी परमेश्वर में अपना विश्वास बनाए रखने की कोशिश कर रहा था। मैं उस मसीहा की अस्वीकृति के बारे में उलझन में था, जिसे मैं घोषित करने आया था।

तभी तेज धूप मेरी कोठड़ी में दाखिल हुई क्योंकि दरवाजा जोर से खुला था। हफ्तों भर के अँधेरे के बाद रोशनी ने मुझे अंधा कर दिया। इससे पहले कि मैं देख पाता कि क्या हो रहा है, मुझे बाहर घसीटा गया, पीटा गया, मारा गया, मुझ पर थूका गया, और फिर एक लकड़ी के एक बड़े टुकड़े पर जिस पर रख कर कुछ कटा जाता है , मेरे सिर के साथ घुटने टेकने के लिए मुझे मजबूर किया गया। मुझे याद है कि मैं सोच रहा था कि , "मैं मरने जा रहा हूँ!" मुझे कोई डर नहीं था, बस शांति ही शांति थी। मेरे पास कुछ अनुत्तरित प्रशन था : यदि यीशु ही मसीह था , तो लोग उन्हें अस्वीकार क्यों कर रहे थे? उसने लोगों को अपने और मेरे विरुद्ध क्यों जाने दिया? क्या मैंने कुछ गलत किया? तब तुरंत मैं उनकी उपस्थिति में आ गया था और सब कुछ उज्ज्वल और गर्म और सुंदर हो गया था। उन सवालों का अब कोई मतलब नहीं रह गया था। यह सब मेरे जीवन का अतीत बन्ने वाला था लेकिन इसके आगे यीशु के साथ अनंत काल का जीवन था। अब पीछे मुड़कर नहीं देखना था। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि मैं यीशु के लिए अपना सिर खोने वाला पहला व्यक्ति था!

मेरा नाम योखानन (या येहोहानन) है। तुम मुझे यूहन्ना कहते हो, जिसने बपतिस्मा दिया। मैं एक याजक का बेटा था। मैं आपको अपने जन्म के बारे में बहुत कुछ नहीं बताऊंगा, क्योंकि मुझे यकीन है कि आप जिब्राईल का मेरे पिता के पास आने की कहानी जानते हैं (लूका 1)। मेरे पास अद्भुत, ईश्वरीय माता-पिता थे। हालाँकि, मेरे पास वे लंबे समय तक नहीं थे। जब मैं पैदा हुआ तो वे काफी बूढ़े थे, और जब वे मरे, तो मैं अपने आप पर निभर था। मैं जंगल में पशुओं की खाल पहिने और टिड्डियां और मधु खाकर पला बढ़ा हूं। मैंने एक नाज़री प्रतिज्ञा ली हुयी थी , जिसका अर्थ था कि मैंने कभी अपने बाल नहीं काटे, अंगूर के उत्पाद नहीं खाए या किसी मृत व्यक्ति या जानवर को नहीं छुआ। मैंने कभी शादी नहीं की।

मैं एक याजक बन सकता था, लेकिन जानता था कि परमेश्वर जो चाहता था यह वह नहीं था। परमेश्वर मुझे उसके लिए एक इंजीलवादी बनने के लिए तैयार कर रहा था, लेकिन आज कल के आपके प्रचारकों की तरह नहीं । मुझसे मिलने आने के लिए लोगों को दो दिन का सफर तय करना पड़ता था । वहाँ पर मैंने उनके पापों को यथासंभव स्पष्ट रूप से बताता था (मरकुस 1:1-6)। परमेश्वर मुझे एक 'अग्रदूत ' के

रूप में इस्तेमाल कर रहा था - जो एक राजा के आगे जाता और लोगों को सड़कों को ठीक करने और देश को उनके स्वागत के लिए सुरक्षित करने के लिए कहते था । मैंने लोगों को उनके आंतरिक पश्चाताप के बाहरी संकेत के रूप में बपतिस्मा लेने के लिए बुलाकर ऐसा किया (मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-18)।

मैंने 29 ईस्वी के आखिर में, रोश हशनाह के समय के पास अपनी सेवकाई को शुरू किया, जो पश्चाताप पर केंद्रित थी । चूंकि यह एक विश्राम वर्ष की शुरुआत थी, जब एक वर्ष के लिए सभी रोपण और अनावश्यक कार्य बंद हो गए थे, बहुत से लोग मुझे उपदेश देते हुए सुनने के लिए आने को खाली होते थे। इसने लोगों के हृदयों को परमेश्वर की बातों की ओर मोड़ दिया।

मुझे पता था कि मैं लोगों को मसीहा के लिए तैयार कर रहा था और सभी को उसकी ओर फेर रहा था। मुझे इस बात का अंदाजा था कि वह उन्ही कहानियों में से था जो मैंने अपनी माँ और पिता से छोटी उम्र में सुनी थीं। उन्होंने मुझे मेरे मौसेरे भाई, यीशु और उनके चमत्कारी गरब-प्रवेश और विशेष रुपी जन्म के बारे में बताया। मैंने मसीहा की भविष्यवाणियों का अध्ययन करने में कई घंटे बिताए थे , और जहाँ तक मैं बता सकता था कि उसने अब तक सभी भविषभानिओं पूरा किया है।

फिर भी, जब वह आया और मुझे बपतिस्मा देने के लिए कहने लगा , तो मुझे यकीन नहीं हुआ। हमने इस बारे में बात करते हुए कई शामें बिताईं और उस कार्य के बारे में जो परमेश्वर हमारे द्वारा शुरू कर रहा था। मुझे लगा कि उसे मुझे बपतिस्मा देना चाहिए! फिर भी, मैंने उसकी इच्छा के अधीन उसे बपतिस्मा दिया ताकि वह मेरे संदेश और लोगों की जरूरतों के साथ अपनी पहचान बना सके (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-23)। क्या ही सुभाग्य था यह - मेरे जीवन का मुख्य आकर्षण! परमेश्वर की इच्छा की खोज करने और परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए वह तुरंत 40 दिनों के लिए चला गया (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)।

जब तक यीशु वापस लौटे, तब तक पतझड़ वसंत में बदल चुका था (हमारी वातावरण में सर्दी नहीं थी)। यह 30 ई. का वर्ष था। मैं अब भी यरदन नदी में बपतिस्मा दे रहा था, और यरदन घाटी के ऊपर जा रहा था और भूमि से दूर रह रहा था। मुझे बाद में पता चला कि जिस दिन यीशु की शैतान द्वारा परीक्षा ली गई थी, उसी दिन मेरी भी उसी तरह परीक्षा हुई थी (यूहन्ना 1:19-34)। धर्मगुरु आए और सोचते थे कि मैं मसीहा हूं। मुझे भी, गर्व करने और परमेश्वर की महिमा को अपनी महिमा के तौर पर लेने के लिए लुभाया गया था। परमेश्वर की मदद से, मैंने घमंड के आगे नहीं झुका । मैंने उनसे कहा कि मैं सिर्फ एक आवाज हूँ , परमेश्वर के लिए एक प्रवक्ता हूँ । मैं बिजली नहीं था, बस वह तार था जिसके माध्यम से यह संचालित करता था ।

जब यीशु अगले दिन, शुक्रवार को लौटा, तो मैंने सभी से कहा कि वह परमेश्वर का मेम्ना है,जो संसार के पापों को उठाने के लिए आया है (यूहन्ना 1:35-51)। मेरे कुछ अनुयायी समझ गए थे, लेकिन अधिकांश रोमन सेनाओं को हराने के लिए एक राजा की तलाश में थे। शनिवार को, मैंने यूहन्ना और अन्द्रियास को यीशु के पास भेजा और उन्होंने अपने भाइयों याकूब और पतरस को आमंत्रित किया। हम सभी किसी न किसी तरह से संबंधित थे और इस समय से पहले कुछ हद तक एक-दूसरे को जानते थे। रविवार को, जब यहूदी फिर से यात्रा कर सकते थे, वे फिलिप और नथानिएल को ले गए और पूरा समूह काना नगर में एक पारिवारिक विवाह में शामिल हुआ । वहाँ यीशु अपना पहला चमत्कार करता (यूहन्ना 2)।

मुझे अपनी कहानी खत्म करने दो। मैंने अपने अनुयायियों को यीशु की ओर इशारा करना जारी रखा, लेकिन एक साल से भी कम समय के बाद मुझे हेरोदेस के व्यभिचार के पाप को इंगित करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। एक और साल जेल में रहने के बाद, मेरा सिर काट दिया गया (मरकुस 6:17-29)। मैं यीशु के लिए अपना जीवन देने को तैयार था, जो मेरे लिए अपना जीवन देगा। मैंने इसे एक वास्तविक विशेषाधिकार माना था । इस बात का पता चला कि मैं ऐसा करने वाले कई लोगों में से पहला व्यक्ति था ।

इथियोपिया के एक दूर के शहर में तलवार से मारे जाने से मत्ती को शहादत का सामना करना पड़ा था । मरकुस को अलेक्जेंड्रिया नगर की सड़कों पर बेरहमी से घसीटे जाने के बाद वहीं में मार दिया गया था,। लूका को यूनान में एक जैतून के पेड़ पर लटका दिया गया था। यहुना को उबलते तेल की कड़ाही में डाल दिया गया था, लेकिन वह एक चमत्कारी तरीके से मौत से बच गया, और बाद में पतमस टापू पर नजरबंद कर दिया गया। पतरस को रोम में सूली पर चढ़ा दिया गया था, उसका सिर नीचे की ओर था। यरूसलम में याकूब महान का सिर कलम कर दिया गया था। छोटे याकूब को मंदिर के एक ऊंचे शिखर से फेंक दिया गया था, और फिर एक कपडा साफ़ कारने वाले लठे के साथ पीट-पीट कर मार डाला गया था। फ़िलिपस को फ्रीगिया के हीरोपोलिस में एक खंभे से लटका दिया गया था। बार्थोलोमई को जिंदा जला दिया गया था। अन्द्रियास एक क्रूस पर बंधा हुआ था, जहाँ उसने अपने ज्लादों को अपनी मौत तक प्रचार करता रहा । थमा को पूर्वी भारत के कोरोमंडल में एक भाले को उसके शरीर के अंदर -अंदर से चलाया गया था। यहूदा को तीरों से मार गिराया गया था। मथियास को पहले पथराव किया गया, और फिर उसका सिर कलम कर दिया गया। बरनबास को सैलोनिका में यहूदियों ने पत्थर मारकर मार डाला था। पौलूस , विभिन्न यातनाओं और उत्पीड़न के बाद, रोम में सम्राट नीरो द्वारा सिर कलम कर दिया गया था।

यह सब यहीं नहीं रुका था । सदियों डर सदियों में विश्वासियों को उनके विश्वास के लिए सताया और मार दिया गया था । पिछले एक साल में यह अनुमान लगाया गया है कि उनके विश्वास के लिए 160,000 लोग मारे जा चुके हैं। पिछली सभी शताब्दियों की तुलना में पिछली शताब्दी के दौरान लोग यीशु के लिए अधिक मरे हैं। जैसे-जैसे अंत निकट आता है, शैतान परमेश्वर और उसके लोगों के विरुद्ध अपना आक्रमण तेज करता जाता है। चौंकिए मत। यीशु ने तुमसे कहा था, "इस संसार में तुम्हें क्लेश होगा," लेकिन फिर वह आगे कहता है: "परन्तु धीरज रखो! मैने संसार पर काबू पा लिया।" (यूहन्ना 16:33)। मैं सिर्फ दूल्हे का दोस्त था; आप दुल्हन हैं (यूहन्ना 3:27-30)। आपके पास राज्य में बहुत बड़ा पद और विशेषाधिकार है । उसे प्यार करें। उसके लिए जियो। और यदि आवश्यक हो, तो उसके लिए मरो। वह इस सब कुछ के और हाँ इससे भी अधिक के लायक है!

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: परमेश्वर ने यीशु के मौसेरे भाई यहुना को उसका दोस्त बनने और उसकी मदद करने के लिए भेजा। परमेश्वर आपकी मदद करने के लिए आपके दोस्त भी भेजता है। वह चाहता है कि आप एक ऐसे दोस्त बनें जो दूसरों की भी मदद करे।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: हर किसी को दोस्तों की जरूरत होती है। यीशु के मित्र के रूप में उसका मौसेरा भाई यूहन्ना था। यूहन्ना ने, परमेश्वर के लिए यीशु के कार्य को समझा लिया था । यीशु के लिए यह एक प्रोत्साहन था। जब आप यीशु के लिए जीते हैं तो परमेश्वर आपको प्रोत्साहित करने के लिए लोगों को भेजता है। वह चाहता है कि आप दूसरों से दोस्ती करें और उनकी मदद भी करें।

5. यूहन्ना देने वाला यीशु की ओर इशारा करता है

उत्तर देने के लिए प्रशन

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कौन था?

वह यीशु का मौसेरा भाई था जिसे परमेश्वर ने लोगों को यह बताने के लिए बुलाया था कि मसीहा आ रहा है और फिर अपने अनुयायियों को यह बताने के लिए कि यीशु ही वह मसीहा था।

उसका जीवन और पहनावा कैसा था?

वह जानवरों की खाल पहनता था और टिड्डियाँ और शहद खाता था। वह जंगल में रहता था और उसने अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया था।

जो लोग उसे सुनने आते थे, उनके लिए उसका क्या संदेश होता था?

उसने उन्हें पश्चाताप करने और पाप से फिरने के लिए कहता था ताकि वे मसीह के आने पर उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हों सके ।

'मसीहा' शब्द का क्या अर्थ है?

यह स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है जो मनुष्य बन गया और इसलिए एक व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य था। वह दुनिया के पापों का भुगतान करने के लिए आया था ताकि हम परमेश्वर के साथ स्वर्ग में हो सकें।

यूहन्ना ने यीशु का वर्णन करने के लिए 'परमेश्वर का मेमना ' शब्दावली का प्रयोग क्यों किया?

यहूदी सोचते थे कि मसीहा एक सैनिक होगा जो रोम के खिलाफ सेनाओं का नेतृत्व करेगा, लेकिन यीशु ऐसा करने के लिए नहीं आया था। उसे "परमेश्वर का मेमना" कहकर वे समझेंगे कि वह मंदिर में उनके द्वारा किए गए मेमनों के बलिदान की पूर्ति करने आया है। वह उस मेमने की बात कर रहा था जो फसह के दिन मर जाता था ताकि वे जीवित रहें। यीशु यही करने आया था।

यहुना के कौन से अनुयायी यीशु के अनुयायी बने?

यूहन्ना, अन्द्रियास, पतरस, याकूब, फिलिप्पुस और नतनएल।

यहुना की मृत्यु कैसे हुई?

जेल में जब यहुना का सिर कलम कर दिया गया था।

'शहीद' का क्या अर्थ है? अन्य कौन से शिष्य शहीद हुए थे?

शहीद वह होता है जो अपने विश्वास के लिए मरता है। यहुना को छोड़कर सभी शहीद हो गए, जिसमें पौलूस भी शामिल था ।

परमेश्वर कभी-कभी अपने लोगों को काम आयु में और भयानक मौतों से क्यों मरने देता है?

हम नहीं जानते कि क्यों परमेश्वर कभी-कभी अपने लोगों को काम आयु और भयानक मौतों की अनुमति देता है। हम जानते हैं कि उसके पास एक कारण होता है, हालांकि, और वह जो कुछ भी करता है वह हमारे लिए प्यार से किया जाता है। कभी-कभी यह दूसरों को सबक या संदेश देने के लिए होता है। हालांकि, हमेशा किसी न किसी रूप में ऐसा उसकी महिमा के लिए होता है, और यही तो हम सभी जीवन और मृत्यु के माध्यम से करना चाहते हैं।

अगर परमेश्वर ने चाहा, तो क्या आप उसके लिए मरने को तैयार होंगे?

वह हमारे लिए मरा और हमारे सभी पापों के लिए अनंत काल तक भुगतान किया, इसलिए यदि हम उसके लिए मरेंगे, तो इसका मतलब यह होगा कि हम जल्द ही स्वर्ग में जाएंगे। यह एक सम्मान और सौभाग्य की बात होगी, यदि परमेश्वर ने हमारे लिए इसे चुना होगा तो । यह उसकी पसंद है, लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम प्रत्येक दिन उसके लिए जिएं। कभी-कभी यीशु के लिए जीना उसके लिए मरने से ज्यादा कठिन हो सकता है।

आज आप यीशु के लिए जीने के लिए क्या कर सकते हैं? आप उसे अपने जीवन से कैसे दिखा सकते हैं?

उत्तर अलग-अलग होंगे, लेकिन प्रेम और क्षमा में यीशु की तरह जीने से, दया और आनंद में हम दूसरों को दिखा सकते हैं कि यीशु कैसा है।

6. यीशु का बपतिस्मा

(मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-23)

जोर आवाज़ से पढ़ें मत्ती 3:13-17

द्वारा: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

अमेरिकी इतिहास के सबसे रोमांचक क्षणों में से एक था जब कर्नल ट्रैविस ने अलामो और जिम बॉवी में धूल में एक रेखा खींची, और डेवी क्रॉकेट और 130 अन्य लोगों ने स्वेच्छा से दूसरों की स्वतंत्रता के लिए मरने के लिए रेखा को पार किया। यह इतिहास में एक बारम्बार होने वाला विषय है। केवल घोड़-सवार सैनिक ही है जो कुछ मिनटों के लिए इण्डियन को रोके रखता है ताकि बाकी सैनिक स्वतंत्रता के लिए बच सकें। या प्रथम विश्व युद्ध में एक सैनिक होता था जो मशीन गन के घोंसले को नष्ट करने के लिए दुश्मन की सीमाओं के पीछे जाता है ताकि उसके दोस्त सुरक्षित रूप से आगे बढ़ सकें, यह जानते हुए कि वह वापस नहीं आयेगा । फिर द्वितीय विश्व युद्ध का पायलट है जो हिट होने पर अपने विमान से बाहर नहीं निकलता है, लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए उसके साथ रहता है कि यह सुरक्षित रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो जाए और वहां ना गिरे जहां अन्य लोग मारे जाएंगे। या यह वियतनाम में समुद्री हो सकता है जो अपने शरीर में प्रभाव लेने और अपने गश्ती दल में दूसरों को बचाने के लिए एक जीवित ग्रेनेड पर गोता लगाता है। कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ा 2000 साल पहले फिलिस्तीन नामक स्थान पर हुआ था। मैं वह था जिसने अपने मौसेरे भाई यीशु को पार करने के लिए धूल में रेखा खींची थी। वह वही है जिसने स्टैंड लिया, जो हम सभी के लिए मरने को तैयार था।

यह इस तरह हुआ। परमेश्वर ने मुझे, यूहन्ना, मसीह का अग्रदूत होने के लिए बुलाया था, यानी एक ऐसे जन के रूप में जो मार्ग की घोषणा करता था और सभी को बताता था कि वह आ रहा है (मरकुस 1:1-6)। मैं यार्दन नदी पर प्रचार कर रहा था और बपतिस्मा दे रहा था। मेरा संदेश पाप से पश्चाताप और शुद्धिकरण के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ने का था, जैसा कि बपतिस्में में चित्रित किया गया है (मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-18)। यार्दन नदी केवल 10 फीट चौड़ी थी और बहुत गहरी नहीं थी। बहुत से लोगों ने मुझे सुनने के लिए आने में कई दिनों तक की यात्रा करते थे । आने वाले लोगों में अधिकांश लोगों ने मेरा संदेश सुना और उस पर सही प्रतिक्रिया की , लेकिन अन्य बहुत लोग धार्मिक नेताओं का मजाक उड़ाने और उनकी जासूसी करने भी आते थे । रोश हशनाह के पास, यह 29 ईस्वी का आखिर था जब पूरा ध्यान में पश्चाताप पर केंद्रित था। चूंकि विश्राम का वर्ष अभी शुरू हो रहा था, लोग आध्यात्मिक चीजों के बारे में अधिक सोच विचार कर रहे थे और उनके पास मुझे सुनने के लिए आने के लिए अधिक समय भी होता था।

यह इस समय था जब यीशु ने आखिरी बार अपने औजार रखे, धीमी सांस ली, अपने पिता यूसफ को काफी देर तक आपने गले लगाया और आखिरी बार बढ़ई की दुकान से बाहर निकल गया । वह घर गया, कुछ चीजें उठाई , मरीयम को अलविदा कहा और दक्षिण की ओर निकल पड़ा । वे इस दिन की लंबे समय से उम्मीद करते थे और अक्सर इसके बारे में बात करते थे। आने वाले समय के लिए वे सभी उत्साहित थे, लेकिन यह अभी भी एक बहुत ही गंभीर, अनमोल समय था।

मुझे ढूँढ़ने के लिए 60 मील की पैदल यात्रा करने के दौरान यीशु के पास सोचने के लिए बहुत समय था। वह कभी भी पीछे मुड़ सकता था और किसी को पता भी नहीं चलता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

जब यीशु वहाँ पहुँचा जहाँ मैं बपतिस्मा दे रहा था, उसने कई दिन भीड़ के बीच में, परमेश्वर के सही समय को देखने और सोचने और प्रतीक्षा करते हुए बिताया। एक शाम जब मैं अकेला था, वह मेरे पास आया। हमने ज्यादातर रात बात की। हमने अक्सर अपने माता-पिता से एक-दूसरे के बारे में सुना हुआ था। पिछली बार हम कब साथ साथ थे हमें याद नहीं था क्योंकि हम बहुत छोटे थे और इसे याद नहीं कर सकते थे । हमने आपने परिवार के बारे में बात की, क्योंकि हम रिश्तेदार थे। हमारे बीच एक त्वरित संबंध था, क्योंकि हम सभी जानते थे कि हमारे जीवन परमेश्वर की इच्छा में गुंथे हुए हैं। हम केवल दो ही थे जिन्होंने महसूस किया कि क्या होने वाला है, और यहाँ तक कि समझ भी बहुत धुंधली और अधूरी थी। फिर भी, हमने, वास्तव में एक दूसरे से मिले समर्थन की, सराहना की थी ।

लेकिन हम इस बात से असहमत थे कि किसे बपतिस्मा देना चाहिए! मुझे एहसास हुआ कि मुझे उसकी आज्ञा का पालन करना और उसकी सेवा करनी है, इसलिए मैंने उसे बपतिस्मा दिया। यद्यपि वह निष्पाप था, यह मेरे संदेश के साथ-साथ उन लोगों को पहचानने का उनका तरीका था जिन्हें वह बचाने आया था। वह बपतिस्मा क्या ही याद रखने वाला समय था ! मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। आकाश खुल गया और परमेश्वर का आत्मा उतर आया। यीशु द्वारा उठाए जा रहे आज्ञाकारिता के इस कदम के लिए स्वयं परमेश्वर ने अपनी स्वीकृति व्यक्त की (मत्ती 3:13-17; 1:9-11; 3:21-23)। जिसने इसे इतना बड़ा बना दिया वह यह था कि यह मसीहा होने के लिए एक सार्वजनिक प्रतिबद्धता थी, जो सभी के सामने एक बड़ा कदम था। रेखा पार हो गई थी । उसका मिशन शुरू हो गया था। हालांकि, कोई और देख रहा था और उसने महसूस किया कि वही मसीहा था। वह कोई और नहीं पर शैतान था ।

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: यीशु परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहा था । इसने परमेश्वर को बहुत प्रसन्न किया और उसने स्वर्ग से ऐसा कहा। जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, तो यह भी उसे भी प्रसन्न करता है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: बपतिस्में के अर्थ और उद्देश्य के बारे में बात करें जो यीशु के साथ मरने और जीवन में वापस आने की सार्वजनिक गवाही के रूप में है। यीशु ने यह परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए किया था और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। यह सबको दिखाता है कि हम यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं और उसके लिए जीना चाहते हैं।

6. यीशु का बपतिस्मा

उत्तर देने के लिए प्रशन

यीशु ने बपतिस्मा क्यों लिया?

यह परमेश्वर का तरीका था कि सब देख सकें कि वह यूहन्ना के संदेश और लोगों के पाप के साथ अपनी पहचान बना रहा था। उसका कोई पाप नहीं था जो हटाया जाता , लेकिन वह यह दिखा रहा था कि वह उनके जैसा एक व्यक्ति था। परमेश्वर चाहता था कि वह बपतिस्मा ले और उसने यह आज्ञा मानी।

जब यीशु ने बपतिस्मा लिया तब क्या हुआ और क्यों?

परमेश्वर का पवित्र आत्मा उस पर एक विशेष तरीके से आया और उसे मसीहा का कार्य करने के काबिल कीया। परमेश्वर ने स्वयं कहा था कि वह यीशु की उसके पीछे चलने की प्रतिबद्धता से प्रसन्न था।

परमेश्वर यीशु से इतना प्रसन्न क्यों था?

क्योंकि वह अपनी इच्छा को परमेश्वर पिता को सौंप रहा था और वह बनने के लिए तैयार था जो सारी दुनिया के पापों के लिए भुगतान करता।

यदि यीशु परमेश्वर था, तो उसकी सहायता करने के लिए उसे पवित्र आत्मा की आवश्यकता क्यों थी?

फिलिप्पियों 2:5-11 कहता है कि जब पुत्र-परमेश्वर मनुष्य के रूप में यीशु बना, तो उसने स्वेच्छा से अपने ईश्वरत्व के उस हिस्से को अलग रख दिया जिससे उसका जीवन आसान हो जाता ताकि वह हर बात का अनुभव ऐसे कर सके जैसे हम करते हैं। वह पापरहित और पवित्र था, लेकिन उसने स्वेच्छा से अपनी इश्वार्यिया शक्ति और ज्ञान को अलग रखा दीया ताकि वह जीवन और मृत्यु का अनुभव ऐसे कर सके जैसे हम करते हैं। उसे एस इस लिये करना पड़ा ताकि वह हमारा विकल्प बन सके। वह अपने चमत्कार पवित्र आत्मा की शक्ति से करता था । इसलिए वह प्रार्थना में इतना समय बिताता था ।

बपतिस्मा लेना यीशु के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था?

वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा का पालन करने और मसीहा बनने के लिए सार्वजनिक रूप से स्वयं को प्रतिबद्ध कर रहा था। ऐसा करने से उसकी सेवकाई आरम्भ हो रही थी। दूसरों को पता चलता और शैतान को भी पता चलता ।

यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा क्यों नहीं देना चाहता था?

वह सोचता था कि वह इस योग्य नहीं था जो उसे बप्तिस्मा दे । वह जानता था कि यीशु कौन था और उसे लगा कि उसे यीशु से बपतिस्मा लेना चाहिए।

आज मसीही बपतिस्मा क्यों लेते हैं?

यह हमारा सब को दिखाने का तरीका है कि हम यीशु के साथ (पानी के नीचे) मर गए और उसमें (पानी से बाहर) नए जीवन में वापस आ गए। पानी शुद्ध नहीं करता, केवल यीशु का लहू शुद्ध करता है। लेकिन इसे पानी में सार्वजनिक रूप से करना सभी को दिखाने का तरीका है कि हमने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है और हम उसके लिए जीना चाहते हैं।

क्या कोई व्यक्ति स्वर्ग जाएगा यदि उन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है लेकिन बपतिस्मा नहीं लिया है?

हां, हमें परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए, लेकिन यह हमारे उद्धार में कुछ नहीं जोड़ता है। यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े हुए चोर ने बपतिस्मा नहीं लिया था लेकिन यीशु ने कहा था कि वह स्वर्ग में होगा।

क्या आपने बपतिस्मा लिया है? आपके लिए इसका क्या मतलब था?

(जवाब अलग-अलग होंगे जैसे वे बताते हैं)

बपतिस्मा लेने के बाद, आप यह दिखाने के लिए क्या कर सकते हैं कि आप यीशु से प्यार करते हैं?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

7. यीशु की परीक्षा

(मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 4:1-11

द्वारा: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले

सबसे अजीब बात तब हुई जब मैं, यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया। मैंने सोचा कि वह अनुयायियों को इकट्ठा करना शुरू कर देगा और उन सब से बोलना शुरू कर देगा, लेकिन उसने तुरंत ऐसा नहीं कीया, वह हमें छोड़कर प्रार्थना करने, संवाद करने, मार्गदर्शन और दिशा मांगने, और सोचने के लिए परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने के लिए जंगल में चला गया । परमेश्वर के आत्मा ने उसे खींचा (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)। 40 दिनों तक यीशु ने प्रार्थना की, आराधना की और अपने लिए परमेश्वर की इच्छा का पालन करने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत किया।

यीशु को अक्सर बड़ा होने का प्रलोभन/परीक्षा में डाला गया था। उसने बच्चों, किशोरों, युवा वयस्कों और फिर एकल वयस्कों द्वारा सामना करने वाले सभी सामान्य प्रलोभनों का सामना किया। उसने उन्हें और भी अधिक गहराई से महसूस किया क्योंकि यह उसकी मासूमियत और पूर्णता के साथ इतनी तीव्र रूप से विपरीत थे। लेकिन उन प्रलोभनों में से कोई भी ऐसा कुछ नहीं था जैसा उसके सामने जंगल में आया था। उसे पीछे हटने और बपतिस्मा ना लेने, बढ़ई की दुकान ना छोड़ने तक का प्रलोभन दिया गया था। अब प्रलोभनों ने एक नया मोड़ ले लिया।

एक चीज के लिए, वे ऐसे समय में आ गया था जब वह बहुत थका हुआ और असुरक्षित था। 40 दिन के उपवास के बाद व्यक्ति को बहुत, बहुत भूख लगती है! वह शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से सूखा हुआ था। वह सभी को यह दिखाने के लिए तैयार था कि वह दुनिया का उद्धारकर्ता मसीहा है। तभी शैतान ने उस पर हमला कीया , उसे मसीहा बनने के आसान तरीके प्रदान किए, ताकि वह पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा ना माने।

कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि क्या वास्तव में यीशु की परीक्षा हो सकती है। वह निश्चित रूप से परीक्षा में पड़ सकता था। क्या वह पाप कर सकता है? हां और ना। जब वह मनुष्य बन गया, तो उसने इश्वरीय गुणों के उपयोग को अलग कर दिया, जो उसके जीवन को एक मनुष्य के रूप में आसान बना सकते थे , जैसे कि सब कुछ जानने, कुछ भी करने और एक ही बार में हर जगह होने जैसी चीजें (फिलिप्पियों 2:6-8)। वह अभी भी सिद्ध, पवित्र, धर्मी और न्यायी होने में परमेश्वर था। एक मनुष्य के रूप में, वह पाप करने में सक्षम था, परन्तु परमेश्वर के रूप में वह ऐसा नहीं कर सकता था। यदि उसने अपनी मानवता में पाप किया होता, तो उसके इश्वरत्व ने उसे रोक लिया होता। हालाँकि, उसने अपनी मानवता में पाप का विरोध किया और इसलिए उसके इश्वरत्व द्वारा उसे पाप करने को कभी नहीं रोकना पड़ा। पाप ने उसे क्रूस पर हमारे विकल्प के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया होता। यह एक नियंत्रण वाली कार की तरह है जो इसे 65 मील प्रति घंटे से अधिक नहीं जाने देगी, लेकिन चालक कभी भी इतनी तेजी

से नहीं जाता है इसलिए इसे कभी भी चेतावनी देने की जरूरत नहीं होती है। यीशु परमेश्वर था । वह पाप कर सकता था लेकिन उसने नहीं किया। हालाँकि, वह निश्चित रूप से ललचा गया था! उसका प्रलोभन हमारे जितना ही प्रबल था, बल्कि उस से भी अधिक।

व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के रूप में अपनी शक्ति को फिर से सक्रिय करने और पत्थरों को रोटी बनाने के लिए उसकी परीक्षा हुई ताकि वह खा सके। इसका अर्थ होगा परमेश्वर के समय पर अधीरता करना और इसके बजाय स्वयं के लिए प्रदान करना। फिर उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा में डाला गया , खुद को मंदिर से नीचे फेंकने के लिए, जहां हर कोई इस से प्रभावित हो गया होता क्योंकि स्वर्गदूतों ने उसे हाथो हाथ उठा लिया था। उन्होंने निश्चित रूप से उसे परमेश्वर के रूप में देखा होता और उसे मसीहा का ताज पहनाया होता , लेकिन वह जानता था कि सलीब को ताज से पहले आना था। अंत में, उसे विश्व्यपक रूप से लुभाया गया। शैतान ने उसे सारे संसार पर शासन करने की पेशकश की। वह उसे वह अधिकार दे रहा था जो उसे आदम से मिला था जब आदम ने पाप किया था। इस परीक्षा ने पहले सिद्ध मनुष्य, आदम के साथ काम किया, इसलिए शैतान को यकीन था कि यह दूसरे के साथ भी काम करेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। फिर से, यीशु जानता था कि उसे केवल परमेश्वर के समय की पालना करनी है, और वह पहले क्रूस पर गए बिना संसार पर शासन नहीं कर सकता था। साध्य कभी भी साधनों को सही नहीं ठहराता।

उसके बपतिस्मे में यीशु को मसीहा घोषित किया गया था। वह अपनी परीक्षा में अपने चुनौती देने वाले को हराकर मसीहा साबित हुआ। , यह निश्चित था

कि और भी लड़ाइयाँ होंगी। लेकिन अभी के लिए, इस मुद्दे का फैसला किया गया था। स्वर्गदूत आए और यीशु की सेवा करने लगे , उन्हें उसे खिलाया और प्रोत्साहित किया।

यह हम पर कैसे लागू होता है? अगर यीशु ने हमारे लिए ऐसा रुख अपनाया, तो हमें भी उसके लिए एक निर्णय लेना चाहिए। यीशू के लिए मरना योग्य की बात है , लेकिन यीशू के लिये जीना भी योग्य की बात है ! हम भी, पाप और प्रलोभन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु केवल परमेश्वर की शक्ति में, अपने आप में कभी नहीं।

यह कहानी इस बात को बखूबी दर्शाती है। रनवे(हवाई जहाज़ का उड़ने और उतरने की सड़क) पर एक आधुनिक जेट(लड़ाकू जहाज़) एक सुंदरता थी। यह नवीनतम तकनीक के हथियारों से लैस था। जेट अपनी आवाज़ की गति से अधिक गति से उड़ सकता था, और जल्दी से बड़ी ऊंचाइयों तक पहुँच सकता था। यदि दुश्मन का कोई विमान आस-पास होता, तो जेट का पायलट उस विमान को मीलों दूर से ही नष्ट कर सकता था, इससे पहले कि विमान का पायलट उसे देख पाता। वायु सेना का एक पायलट जेट में चढ़ गया और बादलों के ऊपर चढ़ते हुए पृथ्वी को बहुत पीछे छोड़ते हुए उड़ गया। हालांकि कोई तो नहीं देख रहा था, पायलट ने खुद को अपनी सीट पर टिका लिया। उन्हें स्वाभाविक रूप से अपने जेट पर और इस तरह के एक अद्भुत हथियार को उड़ाने की योग्यता के लिए खुद पर गर्व था। परिभ्रमण ऊंचाई पर पहुंचने के बाद, पायलट ने एक अजीब शोर सुना। उसने अपना हेलमेट उतार दिया, और शोर को पहचान लिया - ऐसा लग रहा था जैसे कोई रबर या प्लास्टिक को कुतर रहा हो। इंस्ट्रुमेंट पैनल के नीचे झाँकते हुए, पायलट ने घबराकर देखा कि उसकी पहुंच से दूर एक चूहा है और जेट के कंट्रोल सिस्टम और उसके इंजन के बीच मुख्य वायरइंग की तार को कुतर रहा है। यदि चूहा उस तार को काट जाता, तो जेट नियंत्रण से बाहर हो जाता, और तुरंत दुर्घटनाग्रस्त हो जाता। पायलट की पहली स्वाभाविक बुधि का फैसला नीचे उतरना का था - एक आपातकालीन लैंडिंग। लेकिन वह इतनी दूर उड़ चुका था कि उतरने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। इसलिए, उसने चढ़ने का फैसला किया-- चूहा अधिक ऊंचाई

पर सांस नहीं ले सकता था। पायलट ने अपना ऑक्सीजन मास्क लगाया, जेट के इंजन को शक्ति को प्रदान की, और जितनी जल्दी वह जा सकता था उतनी तेजी से चढ़ गया। जल्द ही कुतरने की आवाज समाप्त हो गई। जब पायलट सुरक्षित उतरा, तो उसने चूहे को मृतक अवस्था में पाया। हम किस तरह से पाप पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, हम यीशु के लिए खड़े हो सकते हैं, वह है इस दुनिया से ऊपर रहना और जितना हो सके यीशु के करीब जाना। यदि यह जगह वो नहीं है जहाँजहाँ आप हैं, तो आप खतरे में हैं!

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: हम सब पाप करने के लिए परीक्षा में पड़ेंगे। पाप तब होता है जब हम माता-पिता या ईश्वर की अवज्ञा करते हैं। यीशु की भी परीक्षा हुई। बच्चों को झूठ बोलने, चोरी करने, अवज्ञा करने या दूसरों से लड़ने के लिए लुभाया जाता है। यीशु भी ऐसा ही था, लेकिन उसने ऐसा कभी नहीं किया। आपको यीशु की तरह बनाने के लिए परमेश्वर से मदद मांगें कि आप पाप ना करें ।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: पाप वह सब कुछ है जो यीशु ना तो करेगा और ना ही सोचेगा। यीशु ने बाइबल की आयतों को उद्धृत करके प्रलोभन पर विजय प्राप्त की। बाइबल की आयतों को याद रखना महत्वपूर्ण है, जैसे यीशु ने किया था, ताकि जब हम परीक्षा में हों तो हम उन्हें उद्धृत कर सकें।

7. यीशु की परीक्षा

उत्तर देने के लिए प्रशन

क्या यह पहली बार है जब यीशु की परीक्षा हुई थी?

नहीं, उसे भी हमारी तरह बड़ते क्रम में लुभाया गया था।

ऐसा क्या था जो इन प्रलोभनों को दूसरों से अलग बनाता है?

जब हम परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं और उसकी इच्छा पूरी कर रहे होते हैं, तो शैतान हमेशा भारी आक्रमण करता है। वह हमारी वास्तविक जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन परमेश्वर द्वारा प्रदान कीये जाने की प्रतीक्षा करने के बजाय हमें स्वयं ही उन्हें पूरा करने की कोशिश करने के लिये उकसाता है। जिन कामों को करने के लिए यीशु ने परीक्षा दी थी, वे 'गलत' नहीं थे, लेकिन वे उस समय उसके लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा में नहीं थे । वह हमें भी उसी तरह से प्रलोभित करता है।

यदि यीशु परमेश्वर था और पापरहित और सिद्ध था , तो क्या वह परीक्षा में पड़ कर पाप कर सकता था?

हां। यीशु के पास हमारी तरह एक स्वतंत्र इच्छा थी। उसका स्वभाव पापी नहीं था। आदम के अदन बाग़ में पाप करने से पहले जैसे आदम था वह उसके समान था। यदि यीशु ने पाप किया होता, तो वह हमारा उद्धारकर्ता नहीं होता, क्योंकि वह स्वयं अपने पापों का दोषी होता। परमेश्वर पाप नहीं कर सकता, लेकिन यीशु ने हमारी तरह एक व्यक्ति के रूप में प्रलोभन का विरोध किया।

शैतान ने उसकी कौन-सी तीन परीक्षाएँ ली ?

1. पत्थरों को रोटी बनाओ: परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के बजाय कि वह उसे प्रदान करे, वह चीजों को अपने हाथों में ले ले और खुद को खिलाए। शैतान हमसे भी चाहता है कि हम अधीर हों और परमेश्वर की प्रतीक्षा ना करें, बल्कि चीजों को अपने तरीके से करें।

2. अपने आप को मंदिर से नीचे फेंक दे : हर कोई यह देखकर प्रभावित होगा कि स्वर्गदूत उसे पकड़ते हैं और वे उसे मसीहा और राजा तो बना लेते - - लेकिन वह हमारे पापों का भुगतान करने के लिए क्रूस पर नहीं जाता । शैतान हमें सरल रास्ते प्रदान करता है ताकि हम अपने लिए जीवन को आसान बना सकें, लेकिन यह परमेश्वर का तरीका नहीं है।

3. पूरी दुनिया पर शासन की पेशकश की: यह तब काम आया जब शैतान ने आदम के साथ कोशिश की ("आपने आपको परमेश्वर की तरह बनाओ") लेकिन यह यीशु के साथ काम नहीं किया। यीशु जानता था कि उसे परमेश्वर के मार्ग और परमेश्वर के समय पर भरोसा करना है। फिर से, यदि वह शैतान का अनुसरण करता तो वह क्रूस से बचता। शैतान हमेशा अपने रास्ते को आसान बनाने की कोशिश करता

है, लेकिन यह लंबे समय के लिये बदतर होता है। शैतान चाहता है कि हम बिना किसी कठिनाई के जीवन का आसान रास्ता खोज लें, लेकिन यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है।

यीशु ने विरोध करने के लिए क्या किया? वह कैसे विजय प्राप्त करने में सक्षम था?

वह परमेश्वर की इच्छा को जानता था क्योंकि वह बाइबल जानता था। उसने हर बार बाइबल का हवाला दिया। प्रत्येक उद्धराण व्यवस्थाविवरण से था। परमेश्वर का वचन हमारा हथियार, हमारी तलवार है (इफि 6:17)।

क्या आप बाइबल के किसी आयत को जुबानी जानते हैं? कौन सी आयत ?

(उन्हें बाइबल की वे आयतें बोलने दें जो वे जानते हैं)

शैतान आज मसीहियों के विरुद्ध कौन-से कुछ प्रलोभनों का प्रयोग करता है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

इन प्रलोभनों के विरुद्ध आप बाइबल की कौन कौन से आयते याद कर सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं?

(उत्तर अलग-अलग होंगे - उन्होंने बिन देखे जुबानी बाइबल की आयत बोलने दे या इसे देखकर पढ़ें। वे विभिन्न प्रलोभनों के लिए उपयोग करने के लिए आयातों की एक सूची लिख सकते हैं)। विभिन्न प्रलोभनों के लिए उपयोग करने के लिए नीचे सूचीबद्ध कुछ बाइबल आयतें हैं। यह सुनिश्चित करने में ज्यादा समय व्यतीत करें कि वे उन आयातों को जानते हैं जिनका वे उपयोग कर सकते हैं:

विजय आश्वस्त है: 1 कुरिन्थियों I5:57; I इतिहास 29:11; नीतिवचन 21:31; I यूहन्ना 5:4, 18; प्रकाश्त्वाक्य 12:11; 15:2; रोमियों 8:37; 2 कुरिन्थियों 2:14; यूहन्ना 16:33

परमेश्वर हमारे लिए लड़ने की प्रतिज्ञा करता है: 1 शमूएल 14:47; यिर्मयाह 1:8

परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है: मत्ती 28:20; इब्रानियों 13:5; मत्ती 18:20; यूहन्ना 14:16, 21; प्रकाश्त्वाक्य 3:20

परमेश्वर सुनता है और प्रार्थना का उत्तर देता है: मत्ती 7:7; लूका 11:9; यिर्मयाह 33:3

हम कभी भी परमेश्वर से अलग नहीं होंगे: रोमियों 8:35-39; यूहन्ना 10:27-29; 3:36; 5:24

परमेश्वर हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा: फिलिप्पियों 4:19: भजन संहिता 84:11; रोमियों 8:32; मैं शमूएल 12:24

चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है: मत्ती 6:25,34; 1 पतरस 5:7; यशायाह 40:11; मत्ती 5:38-39; भजन सहिता 37:1-9; यहूदा 24

परमेश्वर देखभाल और सुरक्षा की प्रतिज्ञा करता है: व्यवस्थाविवरण 33:27; उत्पत्ति 17:1; यिर्मयाह 23:24; 32:7

परमेश्वर हमारी सभी समस्याओं और क्लेशों का हमारे विकास और अपनी महिमा के लिए उपयोग करता है: रोमियों 8:28-29

आपको कभी भी किसी ऐसी चीज का सामना नहीं करना पड़ेगा जिसे आप परमेश्वर की सहायता से संभाल नहीं सकते: 1 कुरिन्थियों 10:13

हर परस्थिति में शांति उपलब्ध है : यूहन्ना 14:27; रोमियों 5:1; कुलुस्सियों 1:20; यशायाह 26:3; फिलिप्पियों 4:6-7; मत्ती 11:28-30; 2 तीमुथियुस 1:7

आत्मिक वृद्धि लाने के लिए परीक्षाओं को अनुमति मिलती है: भजन संहिता 119:67,71,75; 94:12; एक है। 48:10; रोमियो। 5:3

विश्वासी को किसी बात से डरने की जरूरत नहीं है : नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन सहिता 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; 1 शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41

परमेश्वर हमें हिम्मत देगा: नीतिवचन 38:1; 1 कुरिन्थियों 16:13; 2 तीमुथियुस 1:7

परमेश्वर के वचन की शक्ति: इफिसियों 6:17; इब्रानियों 4:12; यशायाह 55:11; 59:21; भजन संहिता 119:81, 105, 11-112; नीतिवचन 30:5; विलापगीत 2:17; 3:37; मत्ती 24:35; यूहन्ना 5:24; 8:51; 15:7; रोमियों 10:17

8. निकोदीमस - दूसरा जन्म

(यूहन्ना 2:23 - 3:21)

जोर आवाज़ से पढ़ें: यूहन्ना 3:1-21

द्वारा: निकोदीमुस

खैर, यह खत्म हो गया है। हमने अभी उसे दफना दिया है। मुझे नहीं लगता कि सूली पर चढ़ाए जाने के बाद मुझे कभी किसी शरीर को देखने की आदत होगी। यह शायद ही फिर एक मानव जैसा दिखता है! यह समय सबसे खराब होता है। मेरे दिल में कई लाख भावनाओं की बाढ़ आ गई: दु: ख, दुःख, लेकिन उसे साथ साथ एक विशेष तरह का अपराधबोध और पश्चाताप। यह मखौल सा होता है कि आप किसी घटना के बाद चीजों को पहले की तुलना अलग तरह से कैसे देखते हैं। बहुत बार भय शासन करने लगता है और भारी पड़ने लगता है। फिर वह जन बाद में केवल पछताना ही रह जाता है। मेरे पास अपने भाग्य से अधिक था, लेकिन यह कि मैं यीशु का अनुयायी था दूसरों को इस का पता ना लग जाये इससे बड़ा मेरा कोई डर नहीं था। मैं उस गलती के साथ जी रहा था, लेकिन हो सकता है कि मेरी कहानी आपको जो मैंने कीया वह ना करने में मदद कर सके। मुझे आशा है कि, अफसोस के साथ जीना एक तरसयोग भावना है।

मेरा नाम निकोदीमस है। मैं इस्राएल में एक प्रमुख धार्मिक शासक था। समाज में मेरा एक उच्च, शक्तिशाली पद था। मैं बहुत अमीर और प्रभावशाली था। मैं बहुत पड़ा लिखा था / शिक्षित था और अपने समय के चुन्निदा विद्वानों में से एक था। आप कह सकते हैं कि मेरे पास यह सब था - जो बहरी रूप से था। मुझे लगता है कि मेरे पास बहुत अधिक था, इस लिये मैं वास्तव में जो मायने रखता था उसके लिए इसे खतरे में नहीं डालना चाहता था।

मेरी कहानी 30 ईस्वी . की गर्मियों में शुरू होती है। वह फसह का समय था। यीशु अपने कुछ अनुयायियों के साथ यरूशलेम में था और उसने अभी-अभी मंदिर को शुद्ध किया था (यूहन्ना 2:13-22)। मैं समझ सकता था कि उसने ऐसा क्यों किया, लेकिन मुझे पता था कि यह एक लोकप्रिय कदम नहीं होगा! एक तरह से मैं उसके बारे में और जानना चाहता था, क्योंकि जो कुछ मैंने सुना और देखा था, वह मेरे अंदर के खालीपन को भा गया था। लेकिन मैं अपनी मेहनत से जीती स्थिति और प्रतिष्ठा को खोने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। मैं कभी भी अपनी आलोचना नहीं सुन सकता था। इसलिए, मैं यीशु के पास रात के समय में आया (यूहन्ना 2:23 - 3:21)।

फिर यह समय अधिक सुविधाजनक भी था, क्योंकि हम दोनों दिन में तो व्यस्त ही रहते थे। साथ ही, यह एकमात्र समय था जब हम लोगों से इसे गोपनीय रख सकते थे उनसे जो पूरा दिन हमेशा उसके आसपास थे। उस रात मैंने जो सुना उसने मेरी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल दी! यह ऐसा है जैसे यीशु मेरे हृदय की आंतरिक शून्यता और लालसा को जानता था, जैसे उसने इसे मुझसे बेहतर समझा। उन्होंने मुझे दिखाया कि इसका समाधान बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों में नहीं है, बल्कि एक आंतरिक नए जन्म में है। मुझे अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए उसके साथ एक व्यक्तिगत संबंध की जरूरत थी, ना कि अपने साथियों की प्रशंसा की। मेरे गर्व और डर ने मुझे जो वह बता रहा था उसके प्रति आध्यात्मिक रूप से अंधा कर दिया था। हालांकि, इसके बाद के हफ्तों और महीनों में, मैं उन्हें नहीं भूल सका। जब मैंने उसके दावों

की जांच की, तो मुझे विश्वास हो गया कि वह परमेश्वर है, मसीहा जो पृथ्वी पर आया है । मैंने उस पर अपना विश्वास रखा और खुद को उसका समर्थक और अनुयायी मानने लगा , लेकिन मैंने कभी किसी को इस बात का पता नहीं चलने दिया। मैं इस बात से डरता था कि वे क्या कहेंगे क्योंकि मैं जानता था कि दूसरे अगुवा लोग उससे नफरत करते हैं।

वह मैं ही था। मुझे एक समय का याद है, मेरी यीशु के साथ बात करने के लगभग 2 साल बाद, जब महासभा यीशु के बारे में बात कर रही थी कि उससे कैसे छुटकारा पाया जाए। यह स्पष्ट था कि वे उससे और उसकी लोकप्रियता से ईर्ष्या करते थे। मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता था इसलिए मैंने बात की, लेकिन मैंने जो कहा वह बहुत कमजोर था। "क्या हमारा कानून किसी को यह जानने के लिए उसको बिना सुने दोषी ठहराता है कि वह क्या कर रहा है?" (यूहन्ना 7:51)। यह चुप्पी से तो बेहतर था, लेकिन ज्यादा बेहतर नहीं था। मेरे डर ने अभी भी मुझे नियंत्रित में ले रखा था। आप जानते हैं, आमतौर पर डर उस चीज से भी बदतर होता है जिससे हम डरते हैं! तो, यह मेरे साथ हो रहा था। मैं देख सकता हूँ कि कैसे शैतान मुझे चुप कराने के लिए मेरे डर का इस्तेमाल कर रहा था। उसका झूठ यह था कि अगर मैं अपने विश्वास के लिए खड़ा हुआ तो मुझे सहन करने से अधिक भुगतना पड़ेगा।

मैंने यीशु के लिए सार्वजनिक तौर पर कोई जोखिम ना उठाना जारी रखा। पांच महीने बाद बहुत देर हो चुकी थी। "इन दिनों में से एक" इन दिनों में से कोई नहीं है। मैंने अपना मौका गंवा दिया। कैफा के पास अपना रास्ता था। यहूदा ने ठीक उनके हाथों में खेला। यीशु मर गया था। मैंने उनके लिए कभी सार्वजनिक जोखिम नहीं लिया था। मुझे पता था कि मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया जाएगा, क्योंकि मेरे विश्वास के बारे में मेरे अलावा कोई नहीं जानता था! मैं सुरक्षित महसूस करने के बजाय बस दुखी महसूस कर रहा था। डर व्यक्ति के साथ ऐसा ही करता है।

जब मैंने सुना कि अरिमथिया के यूसुफ ने पीलातुस से यीशु की लाश को मांगा, तो मैंने उसकी मदद करने की पेशकश की। मुझे नहीं पता था कि वह भी उसका एक गोपनीय अनुयायी था। हमारी संख्या में और कौन थे? हममें से कोई भी बाहर नहीं बोला। क्या होता अगर मैं बोल देता, तो कई अन्य लोग मेरे नेतृत्व का अनुसरण करने का साहस प्राप्त कर लेते ? मुझे कभी पता नहीं चलेगा। हम सभी एक आसान रास्ता अपनाते है ।

वैसे भी, मैंने उसे दफनाने में मदद करके सार्वजनिक रूप से यह बता दिया कि मैं कहाँ खड़ा हूँ (यूहन्ना 19:39)। उस रात मैं ढाई साल पहले की पिछली रात को याद नहीं कर सका, जब मैंने उनके वचनों को सुना था। अगर केवल मैंने अलग तरीके से चुना होता। काश मैं उसके लिए एक स्टैंड लेता जैसा उसने मेरे लिए लिया था! इसके बजाय, मुझे अपने डर को अपने फैसलों पर हावी होने देने में शर्म, अपराधबोध और अफसोस था।

लेकिन परमेश्वर दयालु था। उसने मुझे माफ कर दिया और वैसे ही मेरा इस्तेमाल किया। हाँ, मैंने यहूदियों के बीच अपना सब कुछ खो दिया, जैसा कि मुझे डर था कि ऐसा होगा। आप को पता , हालांकि, जब ऐसा हुआ तो यह उतना बुरा नहीं था जितना मैंने सोचा था कि यह होगा! मेरे पास अब मेरे लिए कुछ और महत्वपूर्ण था, कुछ ऐसा जो वास्तव में मेरी आंतरिक जरूरतों को पूरा करता था। मेरे पास यीशु और उस पर मेरा विश्वास था।

मुझे पतरस और यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया। मुझे यरूशलेम छोड़ना पड़ा और अंततः मेरे विश्वास के लिए मैं मार डाला गया। हालाँकि, यह सब इसके बेशकीमत था! इन सब में मेरी मदद करने के लिए यीशु

हमेशा मेरे साथ था। यदि आप उसके लिए खड़े होते हैं, तो वह आपकी भी मदद करेगा। मेरे जैसा मत बनो और अन मेरी तरह पछतावे के साथ जियो। तब तक प्रतीक्षा ना करें जब बहुत देर हो चुकी होगी, जैसे मैंने किया था! यीशु को आपने से दूर मत करो। वह आपको निराश नहीं करेगा!

मुझे एक ऐसे व्यक्ति की कहानी याद आती है जिसे बर्फ पर एक चौड़ी नदी पार करनी थी। उसे डर था कि बर्फ की परत बहुत पतली हो सकती है, इसलिए वह अपने हाथ और घुटनों के बल बड़े दहशत में रेंगने लगा। उसे लगा कि वह कभी भी गिर सकता है। जैसे ही वह विपरीत किनारे के पास पहुंचा, सब हो गया, एक और आदमी बेपरवाह होकर लोहे से लदी एक स्लेज पर बैठकर उसके पीछे भागा। यदि बर्फ इतने वजन के लिए पर्याप्त मजबूत थी तो यह उस आदमी के लिए भी काफी मजबूत थी जो रेंग रहा था। कुछ मसीहिओं की तरह! वे जो स्वर्ग की ओर जा रहे हैं, लेकिन वे यह सोचकर डर में रहते हैं कि परमेश्वर के वादे उन्हें पूरा करने के लिए वे पर्याप्त मजबूत नहीं हैं। उन्हें केवल यशायाह 12:2 को देखने की आवश्यकता है ताकि यह महसूस किया जा सके कि परमेश्वर उनका उद्धार है और प्रभु उनकी शक्ति और गीत हैं। उस पर पूरी तरह से भरोसा करके और उसके वादों को अंकित मूल्य पर लेते हुए, हम उस लकवाग्रस्त भय को दूर कर सकते हैं जो मसीह की सेवा करने में हमारी प्रभावशीलता में बाधा डालता है। बाइबल का तोड़ हमेशा काम करता है: "मैं भरोसा करूंगा, और डरूंगा नहीं।"

यहोवा मेरे साथ है; मुझे डर नहीं होगा। आदमी मेरे साथ क्या कर सकता है? भजन संहिता 118:6

चाहे मैं मृत्यु की छाया की तराई में होकर चलता हूं, तौभी मैं किसी विपत्ति से ना डरूंगा, क्योंकि तू मेरे संग है; तेरी लाठी और सोटी, वे मुझे दिलासा देते हैं। भजन 23:4

मज़बूत और साहसी बनें। घबराओ मत; निराश ना हो, तेरा परमेश्वर यहोवा जहां कहीं तू जाएगा वहां तेरे संग रहेगा यहोशू 1:9

सो मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं; निराश ना हो, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं। मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा; मुझे तुम्हें अपने पवित्र दाहिने हाथ से ऊँचा उठाऊगा । यशायाह 41:10

मज़बूत और साहसी बनें। उनके कारण मत डरना और ना डरना, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग चलता है; वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा और ना ही तुम्हें कभी त्यागेगा। व्यवस्थाविवरण 31:6

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: यूहन्ना 3:16 पढ़ें और इसके बारे में बात करें। उनके लिए परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात करें। बाइबल और दैनिक जीवन से परमेश्वर के प्रेम का उदाहरण दें।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: स्पष्ट करें कि "नया जन्म" से यीशु का क्या अर्थ है। शारीरिक जन्म से भौतिक जीवन और आध्यात्मिक जन्म से आध्यात्मिक जीवन मिलता है। जन्म के बाद विकास आता है। बच्चे खाते हैं और बढ़ते हैं। वे बात करना और चलना सीखते हैं। आध्यात्मिक रूप से भी यही सच है। हम बाइबल सीखने से बढ़ते हैं। हम परमेश्वर का पालन करना सीखते हैं। यदि संभव हो तो यूहन्ना 3:16 को याद करें।

8. निकोदीमस - फिर से जन्मा

उत्तर देने के लिए प्रशन

नीकोदीमस रात को यीशु से मिलने क्यों गया?

यह अधिक सुविधाजनक था, क्योंकि दोनों दिन में व्यस्त थे और गोपनीय में बात नहीं कर सकते थे। शायद नीकोदीमस नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह क्या कर रहा है।

यीशु ने नीकोदीमस से कहा कि उसे "नया जन्म" लेना होगा (यूहन्ना 3:3)। इसका क्या मतलब है?

इसका मतलब है कि हमें आध्यात्मिक रूप से जन्म लेना चाहिए। हमारे भौतिक शरीर हमारे भौतिक जन्म पर जीवित हो गए। जब हम आध्यात्मिक रूप से जन्म लेते हैं तो हम आध्यात्मिक रूप से जीवित हो जाते हैं। जब हम यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तो पवित्र आत्मा हम में रहता है और हमें नया जीवन देता है।

क्या आप यूहन्ना 3:16 को दिल से/जुबानी /बिना पढ़े कह सकते हैं? यदि नहीं, तो याद करने के लिए यह एक अच्छी आयत है।

यूहन्ना 3:16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश ना हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

नीकोदीमस ने महासभा के सामने यीशु के लिए खड़ा क्यों नहीं हुआ (यूहन्ना 7:45-51)?

वह इस बात से डरता था कि दूसरे क्या कहेंगे क्योंकि अधिकांश पुरुष यीशु के खिलाफ थे। उन्होंने उसकी आलोचना की होती और हो सकता है कि वह अपना पद और नौकरी खो चुका होता ।

आपको यीशु के लिए खड़े होने के डर का सामना कब करना पड़ता है? उसके बारे में बात करने में आपके लिए क्या मुश्किल होता है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

डर पर काबू पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

साहस के लिए प्रार्थना करें। डर के बारे में बाइबल की आयतों को याद करें और जैसे ही आपको कुछ डर लगने लगे, उन्हें उद्धृत करें। नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; I शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41

बाइबल की कुछ आयतें क्या हैं जिन्हें आप डरने पर उद्धृत कर सकते हैं?

(उत्तर अलग-अलग होंगे। आप शिक्षण सत्र के अंत में आयातों का उपयोग कर सकते हैं।)

नीकोदीमस ने एक स्टैंड क्यों लिया और सभी को बताया कि सूली पर चढ़ाए जाने के बाद उसने यीशु पर विश्वास किया था जबकि उसने पहले ऐसा नहीं किया था?

उन्होंने महसूस किया कि सूली पर चढ़ने से पहले ही यीशु ईश्वर और मसीहा था। वह जानता था कि उसे यीशु के लिए बहुत पहले एक स्टैंड लेना चाहिए था, क्योंकि वह जानता था कि वह अब और उसे अस्वीकार नहीं कर सकता,

उस समय के बारे में बताएं जब आपने यीशु के लिए एक स्टैंड लिया और यह कैसे निकला।

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

आपने उस अनुभव से क्या सीखा?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

जो डरता है उसे आप क्या सलाह देंगे?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

9. यीशु के चेले

(मत्ती 4:18-22; 9:9-13; 10:24-42; 16:24-28;

मरकुस 1:16-20; 3:13-19;

लूका 5:10-11; 6:21- 16;

यूहन्ना 1:19-51)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 9:9-13

(इस पाठ के साथ उपयोग करने के लिए दो कहानियाँ हैं। आप उन सभी का उपयोग कर सकते हैं या जो आप उपयोग करना चाहते हैं उसे चुन सकते हैं। आप इस पाठ को एक सप्ताह से अधिक समय तक चला सकते हैं।)

मत्ती के द्वारा

दिन-ब-दिन मैं मैरिस के रासते जाने वाली सड़क के किनारे अपनी चौकी में ही यह कहता था। मैं लोगों से उनके कर/टैक्स के लिए जितनी भी राशि चाहता था, वसूल कर सकता था, जितनी देर तक कि मैं इसमें से कुछ हिस्सा रोमी सरकार के देता रहता । यह जल्दी अमीर बनने का एक आसान तरीका था। बेशक, मैं बहुत लोकप्रिय नहीं था, खासकर यहूदियों के बीच नहीं। उन्होंने मुझे अस्वीकार कर दिया, मुझे देशद्रोही के रूप में देखते थे, क्योंकि मैं उन्हें धोखा दे रहा था और रोमियों के लिए काम कर रहा था जिनसे वह नफरत करते थे। मुझे उनके आराधनालय में जाने की भी अनुमति नहीं थी, लेकिन मुझे इसकी क्या जरूरत है! मैं अमीर था और सुरक्षित था। फिर भी, मुझे यह मनना होगा कि जैसे-जैसे मैं बूढ़ा होता गया, मेरे पैसे मेरे लिए कम और कम होते गए। इससे मुझे वह खुशी और शांति नहीं मिल रही थी जो मैं सोचता था कि मुझे इससे मिलेगी ।

फिर मैंने उसे सड़क पर उतरते देखा। उसने मुझे नियमित रूप से करों का भुगतान किया। मैंने उनकी शिक्षाओं और चमत्कारों के बारे में, क्षमा के बारे में उसकी बातों और परमेश्वर के आने वाले राज्य के बारे में सुना था। जब भी वह आता, मैंने हमेशा उससे नज़रें मिलाने से परहेज करता , क्योंकि उससे नजरें मिलाना मुझे दोषी और बुरा महसूस कराता। फिर भी, वह हमेशा मेरे लिए अच्छा था। वास्तव में, कई बार उसने मुझसे एक बेहतर जीवन के बारे में बात की, उसका अनुसरण करने के लिए यह सब छोड़ने के बारे में। कुछ साल पहले मुझे इस विचार पर हंसी आती थी। उसके पास कोई पैसा नहीं था, घर भी नहीं था - उसके पास कुछ भी नहीं था! एक दरिद्र यात्री होना एक अमीर और शक्तिशाली व्यक्ति होने से बेहतर कैसे हो सकता है? हालाँकि, हाल ही में, मैंने खुद को उसके बारे में बहुत बार सोचते हुए पाया। मैं अजीब तरह से उसकी ओर आकर्षित हुआ, यहाँ तक कि सोच रहा था कि यह सब छोड़ कर उसका अनुसरण करना कैसा होगा। हालाँकि, मैंने इसके बारे में लंबे समय तक नहीं सोचा, क्योंकि मैंने कभी

नहीं सोचा था कि मैं कभी उसके पास हूँगा! फिर भी, मैं उन लोगों से ईर्ष्या करता था जो उसके साथ हो सकते थे। मैंने फैसला किया कि मैं उससे दूर रहकर उसके काम में सबसे अच्छी मदद कर सकता हूँ।

एक दिन वह मेरी चौकी पर रुके और मैं हैरान रह गया। मैं जानता था कि वह नासरत से यहाँ, कफरनहूम में आया है (मत्ती 4:13-16)। इसका उसके गृह नगर में ठुकराए जाने से कुछ लेना-देना था (लूका 4:16-30) - मैं जानता था कि वह कैसा लगता होगा ! लेकिन वह मेरी चौकी पर क्यों आया था? उसने कोई कर तो नहीं देना था, वह क्या चाहता था?

"मेरे पीछे हो ले" उसने कहा (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32)। मैं चकित रह गया! उसने ना केवल मुझसे बात की, बल्कि वह चाहता था कि मैं उसके साथ यात्रा करूं। वह चाहता था कि मैं उसके साथ अपनी पहचान बनाऊं। वह मेरे साथ अपनी पहचान बनाने को भी तैयार था। एकाएक ऐसा लगने लगा कि यह एक अच्छा विचार है! क्यों नहीं? मैंने सोचा - इस तरह जीवन खाली है। बहुत सारा पैसा होना वह सब नहीं है जो मैंने सोचा था कि यह होगा। उसके बारे में बस कुछ ऐसा था जिसने मुझे आकर्षित किया। मुझे एहसास हुआ कि मैंने बहुत पहले ही निर्णय कर लिया था, मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह संभव होगा! मैंने अपनी किताबें बंद कीं, चौकी को बंद किया और चला गया। तब से मैं उसका अनुसरण करने लगा। मैंने चौकी और व्यापार बेच दिया और उन लोगों को जितना हो सके उतना बेईमानी से कमाया लाभ लौटाया, जिन्हें मैंने धोखा दिया करता था। मैंने अपने शेष पैसे का उपयोग यीशु और उनके अनुयायियों की सहायता के लिए किया। लोग हैरान थे कि मैं उसे चाहता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि वे और भी अधिक हैरान थे यह जन कर कि वह मुझे चाहता है! यह मेरे द्वारा उठाया गया अब तक का सबसे अच्छा कदम था!

मेरे सामने पहली बाधाओं में से एक थी अपने नए साथीयों यीशु के अनुयायियों साथ मिलना। हम वर्षों से दुश्मन थे, और एक दूसरे को दोस्त और साथी के रूप में देखने के लिए दोनों पक्षों को थोड़ा काम करना पड़ा था। मछुआरे सबसे कठिन थे, क्योंकि वे आलोचना करने में सबसे मुख थे। बहुत पहले उन्होंने देखा कि मैं अपने विश्वास में ईमानदार था और हम दोस्त बन गए।

कफरनाहूँम एक अच्छा कृषि क्षेत्र होने के बावजूद मुख्य रूप से मछली पकड़ने का शहर था। कफरनहूम ठीक गलील की झील पर था। झील 8 मील चौड़ी और 12 मील लम्बी थी। यह एक नाशपाती के आकार की थी। यीशु ने अपने अधिकांश चमत्कार और उपदेश इसी झील के किनारे किए। यहूदी लाल मीट से कहीं अधिक मछली पसंद करते थे, और इसके लिए महंगी कीमत देने को तैयार होते थे। वाणिज्यिक मछली पकड़ने का विकास हुआ। यह उन जालों द्वारा किया जाता था जो एक किनारे पर तैरते थे और दूसरे किनारे पर भारी वजन के होते थे । एक दूसरी नाव, या पानी में एक मछुआरा, मछली को अंदर फँसाते हुए जाल को एक साथ खींच लेता था । यह कठिन, थका देने वाला, अक्सर निराशाजनक काम था। जब वे मछली नहीं पकड़ते थे तो वे अपने जालों को साफ करने और उनकी मरम्मत करने में कई घंटे लगाते थे, क्योंकि वे लगातार फटते या पुराने होते रहते थे। मुशी, चमकदार और सार्डिन मुख्य मछलियाँ थीं जिन्हें पकड़ा जाता था।

मुझे एक दिन का याद है, लगभग एक महीने पहले जब यीशु ने मुझे मेरी चौकी से बुलाया था, कि मैं पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यहुना को मछली पकड़ने की एक लंबी रात से आते देख रहा था। उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा था। उन्होंने अभी-अभी जाल साफ किया था और सोने के लिए तैयार थे जब यीशु ने उन्हें गहरे पानी में जाने और फिर से कोशिश करने के लिए कहा (लूका 5:1-10)। हर कोई जानता था कि यह दिन का गलत समय है और मछली पकड़ने के लिए गलत जगह है, साथ ही जाल को फिर से साफ करनाऔर सुखाना होगा! मैं उन्हें आज्ञा का पालन करते देखकर हैरान था, लेकिन बड़ी संख्या में

मछलियों को पकड़कर देखकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ! इसने वास्तव में पतरस को कड़ी टक्कर दी, क्योंकि यह वही समय था कि उसने महसूस किया कि यीशु वास्तव में परमेश्वर था। उन सब के प्रति यीशु की प्रतिक्रिया थी, "डरो मत, अब से तुम मनुष्यों को पकड़ोगे!" (लूका 5:10)

उसने उन्हें अपने पीछे चलने के लिए आमंत्रित किया, "आओ, मेरे पीछे हो लो और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।" (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20)। इनमें से कई मछुआरों ने पीछा किया। दरअसल यीशु के 12 शिष्यों में से 8 मछुआरे थे। मुझे नहीं पता था कि यीशु बहुत जल्द आएंगा और मुझे अपना काम छोड़ने और उसके पीछे चलने के लिए भी बुलाएगा । "पुरुषों के मछुआरे।" वाक्यांश मेरे साथ अटक गया और मैं इसके बारे में सोचता रहा जैसे मैं ने यीशु का अनुसरण करना शुरू किया। स्पष्ट रूप से मछली पकड़ने और दूसरों को यीशु के पास लाने के बीच एक वास्तविक समानता थी।

एक बात यह है , हमें सक्रिय रूप से मछली पकड़ने की जरूरत है। हम खाली बैठकर मछली पकड़ने की प्रतीक्षा नहीं कर सकते! हमें मनुष्यों के मछुआरे बनना है, ना कि एक्वेरियम/मछली- मर्द्धान के रखवाले। हम अस्वीकृति से नहीं डर सकते, जैसा कि नीकुदेमुस डरता था। साथ ही, मछुआरों को मछली के पीछे जाना चाहिए। उन्हें वहीं जाना चाहिए जहां मछलियां हैं। कभी-कभी यह असुविधाजनक और मुश्किल होता है, लेकिन यह काम किया जाना चाहिए। मछली पकड़ना भी गंभीरता से किया जाना चाहिए। यह परमेश्वर के बच्चों के लिए सिर्फ एक मजेदार शौक नहीं है। गलील में मछुआरे या तो मछलियाँ पकड़ते थे या फिर भूखे मरते थे। पुरुषों के लिए मछली पकड़ना अधिक गंभीर है, जो मछली नहीं पकड़ी जाती है उसका क्या होता है? वे हमेशा के लिए नरक में समाप्त हो जाती हैं।

इसके लिए हमें दृढ़ इरादे से मछली पकड़ना चाहिए। मछली पकड़ने का उद्देश्य मछली पकड़ना है! मछुआरे ना तो आपने उपकरण दिखा रहे थे और ना ही धुप में कलि पड़ गयी आपने शरीर की चमड़ी । वे मछली पकड़ने के लिए दृढ़ थे। ऐसा करने के लिए, उन्हें चतुराई से मछली पकड़ना पड़ता था। विभिन्न मछलियों को अलग-अलग चारा खिलने द्वारा पकड़ा जाता है। कुछ तो समूहों में सर्वश्रेष्ठ पकड़े जाते हैं, अन्य अकेले अकेले । इसमें अच्छा करने के लिए अध्ययन और कौशल, अनुभव और काम करने की आवश्यकता होती है। यीशु ने नीकुदीमुस (यूहन्ना 3) की तुलना में कुएँ (यूहन्ना 4) पर महिला के लिए अलग तरह से 'मछली पकड़ी'। इस प्रकार, मछुआरों को लगातार मछली पकड़ना चाहिए। यदि उनके पास जाल या चारा नहीं है तो वे किसी भी मछली को नहीं पकड़ सकते । जब वह मछली नहीं पकड़ते होते हैं, तो वे अगली बार मछली पकड़ने के लिए तैयार हो रहे होते हैं: जाल की मरम्मत और सफाई आदि करते हैं । हमें भी लगातार मछली पकड़ना चाहिए या मछली पकड़ने के लिए तैयार होना चाहिए। मछली पकड़ने में सफल होने के लिए प्रार्थना और बाइबल अध्ययन में समय व्यतीत करना आवश्यक है।

अधिकांश मछुआरे प्यार से मछली पकड़ते हैं - वे जो करते हैं उसका आनंद लेते हैं। यह दूसरों को यीशु के बारे में बताने का हमारा बलिदानी मकसद होता है। हमारा उद्देश्य उन्हें यीशु में विश्वास करने के लिए प्रेरित करना है। ऐसा होने के लिए हमें धैर्यपूर्वक मछली पकड़ना चाहिए। मछली पकड़ना कठिन है , कठिन काम है जिसमें बहुत धैर्य लगता है। मछली खाने वाले जानवर उन्हें पकड़ने की कोशिश करते समय धैर्यवान होते हैं। अंत में, गलील सागर पर मछुआरों को सहकारी रूप से मछली पकड़ना पड़ता है । जब वे एक साथ काम करते हैं तो वे अधिक प्रभावी होते हैं। यीशु ने अपने चेलों को दो-दो करके भेजा।

"आओ," उसने कहा, "और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।" अगर हम आते हैं तो वह हमें बनाएगा। हम अपने आप को मनुष्यों के मछुआरे नहीं बना सकते हैं, लेकिन हम खुद को उसके लिए उपलब्ध करा सकते हैं ताकि हम मछुआरे बना सकें।

इसके बाद यीशु अपने नए शिष्यों के साथ बाहर गया ताकि वे उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए मछली पकड़ना सीख सकें। उसने सिखाया, चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:21 - 2:12; लूका 4:31 - 5:26)। जब उसने मुझे अपने पीछे चलने के लिए आमंत्रित किया, तो मैं तुरंत उसके पीछे हो लिया (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32)। मैंने अपने सभी मित्रों को यीशु से मिलने के लिए अपने घर पर आमंत्रित किया (मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39)। मैं चाहता था कि जो कुछ मैंने पाया वह उन्हें मिले, और उनमें से बहुतों ने पाया। मैंने अगले 3 साल यीशु के साथ बिताए, और उसके मरने के बाद, मैं 12 वर्षों तक यहूदिया में रहा, प्रचार करता और गवाही देता रहा। फिर मैं इथियोपिया और पारस गया। चूँकि मैं अच्छी तरह से शिक्षित था, इसलिए मैं राजाओं से अपने उद्धारकर्ता के बारे में बात करने में सक्षम था। मैंने मत्ती का सुसमाचार भी लिखा। मुझे वहां अच्छी प्रतिक्रिया मिली, जो कि बुद्धिमान पुरुषों (मजूसी लोगों) ने एक पीढ़ी पहले बोया था। मैं मिस्र में मर गया, मेरा सिर कुल्हाड़ी से फाड़ दीया गया था। मैं एक कर वसूलने वाला था, मैं एक शिष्य था, लेकिन मुख्य रूप से मैं पुरुषों का मछुआरा था। क्या आप भी हैं ?

एक शिष्य द्वारा

एक आदमी अपने घर को 200000 रुपए में बेचना चाहता था और एक गरीब आदमी इसे खरीदना चाहता था लेकिन उसके पास केवल 100000 रुपए ही थे । बहुत सौदेबाजी के बाद मालिक एक शर्त के साथ आपने घर को100000 रुपए में बेचने के लिए सहमत हुआ: वह दरवाजे के ऊपर से निकलने वाली एक छोटी सी कील पर आपना मलकाना हक़ को बरकरार रखेगा। कुछ समय बाद असली मालिक घर वापस चाहता था। उसने एक मरे हुए जानवर का शव लिया और उसे उसी कील से लटका दिया जिस पर अभी भी उसका मलकाना हक़ था। नया मालिक इसे नहीं हटा सका क्योंकि कील उसका नहीं था। जल्द ही सड़ते जानवर की गंध ने घर को ना रहने लायक बना दिया और परिवार को वहां से निकलना पड़ा। एक छोटे से कील के कारण उन्होंने सब कुछ खो दिया। अगर हम अपने जीवन में पाप की एक छोटी सी खूंटी भी छोड़ दें, तो शैतान अपना सारा सड़ा हुआ कचरा उस पर लटका देगा और हमारे जीवन को घिनोना बना देगा।

यही वह बात है जो यीशु हमें सिखाने की कोशिश कर रहा था जब उसने हमें अपने शिष्य होने के लिए बुलाया। "हे सब थके हुओं और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने प्राणों के लिये विश्राम पाओगे।" (मत्ती 11:28-29) स्वयंसेवकों की तलाश में अधिकांश पुरुष अपने अनुयायियों के लिए एक गुलाबी तस्वीर चित्रित करते हैं: लाभ और आशीर्वाद। यीशु ने हमें कीमत आंकने की चेतावनी दी , यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम जानते हैं कि हम क्या कर रहे थे।

उसने सुनिश्चित किया कि हम समझें कि उद्धार एक साधारण मामला था: यह महसूस करना कि हम में से प्रत्येक परमेश्वर के सामने दोषी था ,और वह, क्योंकि वह पवित्र और न्यायी था, उसे पाप को सजा देनी ही थी। यीशु उस सजा को लेने के लिए हमारे स्थान पर मरने के लिए आया था ताकि हमें क्षमा किया जा सके और हम स्वर्ग जा सके। वही उद्धार है। शिष्यत्व अलग बात है। इसका अर्थ है उद्धार के बाद यीशु के साथ एक और कदम उठाना, मतलब, परमेश्वर की इच्छा के अधीन होना और उसका कार्य करना। उद्धार का मतलब पापों का क्षमा किए जाना है ताकि मनुष्य अनंत काल में परमेश्वर के साथ रह सके, परन्तु शिष्यता उनके लिए है जो इस पृथ्वी पर अपना जीवन ऐसे व्यतीत करेंगे जैसा मसीह यीशू ने व्यतीत कीया । लेकिन यह आसान नहीं है! यीशु ने कहा कि हमें उसका अनुसरण करने के लिए "प्रति दिन अपना क्रूस उठाना" था (लूका 9:23)। इसका अर्थ है अपने लिए मरना और जो हम चाहते हैं, पर उसके लिए जीना हैं।

"हर मसीही के दिल में एक सलीब और एक राज-तख्त है, और एक मसीही सिंहासन पर तब तक है जब तक वह खुद को सूली पर नहीं चडाता ; यदि वह क्रूस को अस्वीकार करता है, तो वह सिंहासन पर बना रहता है। शायद यह आज कई मसीही लोगों के अन्दर अवज्ञा और सांसारिकता के निचले भाग में आता है। हम बचना चाहते हैं, लेकिन हम इस बात पर जोर देते हैं कि सलीब पर चड़ने का कार्य यीशू मसीह करे। हमारे लिए ना कोई सलीब हो , ना कोई लज्जा हो , ना कोई मृत्यु हो । हम अपने छोटे से राज्य के भीतर राजा बने रहते हैं और एक कैसर जैसे पूरे गर्व के साथ अपना चमकीला ताज पहने रहते हैं लेकिन हम खुद को छाया और कमजोरी और आध्यात्मिक बाँझपन के लिए बर्बाद करते हैं। " (ए. डब्ल्यू. टोज़र, 1897-1963)

रोमियों 12:1-2 में पौलुस इसे इस प्रकार लिखता है "इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि हे भाइयो, परमेश्वर की दया के कारण, अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले

बलिदान के रूप में चढ़ाओ - यह तुम्हारी आराधना का आत्मिक कार्य है। अब इस दुनिया के नमूने के अनुरूप मत बनो, बल्कि अपने मन के नवीनीकरण से रूपांतरित हो जाओ। तब आप परमेश्वर की इच्छा - उसकी अच्छी, प्रसन्न और सिद्ध इच्छा की परख करने और उसे स्वीकार करने में सक्षम होंगे।" यीशु ने हमारे लिए सब कुछ छोड़ दिया, वह हमें उसके लिए सब कुछ छोड़ देने के लिए कहता है।

छोटे बच्चों के साथ उपयोग के लिए: बच्चों को अपने माता-पिता से आज्ञा पालन करना, वफ़ादारी करना, विश्वास करना और सीखना है। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है और हमें उसका अनुसरण करना, उसकी आज्ञा का पालन करना, उस पर भरोसा करना और उससे सीखना है। परमेश्वर हमारे माता-पिता का उपयोग हमें सिखाने और हमारी देखभाल करने के लिए करता है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: मुक्ति और शिष्यत्व के बीच के अंतर का वर्णन करें। मुक्ति एक मुफ्त उपहार है जिसे हम अभी प्राप्त करते हैं। हमें इस के लिये कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता है क्योंकि यीशु ने कीमत चुकाई हुयी है । उद्धार के बाद शिष्यतव आता है। हम यीशु के लिए जीने और उसकी आज्ञा मानने का वादा करते हैं। यह हमें बहुत महंगा पड़ता है क्योंकि हम वही करते हैं जो वह चाहता है, नाकि वह जो हम चाहते हैं।

9. यीशु के चेले

उत्तर देने के लिए प्रशन

मत्ती कौन था और वह जीविका के लिए क्या करता था ?

वह एक चुंगी लेने वाला था, जिसे लोग इसलिए नफरत करते थे क्योंकि वह रोम के लिए कर वसूलने का काम करता था। वह ज्यादा वसूल करता था और अतिरिक्त पैसे अपने पास रखता था।

यीशु क्यों चाहेगा कि मत्ती जैसा कोई शिष्य बने?

यीशु प्यार करता है और चाहता है कि हर कोई उसका अनुसरण करे, चाहे किसी ने कुछ भी किया हो। वह जानता था कि मत्ती जीवन में कुछ और खोज रहा है और केवल यीशु ही उस आवश्यकता को पूरा कर सकता है।

मत्ती ने यीशु के पीछे चलने के लिए अपनी नौकरी और पैसा क्यों छोड़ दिया?

वह जानता था कि पैसा संतुष्ट नहीं करता है और केवल यीशु ही उसे वह शांति और अर्थ दे सकता है जिसकी उसे बहुत आवश्यकता थी।

जब यीशु ने लोगों को "मनुष्यों के मछुए" बनने के लिए बुलाया तो उसका क्या अर्थ था?

वह चाहता था कि वे लोगों को यीशु के बारे में बताकर परमेश्वर के राज्य में लाएँ।

मछली पकड़ने और लोगों को यीशु के पास लाने के बीच कुछ समानताएँ क्या हैं?

सक्रिय रूप से मछली पकड़ना - मछली / लोगों का आपके पास आने की प्रतीक्षा ना करें, उनके पास जाएं

वहां मछली पकड़ना जहां मछलियां हैं - मछली के पीछे जाएं

गंभीरता से मछली पकड़ना - उनका क्या होता है जो यीशु के पास नहीं आते हैं?

द्दढ़ संकल्प से मछली पकड़ना- मुख्य लक्ष्य मछली पकड़ना/यीशु के लिए लोगों को जीतना है

चतुराई से मछली पकड़ना - अलग-अलग मछलियाँ / लोग अलग-अलग चीजों पर प्रतिक्रिया करते हैं, हर एक के साथ अलग व्यवहार करें

लगातार मछली पकड़ना - मछुआरे उससे चिपके रहते हैं; हमें हमेशा बात करने के लिए लोगों की तलाश में रहना चाहिए

प्यार से मछली पकड़ना - आप जो करते हैं उसका आनंद लें, यह एक महान विशेषाधिकार और अवसर है

धैर्यपूर्वक मछली पकड़ना - मछली पकड़ने या लोगों को यीशु के पास लाने के लिए धैर्य रखना चाहिए

सहकारी रूप से मछली पकड़ना - मछुआरों और मसीहीयों को परमेश्वर के लिए मिलकर काम करना है

शिष्य क्या है?

जो कोई एक मसीही है और अपने दैनिक जीवन में यीशु के लिए जीवन जीता है वह शिष्य है ।

एक मसीही होने और शिष्य होने में क्या अंतर है?

सभी शिष्य मसीही हैं लेकिन सभी मसीही शिष्य नहीं हैं। मसीही बनना पहला कदम है। हम अनुग्रह के द्वारा मुक्त रूप से परमेश्वर का उद्धार प्राप्त करते हैं। इसके लिये हमें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता है, यीशु ने इसका सब भुगतान कर दीया है। इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा हम में वास करता है और जब हम मरेंगे तो हम स्वर्ग जाएंगे। फिर मुद्दा यह है कि हम प्रत्येक दिन किसके लिए जीएँगे: स्वयं के या यीशु के लिये ? शिष्य बनना यीशु के लिए जीने और उसकी सेवा करने के लिए जीवन भर की प्रतिबद्धता बनाना है। यह हमें बहुत महंगा पड़ता है, क्योंकि हम अपने लिए और अपनी पापी इच्छाओं के लिए जीने के बजाय वही करते हैं जो वह चाहता है। यह ना तो कमाया जाता है और न ही उद्धार रखता है

क्या आप शिष्य हैं? यदि हां, तो क्या आप ने उद्धार के समय यीशु के लिए जीना शुरू किया या कुछ समय बाद? कब?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

शिष्य बनना कठिन है या आसान? क्यों?

हमारे लिए बहुत कठिन है कि हम स्वाभाविक रूप से आत्म-केंद्रित हैं और चाहते हैं कि दूसरे हमारी सेवा करें। दूसरों को पहले स्थान पर रखना और उनकी सेवा करना और भगवान के सेवा करना कीमती है। हमें क्षमा करना चाहिए, प्रेम करना चाहिए, परमेश्वर के साथ समय बिताना चाहिए, और हर चीज में उस पर भरोसा करना चाहिए। लेकिन यह हमारे जीवन जीने का सबसे अच्छा तरीका है!

12 शिष्यों का विवरण

नाम	संबंध	घर	यीशू को मिलने से पूर्व कारोबार	सेवकाई	मृतु
इन्द्रियास	योना और योआना का पुत्र पतरस का भाई	बैतसैदा काफ्रानाहूम	मछुवारा यहुना का अनुयाई	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); फिर इफिसुस, रूस, सिथिया यूनान में सेवा की	सिथिया में एक "X" क्रॉस पर बंधे हुए मरने तक 2 दिन प्रचार किया 11-30-69
नथानिएल (बर्थालोम्यी)	अनजान	काना	मछुवारा यहुना का अनुयाई	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); एशिया माइनर में फिलिप के साथ सेवा की, आर्मीनिया	क्रूर राजा अस्त्यगेस द्वारा जिंदा रहते ही चमड़ा उत्तार दीया गया, सिर काट दिया, समुनद्र में डाल दिया
याकूब (गार्जन का पुत्र)	ज़ब्दी का पुत्र	बैतसैदा काफ्रानाहूम	मछुवारा यहुना का अनुयाई	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18);	44 ईस्वी में हेरोदेस एंटिपास द्वारा सिर कटा गया (प्रेरितों के काम 12:1-2)
याकूब (छोटा)	किलेओपस का पुत्र	काफ्रनाहूम	मछुवारा	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); फिलिस्तीन और मिस्र	मिस्र में सूली पर चढ़ाया गया
यहुना	ज़ब्दी का पुत्र	बैतसैदा काफ्रानाहूम	मछुवारा यहुना का अनुयाई	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 3, 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); यहुना I, II, III, यहुना, प्रकाशतवाक्य का लेखक इफिसुस (मरीयम के साथ) और पत्मोस टापू पर	प्राकृतिक मृत्यु (बहुत बुढ़ापा) - उसे शहीद करने के प्रयास विफल रहे
यहूदा (तद्यिअस)	किलेओपस का पुत्र	काफ्रनाहूम	मछुवारा	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); असीरिया और फारस	फारस/सीरिया में पीट-पीटकर मार डाला एक बड़े डंडे के साथ
यहूदा (इस्कारोती)	अनजान	इकलौता जो गालील से नहीं था	कोषाध्यक्ष	कोई नहीं	आताम्ह्त्य कर ली
मत्ती (लेवी)	किलेओपस का पुत्र	काफ्रनाहूम	कर वसूलने वाला – बहुत शिक्षत	**यरूशलेम (**प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); मत्ती सुसमाचार का लेखक**,** इथियोपिया और फारस	मिस्र में एक कुल्हाड़ी के साथ सिर फाड़ दीया
पतरस (शिमोन)	योना और योआना का पुत्र इन्द्रिआस का भाई	बैतसैदा काफ्रानाहूम	मछुवारा यहुना का अनुयाई	यरूशलेम प्रारंभिक कलीसिया का अगुवा (प्रेरितों के काम 2-11,15); I, II पतरस का लेखक, मरकुस उसके बारे में लिखा गया है, एशिया माइनर, बर्तानिया (?), रोम में सलीब पर उल्टा चढाये जाने से पत्नी के साथ शहादत प्राप्त की	पत्नी के शहीद होने के बाद नीरो ने रोम में उल्टा सूली पर चढ़ाया
फिलिप्स	अज्ञात यूनानी नाम	बैतसैदा	अनजान	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); फ़िरगिया, गलतियाँ, फ्रांस (?), एशिया माइनर में सेवा की	हाइरोपोल (कोलोसे के पास) में एक स्तंभ के साथ बांध कर लटका दिया गया
शिमोन (जोशीला)	अनजान	गालील	जोशीला गोपनीय स्वतंत्रता सेनानी	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); विभिन्न स्थानों पर सेवा की	क्रूस पर चढ़ाया
थोमा	किलेओपस का पुत्र	काफ्रनाहूम	मछुवारा	यरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19; 8:1; 11:1, 18); पार्थिया, परसिया, और भारत	पूर्वी भारत में शरीर को भाले से आर पार शेद दीया गया

*** क्लियोपास को हलफई भी कहा जाता था, जो शायद यूसुफ का भाई था; मरियम उसकी पत्नी यीशु के साथ उसकी सेवकाई के दौरान थी; ऐसा लगता है कि बच्चे मत्ती और थोमा (जुड़वां?), छोटा याकूब और यहूदा तदीयस थे, इसलिए सभी शायद यीशु के खानदानी भाई थे**

**** जब्दी की पत्नी मरीयम की बहन सलोमी थी, बच्चे याकूब और यहुन्ना थे, वे यहुन्ना के चचेरे भाई थे**

10. समुन्दर पर चमत्कार

(मरकुस 4:35-5:43; लूका 8:22-48)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मरकुस 5:1-13

द्वारा: यीशू

कई साल पहले एक आदमी ने पास की नदी के तल से एक खूबसूरत चट्टान उठाई और उसे अपने कमरे के दरवाजे की पैरी के रूप में इस्तेमाल किया। कुछ समय बाद, चट्टानों और खनिजों के एक विशेषज्ञ, जो उस क्षेत्र में यात्रा कर रहे थे, कमरे पर रुक गए और उसने दरवाजे को देखा, जिसे उसने तुरंत सोने की एक विशाल गांठ के रूप में पहचन लिया। वास्तव में, यह अब तक की सबसे बड़ी सोने की डली में से एक साबित हुई। इस आदमी के पास यह वर्षों से था लेकिन उसने इसके मूल्य को नहीं पहचाना। उस व्यक्ति की तरह जो सोने को अपने हाथों में धारण करने में विफल रहा, शिष्य प्रभु के वास्तविक स्वरूप को पहचानने में विफल रहे - यहां तक कि उसके साथ तीन साल से अधिक समय रहने के बाद भी। सने वह सब कुछ जो हमें बताने और दिखाने के लिए किया उसके लिये हमारे पास कोई बहाना नहीं था ।

यहोवा, पागल या झूठा, मेरा नाम येशूवा है, परन्तु तू ने मेरे विषय में कभी नहीं सुना। बाइबिल में मेरा उल्लेख नहीं है। मैं यीशु का अनुसरण करने वाले कई लोगों के लिए विशिष्ट हूं। लेकिन मेरी आज की कहानी मेरे बारे में नहीं है। यह यीशु के बारे में है। मुझे 31ईस्वी के सितंबर के दिनों के दौरान कुछ दिन याद हैं जब मैंने खुद ने यह सीखा था। मेरा काम धीमा था और मैं इस आदमी के बारे में कुछ प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करना चाहता था, इसलिए मैंने दो दिनों तक उसका पीछा किया। पहला दिन उसके परिवार के साथ शुरू हुआ, उसके अपने भाई याकूब के नेतृत्व में, जो उसे पागल होने के कारण दूर करने की कोशिश कर रहा था। यह सुनने में जितना अजीब लगता है, मुझे लगता है कि मैं समझ सकता हूं कि वे ऐसा क्यों करना चाहते थे। मेरा मतलब है, वह स्पष्ट रूप से और लगातार आपने आप को परमेश्वर होने का दावा कर रहा था! अब आप इस तरह के दावों पर क्या करते हैं? धार्मिक शासकों ने कहा कि वह झूठा था लेकिन यह बताना आसान था कि वह जो कुछ कह रहा था उस पर वह दृढ़ता से विश्वास करता था। इसलिए कुछ लोग , उसके परिवार सहित, इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वह पागल था - एक पागल। उसके आश्चर्यजनक दावों पर विश्वास करना ही एकमात्र अन्य विकल्प था - कि वे वास्तव में प्रभु था। वे अभी भी एकमात्र विकल्प हैं। वह सिर्फ एक अच्छा आदमी नहीं था, एक अच्छा शिक्षक था, क्योंकि कोई भी सामान्य व्यक्ति बार-बार परमेश्वर होने का दावा नहीं करता था! हर किसी को तय करना होगा कि वे क्या मानते हैं कि वह झूठा है, पागल है या परमेश्वर है !

वैसे भी, उसके परिवार द्वारा इस अस्वीकृति ने इस बारे में बहुत सारे प्रश्न उठाए कि, यदि वह वास्तव में परमेश्वर था, तो इतने सारे लोग उसे अपने मसीहा के रूप में क्यों अस्वीकार कर रहे थे। मुझे याद है कि उसने इसे समझाने के लिए समुन्द्र के किनारे बैठे दृष्टान्तों की एक श्रृंखला को बताया था (मत्ती 13)। मूल रूप से, उसने जो कहा वह यह था कि उसका राज्य छोटा शुरू होगा और धीरे-धीरे बढ़ेगा जब तक कि एक दिन वह पूरी दुनिया पर कब्जा नहीं कर लेता। ठीक है, वह निश्चित रूप से धीमी, छोटी शुरुआत के बारे में सही था!

गलील के उस पार उसी शाम, यीशु ने हमें बताया कि हम दिकापोलिस के क्षेत्र में जा रहे थे। खैर, स्वाभाविक रूप से हमने सोचा कि हम ऐसी परमेश्वर द्वारा त्यागी भूमि में क्यों जाएंगे। यीशु ने कहा कि यह राज्य के संदेश को पूरे क्षेत्र में फैलाने के लिये था। ऐसा लग रहा था कि इस काम में कम से कम कई महीनों का समय लगेगा - हम कितने समय तक रहने वाले थे? "बस कुछ ही घंटे, अधिकतम आधा दिन" यीशु ने उतर में कहा। हमने पूछा कि यह कैसे किया जा सकता है और यीशु ने हमें बताया कि उसके पास एक आदमी था जिसे वहाँ चुना गया था जिससे हम मिलेंगे। वह वचन को फैला देगा । हमने सोचा कि वह कोई बहुत खास होना चाहिए: उच्च प्रशिक्षित, कुशल, अच्छी तरह से शिक्षित, महान संपर्क और बहुत कुछ। "वास्तव में," यीशु ने हमें बताया, "उसके पास इनमें से कुछ भी नहीं है। कुछ समय पहले वह कब्रिस्तान में फंसा हुआ था ।" कब्रिस्तान? वह क्या था, कोई जनाज़ा तयार करने वाला या , एक कब्र खोदने वाला? वह कब्रिस्तान में क्या करता है? "तो सुनो, मुख्य रूप से वह नंगा दौड़ता है, जंजीर तोड़ देता है, खुद को काटता है, पत्थर के निशानों पर अपना सिर पीटता है और जिस किसी से भी मिलता है उसे इशारे करता है और भयभीत करता है।" हमने ऐसे आदमी की खबरें सुनी थीं। सच कहूँ तो, हम जवाब देने के लिए बहुत स्तब्ध थे। यह हमारी समझ में नहीं आया। हमें नहीं पता था कि यह यीशु का विशेष दूत कैसे हो सकता है।

शैतान हमला करता है दुर्भाग्य से, शैतान को पता चल गया कि यीशु क्या करने जा रहा है (मरकुस 5:1-20)। इसलिए उसने ऐसा होने से रोकने के लिए बहुत कोशिश की। चूँकि किश्ती से बड़ी झील को पार करना सबसे तेज़ रास्ता है, इसलिए यीशु ने इसे चुना। हालाँकि, अचानक एक भयानक तूफान आया जिसने हमें मार डाला होता, अगर यीशु ने हस्तक्षेप नहीं किया होता। उसने हमें तूफ़ान में क्यों ले गया था? वह आपको वित्तीय, संबंधपरक, नौकरी, परिवार या स्वास्थ्य तूफानों में क्यों ले जाता है? यह दिखाने के लिये था कि जब हालात निराशाजनक होतें हैं तो वह कैसे उद्धार कर सकता है। यह एक वास्तविक चमत्कार था - पहला जिसे मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा था। ओह, मैंने कई अन्य लोगों के बारे में सुना था, और उन लोगों से बात की थी जो चमत्कारिक रूप से चंगे हो गए थे। लेकिन उसके एक शब्द के साथ वह भयानक तूफान कुछ ऐसा हो गया था जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा!

एक चमत्कार क्या है? चमत्कार प्राकृतिक घटनाओं का संयोग नहीं है। यह जादू नहीं है। यह एक उच्च कानून द्वारा प्राकृतिक कानूनों के ऊपर हो कर कुछ काम करना होता है। यीशु ने उन्हें 'चिन्ह' कहा। हमने महसूस किया कि वे एक उद्देश्य के लिए किए गए थे - इस बात का प्रमाण देने के लिये कि यीशु परमेश्वर था। ध्यान चमत्कार पर नहीं बल्कि इस पर था कि यह यीशु के बारे में क्या सिखाता था। यदि उसके पास शारीरिक बीमारियों पर अधिकार होता, तो वह आध्यात्मिक बीमारियों को भी ठीक कर सकता था। यदि वह राक्षसों से उद्धार कर सकता है, तो वह पाप से छुटकारा दिला सकता है। यदि वे भौतिक दृष्टि दे सकता है, तो वे आध्यात्मिक दृष्टि दे सकता है। यदि वह भौतिक रोटी खिला सकता था, तो वह आध्यात्मिक मन्ना से भर सकता था। यदि वह शारीरिक रूप से मरे हुओं को फिर से जीवित कर सकता है, तो वह आत्मिक रूप से मृत लोगों के साथ भी ऐसा ही कर सकता है। अगर वह समुन्द्र पर तूफ़ान को रोक सकता है, तो वह हमारे खिलाफ शैतान के हमलों को भी रोक सकता है। जब हम असहाय होते हैं, तो वह उद्धार कर सकता है।

कोई एक विशेष नमूना नहीं था: कुछ ने चंगा होने के लिए कहा, दूसरों ने नहीं। कुछ को विश्वास था, दूसरों को यह भी नहीं पता था कि यीशु कौन था । जो भी बीमारी हो, जो भी जरूरत हो - यीशु ने उसे पूरा किया। प्रकृति पर उसका पूर्ण नियंत्रण था: समुन्द्र को शांत करना, अंजीर के पेड़ को शाप देना , पानी को दाखरस में बदलना, कई मछलियाँ का पकड़ना जब एक पल पहले कोई भी नहीं मिली था - ये सब यीशु द्वारा सिर्फ एक शब्द के साथ किया जाता है। चमत्कार अंत का साधन थे, अपने आप में अंत नहीं।

इसलिए फ़िलिस्तीन का हर बीमार व्यक्ति ठीक नहीं हुआ। शारीरिक उपचार यह दिखाने के लिए था कि वह आध्यात्मिक रूप से चंगा कर सकता है, और यह अनंत काल तक चलने के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण था। शरीर को चंगा करना कुछ ही वर्षों तक चलता है, लेकिन आध्यात्मिक रूप से पाप से चंगाई अनंत काल तक चलती है!

शैतान भी चमत्कार कर सकता है। वह अपने स्वयं के प्रदर्शनों के साथ परमेश्वर की शक्ति को नकली बना सकता है (मत्ती 7:22-23)। हालाँकि, उसकी शक्ति परमेश्वर द्वारा सीमित है। वह यीशु की शक्ति को नहीं रोक सकता। जन्नेस और जम्ब्रीज़ ने मूसा को नकली बनाया और चुनौती दी लेकिन परमेश्वर की शक्ति से हार गए।

खैर , हम सुरक्षित रूप से समुद्र तट पर पहुँच गए , रात को सोए और नाश्ता किया। फिर मेरे द्वारा देखे गए सबसे महान चमत्कारों में से एक हुआ। यीशु ने इस पागल, नग्न, लगभग अमानवीय मनुष्य से दुष्टात्माओं को निकाला और उसे फिर से चंगा किया (मरकुस 5:1-20)। वह वही था जिसे यीशु ने उस पूरे क्षेत्र में संदेश ले जाने के लिए चुना था। हम नाव पर सवार हो गए और समुद्र के उस पार चले गए, इस यात्रा को पूरा करते हुए वापस कफरनहूम गए।

अधिक चमत्कार जब हम वापस आए तो हमारी वापसी की खबर हम से पहले आ चुकी थी। भीड़ हर जगह थी। हर कोई अपने जीवन में एक स्पर्श, चमत्कार चाहता था। जारियस, स्थानीय आराधनालय शासक और एक बहुत अच्छा व्यक्ति, जिस की एक बेटी थी जो घातक रूप से बीमार थी (मरकुस 5:21-43)। उसे देखने के लिये जाते समय रास्ते में, यीशु को एक महिला ने रोका, जिसका 12 साल से लगातार एक नासूर से खून बह रहा था। यीशु को छूने पर, वह तुरंत ठीक हो गई - एक और चमत्कार! यीशु रुका और उससे बातें की। इस रुकावट ने उसे जरीयस के घर पहुचने में देर कर दी , और जब तक वह पहुँचा उसकी बेटी मर चुकी थी। उसने क्या किया? उसने उसका हाथ पकड़ा और कहा, "छोटी लड़की, मैं तुमसे कहता हूं, उठो!" (मरकुस 5:41) वह फौरन उठी और ठीक हो गई - अब तक का सबसे बड़ा चमत्कार!

हालांकि दिन खत्म नहीं हुआ था। मैंने उसे 2 अंधे लोगों और एक दुष्टात्मा, अंधे और गूंगा व्यक्ति को चंगा करते देखा (मत्ती 12:22-32, लूका 11:14-23 और मरकुस 3:20-30)। कई बार जब यीशु ने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, तो लोग तुरंत ही उनकी बीमारियों और बीमारियों से ठीक हो जाते थे ।

यीशु के पास स्पष्ट रूप से शैतान पर अधिकार था। यीशु के पास आज भी वही शक्ति है। देखो उसने तुम्हारे जीवन में क्या किया है - यह एक चमत्कार है! हम सभी का सबसे बड़ा चमत्कार है उसके साथ स्वर्ग में अनंत काल बिताना! क्या आपने उससे अपने पापों को क्षमा करने के लिए कहा है ताकि आप हमेशा उसके साथ रह सकें?

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उन्हें बताएं कि चमत्कार क्या हैं और उदाहरण दें। बता दें कि सिर्फ परमेश्वर ही चमत्कार कर सकता है। यह साबित करते हैं कि वह कितना महान परमेश्वर है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: बाइबल में जितने चमत्कार हो सकते हैं, उनसे कहो कि वह उनको नाम दे । यीशु ने चमत्कार क्यों किए? चमत्कार हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाते हैं?

10. समुन्द्र पर चमत्कार

उत्तर देने के लिए प्रशन

चमत्कार क्या है?

परमेश्वर द्वारा एक उच्च कानून द्वारा प्राकृतिक कानूनों से बढ़कर किसी काम को करना चमत्कार कहलाता है।

क्या शैतान चमत्कार कर सकता है?

वह कर सकता है, परन्तु केवल परमेश्वर की अनुमति से जैसा कि हम अय्यूब की पुस्तक में देखते हैं। वह परमेश्वर की शक्ति को रोक नहीं सकता है। वह चमत्कारों की नकल ही कर सकता है, वास्तविक में चमत्कार केवल परमेश्वर ही कर सकता है।

यीशु ने तूफान को आने से क्यों नहीं रोका ताकि चेले डरते ही ना ?

यीशु अपने अनुयायियों को कठिन परिस्थितियों में आने देता है ताकि वे उस पर भरोसा करना सीखें और उसको अपना उद्धार करते हुए देखें।

इस समय परमेश्वर आपके जीवन में कौन से 'तूफान' आने दे रहा है? वह उन्हें क्यों नहीं हटाता?

(उत्तर अलग-अलग होंगे) - वह उन्हें नहीं हटाता क्योंकि वह उनका उपयोग हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए कर रहा है और हमें उस पर भरोसा करना सिखाता है।

जब आप अपने जीवन में होने वाली किसी घटना से डरते हैं तो आपको क्या करना चाहिए?

याद रखें कि यह सब यीशु के नियंत्रण में है, जो कुछ वह होने देता है उसके लिए उसके पास एक अच्छा कारण है और वह आपसे गहरा प्यार करता है।

इस कहानी में आप कितने चमत्कार गिन सकते हैं? इनमें से कुछ एक साथ कई चमत्कारों के इकठा होने से बने हैं।

समुद्र पर तूफान का थम जाना , नाव का ना डूबना

दान्व्ग्रस्त आदमी का चंगा और बहाल होना , कपड़े पहन लेता है , यीशु का अनुसरण करना चाहता है, सूअर मारे जाते हैं

खून बह रहे नासूर वाली महिला शरीरक और आत्मिक रूप से ठीक हो जाती है यारियस की बेटी चंगी हो जाती है , याईरस का विश्वास बढ़ता है , दूसरों को चंगा किया जाता है : अंधा, गूंगा, दान्व्ग्रस्त अदि

हम यीशु द्वारा दान्व्ग्रस्त आदमी को चंगा करने से क्या सीख सकते हैं?

यीशु की शक्ति शैतान की शक्ति से बड़ी है। जब हम यीशु के नाम में मांगते हैं तो वह दानवों को निकाल सकता है और निकाल देगा। वह सभी की परवाह करता है और सभी को स्वतंत्र देखना चाहता है ।

यीशु ने इस व्यक्ति को उस क्षेत्र में अपने प्रवक्ता के रूप में क्यों चुना?

वह व्यक्ति जानता था कि यीशु ने उसके जीवन में क्या किया और दूसरों को यीशु के बारे में बता सकता था। यह सब कुछ परमेश्वर हम से चाहता है कि हम करें - दूसरों को बताएं कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है।

आपको क्या लगता है कि याईरस को कैसा लगा जब यीशु को रस्ते में रोका गया और उसकी बेटी की मृत्यु हो गई क्योंकि वह समय पर वहां नहीं पहुंचा था? आपको कैसा लगता है जब ऐसा लगता है कि यीशु कुछ करने में बहुत अधिक समय ले रहा है?

वह निराश और अधीर रहा होगा, जैसा कि हम अक्सर महसूस करते हैं।

आप सबसे ज्यादा अधीर कब होते हैं? आपको क्या सबसे ज्यादा अधीर बनाता है?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

परमेश्वर और दूसरों के प्रति अधिक धैर्यवान बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

यह महसूस करें कि हर चीज ईश्वर के नियंत्रण में है और उसका समय हमसे अलग है। वह कभी ना तो आपने समय से पहले और ना ही कभी देर से कुछ करता है । भरोसा रखें कि परमेश्वर सब कुछ सही समय पर करता है । धैर्य के बारे में कुछ बाइबल आयातों को याद करें और जब आप अधीर महसूस करें तो उन्हें उद्धृत करें। याद रखने के लिए अच्छे पद: भजन संहिता 37:7-9; रोमियों 5:3-4; गलातियों 6:9; इब्रानियों 10:36; याकूब 1:3-4

11. लोगों को खाना खिलाना

(मत्ती 14:13-21; 15:32-38; मरकुस 6:30-44; 8:1-9; लूका 9:10-17)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 14:13-21

उस लड़के के द्वारा जिसने अपना दोपहर का भोजन यीशु को दिया

कफरनहूम में दिन की शुरूआत किसी आम दिन की तरह ही हुई । हम उठे और काम करने या खरीदारी करने के अपने रोजमराह कामकाज के लिए जाने लगे। मैं यह सीख रहा था कि गलील के समुद्र पर मछली पकड़ने वाली नावों के लिए जाल कैसे सुधारें ताकि मैं बड़ा होकर एक मछुआरा बन सकूं। याकूब, यूहन्ना, पतरस और अन्द्रियास शहर से बाहर थे इसलिए आज केवल एक नाव ही निकलेगी। हम उनसे जल्द ही वापस आने की उम्मीद कर रहे थे,   किसी भी दिन। यीशु ने उन्हें सिखाने और चंगा करने के लिए दो-दो करके भेजा था।

यीशु स्वयं पास ही बैठा था , पानी के ऊपर ऐसे देख रह था जैसे कोई बात उसे परेशान कर रही हो। बाद में मुझे पटा चला कि उसे अभी-अभी पता चला है कि उसके मौसेरे भाई, अच्छे दोस्त और सेवकाई में भागीदार, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, का सिर काटकर मार दिया गया था! शायद यीशु उसका शोक मना रहा था और सोच रहा था कि क्या जो उसके अग्रदूत के साथ हुआ उसके साथ भी ऐसा ही होगा।

इसको देर ना लगी कि लोगों ने यीशु की ढून्ढ लिया और उनके द्वारा लाए गए बीमारों को ठीक करने की मांग करने लगे । क्या वे उसकी ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील नहीं थे? क्या उन्होंने उसकी निजी-वक्त का सम्मान नहीं करते थे? इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसे प्रार्थना करने के लिए अकेले रहने के लिए रात में जाना पड़ता था ।

जैसे ही सूरज ने आकाश में अपना काम किया और मैंने अपना काम पूरा किया, मेरा ध्यान ऐसी जगह आकर्षित हुआ जहाँ एक बड़ा, जोरदार समूह तेजी से आगे बढ़ रहा था और जहां यीशु धैर्यपूर्वक शिक्षण दे रहा था और चंगा कर रहा था। सामने पतरस था, उसके साथ यूहन्ना, याकूब और अन्द्रियास। मुझे पता था कि मछली पकड़ने को जाने में बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि यह आमतौर पर ठंडी शाम या सुबह के घंटों में किया जाता था, इसलिए वे शायद अपनी नाव के लिए नहीं आ रहे थे। इसके बजाय, मैं वहाँ गया जहाँ वे यीशु के पास जा रहे थे।

वे सभी उत्साहित थे, हर कोई दुसरे से पहले अपनी बात सुनाने के लिए चिल्ला रहा था, सभी अपनी अपनी सफलता की महान कहानियों के साथ जो उन्होंने यीशु के नाम पर राक्षसों को निकाला था , लोगों को सिखाया था और चंगा किया था अदि । बेतरतीबी इतनी थी कि यीशु उन्हें सुन नहीं सकता था, इसलिए उसने उन्हें मछली पकड़ने वाली हुई नाव में बैठने और बाहर धकेलने के लिए कहा। मुझे लगा कि यीशु नाव से फिर से सिखाने जा रहा है, लेकिन वे चलते रहे। जाहिर है, यीशु चाहता था कि वह एकांत में उनकी बात सुने और उनके उत्साह को साझा करने के साथ-साथ आपने पारस्परिक मित्र, यहुना के बारे में अपने दुखद समाचार को भी साझा करे।

हालांकि जो लोग इकट्ठे हुए थे, उन्हें वहां से इतनी आसानी से नहीं हटाया जा सकता था । कुछ लोगों ने किनारे के साथ दौड़ना शुरू कर दिया, जहां उन्होंने सोचा था कि नाव उतर सकती है ताकि वे यीशु के ध्यान के लिए अपनी मांगों को जारी रख सकें। जैसे ही मैं नए-नए जालों के पास से गुज़रा, मैं उसके पीछे-पीछे चला, मेरी माँ ने जो दोपहर का भोजन मुझे पाक करके दीया था उसे सम्भालने लगा।

नाव किनारे नहीं लगी लेकिन चलती रही, इसलिए हम पीछा करते रहे। उन्हें कहीं तो उतरना ही होगा, इसलिए हम चलते रहे। अधिक से अधिक लोगों ने हमें पकड़ लिया और जिस शहर से हम गुजरे, उससे अन्य लोग हमारे साथ जुड़ गए क्योंकि हम उत्तर-पूर्व की ओर तटरेखा का अनुसरण करते हैं । जल्द ही एक बड़ा समूह पैदल ही झील के चारों ओर अपना रास्ता बना रहा था।

अंत में हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ यीशु की नाव उतर रही थी और यीशु और उसके शिष्यों के चारों ओर झुंड बन गए। मैं पतरस और याकूब को अच्छी तरह जानता था, और यह स्पष्ट था कि वे और अन्य लोग परेशान थे क्योंकि वे यीशु का सारा ध्यान सिर्फ अपनी ओर चाहते थे। हालाँकि, यीशु के पास लोगों के लिए दया और धैर्य था।

दिन पहले से ही काफी बढ चूका था और हमारे दोपहर के भोजन का समय हो गया था। मैंने अपना दोपहर का भोजन किया लेकिन जल्द ही महसूस किया कि कोई और खाना नहीं लाया है। इतनी बड़ी भीड़ के लिए पर्याप्त भोजन खरीदने के लिए कोई जगह भी नहीं थी। एक त्वरित अनुमान से पता चला कि कम से कम 5,000 पुरुष थे। उन बच्चों और महिलाओं को जोड़ें और हमारी संख्या लगभग 20,000 थी। हम सभी के लिए पर्याप्त भोजन खरीदना एक सौभाग्य की बात होगी, चाहे वह कभी भी उपलब्ध हो। मैं अपना दोपहर का भोजन सबके सामने खाने में झिझक रहा था, यह जानते हुए कि यह अच्छा नहीं लगेगा। लेकिन मुझे भूख जरूर लग रही थी!

यीशु हमारी सभी जरूरतों के प्रति संवेदनशील था और उसने महसूस किया कि हमें काफी भूख लग रही है। उसने अपने शिष्यों से, जिन्होंने अभी-अभी परमेश्वर को कई चमत्कार करते देखा था, स्थिति को संभालने के लिए कहा, लेकिन ऐसा लगता है कि वे अपने नए-नए सबक भूल गए और हमें खिलाना नहीं जानते थे । इन्द्रिअस मुझसे बात कर रहा था और उसने मेरे दोपहर के भोजन पर ध्यान दिया, इसलिए उसने यीशु को इसके बारे में बताया, यह सोचकर कि कम से कम यीशु के पास खाने के लिए कुछ होगा भले ही हममें से बाकी लोगों के पास ना भी हो तो चलेगा । जब उसने मुझसे इसके लिए कहा, तो मैं इसे देने में हिचकिचा रहा था, क्योंकि माँ जानती थी कि मैं एक बढ़ता हुआ लड़का हूँ और काफी भूखा हूँ। उसने केवल 5 छोटी रोटियाँ और 2 मछलियाँ ही पैक की थीं। ना चाहते हुए भी मैंने इसे छोड़ दिया, यह सोचकर कि माँ को परिस्थितियों में मेरे शिष्टाचार पर गर्व होगा। आख़िरकार, यीशु के साथ कुछ साझा करना तो वास्तविक एक विशेषाधिकार/सोह्भाग्य था। हमने यीशु को कई चमत्कार करते देखा था, लेकिन यह विशेष था क्योंकि इससे हम सभी को फायदा हुआ, नाकि सिर्फ किसी दुसरे को। एक चमत्कार वास्तव में वही था, क्योंकि जब यीशु ने मेरा भोजन लिया, उसके लिए प्रार्थना की, और उसे खाने के लिए तोड़ा, तो खाने के बजाय उसने उसे शिष्यों को दे दिया। केवल वह तोड़ता रहा और तोड़ता रहा और तोड़ता रहा और देता रहा, देता रहा, देता रहा। फिर भी वही छोटी रोटी उसके हाथ में ही थी - वह कभी छोटी नहीं हुई! वास्तव में, भोजन सिर्फ गुणा हुआ। और बढ़ता गया यह इतनी तेजी से बढ़ा कि हम में से प्रत्येक के लिए अपना पेट भरने के लिए पर्याप्त हो गया था और यहां तक रोटी के टुकड़ों से बरी 12 टोकरियाँ भी बच गयी थीं।

मैं सोचता था कि परमेश्वर के लिए कुछ भी करने के लिए मैं बहुत छोटा था। आखिर मैं था तो बच्चा ही। फिर मैं उन अन्य बच्चों के बारे में सोचने लगा जिन्हें परमेश्वर ने इस्तेमाल किया था। दाऊद एक छोटा

लड़का ही था जब उसने एक सिंह, एक भालू और गोलियत को मार डाला था (1 शमूएल 17)। जब वह एक चरवाहा था तब उसने परमेश्वर की स्तुति के गीत लिखे। वे अब हमारी बाइबल के कुछ भजन हैं। शमूएल ने मंदिर में परमेश्वर की सेवा करना तब शुरू कीया जब वह लगभग 4 वर्ष का था (1 शमूएल 1:24)। योशिय्याह 8 वर्ष का ही था जब वह राजा बना और लोगों को वापस परमेश्वर के पास ले गया (2 इतिहास 34:1; 2 राजा 22:1)। फिर वहाँ एक यहूदी दासी थी जिसने नामान को चंगे होने के लिए एलीशा के पास भेजा (2 राजा 5:1-19)। मुझे याद है कि यीशु ने शिष्यों से कहा था कि बच्चों को उसके पास आने दें जब उन्होंने उनको दूर रखने की कोशिश की (मत्ती 19:14)। मैंने उसे एक बार यह कहते भी सुना था कि बड़ों को भी हम बच्चों की तरह विश्वास करने की आवश्यकता है (मत्ती 18:3, मरकुस 10:14, और लूका 18:1)। इससे मुझे अच्छा लगा। मुझे लगता है कि परमेश्वर एक बच्चे का उपयोग कर सकता है । उसने अक्सर अतीत में ऐसा कीया है ।

मैं यह सोचकर रोमांचित था कि यीशु ने मेरे छोटे से दोपहर के भोजन के साथ वह सब किया! इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया, अगर वह मेरे दोपहर के भोजन के रूप में कुछ छोटा उपयोग कर सकता है, तो शायद वह मेरे जैसे छोटे व्यक्ति का उपयोग भी कर सकता है। यदि मैं उसे अपना जीवन देता, तो क्या वह मछली की तरह अपनी महिमा के लिए उसका उपयोग और गुणा करता? मुझे पता है वह करेगा। मुझे पता चल जाएगा, मुझे लगता है, क्योंकि मैंने उसे उसके सम्मान और महिमा के लिए भी उपयोग करने के लिए अपना दिल दिया है। क्या आप ने दीया है ?

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: बच्चों को याद दिलाएं कि यीशु हमें भोजन प्रदान करता है , ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने आपने जमीनी दिनों में लोगों को खिलाया था। जो भोजन वह आपको देता है उसके लिए सदैव उसका धन्यवाद करें। आप उस लड़के के बारे में बात कर सकते हैं जिसने अपना भोजन साझा किया और उन्हें दिखा सकते हैं कि यीशु छोटे बच्चों का उपयोग उसकी मदद करने के लिए करता है। साझा करने के महत्व के बारे में भी बात करें।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उनसे पूछें कि क्या वे उस छोटे लड़के के समान थे, क्या वे यीशु के साथ साझा करेंगे? क्या लड़का खुश था कि उसने ऐसा किया? यदि जो आपके पास है, आप वह यीशु को उपयोग करने के लिए देते हैं , तो क्या वह उसे आशीष देगा और उसका उपयोग करेगा? उन्हें याद दिलाएं कि लड़का उनकी उम्र का ही था, और वे यीशु की सेवा करने या उसके द्वारा उपयोग किए जाने के लिए बहुत छोटे नहीं हैं।

11. लोगों को खाना खिलाना

उत्तर देने के लिए प्रशन

हर कोई यीशु को क्यों देखना चाहता था?

कुछ तो उससे सीखना चाहते थे लेकिन अधिकांश चंगे होना चाहते थे या चाहते थे कि वह उनके लिए कुछ करे ।

क्या आज कुछ लोग यीशु के पास सिर्फ इसलिए आते हैं कि वह उनके लिए क्या कर सकता है? क्या आप भी ऐसे ही आते हैं ?

हां। मुझे उम्मीद है कि आप यीशू के पास केवल तभी ही नहीं आयेंगे जब आपको उससे कुछ चाहिए होगा ।

परमेश्वर छोटी चीज़ों और छोटे लोगों का उपयोग क्यों करना पसंद करता है?

यह स्पष्ट है कि तब उसे इसका श्रेय और महिमा मिलती है!

क्या यीशु बच्चों और युवाओं या नए वयस्कों का उपयोग कर सकता है?

हां!!!!!

कुछ बच्चों या युवा वयस्कों के नाम बताइए जिनका उपयोग यीशु ने अपने सम्मान और महिमा के लिए किया।

बच्चों में शमूएल, दाऊद, योशिय्याह (जो 8 साल की उम्र में राजा बनकर लोगों को परमेश्वर के पास ले गए) और अन्य भी शामिल हैं। युवा वयस्कों में यूसफ (पुराना नियम), मरीयम और यूसफ (नया नियम), तीमुथियुस, मरकुस , दासी लड़की शामिल हैं, जिसने नामान को एलीशा के पास भेजा था।

परमेश्वर ने किन तरीकों से आपको या आपकी उम्र के अन्य लोगों का उपयोग किया है जिन्हें आप उसकी सेवा करने के लिए जानते हैं?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

क्या परमेश्वर ने कभी आपकी, आपके परिवार की या आपके किसी जानने वाले की मदद करने के लिए कुछ चमत्कारी काम किया है? क्या हुआ इसके बारे में बताएं।

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

यीशु ने उनकी ज़रूरतों की परवाह की और उनसे मुलाकात की। वह आपकी किन जरूरतों को पूरा करता है?

(भोजन, वस्त्र, घर, परिवहन, मनोरंजन, मित्र, प्रेम, सुरक्षा, आदि)

कुछ उदाहरण दें कि वह इन आवश्यकताओं को कैसे पूरा करता है, वह कैसे प्रदान करता है।

(उत्तर अलग-अलग होंगे लेकिन इसमें दूसरों से उपहार शामिल हो सकते हैं, जिससे हम पैसे कमा सकते हैं, आदि)

पिछली बार कब आपने उसे इन बातों के लिए धन्यवाद दिया था? रुको और अभी प्रार्थना करो और उसका धन्यवाद करो।

लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए यीशु ने जो किया वह क्यों बंद कर दिया?

उसके मन में उनके प्रति प्रेम और करुणा थी।

हम पतरस से क्या सबक सीख सकते हैं जो पानी पर चल रहा था, जबतक उसने यीशु पर अपनी आँखें रखीं, लेकिन जब उसने अपने चारों ओर की लहरों को देखा तो डूबने लगा?

हमें हर समय यीशु पर अपनी नजर रखनी चाहिए और अपने आस-पास की कठिनाइयों और परिस्थितियों को नहीं देखना चाहिए।

जब पतरस डूबने लगा तो यीशु की मदद के लिए उसकी ओर देखने लगा इस से हम क्या सीख सकते हैं?

जब हम यीशु से नज़रें हटाते हैं और जीवन में 'डूबना' शुरू करते हैं तो हमें मदद के लिए सीधे उसकी ओर देखने की आवश्यकता होती है।

12. यीशु का रूपान्तरण

(मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मत्ती 17:1-8

द्वारा: याकूब (यहुना का भाई)

क्या आपने कभी किसी प्रार्थना का इतना मजबूत और स्पष्ट उत्तर पाया है जिस से आप चकित रह गए हों ? मैंने पाया है । प्रार्थना यीशु के बारे में थी - चाहे वह ईश्वर था या नहीं। मुझे लगता है कि मैं हमेशा से इस बात को जानता था, लेकिन मैं वास्तव में निश्चित होना चाहता था। तो जान लीजिये कि मेरा क्या मतलब है?

आप जानते हैं, कि ऐसा सुनना कि आपका मौसेरा भाई परमेश्वर है, वास्तव में आपने आप में कुछ वजन रखता है। इस पर विश्वास करने के लिए बहुत विश्वास की आवश्यकता होती है। उसके लिए जीने और उसकी सेवा करने के लिए अपना जीवन समर्पित करना, ठीक है, आप सुनिश्चित करना चाहते हैं!

यीशु मनुष्य- क्या यीशु वास्तव में जीवित था? इसमें कोई संदेह नहीं है। इतिहास उसे साबित करता है। उसके समय के इतिहासकारों ने उसके बारे में लिखा है। क्या वह वास्तव में एक ऐसा व्यक्ति था जो पैदा हुआ था, जीवित था और मर गया था? इसमें कोई शक नहीं। परन्तु क्या वह वास्तव में परमेश्वर भी था?

यीशु परमेश्वर- मुझे लगता है कि मैं इसका उत्तर किसी भी वयक्ति की तरह दे सकता हूं। मैं यीशु को उसके पूरे जीवन के साथ जानता था। मैं उस का मौसेरा भाई था, एक शिष्य था , करीबी 3 शिष्यों में से एक था । मेरी माँ और उसकी माँ, मरीयम, बहनें थीं। मैंने शुरू से ही उसका अनुसरण किया, यह जानते हुए कि वह अब तक का सबसे महान रब्बी है। हालाँकि, 32 ईस्वी की गर्मियों में, उसके ईश्वरत्व के बारे में हर संदेह भी पूरी तरह से दूर हो गया था। यीशु उस समय तक 3 वर्ष से सेवकाई कर रहा था। मुझे उस समय यह नहीं पता था, कि अगले साल उस समय वह स्वर्ग में होगा।

यीशु अभी-अभी एक भयानक दिन से गुज़रा था। उसने सुना कि यूहन्ना मर गया और उसका जीवन खतरे में है। शिष्य अभी-अभी एक सफल यात्रा से लौटे और दूसरों को उसके बारे में बता रहे थे और सभी उत्साहित थे। उसके चारों ओर हर जगह लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। उसने किसी भी ऐसे आदमी की तरह भीड़ को नहीं संभाला जिसे मैंने कभी देखा होगा । जब झील के चारों ओर भीड़ उसके पीछे हो ली तो उसने उन्हें सिखाया, चंगा किया और खिलाया। फिर उसे रास्ते में अपने शिष्यों की डूबने से बचने में मदद करनी पड़ी। पानी पर कौन चल सकता है? एक शब्द से तूफान को कौन रोक सकता है? कुछ छोटी रोटियों और मछलियों से 30,000 लोगों को कौन खिला सकता है? केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है !

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया- जब हम यात्रा करते थे मैंने उसे करीब से देखा। लोग एक शब्द या एक स्पर्श से ठीक हो जाते थे। उसने कहा कि वह परमेश्वर की ओर से भेजी गई जीवन की रोटी है (यूहन्ना 6:46-51)। कई बार, उसने परमेश्वर होने का दावा किया (यूहन्ना 8:58; 10:30; 17:5; आदि)। उसने चमत्कार किए, आराधना को स्वीकार किया और पाप को क्षमा किया (मरकुस 2:5)। उसने स्पष्ट रूप से परमेश्वर के तुल्य होने का दावा किया (मत्ती 28:19; यूहन्ना 5:17-18; 12:45; 13:20; 14:1, 9) और परमेश्वर के साथ एक होने का दावा कीया (मत्ती 4:7; लूका 4:12 ; 8:39; यूहन्ना 10:30, 36-38;

17:11, 21-22; 20:28)। हम सभी जानते थे कि उसने कहा था कि वह स्वर्ग से है (यूहन्ना 6:33, 35, 51) और परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 4:34; 5:37; 7:16, 28-29; 8:16; 9:4; 11:42; 14:24; 16:28; 17:18, 23)। बार-बार, उसने स्वयं को परमेश्वर के पुत्र के रूप में घोषित कीया (मत्ती 16:17; 22:42-45; मरकुस 12:35-37; 14:61-62; लूका 20:41; यूहन्ना 9:35-37; 22 :69-70)। इससे पहले कि आप उसके दावे को को समझें कि वह हमेशा अस्तित्व में है (यूहन्ना 8:58; 17:5), सर्वज्ञता है (मत्ती 11:21-22; लूका 10:13), सर्वव्यापक (मैट 18:20; 28:20) और सर्वशक्तिमान है (मरकुस 14:61-63; लूका 22:69-70; यूहन्ना 2:19, 10:18; 11:25-27)। जितना अधिक समय हमने उसे देखा, उतना ही स्पष्ट होता गया कि वह हम में से बाकी लोगों की तरह सिर्फ एक आदमी नहीं था।

इसमें कोई शक नहीं कि **यीशु ने खुद को परमेश्वर होने का दावा किया था**। उसके जीवन का पूरा कार्यकाल इसी ओर इशारा करता है। उसने मौखिक रूप से कई बार परमेश्वर होने का दावा किया (यूहन्ना 8:58; 10:30; 17:5; आदि)। उसने आराधना ऐसे स्वीकार की जैसे वह ईश्वर हो। उसने पाप को क्षमा करने में सक्षम होने का दावा किया (मरकुस 2:5)। अब, हम उस व्यक्ति का क्या करें जो परमेश्वर होने का दावा करता है? अगर आपका पड़ोसी परमेश्वर होने का दावा करने लगे तो आप क्या कहेंगे? ऐसे व्यक्ति के बारे में तीन विकल्प या संभावनाएं होती हैं। वह पागल है, एक **सिरफिरा** है, क्योंकि वह सचमुच सोचता है कि वह परमेश्वर है लेकिन गलत है। वह जानता है कि वह परमेश्वर नहीं है, लेकिन फिर भी हर किसी को समझाने की कोशिश करता है कि वह है, इसलिए वह **झूठा** है। या वह वास्तव में परमेश्वर और सभी का **प्रभु** है! परमेश्वर ,पागल या झूठे हमारे विकल्प हैं। सिर्फ एक अच्छा आदमी, एक अच्छा शिक्षक, एक नैतिक उदाहरण - ये उसके लिए विकल्प नहीं हैं जो भी परमेश्वर होने का दावा करते हैं! यदि वह पागल या झूठा है तो वह एक अच्छे, अच्छे व्यक्ति के रूप में योग्य नहीं हो सकता है। यदि वह प्रभु है, तो वह अयोग्य है और सिर्फ एक अच्छे, अच्छे व्यक्ति से कहीं अधिक है। इस प्रकार, वह या तो पूजा कीए जाने और पालन कीए जाने के योग्य परमेश्वर है या फिर भुला दिए और अनदेखा कर दीया जाने वाला एक धोखेबाज है।

यह लगभग यही समय था जब पतरस को हमारी सारी भावनाओं को शब्दों में बयां करने का अवसर मिला जब यीशु ने उससे पूछा कि क्या हम शिष्य उसे छोड़ देंगे जैसा कि कई अन्य अनुयायियों ने कीया था । "प्रभु ," पतरस ने कहा। "हम किसके पास जाएं? आपके पास तो अनंत जीवन की बातें हैं। हम विश्वास करते हैं और जानते हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र हैं।" यह काफी स्पष्ट था। उसके कार्यों उसके शब्दों का समर्थन करते थे : प्रकृति पर अधिकार, बीमारी पर अधिकार , यहाँ तक कि शैतान और उसकी ताकतों पर भी। यह मुख्य रूप से धार्मिक शासको ने मुख्य रूप से आपने गर्व और ईर्ष्या के कारण उसके ईश्वरत्व को अस्वीकार कर दिया था। उसे बदनाम करने के लिए वो हर बहाने की तलाश करते थे । उनका एक मुख्य कारण यह था कि वह उनके सभी मानव निर्मित नियमों का पालन नहीं करता था, जैसे खाने से पहले हाथ धोने की रस्म। यीशु ने कहा कि जो मायने रखता था वो अंदर की सफाई थी , नाकि बाहर की।

यदि परमेश्वर मनुष्य बन गया तो - यीशु चंगा करता रहा। उसने एक फोनीशियन महिला की दानवग्रस्त छोटी बेटी को चंगा किया। वास्तव में, उसने वह सब किया जो आप परमेश्वर से करने की अपेक्षा करते हैं। मैं अक्सर इसके बारे में सोचता था, और मुझे पता था कि अगर परमेश्वर कभी धरती पर आए, तो उसाका एक प्रवेश असामान्य रूप का होगा। कुंवारी से पैदा होने से ज्यादा असामान्य क्या हो सकता है? इसके अलावा, उसे पाप रहित होना चाहिए। यीशु पापरहित था। मैं उसे अपने पूरे जीवन में जानता था, और पिछले 3 वर्षों से दिन-रात उसके साथ रहा था । यदि ईश्वर मनुष्य बन गया, तो आप उससे अलौकिक (चमत्कार) करने की अपेक्षा करेंगे, अब तक बोले गए महानतम शब्दों को बोलेंगे और एक

स्थायी और सार्वभौमिक प्रभाव बनाये रखेंगे। इसके अलावा, आप उससे अपेक्षा करेंगे कि वह मनुष्य में आध्यात्मिक भूख को संतुष्ट करे और मृत्यु पर शक्ति का प्रयोग करे। यीशु ने यह सब किया और बहुत कुछ दिखाया कि वह वास्तव में स्वयं परमेश्वर था। फिर एक दिन यीशु ने हमारी परीक्षा ली।

जी उठने से ईश्वता साबित होती है हम कैसरिया फिलिप्पी के पास एक लंबी, सुनसान सड़क पर चल रहे थे। यीशु ने हमसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूं?" उसे बताने के बाद, उसने हमसे पूछा कि हमें क्या लगता है कि वह कौन है। पतरस ने हम सभी की तरफ से यह कहा: "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:13-20)। इसने वास्तव में यीशु को प्रसन्न कीया था। जब से हम उससे मिले थे, वह इस बात को स्पष्ट कर रहा था। फिर वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बात करने लगा। मरने का मतलब यह नहीं था कि वह परमेश्वर नहीं था, यह वास्तव में सिर्फ यह साबित करने के लिये हुआ कि वह था। परमेश्वर के अलावा कौन कब्र से वापस आ सकता है?

रूपान्तरण ईश्वरता को प्रमाणित करता है इसके कुछ ही समय बाद हम ने यीशु को उनकी ईश्वरीय महिमा में देखा । कोई भी इसका अनुभव नहीं कर सकता था और ना संदेह कर सकता था कि वह ईश्वर है। यीशु ने पूरे गलील में यात्रा करने में बहुत समय बिताया (यूहन्ना 7:1)। उसने अन्यजातियों में विश्वास पाया, और उस स्त्री की बेटी को चंगा किया, जिसमें यहूदियों से भी अधिक विश्वास था (मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30)। उसने एक गूंगे बहरे को चंगा किया (मरकुस 15:29-31; मरकुस 7:31-37) और फिर से एक भीड़ को खिलाया, यह 4,000 पुरुषों की एक भीड़ थी (मत्ती 15:32-38; मरकुस 8:1-9)। फिर भी लोग प्रमाण की मांग करते थे कि यदि वह मसीहा था (मत्ती 15:39 - 16:4; मरकुस 8:9-12)। वह प्रमाण योना का चिन्ह होगा (मत्ती 12:38), जो 3 दिन तक मृत रहने के बाद भी जीवित था।

यीशु ने हमें अविश्वास के पाप की सूक्ष्म वृद्धि के बारे में चेतावनी दी थी, जैसे कि खमीर (मत्ती 16:5-12; मरकुस 8:13-21)। फिर यीशु ने यात्रा करते हुए एक अंधे व्यक्ति को चंगा किया (मरकुस 8:22-26)।

हर्मन पर्वत पर पहुँचने पर, वह रुका और हमसे, यानि उसके शिष्यों से बात की। उसने हमसे पूछा कि क्या हम जानते हैं कि वह कौन था। जब हमने जबाब दीया , तो वह हमारे विश्वास पर सबसे अधिक प्रोत्साहित हुआ (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)। फिर उसने हमें चेतावनी दी कि, सिंहासन स्थापित करने के बजाय, उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा, लेकिन वह फिर से जीवित हो जाएगा (मत्ती 16:21-23; मरकुस 8:31-33; लूका 9:22)। उसने हमें शिष्यत्व के बारे में सिखाया (मत्ती 16:24-28; मरकुस 8:34-9:1 लूका 9:23-27) और आने वाले कठिन समय में उसका अनुसरण करने के लिए हमें जो वचनबद्धता की आवश्यकता होगी उसके बारे सिखाया।

फिर वह हर्मन पर्वत पर और आगे बढ़ा। पतरस, यूहन्ना और मैं उसके साथ थे और हमने उसे रूपांतरित होते देखा! हमने उसकी अनन्त महिमा को देखा (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36)। हम एक पहाड़ पर थे और उनका रूपान्तर हो गया था। वहाँ वह अपनी सारी महिमा में था, मूसा और एलिय्याह के साथ अपनी आने वाली मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बात कर रहा था। जरा सोचिए - हमने शिक्नाह की महिमा देखी और जीवित रहे थे ! परमेश्वर ने स्वयं कहा, यीशु उसका पुत्र था। इससे बाद में यूहन्ना के मसीहा के पहले आने वाले 'एलिय्याह' की भविष्यवाणी को पूरा करने के बारे में चर्चा हुई (मत्ती 17:9-13; मरकुस 9:9-13)। जब हम अन्य शिष्यों के पास वापस गए, तो हमने देखा कि एक लड़के में दुष्टात्माएँ निवास कर रही हैं और शिष्य उन्हें बाहर निकालने में सक्षम नहीं हैं। यीशु ने उन्हें डांटा और वे तुरंत चले गए (मत्ती 17:14-21; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43)। फिर से, उसने हमें अपनी आने वाली मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बताया (मत्ती 17:22-23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45) ताकि ऐसा

होने पर हम तैयार रहें और विश्वास ना खोएं। हम सत्य को कैसे नहीं देख सकते थे: वह वास्तव में 100% मनुष्य और 100% भगवान था !

पूरी हुई भविष्यवाणियां ईश्वरता को प्रमाणित करती हैं- मूसा और एलिय्याह को अपने साथ देखकर भविष्यवक्ता की आने वाली सभी भविष्यवाणियों को ध्यान में लाया गया जो मूसा की तरह होगा, और एलिय्याह जैसा एक जो उससे पहले होगा। दरअसल, मसीहा के बारे में सैकड़ों भविष्यवाणियां यीशु में पूरी हो रही थीं। मत्ती उनकी एक सूची बना रहा था। यह कहा गया था कि वह एक महिला के वंश से पैदा होगा (उत्पत्ति 3:15; गल 4:4; मत्ती 1:20), एक कुंवारी (यशायाह 7:14; मत्ती 1:18,24-25; लूका 1) :26-35) और उसे परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा (भजन संहिता 2:7)। वह अब्राहाम (उत्पत्ति 22:18), इसहाक (उत्पत्ति 21:12) और याकूब (गिनती 24:17), यहूदा के गोत्र (उत्पत्ति 49:10) और यिशै के परिवार (यशायाह 11) का वंशज होगा। 1,10; यिर्मयाह 23:5)। संयोग से इनके घटित होने की सम्भावना 100000000000000000 में से 1 होगी। यदि चांदी के सिक्कों के साथ पूरे भारत को ढाप दीया जाये और सिक्को को परत दर परत बिषय जाये जब तक कि वे आधा मीटर ऊँचा ना हो जाये , एक सिक्के को चिह्नित किया जाता है, अन्य सभी को नहीं, फिर एक आदमी की आंखों पर पट्टी बांधें और उसे कहीं भी चलने दें, जब वह पहली बार चिह्नित सिक्के को उठाता है, वह संयोग से होगा और यह बिलकुल ऊपर की पहली 8 भविष्यवाणियों के समान है। और मसीहा की और भी सैकड़ों भविष्यवाणियाँ थीं जिन्हें यीशु ने पूरा किया! कोई और क्या प्रमाण चाहेगा कि वह परमेश्वर है? यदि उसने उन भविष्यवाणियों को पूरा नहीं किया होता तो कोई भी कभी भी सभी अभिलेखों के लिए यह साबित नहीं करेगा कि वे किस जनजाति और परिवार से निकला था , जब 70 ईस्वी में यरूशलेम गिराया गया था।

आप क्या सोचते हो? क्या आप मानते हैं कि वह वास्तव में परमेश्वर है? अगर ऐसा है, तो यह आपकी जिंदगी बदल देगा! तथ्यों की जांच करें। आप जितने करीब से देखेंगे, वह उतना ही स्पष्ट होता जाएगा। एक बार दो अविश्वासी की रेलगाड़ी में बैठकर मसीह के जीवन पर चर्चा कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा, "मुझे लगता है कि उसके बारे में एक दिलचस्प कहानी लिखी जा सकती है।" दूसरे ने उत्तर दिया, "और आप इसे लिखने वाले आदमी हैं। उसकी देव्यता के बारे में प्रचलित भावना को फाड़ दो, और उसे एक आदमी के रूप में चित्रित करें - पुरुषों के बीच एक पुरष ।" सुझाव पर कार्रवाई की गई और किताब लिखी गई। सुझाव देने वाले व्यक्ति कर्नल इंगरसोल थे, जो प्रसिद्ध नास्तिक थे। लेखक जनरल ल्यू वालेस थे, और पुस्तक को "बेन हूर" कहा जाता था। मसीह के जीवन के निर्माण की प्रक्रिया में, जनरल वालेस ने खुद को पृथ्वी पर अब तक के सबसे महान जीवन का सामना करते हुए पाया। जितना अधिक उसने अध्ययन किया, उतना ही उसे विश्वास होता गया कि मसीह मनुष्य से अधिक है। एक दिन, वह रोने के लिए मजबूर हो गया, 'वास्तव में, यह परमेश्वर का पुत्र था!' यीशु को सिर्फ एक आदमी साबित करने की कोशिश में, उसने सबूत को महसूस किया कि वह वास्तव में परमेश्वर था। क्या आप को ऐसा अहसास हुआ है ? क्या वह आपका परमेश्वर और प्रभु है ? क्या आपका जीवन इसे दिखाता है?

छोटे बच्चों के साथ उपयोग के लिए: यीशु का एक बच्चे के रूप में पैदा होने, उनकी तरह ही एक बच्चे के रूप में बड़े होने और हमारे जैसा एक आदमी होने के बारे में बात करें। उसके बारे में भी बात करें कि वह परमेश्वर है जिसने पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग छोड़ दिया। वे यह सब नहीं समझेंगे, लेकिन विश्वास करेंगे। उस अंतर के बारे में बात करें जिससे यह पता चलता है कि वह परमेश्वर है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उनसे पूछें कि क्या वे मानते हैं कि यीशु ही परमेश्वर हैं। यदि वे "हाँ" कहते हैं, तो उनसे पूछें कि वे ऐसा क्यों मानते हैं। उन प्रमाणों के बारे में बात करें कि यीशु ही परमेश्वर

है। उनसे पूछें कि यीशु के ईश्वर होने या ना होने से क्या फर्क पड़ता है? उनसे पूछें कि वे क्या कहेंगे यदि कोई मित्र उनसे पूछे कि वे यीशु पर विश्वास क्यों करते हैं। उनसे उस अंतर के बारे में बात करें जो इससे उनके जीवन में आना चाहिए क्योंकि वे उसके लिए जीते हैं।

12. यीशु का रूपान्तरण

उत्तर देने के लिए प्रशन

यदि कोई आपसे पूछे कि आप कैसे जानते हैं कि यीशु ही परमेश्वर है, तो आप उनको कैसे उत्तर देंगें ?

आज के पाठ में उत्तरों का उपयोग करें: यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया, उसने वह सब कुछ किया जो परमेश्वर मनुष्य बनने के लिए करेगा, रूपांतरण और पुनरुत्थान साबित करता है कि वह परमेश्वर है और उसने उन सभी भविष्यवाणियों को पूरा किया जो मसीहा के लिए की गई थीं।

किस -किस समय पर यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया?

("यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया" पाठ को देखें)

यदि यीशु परमेश्वर (प्रभु) नहीं है तो उसे क्या होना चाहिए?

या तो एक झूठा क्योंकि वह अक्सर कहता था कि वह परमेश्वर था या एक पागल (पागल) ऐसा सोचने के लिए कि वह परमेश्वर था जब वह नहीं था। वह सिर्फ एक अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता, हालांकि, एक अच्छा शिक्षक कभी भी झूठा या पागल नहीं हो सकता।

पुनरुत्थित किया जाना किस प्रकार साबित करता है कि यीशु ही परमेश्वर था?

कोई भी कभी मरे हुओं में से जीवित नहीं हुआ है। केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता था। मृत्यु, पाप और शैतान उसे पराजित नहीं कर सके या पकड़ कर नहीं रख सके। वह उनसे बड़ा है।

'रूपांतरण' क्या था; और वहां क्या हुआ?

यीशु ने अपनी महिमा को अपनी मानवता के माध्यम से चमकने दिया। अपने शेष सांसारिक जीवन में उसने अपनी महिमा को परमेश्वर के रूप में छिपाया लेकिन यहाँ, एलिय्याह और मूसा के साथ, उसकी महिमा देखी गई थी । वह उनके साथ अपनी आगामी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बात कर रहा था। उसे संगति और प्रोत्साहन की आवश्यकता थी।

यीशु ने अपने चेलों को उसे इस रूम में क्यों देखने दिया?

वह चाहता था कि उन्हें आश्वस्त किया जाए कि वह ईश्वर है - जो उन्हें और प्रमाण देगा । पतरस, याकूब और यूहन्ना पृथ्वी पर उसके सबसे करीबी दोस्त थे और वह उन्हें प्रोत्साहित करना, उनके विश्वास को बढ़ाना और उनके साथ इस विशेष समय को साझा करना चाहता था।

आप वहां होते तो क्या सोचते?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

पतरस बात कर रहा था जिस समय उसे सुनना चाहिए था इसलिए परमेश्वर ने पतरस को रोका (मरकुस 2:5-7)। क्या आप परमेश्वर से बात करने या उसे सुनने में अधिक समय व्यतीत करते हैं? क्या अधिक महत्वपूर्ण है?

जो परमेश्वर को हमसे कहना होता है, वह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जो हमने परमेश्वर से कहना होता है। वह पहले से ही जानता है कि हम उससे क्या कहते हैं, लेकिन अगर हम उससे चूक जाते हैं जो वह हमसे कहना चाहता है तो हम कुछ बहुत महत्वपूर्ण खो बैठते हैं।

कौन सी भविष्यवाणियाँ हैं जो यीशु ने पूरी कीं जो दर्शाती हैं कि वह परमेश्वर हैं?

(पूरा पाठ देखें, "पूरी हुई भविष्यवाणियां ईश्वरता को प्रमाणित करती हैं")

इसमें क्या अंतर है यदि यीशु सिर्फ एक अच्छा इंसान ही है और परमेश्वर नहीं है ?

यदि यीशु परमेश्वर नहीं है, तो हमारे पास कोई उद्धार नहीं है, प्रार्थना करने वाला कोई नहीं है, हमारे भीतर कोई पवित्र आत्मा नहीं है, बाइबल सत्य नहीं है, और हम हमेशा के लिए अपने पापों में खोए हुए हैं।

2 या 3 के छोटे समूहों में विभाजित करें या एक समूह के रूप में एक व्यक्ति को यह सोचने दें कि हम कैसे जान सकते हैं कि यीशु ईश्वर है और दूसरा व्यक्ति उनसे बात करने वाले एक मसीही की भूमिका निभाता है। इससे आपको दूसरों से क्या कहना है, इसकी आदत डालने में मदद मिल सकती है।

जब आप प्रार्थना में हों, तो परमेश्वर को सुनने में अधिक समय व्यतीत करें बजाये अपनी बात करने के । वह आपसे क्या कह रहा है?

13. मरियम, मार्था और लाजर

(लूका 10:38-42; यूहन्ना 11:1-44; 12:1-11)

जोर आवाज़ से पढ़ें: यूहन्ना 11:32-44

द्वारा: लाजर

लाजर द्वारा मौत पर ग़ालिब आने के बारे में एक सबक- क्या आप कभी मरकर फिर से जीवित हुए हैं? मैं आपको बताता हूँ, ऐसा कुछ नहीं है! मुझे 'दूसरे पक्ष' के बारे में कहानियां सुनना अच्छा लगता है। उनमें से कुछ पर आप भरोसा नहीं कर सकते, लेकिन बाइबल में जो हैं वो सब भरोसा करने योग्य हैं। क्या आपने वो सुनी है? यहाँ उस लड़के की कहानी है जिसे परमेश्वर ने एलिय्याह के द्वारा पुनर्जीवित किया (1 राजा 17:21-22)। एलीशा के समय में शूनेमिन माँ का पुत्र भी शामिल है (2 राजा 4:33-36)। फिर वह व्यक्ति जो एलिय्याह की गुफा में दफनाए जाने के बाद फिर से जीवित हो गया था (2 राजा 13)। दोरकास को फिर से जीवित करने के लिए परमेश्वर ने पतरस के द्वारा कार्य किया (प्रेरितों के काम 9:40) और पौलुस के द्वारा इचिकुस को जीवत करने के लिए (प्रेरितों के काम 20:9-12)। यीशु ने स्वयं एक नैन विधवा (लूका 7:14-15), जारियस की पुत्री (लूका 8) और लाजर को जिन्दा कीया - दरअसल वह मैं हूँ! , मैं बाइबल के दो लाजरों में से एक था। यीशु ने हम दोनों की मृत्यु को अपने लिए एक गवाही के रूप में इस्तेमाल किया।

लाजर और अमीर आदमी (लूका 16:19-31)। -दूसरा लाजर यीशु द्वारा बताई गई एक सच्ची कहानी में एक गरीब, बीमार भिखारी था। वह अपंग हो गया था, उसे एक सड़क के किनारे फेंक दिया गया था, जहां वह लोगों की दया पर था, कि आपने बचे कुचे रोटी के टुकड़े फेंकते और वह उनको उठता और खता था । उसे भोजन के लिए भेड़ियों जैसे जंगली कुत्तों से भी लड़ना पड़ता। खैर, वह मर गया, लेकिन एक आस्तिक होने के नाते, उसकी आत्मा स्वर्ग में चली गई, जबकि उसका शरीर हमेशा जलते हुए कचरे के ढेर, जहेन्ना (नगर के बहार कूड़े के ढेर) में चला गया।

एक विश्वासी के लिए मृत्यु का अर्थ है स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में तत्काल चले जाना (लूका 23:43)। यह नुकसान नहीं है, यह लाभ है! बगीचे के पिछले हिस्से में झाड़ियों में दो छोटे पक्षियों का घोंसला था। एक छोटी लड़की की कहानी है जिसे एक चिड़िया का घोंसला मिला। इसमें चार धब्बेदार अंडे थे। एक दिन, कुछ समय दूर रहने के बाद, वह बगीचे में चित्तीदार अंडों को देखने के लिए दौड़ी। सुंदर अंडों के बजाय, केवल टूटे हुए, खाली शिल्के थे। "ओह!" उसने कहा, टुकड़ों को उठाकर, "सुंदर अंडे सभी खराब हो गए और टूट गए हैं! "नहीं," उसके भाई ने कहा, "वे खराब नहीं हुए हैं: उनमें से सबसे उनके अच्छे हिस्से ने पंख ले लिए हैं, और उड़ गए हैं।" तो, यह है मृत्यु में: जो शरीर पीछे रह गया है वह केवल एक खाली खोल/शिल्का है; जबकि उसकी आत्मा, बेहतर हिस्सा था जो पंख ले कर उड़ गई है।

जिस धनी व्यक्ति की हवेली के बाहर लाजर को फेंक दिया गया था, वह भी मर गया। वह नरक में गया क्योंकि उसे ईश्वर में विश्वास नहीं था, केवल अपने आप में ही विश्वास था । उसका शरीर एक अच्छी कब्र में चला गया, लेकिन उसकी आत्मा नरक में चली गई। क्या ही विपरीतता है ! इस जीवन में लाजर को पीड़ा थी, लेकिन अनंत काल में, खजाना। अमीर आदमी के लिए यह विपरीत था। कौन बेहतर था? याद

रखें कि एक दिन सभी मरेंगे। मौत से कोई नहीं बचता। यह अंतिम है, मृत्यु के बाद उद्धार का कोई मौका नहीं है।

लाजर, मरियम और मार्था (यूहन्ना 11:1-44)- यह मुझे मेरी कहानी में लाता है। परमेश्वर ने मेरी मृत्यु का उपयोग अपनी महिमा के लिए भी किया - लेकिन एक अलग तरीके से। वह मुझे जीवन में वापस लाया! हालांकि, मैं कहानी का फोकस नहीं था। उसने मुझे सिर्फ अपनी महिमा के लिए चुना - वह क्या ही विशेषाधिकार/सोह्भाभ्य था!

मैं जीवन भर बीमार रहा। 33 ईस्वी की फरवरी के मध्य में में, मैं इतना बीमार था कि सभी को लगा कि मैं मर जाऊंगा। मरियम और मार्था ने मुझे चंगा करने के लिए यीशु के पास बुलावा भेजा। हमने उसे कई अन्य लोगों को चंगा करते देखते थे। लेकिन वह नहीं आया। उसने संदेशी को यह कहते हुए वापस भेज दिया कि मेरी बीमारी मृत्यु में समाप्त नहीं होगी। हालाँकि, जब तक संदेशी आया, तब तक मैं मर चुका था! जिससे सभी का दुख और बढ़ गया है। वह कहां था? वह क्यों नहीं आया? वह इतना गलत कैसे हो सकता है?

आखिरकार वह दिखाई दिया, जब मुझे कब्र में पड़े 4 दिन हो गए थे । वे मुझे बताते हैं कि उन्होंने कभी इस बारे में स्पष्टीकरण नहीं दिया कि वे पहले क्यों नहीं पहुंचे। उसने मार्था से बात की, जो उसके विश्वास को बढ़ाने के लिए एक धार्मिक चर्चा थी। उसने मरीयम को दिलासा दिया, उसके साथ रोने का/शोक करने का एक भावनात्मक समय।

तब यीशु कब्र पर गया। उसने उनसे पत्थर हटाने को कहा। मार्था, यह सोचकर कि वह सिर्फ एक बार मेरे शरीर को देखना चाहता है, उसे याद दिलाया कि मुझे मरे चार दिन हो गए हैं - सड़ने की बदबू भयानक होगी। यीशु ने जोर देकर कहा । कोई नहीं जानता था कि वह क्या करने जा रहा है। आप जानते हैं, यीशु ने कभी अंतिम संस्कार का उपदेश नहीं दिया। प्रत्येक अंतिम संस्कार में वह शामिल होता था वह मृत व्यक्ति को वापस जीवित करके समाप्त करता था। उसने मेरे साथ भी यही किया!

"लाजर, बाहर आओ!" उसने बुलाया। यदि उसने "लाजर" नहीं कहा होता, तो हर कोई जो वहां दफनाया गया था , वह जीवित हो जाता!

अजीब बात है, मुझे पता था कि मैं स्वर्ग में था और मुझे जाना था, लेकिन याददाश्त इतनी अस्थाई थी, इतनी जल्दी चली गई, कि मेरे पास शिकायत करने का समय ही नहीं था। अगर मुझे याद होता कि पिछले 4 दिन क्या थे, तो मुझे पृथ्वी पर वापस आने पर वास्तव में निराशा होती। मुझे लगता है कि यह परमेश्वर की दया है। मेरे पास महान शांति, प्रेम और आनंद की अस्पष्ट यादगर थी।

मेरे साथ जो हुआ, और जो लोग वापस जीवन में आए, उन्हें पुनर्जीवन कहा जाता है, पुनरुत्थान नहीं। मेरे पास वही शरीर था, जो बूढ़ा हो गया और अंततः बुढ़ापे में मर गया। मेरे पास एक नया, अनन्त शरीर नहीं था जैसा कि अन्य लाजर को स्वर्ग में जाने पर प्राप्त हुआ था। मुझे मेरा जलाली शरीर तब मिला जब मैं कई सालों बाद अच्छे के लिए मर गया।

तुम देखो, मैं मृत्यु को जीतने में सक्षम था क्योंकि यीशु मृत्यु से बड़ा था। उसने यह साबित कर दिया कि क्रूस पर, कुछ सप्ताह बाद। मृत्यु ने यीशु के साथ जो किया वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है जो यीशु ने मृत्यु के साथ किया (2 कुरिन्थियों 15:51-57)। जब मृत्यु ने यीशु मसीह को डंक मार दिया, तो उसने खुद को ही डस लिया (होशे 13:14; यशायाह 25:8)। पहले तो ऐसा लगा कि मृत्यु ने उसे क्रूस पर जीत लिया है, लेकिन पुनरुत्थान ने कुछ और ही साबित कर दीया।

एक घटना जो बहुत बाद घटी यह समझमने में मदद करती है कि क्या हुआ। यह 18 जून, 1815 को वाटरलू की लड़ाई थी। नेपोलियन की कमान अधिकार के तहत फ्रांसीसी, वेलिंगटन की कमान के तहत मित्र राष्ट्रों (ब्रिटिश, डच और जर्मन) से लड़ रहे थे। इंग्लैंड के लोग यह पता लगाने के लिए संकेतों की एक प्रणाली पर निर्भर थे कि लड़ाई कैसे चल रही थी। इन सिग्नल स्टेशनों में से एक विनचेस्टर कैथेड्रल के टावर पर था। दिन में देर से उसने संकेत दिया: वेलिंगटन हार गया है ।" बस उसी क्षण अचानक अंग्रेजी कोहरे के बादलों में से एक ने संदेश को पढ़ना असंभव बना दिया। हार की खबर तेजी से पूरे शहर में फैल गई। जब उन्होंने यह खबर सुनी कि उनका देश युद्ध हार गया है, तो पूरा ग्रामीण क्षेत्र दुखी और उदास था। अचानक कोहरा छंट गया और शेष संदेश पढ़ा जा सका। संदेश में दो नहीं, चार शब्द थे। पूरा संदेश था: "वेलिंगटन ने दुश्मन को हर दीया है !" खुशखबरी फैलने में कुछ ही मिनट लगे। ग़म खुशी में बदल गया; हार जीत में बदल गई! तो, यह तब था जब यीशु की मृत्यु हुई लेकिन फिर वह जीवित हो गया। प्रकाशितवाक्य 1:18: "मैं जीवित हूं; मैं मर गया था, और देखो मैं हमेशा और हमेशा के लिए जीवित हूँ! और मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं।"

उसके बाद मैं मौत से कभी नहीं डरता था। वास्तव में, मैं एक तरह से इसके लिए तत्पर था। एक दिन मैं यरूशलेम में एक मुख्य सड़क के किनारे बैठा था। एक रोमन रथ सड़क पर उतरता हुआ आया और मेरे ठीक सामने से उसकी छाया मेरे ऊपर से गुजर रही थी। मैंने सोचा कि यह कितना अलग है कि इसे रथ की तुलना में एक छाया मेरे उपर से निकली जा रहा है। मैंने यीशु के मृत्यु पर विजय के वादों और मृत्यु के बारे में 23वें भजन सहिता के बारे में सोचा। मृत्यु की छाया ही हमें छू सकती है। भजन 23:4 कहता है: "भले ही मैं मृत्यु की छाया की तराई में होकर चलूं, तौभी मैं किसी विपत्ति से ना डरूंगा, क्योंकि तू मेरे संग रहेगा; तेरी छड़ी और तेरी लाठी , वे मुझे दिलासा देती हैं"। क्या आपके पास वह आश्वासन है? यदि आप यीशु में अपना विश्वास रखते हैं, तो आप कर सकते हैं!

लाजर का जी उठना (यूहन्ना 11:1-44) इतना स्पष्ट रूप से एक अलौकिक चमत्कार था कि कोई भी इसे नकार नहीं सकता था और ना ही इसकी व्याख्या कर सकता था। यह यरूशलेम के इतने निकट हुआ कि वहाँ के बहुत से लोग लाजर को जानते थे, जो एक धनी और प्रभावशाली व्यक्ति था। कई लोग उससे बात करने आए थे कि क्या हुआ था। जब धार्मिक शासकों ने इसकी जाँच की, तो उन्हें इसे समझाने का कोई तरीका नहीं मिला। उन्होंने फैसला किया कि यीशु और लाजर दोनों को लिए मरना होगा ताकि इस अजीब आंदोलन को रोका जाए जिसे इतना समर्थन प्राप्त हो रहा था। वे ईर्ष्यालु थे। जबकि अधिकांश लोगों ने यीशु को मसीहा और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया, बहुसंख्यकों ने अभिमानी और नियंत्रित धार्मिक शासकों के साथ उसके संघर्ष में उसका पक्ष लिया। उन घटनाओं को गति प्रदान करने के बाद जो जल्द ही उसकी मृत्यु में समाप्त हो जाएंगी, यीशु फिर एप्रैम में वापस चला गया जहां वह अधिक सुरक्षित था (यूहन्ना 11:45-54) क्योंकि यह अभी भी पाप के लिए मरने का समय नहीं था। यही मेरी गवाही है। मैं मर गया और जीवन में वापस आ गया। आप के साथ भी इसा होगा , यदि आप यीशु में विश्वास करते हैं!

छोटे बच्चों के साथ उपयोग के लिए: छोटे बच्चे वास्तव में मृत्यु को नहीं समझते हैं, लेकिन यह अभी भी महत्वपूर्ण है कि वे जानते हैं कि मसीही होने के नाते हमें डरने की कोई बात नहीं है। समझाएं कि हम कैसे बूढ़े होते हैं, फिर हमारा शरीर मर जाता है लेकिन हमारे अंदर का वास्तविक जीवन हमेशा के लिए यीशु के साथ स्वर्ग में रहता है। स्वर्ग की बात करो।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: बड़े बच्चों में मृत्यु के बारे में प्रशन और भय हो सकते हैं। उन्हें विश्वास दिलाएं कि मसीही हमेशा के लिए स्वर्ग में यीशु के साथ रहेंगे। बताएं कि जानवरों की तरह हमारा शरीर

कैसे मरता है। लेकिन, जानवरों के विपरीत, हमारे अंदर का वास्तविक मनुष्य , वह हिस्सा जो सोचता और महसूस करता है, हमेशा के लिए स्वर्ग में एक परिपूर्ण शरीर में परमेश्वर के साथ रहेगा।

13. मरियम, मार्था और लाजर
उत्तर देने के लिए प्रशन

मरियम, मार्था और लाजर कौन थे?

वे भाई-बहन थे जो एक साथ रहते थे। औरतें शायद विधवा थीं और ऐसा लगता है कि लाजर बीमार था। वे बैतनिय्याह के धनी लोग थे। जब यीशु यरूशलेम जाता तो उनके पास रुकता था ।

परमेश्वर ने लाजर को क्यों मरने दिया (यूहन्ना 11:1-44)?

उसे वापस जीवन में लाकर अपनी शक्ति और समर्थ दिखाने के लिए।

यीशु तुरंत लाजर की मदद करने के लिए क्यों नहीं गए, उन्होंने प्रतीक्षा क्यों की?

उनके विश्वास को परखने और मजबूत करने के लिए, और सभी को इसका यकीन करने के लिए कि लाजर वास्तव में मर चुका था, इसलिए जब वह लाजर को फिर से जीवित करेगा तो उसकी महिमा और भी अधिक होगी। वह उसकी मृत्यु को रोक सकता था लेकिन उसे वापस जीवन में लाने से उसकी महिमा और अधिक दिखाई दी थी ।

क्या आप इसका उदाहरण दे सकते हैं, जब आप को ऐसा लगा कि यीशु ने तुरंत आपकी मदद नहीं की जब आपने प्रर्थना की ? उसने इंतज़ार क्यों किया होगा?

(ज़वाब अलग - अलग होंगे)

क्या होता यदि यीशु लाजर को जीवित ना कर पाता? आपके लिए इसका क्या मतलब होता ?

यदि यीशु मृत्यु से बड़ा नहीं होता, तो वह मरा रहता और वह उद्धार प्रदान नहीं करता। साथ ही, वह हमें मृत्यु के बाद भी जीवित नहीं कर सकता।

क्या आप मौत से डरते हैं? मसीहिओं को अब मौत से क्यों नहीं डरना चाहिए?

हमें मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यीशु ने उस पर विजय प्राप्त की और यद्यपि हमारे शरीर मर जाते हैं, वास्तविक 'हम' हमेशा जीवित रहते हैं। मृत्यु एक 'छाया' है क्योंकि उसकी शक्ति को तोड़ दिया गया है (भजन 23:4)।

प्रकाशितवाक्य 21:4 "वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; ना मृत्यु रहेगी, ना शोक, ना रोना, ना पीड़ा, क्योंकि पुरानी बातें जाती रही।"

यूहन्ना 11:25-26 "यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। जो मुझ पर विश्वास करते हैं वे मर भी जाएं तो भी वे जीवित रहेंगे, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी ना मरेगा।" "

यूहन्ना 3:16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश ना हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना 5:24 "मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा ना होगी; वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर गया है।"

14. उदासी भरा प्रवेश

(मत्ती 21:1-17; मरकुस 1:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)

जोर से पढ़ें: मत्ती 21:1-11

द्वारा: जोसेस

समय-समय पर, एक निर्णय करना पड़ता है जो इतिहास के पूरे पाठ्यक्रम को प्रभावित करता है: आदम और हव्वा का वर्जत फल का खा लेना या मूसा का मिस्र छोड़ने का निर्णय। दो हज़ार साल पहले इज़राइल राष्ट्र ने आपने आप को ऐसे ही एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पाया। यह अदन बाग़ की घटना के बाद इतिहास का सबसे बड़ा मोड़ था, इतना महत्वपूर्ण कि यह सभी चार सुसमाचारों में दर्ज है (यीशु का जन्म केवल दो में दर्ज है)। तारीख थी सोमवार, 30 मार्च, 33 ईस्वी

पृष्ठभूमि यीशु लगभग 4 वर्षों से प्रचार कर रहा था, लेकिन अधिकांश लोगों, और विशेष रूप से धार्मिक शासकों ने, परमेश्वर के मसीहा के रूप में पृथ्वी पर आने के उसके दावों को खारिज कर दिया था। अब फसह का समय था, जब नगर की संख्या 100,000 से बढ़कर दस लाख हो गई। यीशु शुक्रवार, 27 मार्च को यरूशलेम से जैतून के पहाड़ के ऊपर बेथानी आया । शनिवार को मरियम ने दफनाने के लिए यीशु के पैरों का अभिषेक किया। यहूदा ने इस कार्रवाई का फिजूलखर्ची के रूप में विरोध किया, लेकिन यीशु ने यह कहते हुए उसका बचाव किया कि वह सही काम कर रही है। रविवार को कई यहूदी लाजर को देखने के लिए यरूशलेम से बेथानी गए थे। उसकी गवाही के कारण बहुतों ने विश्वास किया। धार्मिक शासकों ने यीशु को मारने की योजना बनाई। आपको मेरा नाम बाइबल में नहीं मिलेगा, लेकिन मैं वहाँ था और मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता हूँ।

चुनौती सोमवार की सुबह यीशु ने दो चेलों को एक जवान गधा, लाने के लिए भेजा था , जिसकी सवारी तब तक किसी ने ना की थी (मत्ती 21:1-7)। हर दूसरे दिन वह शहर में जाता था, लेकिन इस दिन वह एक बयान दे रहा था। वह शांति के राजकुमार के रूप में शहर आ रहा था और लोगों को किसी ना किसी तरीके से प्रतिउतर देने के लिए मजबूर किया जाएगा। वह उन्हें मौके पर लगाने जा रहा है। वह सुंदर घोड़ों पर सवार होकर आ सकता था, या स्वर्गदूतों द्वारा ले जाया जा सकता था, लेकिन वह उसी तरह आया जैसे कोई नया राजा यरूशलेम में प्रवेश करेगा। इससे पहले वह हमेशा अपने अनुयायियों से कहता था कि वह किसी को यह ना बताए कि वह कौन था, लेकिन अब वह सार्वजनिक रूप से अपने राजत्व की घोषणा कर रहा है। यह वह दिन है जब लोगों को यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने या अस्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता है।

बेशक, यीशु जानता था कि लोगों का मतदान क्या होगा । दानिय्येल नबी ने 9:24-27 में भविष्यवाणी की थी कि इसी दिन मसीहा को "त्याग" दीया जाएगा। यह ठीक उसी दिन तक पूरा हुआ, जैसा परमेश्वर ने दानिय्येल से कहलवाया था।

उस दिन जैतून के पहाड़ पर उपस्थित सभी लोगों के लिए यीशु का इरादा स्पष्ट था, क्योंकि पतरस जुलूस की अगुवाई करने लगा और अन्य लोग उसके पीछे हो लिए (मरकुस 11:7-10)। लोगों ने उसके लिए अपने अंगरखे/कपडे नीचे रख दिए, जैसे उन्होंने यरूशलेम में प्रवेश करने वाले राजा के सामने कीमती आसनों को रखा होता । उन्होंने शाखाओं और खजूरी पतों को लहराया जो जीत का प्रतीक है । यह विश्वास था कि मसीहा एक गधे पर, जैतून के पहाड़ से, खजूर की शाखाओं को लहराते हुए, शहर में आएगा। यीशु ने यही किया। लोगों ने सोचा कि जिस शत्रु पर विजय पाने के लिए वह आ रहा है वह रोम है, लेकिन यह वास्तव में पाप और मृत्यु थी।

शहर से बाहर के भावनात्मक यहूदियों में उत्साह बढ़ गया, जो एक रोमांच, ऊब से एक विराम की तलाश में आए थे। यीशु को मसीहा होने किकी भावनाओं को सच्चे विश्वासियों ने जल्द ही पकड़ लिया, और सभी ने "होसन्ना" ("हमें अभी बचाओ") और "हालेलुयाह" ("प्रभु की स्तुति") चिल्लाना शुरू कर दिया। वे भजन संहिता 118:25-26 को उद्‌धृत कर रहे थे।

इस बीच, जब यरूशलेम में यह बात फैल गई कि क्या हो रहा है, तो बहुत से निवासी और यरूशलेम में मुसाफर यह देखने के लिए निकल पड़े कि क्या हो रहा है (यूहन्ना 12:12-19)। धार्मिक शासक हर चीज पर नजर रखने के लिए पीछे-पीछे चलते थे (लूका 19:39-44)। उनकी जासूसी प्रणाली के नज़र से कुछ भी नहीं बचा था । उन्होंने यीशु से अपने शिष्यों को चुप कराने के लिए कहा, उन्हें बताया कि उन्हें मसीहा और राजा घोषित करना गलत था। इसके बजाय यीशु ने कहा कि उन्होंने जो कहा वह सही था, और इसकी घोषणा उस दिन की जानी थी। यदि लोग उसे मसीहा घोषित नहीं करते, तो चट्टानें चीख उठतीं!

परिवर्तन सबसे अजीब बात तब हुई, जब यीशु जैतून के पहाड़ की चोटी पर पहुंचे और यरूशलेम की ओर देखा। अपने चारों ओर हो रहे सभी उत्साह और प्रशंसा के साथ, वह रोने लगा। यह सिर्फ एक सिसकना/डूसकना(बिन आवाज़ रोना) नहीं था, यह एक जोरदार, लंबा, अनियंत्रित दिल के टूटना का सा रोना था। क्यों? यीशु जानता था कि पूरा देश उसे अस्वीकार कर रहा है। उसने उसका भयानक विनाश का पूर्वाभास किया जो इसके परिणामस्वरूप जल्द ही यरूशलेम पर आनेवाला था। और इसने उसका दिल तोड़ दिया। 'विजय प्रवेश ' वास्तव में एक उदासी भरा प्रवेश था । मरीयम द्वारा यीशु के दफनाने का अभिषेक किया गया था, और यहाँ वह यरूशलेम में अपनी मृत्यु के लिए जा रहा था। यह दिखाते हुए कि , वास्तव में, वह स्वेच्छा से खुद को दुनिया के पापों के लिए बलिदान करने के लिए जा रहा था।

स्वाभाविक रूप से इसने उसके साथ के लोगों के भावनात्मक प्रदर्शन को जल्दी से ठंडा कर दिया। वे भ्रमित थे, अधिकांश फिसल गए ताकि वे यीशु के साथ पकड़े ना जाएं और धार्मिक शासकों के साथ किसी झगड़े /परेशानी में ना पड़ें। बात यूं ही खत्म हो गई! ऐसा लग रहा था कि यह शायद ही कुछ शुरू हुआ था और यह समाप्त हो गया था - और क्या अजीब अंत था। यह ऐसा था जैसे सभी के बीच कुछ अनकही सहमति थी कि कुछ भी नहीं हुआ था। बस आपने काम में वापस आ जाओ और इस पूरी बात को भूल जाओ। ऐसा दिखावा करो कि तीन साल के शिक्षण और चमत्कारों के बाद किसी ने खुद को मसीहा-राजा घोषित नहीं किया।

चार्ज -जब यीशु ने प्रवेश किया तो मंदिर में बड़ी भीड़ जमा हो गई थी, क्योंकि वह शहर में लोगों के इकठा होने के लिए आम जगह थी। फसह से एक सप्ताह पहले वास्तव में यह व्यस्तता का माहौल था । हर कोई यीशु के शहर में आने के बारे में उत्सुक था, क्योंकि उन्होंने जैतून के पहाड़ पर उसकी घोषणा के बारे में सुना था। साथ ही, वे धार्मिक शासकों द्वारा यीशु को फिर से शहर में आने पर गिरफ्तार करने

की धमकी के बारे भी जानते थे। पिछली बार शहर में उन्होंने उसे पत्थर मारने की कोशिश की थी और यीशु केवल चमत्कारिक रूप से बच निकलने के कारण बच गया था। अपनी जिज्ञासा के कारण उसे देखकर वो प्रसन्न तो थे , पर वे किसी भी तरह से उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। "यह कौन है?" उन्होंने पूछा - वह क्या सोचता है कि वह है? "यह यीशु है, नासरत का नबी" दूसरों ने उत्तर दिया। वह सिर्फ एक आदमी है, मसीहा-राजा नहीं। लोगों को निर्णय लेने के लिए मजबूर किया गया था और उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था।

विडंबना यह है कि उसी समय, कुछ फीट की दूरी पर, याजक फसह के मेमने को चुन रहे थे और अलग कर रहे थे, जो शुक्रवार, 3 बजे दौपेहर 3 अप्रैल, 33 ईस्वी. लोगों के पापों के लिए मरने को था, (ठीक उसी समय जब यीशू को सलीब पर मरना था) जैसे लोगों के पापों के लिये मेमने को मरने के लिये अलग रखा गया था वैसे ही परमेश्वर के मेम्ने को अलग किया गया जो दुनिया के पापों के लिए मरने के लिए तयारकिया गया था।

केवल एक समूह ने मंदिर में उनका समर्थन और प्रशंसा की। गाना बजानेवालों की पुरष टोली ने "दाऊद के पुत्र के लिए होस्ना" गाया। इसने धार्मिक शासकों को क्रोधित कर दिया, लेकिन जनता की राय के कारण वे यीशु को सार्वजनिक रूप से गिरफ्तार नहीं कर पाए। वह उस रात जैतून के पहाड़ के ऊपर से बेथनी वापस चला गया। यह ऐसा ही था जब परमेश्वर शिक्नाह/ महिमा यहेजकेल के दिनों में जैतून के पहाड़ के लिए मंदिर से निकली थी। फैसला हो गया। पूरे देश ने फैसला किया था, और उनका जवाब स्पष्ट 'नहीं' था। व्यक्तियों को बचाया जा सकता था, लेकिन राष्ट्र के लिए घड़ी टिक टिक कर रही थी।

सप्ताह का शेष -भाग अगले दिन, **मंगलवार**, यीशु ने शहर के रास्ते में एक फलहीन अंजीर के पेड़ को श्राप दिया। इस्राएल राष्ट्र की तरह, यह एक पाखंडी था। शहर में यीशु ने मंदिर को साफ किया, फिर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की। **बुधवार** की सुबह धार्मिक शासकों की जुबानी चुनौतियों से भरी रही। यीशु ने उस विधवा की प्रशंसा की जिसने उसे आखिरी आधा सिक्का दिया। फिर उसने अपने शिष्यों को प्रवचन (मत्ती 24-25) दिया और दोपहर को मंदिर में शिक्षण देते हुए बिताया। धार्मिक शासकों ने यीशु की गिरफ्तारी की योजना बनाई और यहूदा के साथ व्यवस्था की ताकि यीशु को गिरफ्तार करने के लिए समय और स्थान प्रदान किया जा सके, जब वह भीड़ में नहीं होगा ।

गुरुवार को यीशु पृथ्वी पर अपने अंतिम खाली घंटों का उपयोग करते हुए, प्यासे, खुले लोगों तक पहुंचने के लिए, शहर और मंदिर के माध्यम से होकर चला। दोपहर में फसह की तैयारियां शुरू हो गईं। गलील के लोगों ने गुरुवार की शाम को मनाया जबकि अन्य यहूदियों ने शुक्रवार को मनाया। यह अंत की शुरुआत थी। लोगों ने फैसला किया था, और उन्हें अपने फैसले का परिणाम भुगतना होगा। वैसे ही हम भी करना होगा। यीशु के बारे में **आप ने** क्या निर्णय लिया है?

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उन्हें बताएं कि यीशु उन्हें उसकी स्तुति गाते हुए सुनना पसंद करते हैं। बहुत सारे स्तुति गीत गाएं और उन शब्दों के बारे में बात करें जो वे गा रहे हैं और यह कि उनका क्या मतलब है।

बड़े बच्चों के साथ उपयोग के लिए: उन्हें बताएं कि परमेश्वर ने संगीत और गायन बनाया है ताकि वे उसकी स्तुति कर सकें। उनसे पूछें कि उनके पास क्या क्या आशीषें है जिन के लिये उन्हें चाहिए उन्हें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उसकी स्तुति करना चाहिए । उसकी स्तुति के गीत गाते हुए समय व्यतीत करें। उद्धार को स्वीकार करने के महत्व के बारे में बात करें, ना कि केवल एक मसीही की तरह दिखावा करने का नाटक करें ।

14. उदासी भरा प्रवेश

उत्तर देने के लिए प्रशन

यीशु उस विशेष दिन गधे पर सवार होकर नगर में क्यों आया?

विश्वास यह था कि मसीहा खजूर की शाखाओं के साथ गधे पर सवार जैतून के पहाड़ से उतरेगा। यीशु सबको बता रहा था कि वह उनका मसीहा है।

लोगों ने कैसे प्रतिक्रिया दी?

कुछ ने आकर उसे मसीहा के रूप में मान्यता दी। जबकि दूसरों ने ऐसा नहीं किया।

धार्मिक शासकों ने यीशु से क्या कहते थे ?

उन्होंने यीशु से कहा कि वह लोगों को चुप रहने के लिए कहे ।

यीशु ने उनसे क्या कहा?

यीशु ने कहा कि यदि लोग उसकी स्तुति नहीं करेंगे तो चट्टानें चिल्ला उठेंगी! वह दिखा रहा था कि वह उनका मसीहा राजा था और वह प्रशंसा और आराधना के योग्य था।

यदि यीशु जानता था कि उसे राष्ट्र द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा, तो उसने खुद को राजा के रूप में पेश करने की जहमत क्यों उठाई?

वह निष्पक्ष होना चाहता था और उन्हें एक मौका देना चाहता था। इस तरह उन्हें पता चल जाएगा कि उनके पास एक मौका है लेकिन उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। राष्ट्र ने इकठ रूप से खारिज कर दिया लेकिन व्यक्तिगण अभी भी मुक्ति के लिए आ सकते हैं।

यीशु नगर को देखकर क्यों रोया?

वह उस दुख और पीड़ा को जानता था जो जल्द ही आने वाली थी क्योंकि उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था।

आज कौन सी बातें उसे रोने के लिए काफी दुखी करती हैं?

पाप, बुराई, लोगों को चोट पहुँचाना और उनका फायदा उठाना, उन पर न्याय करना जो उसे अस्वीकार करते हैं।

जब यीशु ने शहर में प्रवेश किया तो चीजें क्यों बदल गईं?

जो लोग यीशु के साथ आए थे वे धार्मिक शासकों से डरते थे इसलिए वे यीशु के साथ नहीं दिखना चाहते थे। दूसरों को विश्वास नहीं था कि वह मसीहा था।

केवल वे कौन थे जिन्होंने मंदिर में यीशु की स्तुति की?

बच्चे! लड़कों की मण्डली ने उसकी प्रशंसा की लेकिन ऐसा करने वाले केवल वे ही हैं।

उस दिन जो हुआ उसका क्या महत्व था?

यीशु ने इस्राएल को राज्य की पेशकश की। उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्होंने उसे राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया था।

अगली बार जब यीशु राजा बनकर आएंगे तो क्या होगा?

वह मेम्ना नहीं, सिंह की नाई आएगा, और सब उसे प्रणाम करेंगे और उसकी उपासना करेंगे (प्रकाशितवाक्य 19)।

यीशु आज कहाँ राजा बनना चाहता है?

वह आज हमारे दिलों में राजा बनना चाहता है।

क्या आपने उसे अपने जीवन का राजा बनाया है?

(जवाब अलग-अलग होंगे - उम्मीद है कि सभी हां कहेंगे)

यीशु को अपने जीवन का राजा बनाने का क्या अर्थ है?

वह मेरे जीवन पर शासन करता है, मैं उसका सेवक हूं और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए जीवित हूं। मैं उसके वचन को सीखता हूं और उसका पालन करता हूं।

15. यीशु का अंतिम भोज

(मत्ती 26:17-30; मरकुस 14:12-26;

लूका 22:7-38; यूहन्ना 13:1-14:31)

जोर आवाज़ से पढ़ें: लूका 22:14-20

(नीचे सूचीबद्ध अंतिम भोज भोजन में घटनाओं का क्रम है जिसे यीशु ने अपने शिष्यों के साथ साझा किया था। आप इस सामग्री को एक सत्र में सारांशित कर सकते हैं या इसे कई सत्रों में फैला सकते हैं। आपको उनके द्वारा किए गए सभ कुछ बारे में बात करने की आवश्यकता नहीं है। आप उसका चुनाव कर सकते हैं और चुनें जो उन पर क्या लागू होता है जिन लोगों को सिखा रहे हैं ।)

यहूदी सब्त की शूट के साथ फसह सबसे पुराना लगातार मनाया जाने वाला धार्मिक रिवायत है। यह आज भी यहूदियों में फसह और मसीही लोगों के बीच प्रभु भोज के रूप में जारी है। पृथ्वी पर यीशु के अंतिम भोजन को समझने के लिए इसकी जड़ों तक पहुचना और महत्व को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आइए देखें कि निसान(निसान इसराइल का देशी महीना है) 13, 33 ईस्वी गुरुवार की उस रात ऊपरी कमरे में क्या हुआ।

वास्तव में फसह के दो उत्सव थे जिनकी अनुमति याजकों ने दी थी। गलील के लोगों ने गुरुवार की शाम को फसह मनाते जबकि अन्य ने शुक्रवार की शाम को मनाते । यह चंद्र कैलेंडर की तुलना में सौर में दिनों की गणना में अंतर के कारण होता था, एक सूर्यास्त से शुरू होता है और दूसरा आज हमारे कैलेंडर जैसा होता है। यरुशलम में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा जश्न मनाने के कारण इसकी अनुमति दी गई थी। इससे कमरों का दो बार उपयोग किया जा सकता था और फिर याजकों के पास हर साल की आवश्यक के अनुसार लाखो-लाखों मेमनों को मारने और वितरित करने के लिए अधिक समय मिल जाता था। फसह के लिए यरूशलेम की आबादी एक लाख से बढ़कर बीस लाख हो गई।

तैयारी - पहले दिन में यीशु ने पतरस और यूहन्ना को शहर में यीशु के साथ उनके अंतिम भोज की तैयारी करने के लिए भेजा था। वे जिस घर का उपयोग करते, वह पूरी तरह से साफ होना चाहिए था, जिसका मतलब था कि घर में कहीं भी खमीर युक्त भोजन नहीं रहने दिया जाना था। फसह के लिए धूपदान और व्यंजन के एक विशेष सेट का उपयोग किया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दरारों में कोई खमीर नही रह जाये। कहीं भी किसी तरह के खमीर के टुकड़े ना रहें इसके लिये घर को बारीकी से देखा जायेगा। यदि कोई खमीर का टुकड़ा मिले तो उन्हें इकट्ठा किया जाएगा और पाप के हटाए जाने के चित्र के रूप में जला दिया जाएगा (1 कुरिन्थियों 5:7)। यह हमें याद दिलाता है कि जब हम प्रभु भोज में हिस्सा लेते हैं तो हमारे अपने जीवन में कोई पाप (कोई 'खमीर') नहीं होना चाहिए, जैसा कि पौलुस ने कुरिन्थियों (1 कुरिन्थियों 11:28) को इतनी सख्ती से कहा था।

पहिलौठों ने इस पूरे दिन उपवास करते , मिस्र में छुटकारे की याद के रूप में, जब जेठा मर गया था, उन्होंने फसह के मेमने के खून को दरवाजे पर नहीं रखा था।

अख्मीरी रोटी का तोड़ा जाना - अगला काम अख्मीरेई रोटी पर केंद्रित है। मात्ज़ो बिना खमीर की रोटी है। लीवन एक सूक्ष्म जीवाणु है जिसे 'खमीर' में रखा जाता है। पानी और गर्मी के संपर्क में आने पर बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं। यह तोंण में फुलाव का कारण बनता है जिस से एक गैस पैदा होती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक कि आटा खट्टा और बर्बाद ना हो जाए, जब तक कि बेकिंग से बैक्टीरिया मर नहीं जाते। इस प्रकार, खमीर पाप का एक चित्र है (1 कुरिन्थियों 5:7)। यह छोटा, छिपा हुआ, अदृश्य रूप से शुरू होता है, लेकिन जब तक इसे मारा नहीं जाता है, यह बढ़ता रहता है और सब कुछ नष्ट कर देता है।

इसलिए, अख्मीरी रोटी स्वयं यीशु की तस्वीर बन गयी - बिना किसी पाप के। यह गोल था, शुरुआत या अंत के बिना। इसे एक क्रॉस के आकार में छेदा जाता था। यह बेकिंग प्रक्रिया में गर्मी फैलाने में मदद करता , लेकिन यह यीशु के बारे भी बात करता है। हमारे पापों के लिए यीशु को छेदे जाने के लिए भी यही शब्द प्रयोग किया जाता है (जकर्याह 12:10; यशायाह 53:5)।

सब्त के दिन यहूदी 2 मट्ज़ो(अख्मीरी रोटी) खाते थे, सामान्य भाग से दोगुना। यह एक खास दिन था। फसह के दिन वे 3 खाएंगे। बाइबल में तीन का अर्थ ईश्वर - त्रिएकत्व है। यहूदी आज इन 3 मात्ज़ो को लेते हैं और उनके साथ एक 'एकता' कहलाते हैं। यह यीशु की एक सुंदर तस्वीर है। तीन मट्ज़ो को ढेर पर रखा जाता है, प्रत्येक के बीच एक कागज़ ऊपर और नीचे। ये 3 परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा को दिखाते हैं। मध्य मात्ज़ो (ईश्वर पुत्र को चित्रित करते हुए) को अन्य दो से हटा दिया जाता है, जैसे कि जब परमेश्वर स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर यीशु (अवतार) के रूप में आया। फिर यह मध्य मट्ज़ो दो भागों में टूट जाता है, मसीह के शरीर की एक तस्वीर, हमारे पाप के लिए छेदा और टूटा हुआ। पहले आधे टुकड़े को अन्य दो मट्ज़ो के बीच वापस रखा जाता है जिसमें यीशु की आत्मा को मृत्यु के तुरंत बाद स्वर्ग में जाने का चित्रण किया गया है। दूसरा आधा एक लिनन नैपकिन में लपेटा जाता है और तीसरे कप तक एक अंधेरी जगह में छुपाया जाता है। मेज पर बैठा एक बच्चा (या सबसे छोटा व्यक्ति) इसे लेता है और इसे बाद तक छुपाता है। यह यीशु के शरीर को लिनन में लपेटा जाने और तीसरे दिन तक दफनाया जाने का चित्र बनाता है । इसके बाकी महत्व को बाद में समझाया जाएगा। क्या यह यीशु की सुन्दर तस्वीर नहीं है?

निर्गमन की कहानी - अक्सर इसके बारे में चार प्रश्नों के उत्तर में निर्गमन की कहानी बताई जाती है जब इस बारे में पूछा जाता है कि यह रात क्यों अलग है। हम नहीं जानते कि यीशु ने यहाँ कितने विस्तार में बताया होगा , या उसने और क्या सिखाया होगा , लेकिन निश्चित रूप से मेमने की केंद्रीयता पर जरूर प्रकाश डाला होगा । जब यीशु ने पहली बार स्वयं को सार्वजनिक सेवकाई के लिए प्रस्तुत किया तो उसका सबसे पहला नाम/शीर्षक था 'मेम्ना'। "परमेश्वर के मेम्ने को देखो, जो जगत का पाप उठा ले जाता है" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह कहा था (यूहन्ना 1:29, 36)। फिलिप्पुस (प्रेरितों के काम 8:32-35), पौलुस (1 कुरिन्थियों 57) और पतरस (1 पतरस 1:19) भी यीशु को फसह का मेमना कहते हैं ।

उसके श्रोताओं के लिए इसका बहुत महत्व रहा होगा , क्योंकि भेड़ें उनके दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। वे मूल्यवान जानवर थे, जिनका उपयोग भोजन (मांस, दूध, पनीर) और सामग्री (ऊन, खाल) के लिए किया जाता था। उनका उपयोग बलि के लिए भी किया जाता था।

अदन में पहले पाप के बाद, परमेश्वर (पुत्र परमेश्वर, हमेशा त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति जो मनुष्य को प्रकट होता है) ने पाप को ढकने के लिए निर्दोष लहू बहाया। तब से आदम, हबिल, नूह, अय्यूब, अब्राहाम,

इसहाक, याकूब, यूसुफ और परमेश्वर के सभी लोगों ने लहू की बलि चढ़ायी। यह उन्हें सिखाने का परमेश्वर का तरीका था कि पाप को ढकने के लिए निर्दोषों का लहू बहाया जाना चाहिए। जब अब्राहाम इसहाक को बलिदान करने के लिए गया, तो परमेश्वर ने एक मेढ़ा प्रदान किया (उत्पत्ति 22), यह दर्शाता है कि निर्दोष जानवर का लहू पाप करने वाले व्यक्ति के लहू के स्थान पर है। यह और भी अधिक स्पष्ट रूप से फसह के मेम्ने की कहानी में सिखाया गया है (निर्गमन 12:1-13)।

सबसे पहले, निसान की 10 तारीख को मेमना चुना गया था । भेड़ें कोमल, मासूम, नम्र, आश्रित, रक्षाहीन जानवर होती हैं। यह दर्शाता है कि कैसे यीशु को हमारे पापों के लिए मरने के लिए ले जाया गया था। यीशु की निर्दोषता के बारे में बोलते हुए, मेमने का बेदाग होना जरूरी था, एकदम सही शुद हालत में। इसे जीवन के जोबन (एक वर्ष) में एक नर होना था, वह भी यीशु की ही तरफ इशारा कर रहा था। इसे 4 दिनों के लिए अलग रखा गया था, निसान 10 से 14, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह पाप रहित था। यीशु ने लगभग 4 वर्षों तक सार्वजनिक रूप से सेवा की, सभी को दिखाते हुए, वह निष्पाप और सिद्ध था।

तब मेम्ना निसान 14 को मार डाला गया, उस ने जीवित होते तो उनका कुछ भला नहीं करता । इसे मरना पडता । यीशु का सिद्ध जीवन हमें उद्धार नहीं देता, यह केवल हमें यह दिखा कर हमे दोषी ठहराता है कि एक सिद्ध जीवन जीया जा सकता है। पाप के विकल्प को पाप का भुगतान करने के लिए मरना चाहिए। "बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22)। मालिक अपना हाथ भेड़ों पर रखता था, यह चित्रित करता था कि उनका पाप जानवर पर स्थानांतरित हो गया है। पाप को वास्तव में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह प्रतीकात्मक रूप से दिखाता है कि जब हम यीशु में अपना विश्वास रखते हैं तो क्या होता है। क्योंकि जानवर को अब पाप का दोषी माना जाता था, इसलिए उसे मरना ही होता था। "जो प्राणी पाप करते हैं वे अवश्य ही मरेंगे" (यहेजकेल 18:20-24)। इसे निसान 14 को 3 बज्जे दोपहर मारा जाना था - ठीक उसी दिन और समय जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई थी!

मारे जाने के बाद, खून को दरवाजे की चौकी के किनारों और शीर्ष पर लगाया जाता था। यह वह लहू था जिसने मृत्यु के दूत को घर के ऊपर से 'पार' करने के लिए प्रेरित किया। यह उनके अंदर के अच्छे काम नहीं थे, ना ही उनके गहने, उनका सोना, उनका कौशल या प्रतिभा। यह केवल लहू था, मनुष्य के भले काम गंदे चिथड़ों (यशायाह 64:6) के समान हैं, कूड़े के ढेर के समान (फिलिप्पियों 3:8)। खून ही बचाता है। जहां सब देख सकते थे वहां खून लगाया गया, यह एक सार्वजनिक गवाही थी। मेमने को दरवाजे की दहलीज पर मार दिया जाता , जहां खून इकट्ठा किया जाता था। फिर इसे दरवाजे के ऊपर और किनारों पर लगाया जाता । इन्हें आपस में जोड़ दे और आपके पास एक क्रॉस की तस्वीर बन जजाती है, जिस खून के साथ यीशु की मृत्यु हुई थी: सिर पर कांटों का ताज, कलाई और पैरों के माध्यम से लोहे की कीलें । यह वह लहू था जिसने वजिब न्यय से रक्षा की। यह लग जाने के बाद लोग 'लहू के द्वारा' प्रवेश करते और पूरी रात अंदर रहते (निर्गमन 12:13-28)। जिस किसी ने भी लहू लगाया वह सुरक्षित था, यहूदी हो या मिस्री। कोई भी जिसने सभी पहलौठों की मृत्यु का सामना नहीं किया। यहूदी भी मिस्रियों की तरह मृत्यु के योग्य थे, बल्कि और अधिक क्योंकि वे बहुत अधिक जवाबदेह थे। यह सब एक चित्र है कि हम यीशु के लहू के कारण कैसे सुरक्षित हैं (इफिसियों 1:7; 1 यूहन्ना 1:7; इब्रानियों 9:12; प्रकाशितवाक्य 1:5; रोमियों 5:8-9)।

इन जानवरों का लहू ने पाप को दूर नहीं करता , यह बस पाप को तब तक ढके रहा जब तक कि यीशु का लहू इसे धोने के लिए साथ नहीं आया। जानवरों का खून एक फर्श पर एक दाग पर फेंक गलीचा डालने जैसा था जब तक कि दाग को दूर करने के लिए सही क्लीनर (यीशु का खून) नहीं मिल जाता।

अंत में, मारे जाने और खून लगाने के बाद, मेमने को खा लिया जाता । इसे देखने के लिए नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से पहचानने के लिए मारा जाता था। इसने उन्हें उस यात्रा के लिए आवश्यक पोषण और जीविका प्रदान की जो उनके सामने थी। हमारी आध्यात्मिक यात्रा के लिए मजबूत और पोषित होने के लिए हमें यीशु नाम को भी खाना चाहिए, उसका मांस खाना चाहिए और उसका लहू पीना चाहिए जैसा कि वह आज्ञा देता है (यूहन्ना 6:53-57)। इसका मतलब है कि हमें उसकी शिक्षाओं को सीखना और अपने जीवन में लागू करना चाहिए, जिससे हम जो सोचते और करते हैं उसका हिस्सा बन जाते हैं। यहूदियों को उसी रात करना था; वे इंतजार नहीं कर सकते थे । मेमने को भूनना था, पानी में उबालना नहीं था - उसे ना केवल मरना था बल्कि नरक की आग का सामना करना पड़ता था, जैसा कि यीशु ने हमारे लिए किया था।

फिर अगले 7 दिन तक यहूदियों को अखमीरी रोटी के सिवा और कुछ नहीं खाना था (निर्गमन 13)। परमेश्वर उन्हें बता रहा था कि उद्धार (फसह का मेमना) के बाद उन्हें जो पहला सबक सीखना था, वह था पाप से बचने का महत्व, उसके लिए पवित्र जीवन जीना।

यही बात फसह को इतना खास बनाती है। यह ईश्वर के मेमने के बारे में सिखाती है जो दुनिया के पापों को दूर करता है - यीशु मसीह।

कप # 3 - रिहाई - कप फिर से भर जाता है। यह उद्धार का प्याला है। डोलन/उडेलना यीशु के खून की एक तस्वीर है जो हमारे लिए डोल/उंडेल और बहाया गया है। नंबर 3 ईश्वरता का प्रतीक है। यहीं पर यीशु ने प्रभु भोज के प्याले की स्थापना की थी क्योंकि उसने कहा था कि "यह मेरा खून है" (मत्ती 26:28; लूका 22:20)। इस नए नियम ने कानून के पुराने नियम के शासन को समाप्त कर दिया। इस नए नियम ने अनुग्रह के नए नियम का नियम प्रारंभ किया। अब तक फसह मिस्र से भौतिक छुटकारे के लिए खड़ा था, अब से इसे प्रभु भोज द्वारा बदल दीया गया था जो पाप से आध्यात्मिक छुटकारे के लिए है।

"तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद दिया, और उन को यह कहकर पेश कीया, कि तुम सब इसमें से पीओ। यह वाचा का मेरा लोहू है, जो बहुतों के लिथे पापों की क्षमा के लिथे बहाया जाता है। मैं तुम से कहता हूं; अब से उस दिन तक जब मैं अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ इसे फिर से ना पीऊं, तब तक मैं दाख की बारी का यह फल नहीं पीऊंगा" (मत्ती 26:29; लूका 22:18)।

पहला, उसने स्वेच्छा से "ले लिया"। कल्पना कीजिए कि यीशु के दिल/दिमाग में क्या चल रहा था जब उसने इसे स्वतंत्र इच्छा से उठाया। पिछली बार जब उसने इसी प्याले के बारे बात की थी तो उसने परमेश्वर से इसे अपने पास से हटा लेने के लिए कहा था। वह एक बार फिर गतसमनी में पूछेगा "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से निकल जाने दे" (मत्ती 26:39)। क्रूस पर वह कहेगा, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)। वह इसे ठुकरा सकता था, उंडेल सकता था या फिर बना सकता था, क्योंकि यह हमारे सभी पापों का प्रतिनिधित्व करता था - लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

फिर उसने कहा, "यह वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के लिये बहाया जाता है" (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24)। खून , अंगूर का रस था, खून का एक चित्र। इसे अंगूर से जैतून कुचलने के मशीन द्वारा कुचल दिया गया था, जिसे यूनानी में "गेथसमनी" कहा जाता है। उस रात यीशु का अगला पड़ाव गतसमनी नामक स्थान पर होगा क्योंकि इसका उपयोग अंगूर और जैतून के रस को कुचलने के लिए किया जाता था। लाक्षणिक रूप से जो हुआ वह सचमुच उसके साथ होगा जैसे ही दबाव शुरू हुआ।

इससे उस के पसीने के साथ खून भी निकला, इतना दबाव था। "प्रभु उसे कुचलने, उसे दु:ख में डालने के लिए प्रसन्न था ।" (यशायाह 53:10) "... कुचले हुए...कुचले गए... उंडेले गए" (यशायाह 53) "मांस का जीवन लोहू में है" (लैव्यव्यवस्था 17:11) "बिना लहू बहाया जाने से पाप की क्षमा नहीं है (इब्रानियों 9:22)

फिर उसने एक अजीब काम किया, उसने इसके लिए "धन्यवाद दिया"! वह उसके लिए धन्यवाद कैसे दे सकता था जो उसकी मृत्यु का प्रतिनिधित्व करता था, क्योंकि उस पर तो परमेश्वर का क्रोध उंडेला गया था? एक बात के लिए, यह परमेश्वर की इच्छा थी, जो परमेश्वर की महिमा के लिए की गई थी और वह उसके लिए प्रतिबद्ध था (यूहन्ना 4:34; 12:27-28)। फिर भी, उसने भविष्य के उस आनंद की ओर देखा जो उसे क्रूस के बाद प्राप्त होगा (इब्रानियों 12:2; भजन संहिता 16:9-10) बजाये वर्तमान कीमत पर ध्यान केंद्रित कीये जिसे चुकाया जाना था । यह हमारे लिए पालन करने का एक अच्छा सिद्धांत है। मुख्य रूप से, हालांकि, उसने यह हमारे लिए किया। "क्योंकि यह नई वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के पापों की क्षमा के लिये बहाया जाता है।" (मत्ती 26:28)

यह बहाया हुआ लहू था जिसने उस नई "वाचा" के लिए भुगतान किया जो वह बना रहा था, जो व्यवस्था के बजाय अनुग्रह पर आधारित थी। दाँव पर लगा मुद्दा अनन्त उद्धार था। शर्तें थीं कि परमेश्वर वह सब प्रदान करेगा जो परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन के लिए आवश्यक था । मनुष्य को बस इतना करना था कि वह इसे स्वीकार कर ले। कोई शर्त नहीं थी, यह बिना शर्त थी और इसे कभी भी रद्द या उनुचित नहीं बनाया जा सकता है। इस वाचा की प्रभावशीलता का वजूद हमेशा के लिए है।

वाचा को अच्छा बनाने के लिए चुकाई गई कीमत लहू थी, कीमत चुकाई गई। रक्त जीवन का प्रतीक है। शारीरिक रूप से लहू शरीर को शुद्ध करता है जैसे वह बहता है, और आध्यात्मिक रूप से यह हमें पाप से भी शुद्ध करता है।

इसके बाद यीशु ने उन्हें मुफ्त और बिना शर्त "उन्हें दिया", ताकि वे इसे प्राप्त कर सकें।

उसने उनसे कहा कि "यह सब पी लो।" उन्हें गहरा, पूरी तरह, पूरी तरह से पीना था। यह उनकी आध्यात्मिक प्यास बुझाएगा और उनकी सभी जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करेगा। यह आध्यात्मिक रूप से धारण करता है, जैसे तरल पदार्थ शरीर को शारीरिक रूप से बनाए रखते हैं। यह तरोताजा करता है , जैसा कि रक्त उस वक्त करता है जब हम कमजोर होते हैं। यह नवीनीकरण करता है और समर्थ लता है । हमें यीशु के निरंतर प्रवाह के साथ-साथ हमारे अपने भौतिक रक्त की भी आवश्यकता है। यह हमारे सिस्टम को साफ करता है, शारीरिक रूप से फ्लश करता है और अशुद्धियों को दूर करता है। यह पुनर्जीवित करता है और ताकत लाता है। खून का कोई विकल्प नहीं है - हमारा हो या यीशु'का ।

इस सब पर शिष्य की प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने इसे पी लिया।" उन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्वीकार किया कि उसने उन्हें ले लिया जो उसने इतनी स्वतंत्र रूप से पेश कीया था । इसने उनके उद्धार को चित्रित किया - उनके लिए उसके कार्य को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करना। उनके लिए वह कितना सार्थक, गतिशील समय था। अब से फसह का पर्व अलग होगा। फसह और मिस्र से उनके भौतिक छुटकारे का उल्लेख करने के बजाय, अब यह पाप और शैतान से हमारे आत्मिक छुटकारे का उल्लेख करेगा। सचमुच यह एक गहरा क्षण था।

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: यीशु का अपने सबसे अच्छे दोस्तों के साथ विशेष भोजन करने के बारे में बात करें। भोजन के दौरान वह उन्हें खुशखबरी सुनाता है कि वह जल्द ही उनके पापों के लिए

मर जाएगा लेकिन फिर जीवित हो जाएगा। वह हमें बाइबल में ये बातें बताता है। बाइबल उसकी विशेष पुस्तक है और हमारे लिए इसे सीखना महत्वपूर्ण है।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: फसह और निर्दोष, सिद्ध मेमने के बारे में सिखाओ जिसे मरना था ताकि उसका खून दरवाजे पर डाला जाना था और घर के अंदर के पहलौठे पुरुष नहीं मरेंगे। यीशु, परमेश्वर के मेमने की एक तस्वीर थी, जो पापरहित था लेकिन हमारे पापों के लिए उसे मरना पड़ा। रस के बारे में दरवाजे पर खून की एक तस्वीर के रूप में बात करें और जिस रोटी को हम अखमीरी रोटी की तस्वीर के रूप में खाते हैं, उसे यहूदियों ने खाया। यीशु ने अपने रक्तपात और हमारे लिए टूटे हुए शरीर का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसका अर्थ बदल दिया। हम केवल उन्हें स्वीकार करते हैं और खाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उद्धार हमें यीशू को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में स्वतंत्र रूप से स्वीकार करने से मिलती है।

15. यीशु का अंतिम भोज

उत्तर देने के लिए प्रशन

फसह क्या था और इसे क्यों मनाया जाता था?

मूसा के समय में मिस्र से यहूदियों के छुटकारे की यादगिरी में फसह मनाया जाता है ।

मेमने का खून किस चीज का प्रतीक है?

एक मेमना मारा गया और उसका खून चौखट पर लगा दिया गया था । इस खून के तले आने वाले लोग सुरक्षित थे जबकि अन्य जेठ मर गए थे । यह यीशु के लहू को चित्रित करता है जो हमें बचाता है। जब लोग तंबुओं में रहते थे, उनके पास चौखट नहीं होती थी इसलिए वे अंगूर के रस का उपयोग मेमने के खून को चित्रित करने के लिए करते थे और आज हम प्रभु भोज के लिए उसी का उपयोग करते हैं।

यीशु के अंतिम भोज/फसह की तैयारी के लिए लोगों ने क्या किया?

घर को पूरी तरह से साफ कीया था, विशेष व्यंजन का इस्तेमाल किया गया था, घर में किसी भी तरह के खमीर की अनुमति नहीं थी। जेठे पुरूष संध्या के भोजन तक उपवास रखते थे ।

इस दौरान उन्हें खमीर क्यों नहीं खाने दिया गया?

खमीर एक जीवाणु है जो बढ़ता है और गैस छोड़ता है। दरअसल, यह कोशिकाओं का साड़ता है। इस प्रकार, यह पाप की एक तस्वीर है क्योंकि यह छोटे से बढ़ता है और नष्ट कर देता है। बिना खमीर की रोटी बहुत चपटी होती है। यहूदियों के पास खमीर उठाने का समय नहीं था क्योंकि वे जाने की जल्दी में थे। अब यह यीशु के पापरहित शरीर का प्रतीक है जैसे रस यीशु के लहू का प्रतीक है।

पाप का कोई उदाहरण क्या है जो छोटे और छिपे हुए शुरू होता है लेकिन विनाश का कारण बनता है?

(उत्तरों अलग अलग होंगे)

मात्ज़ो को तोड़े जाने से क्या चित्रित किया गया था?

यह यीशु के शरीर को हमारे पाप के लिए तोड़े जाने का प्रतीक है ।

यीशु ने कहा, “मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)। यह अन्य धर्मों के बारे में क्या कहता है जो परमेश्वर के पास जाने का रास्ता दिखाने का दावा करते हैं ?

यीशू मसीह ही एकमात्र रक्षक हैं। अन्य सभी नकली हैं जो गुमराह करते हैं (प्रेरितों के काम 4:12)।

यीशु ने शिष्यों से कहा कि उन्हें दुनिया में कठिनाइयाँ होंगी लेकिन वे समस्याओं के बावजूद उन्हें शांति देगा। उस समय के बारे में बताएं जब आपको कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद परमेश्वर की शांति मिली।

(उत्तर अलग अलग होंगे)

रोटी तोड़ने या रस पीने से पहले यीशु ने 'धन्यवाद दिया'। वह उसके लिए धन्यवाद कैसे दे सकता था जो उस भयानक मौत की तस्वीर थी जिस से वह मरने वाला था?

वह आने वाले दर्द के लिए आभारी नहीं था, लेकिन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और हमारे उद्धार के लिए डीए जाने के विशेषाधिकार के लिए आभारी था। वह उस महिमा की प्रतीक्षा कर रहा था जो उद्धार के पूरा होने के बाद उसे प्राप्त होगी।

इस उदाहरण से हम क्या सीख सकते हैं?

जब हम कठिन समय से गुजरते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि हम परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं और वह इसका उपयोग अपनी महिमा और हमारे विकास के लिए करेगा। साथ ही, हमें यह याद रखना चाहिए कि स्वर्ग में कितनी अद्भुत चीजें होंगी जहाँ कोई और दुख नहीं होगा। अब हमारा समय यहाँ उसकी सेवा करने का है।

जब आप प्रभु भोज में भाग लेते हैं तो आपके लिए इसका क्या अर्थ होता है? इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?

(उत्तर अलग अलग होंगे)

16. गिरफ्तारी और कारवाई

(मत्ती 26:47-27:26; मरकुस 14:43-15:15;

लूका 22:47-23:25; यूहन्ना 18:2-19:16)

जोरआवाज़ से पढ़ें: लूका 22:39-53

द्वारा: बार्थोलोम्यू, पतरस और पिलातुस

(इस पाठ के साथ उपयोग करने के लिए कई कहानियाँ हैं। आप उन सभी का उपयोग कर सकते हैं या जो आप उपयोग करना चाहते हैं उसे चुन सकते हैं। आप इस पाठ को एक सप्ताह से अधिक समय तक चला सकते हैं।)

बार्थोलोम्यू द्वारा

जब यीशु ने फसह के भोजन करते समय यहूदा का हाथ पकड़ा और उससे कहा कि वह जानता है कि वह उसके साथ विश्वासघात करने जा रहा है, तो इस बात ने धार्मिक अगुवों की योजनाओं को बंद कर दिया। वे यीशु के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए फसह के बाद तक का इंतजार करना चाहते थे, क्योंकि तब तक शहर में बाहर से आए सभी लोग जा चुके होंगे। हालाँकि, जब उन्हें पता चला कि उन्होंने अपने गोपनीय एकमात्र व्यक्ति को खो दिया है जिसको वे पहले ही उसकी सेवाओं के लिए भुगतान कर चुके हैं, तो उनकी नफरत ने उन्हें प्रतीक्षा करने के बजाय कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

यह जानते हुए कि यीशु ऊपरी कक्ष में नहीं था, यहूदा भीड़ को गतसमनी ले गया जहाँ यीशु रात बिता रहा था। यह ऐसा था जैसे यीशु जानबूझकर वहां खोजे जाने के लिए गया था । मेरा नाम बार्थोलोम्यू है, जो यीशु का शिष्य हूँ । मैं उस रात उनके साथ था और मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता हूं। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा, ना ही आप कभी इसे भूलेंगे !

गतसमनी की सैर -जब हमारा फसह समाप्त हुआ, तो यीशु ने "इस संसार के दुष्ट राजकुमार के निकट आने" के बारे में कुछ अजीब कहा (यूहन्ना 14:30)। हम उस समय इसे समझ नहीं पाए थे, लेकिन बाद में यह सब एक साथ फिट हो गया।

जैसे हम निकले और नगर की गलियों से गुजरते हुए, हमने फसह के भजन (113-118) को गाया। वर्तमान में यीशु ने शिष्यों को आपने आप को दाखलता के रूप में हमारी आवश्यकता के बारे में सिखाना शुरू किया (यूहन्ना 15-16)। उसने आने वाले कठिन समय के बारे में बात की लेकिन कहा कि पवित्र आत्मा हमारे साथ रहेगा। हमने प्रशन पूछे और उसने उनका उत्तर दिया।

तब हम किड्रोन को पार करने वाले थे, आमतौर पर सूखा रहता लेकिन अब एक बदबूदार पानी का नाला था क्योंकि यह वसंत का समय था। यीशु रुका और पानी को देखा। यह अलग दिख रहा था, किसी तरह से गहरा सा । फिर हमें याद आया। मंदिर में लाखों फसह के मेमनों का वध शुरू हो गया था और रक्त किद्रोन को चट्टान में काटे गए एक चैनल के माध्यम से बह गया था। उन मेमनों के निर्दोष लहू को देखकर

यीशु को सचमुच बड़ा धक्का लगा। मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की याद आई जो उसे 'परमेश्वर के मेमने' के रूप में इंगित कर रहा था और वह स्वयं भी कह रहा था कि वह अच्छा चरवाहा था जो भेड़ों के लिए अपना जीवन अर्पण कर दीया है।

यीशु भी ऐसा ही सोच रहा होगा, क्योंकि जैसे ही हम चल रहे थे, उसने जल्द ही प्रार्थना करना शुरू कर दिया (यूहन्ना 17)। उसने अपने लिए प्रार्थना की, कि वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करेगा। उसने प्रार्थना की कि हम शिष्य विश्वासयोग्य बने रहें, और उसने भविष्य के युगों में शिष्यों के सुरक्षित और संरक्षित रहने के लिए प्रार्थना की। यह एक गंभीर, गतिशील समय था।

गतसमनी - जब तक हम गतसमनी पहुंचे, तब तक हम सब बहुत थक चुके थे। यह एक लंबा दिन था। हममें से जो जेठे पैदा थे उन्होंने उपवास किया हुआ था, फिर हमने समान से भरे हुए कमरे में एक बड़ा भोजन किया था, अब हम आराम से और बहुत थके हुए थे। गतसमनी सोने के लिए एक अच्छी जगह थी। यह एक ऐसा स्थान था जहाँ पतझड़ में जैतून और अंगूर को बड़े पत्थरों के बीच कुचला जाता था, और उनसे रस निकाला जाता था। शेष वर्ष यह यरूशलेम की गर्मी से आराम पाने के लिये इसके मालिक एक अमीर आदमी का विश्राम स्थान था । इस विशेष बाग़ के मालिक ने यीशु को चाबी दी थी ताकि वह इसका उपयोग तब कर सके जब उसे कभी वहां जाने के लिए जगह की आवश्यकता हो। वह पिछली कई रातों से यहाँ सो रहा था बजाय इसके कि वह वापस बेथानी चला जाए। इसने उसे एकांत माहौल और प्रार्थना करने के लिए अधिक समय दिया।

अकेले का युद्ध -हालांकि, जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि यीशु उस रात सोने नहीं जा रहा था । वह नहीं चाहता था कि हम भी सोएं, पर प्रार्थना करें ताकि हम परीक्षा में ना पड़ें। ऐसे कठिन समय में भी, हमारे लिए उसके प्रेम ने उसे सबसे पहले हमारे बारे में और हमारी जरूरतों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

हमने उसे थोड़ी दूर जाकर प्रार्थना करते देखा, और यह स्पष्ट था कि वह पीड़ा और दुःख में था। वह शोक से व्याकुल था, अशांति से बह चूका था । जाहिर है, एक बड़ी लड़ाई चल रही थी। वह भूमि पर गिर पड़ा और जोर से, लंबा और गहरा रोया (इब्रानियों 5:7)। वह मुँह के बल लेट गया, फिर उठा और थोड़ा डगमगाया, प्रार्थना में फिर से गिर गया । मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं देखकर उनकी निजी-जीवन में दखल दे रहा हूं, लेकिन मैं अपनी आंखों को उस से हटा नहीं सकता था। "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह प्याला मुझ से ले लिया जाए। तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है'' वह बार-बार रोता रहा (मत्ती 26:39; लूका 22:42)।

स्वर्गदूत दिखाई दिए। कुछ ने उन राक्षसों को खदेड़ दिया जो उसे पीड़ा दे रहे थे, दूसरों ने उसे दिलासा दिया और उसकी सेवा की। तब वे चले गए और लड़ाई फिर से शुरू हो गई, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसके पास युद्ध करने की अधिक ताकत है। यह सर्द रात थी लेकिन उसे बहुत पसीना आ रहा था। पसीना पानी से भी गहरा था। मुझे एहसास हुआ कि इसमें खून मिला हुआ था! वह इतने दबाव में था कि उसकी त्वचा की छोटी-छोटी केशिकाएं टूट रही थीं। मैंने पास के जैतून कोलू को देखा - बात वही थी। हमारे पापों को सहने की प्रत्याशा उसके जीवन के लहू को कुचलने लगी थी।

क्या आप समझते हैं कि संघर्ष क्या था? यीशु सिद्ध था , उसने कभी भी पाप, दोष या परमेश्वर से अलगाव का अनुभव नहीं किया था, जिन चीजों के साथ हम हर दिन जीते हैं। वह स्वाभाविक रूप से हमारे पापों

की पहचान से पीछे हट गया, लेकिन उसने इसे हमारे लिए प्रेम के कारण किया। यही एकमात्र कारण था जिसके बारे में मैं सोच सकता था कि वह इससे गुजर रहा है - मेरे लिए।

यहूदा आता है - मैं अब और नहीं जाग सका लेकिन सो गया। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, यीशु मुझे जगा रहा था। निश्चित रूप से अभी सुबह नहीं हुई थी? अभी भी अंधेरा था, लेकिन यरूशलेम से आने वाले पुरुषों के एक बड़े समूह की आवाज़ और रोशनी दूर से दिखाई दे रही थी। वे इस ओर आ रहे थे। क्या हो रहा था? यीशु बस रुका और उन्हें आते देखा। मेरा पहला विचार भागने का था, और मुझे यकीन है कि यह विचार उसके दिमाग में भी आया होगा, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

यहूदा के साथ इतने सारे धार्मिक शासकों और सैनिकों का आना अजीब लग रहा था। उसके लिए यीशु को इतना गहरा , लंबा चुंबन करना भी असामान्य था। हमारे गुरु के प्रति उस्की सम्मान-भावना का क्या हुआ? यीशु को लग रहा था कि चीजें सही नहीं हैं, लेकिन फिर भी उसे अस्वीकार करने के बजाय प्यार में यहूदा के पास पहुंचा।

जाहिर है, चुंबन किसी तरह का संकेत था, लेकिन बाकी भीड़ के पहुंचने से पहले ही यीशु ने नियंत्रण कर लिया। "तुम्हें कौन चाहिए ?" "नासरत का यीशु," उन्होंने कहा। ना तो कोई आरोप पढ़ा गया, ना कोई वारंट प्रस्तुत नहीं किया गया। जब यीशु ने तुरंत स्वीकार किया कि "मैं वह हूँ" तो हर कोई पीछे की ओर चला गया, जमीन पर गिर गया, और वहीं टिक गया। यहाँ तक कि शैतान का वासी यहूदा भी उसकी पीठ से चिपका हुआ था। उसके अनन्त नाम यहोवा की शक्ति, जो उसके द्वारा बोले गए "मैं हूँ" में सन्निहित थी, उससे कहीं अधिक शक्ति थी जितनी का वे सामना कर सकते थे। वह उन्हें दिखा रहा था कि वह वास्तव में कौन था ताकि वे ऐसी कोई गलती ना करें जिसका उनके लिए अनन्त परिणाम हो। उसने शक्ति छोड़ी और वे उठ खड़े हुए। जब उसने उनसे फिर से पूछा कि वे किसे चाहते हैं तो ऐसा लगा जैसे उन्होंने इस भयानक शक्ति का अनुभव नहीं किया था। वे इससे कुछ कैसे नहीं सीख सकते थे ? (यहुना 18)

यह कहकर कि वे सिर्फ उसे चाहते हैं, यीशु हमारा बचाव कर रहा था , इसलिए कि हमें भी गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। वह जानता था कि हम परीक्षा का सामना नहीं कर सकते। एक बार फिर, हमारे लिए उसके प्रेम ने हमारी आवश्यकताओं को अपने से पहले रख दिया। मुझे आश्चर्य है कि उसने कितनी बार ऐसा किया था, लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया।

पतरस फसह से एक फल काटने वाली छुरी लेकर दौड़ा, रोमियों पर हमला करने और यीशु को मुक्त करने की कोशिश कर रहा था। बाद में हमें एहसास हुआ कि यह दंगा शुरू करने का शैतान का तरीका था ताकि हम सभी वहीं मारे जाएं। इस तरह वह क्रूस पर नहीं जा सकता था और मरने से पहले हमारे पापों का भुगतान नहीं कर सकता था! या कम से कम, यीशु भ्रम के दौरान मुकर गया होता और सुरक्षित रहता , लेकिन फिर ऐसा करने से उसने फसह के दिन क्रूस पर हमारे पापों के लिए भुगतान नहीं किया होता । हालाँकि, यीशु ने इसके माध्यम से देखा, और पूरे उपद्रव को शांत कर दिया। उसने उस आदमी के कान को भी ठीक किया जहां पतरस ने उस पर हमला किया था। उसने हमसे कहा कि अगर वह बचना चाहता होता , तो वह मदद के लिए सैकड़ों हजारों स्वर्गदूतों को बुला सकता है। लेकिन उसने नहीं किया।

चेले भागते हैं - यह सब बहुत ज्यादा था। हम मुड़े और वापस पेड़ों में भाग गए। मैं उसे कभी ना छोड़ने का अपना वादा पूरी तरह से भूल गया। मैंने एक पेड़ के पीछे छुपने से पहले एक आखिरी झलक के लिए

पीछे मुड़कर देखा। उन्होंने यीशु को ज़मीन पर पटक दिया था और उसके हाथ-पैर रस्सियों और जंजीरों से बाँध रहे थे।

मेरे भागते ही मेरे आंसू छलक पड़े। ऐसा क्यों हुआ? उसने इसकी अनुमति क्यों दी? क्या वह बच नहीं सकता था? बेशक, वह बच सकता था! सबसे पहले, वह चाहता तो उस स्थान पर नहीं आता जहाँ यहूदा उसे खोज लेगा। जब तक हम सो रहे थे तब भी वह वहां से जा सकता था। वह अपने शत्रुओं को जमीन पर अधमरे करके छोड़ सकता था, या पतरस के हमले के दौरान निकल भी सकता था। वह उसे छुड़ाने के लिए स्वर्गदूतों को बुला सकता था। उसने यह क्यों नहीं किया?

एकमात्र कारण यह है कि वह हम से प्रेम करता है। वह मुझसे प्यार करता था। वह तुमसे प्यार करता था। उसने ऐसा हमारे लिए किया। कीलों की क्या ताकत थी जो उन्हें सूली पर लटकाए रखती थीं, यह हमारे लिए उसका प्रेम था। वह कितना महान, बिना शर्त, अद्‌भुत प्रेम है! उसकी संतान बनने से पहले अगर वह हमसे इतना प्यार करता था तो अब वह हमसे कितना प्यार करता होगा ?

क्या आप अपने लिए उसके प्रेम का अनुभव करते हैं? क्या आप उसे वो प्यार दिखाने की अनुमति देते हैं? क्या आप उन बहुत सी चीजों से अवगत हैं जो वह आपके लिए करता है क्योंकि वह आपसे प्यार करता है? क्या आप उसे वापस प्यार करके उस प्यार का जवाब देते हैं? क्या आप उसे किसी और चीज से ज्यादा प्यार करते हैं या उस से ज्यादा किसी और चीज से करते हैं ? परिवार को ? खुद को ? उसका प्यार उन सभी के लिए उपलब्ध है जो इसके लिए उनके पास आते हैं।

पतरस के द्वारा

मेरा नाम पतरस है और मेरी कहानी एक बीज के समान है (यूहन्ना 12:23-24)। रोपण कीये जाने से पहले यह कठिन और अनुत्पादक होता है। जब इसे जमीन में गाड़ दिया जाता है तो एक प्रक्रिया शुरू होती है जो नतीजे के रूप में इसे फल की ओर ले जाती है। अंधेरे और नमी के कारण कठोरता नरम होने लगती है। मुझे भी नरम होने के लिए परीक्षणों और कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। मैं कठिन और अनुत्पादक था क्योंकि मैं अपने जीवन के नियंत्रण में था। मुझे यीशु के लिए उपयोगी होने के लिए अपने लिए मरना पड़ा। इसे करने में दर्द और पीड़ा हुई।

अँधेरे और नमी में समय बीतने के बाद तलाश बड़ने लगती है। यह अपनी सीमा से परे हो जाता है। फिर एक रासायनिक परिवर्तन होता है। अकड़पन मिठास में बदल जाता है। मुझे भी अपनी हद से आगे जाना था। वह जो खुरदरा और अनाकर्षक (अकड़पन) था, उसे भी मुझमें कुछ मीठास में बदलना पड़ा।

बीज जैसे-जैसे बड़ा होता है, अंततः टूटकर खुल जाता है। परमेश्वर ने मुझे मेरे साँचे और आदतों से तोड़ दिया। तभी विकास शुरू होता है। पहले एक जड़ बढ़ती है। यह बीज को लंगड़ डालता है फिर स्थिरता और पोषण का स्रोत प्रदान करता है। यह तब तक नहीं हुआ था जब तक मैं अपने लिए नहीं मरा था ताकि मैं अपनी जड़ें यीशु और उसके वचन में रख सकता।

इस स्तर तक, बीज के साथ जो कुछ भी होता है वह भूमिगत होता है, दृष्टि से परे होता है। तब परिवर्तन सभी के लिए स्पष्ट होने लगता है। एक छोटा सा शूट दिखाई देता है। यहाँ पर जीवन का प्रमाण दिखाई देता है। अंततः यह बढ़ता है और फल उत्पन्न होता है (गलातियों 5:22-23)। जब तुम मेरे बारे में प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ोगे, तो तुम पाओगे कि मैं एक नया, एक अलग व्यक्ति बन गया था । इससे पहले कि वह मेरा उपयोग कर पाता, परमेश्वर को मुझे तोड़ना पड़ा। क्या करने की जरूरत है इसके

लिये मैं हमेशा खुद पर निर्भर करता था । परमेश्वर को मुझे उस पर निर्भर होना सिखाने के लिए नरम करना पड़ा, यह जानते हुए कि तभी मैं वास्तव में उपयोगी हूँगा ।

समस्या - अंतिम भोज में मैंने यीशु से कहा कि वह गलत था, मैं उसका इनकार नहीं करूंगा। मुझे पता था कि मैं नहीं करूंगा। मुझे लगा कि मैं जो चाहूं वो कर सकता हूं लेकिन यह सच नहीं था। मैं अपनी ताकत से काम करता था, और इससे मुझे हमेशा परेशानी होती थी। जब मैंने यीशु को आज़ाद करने के लिए गतसमनी में भीड़ पर हमला किया, तो मैं फिर से अपनी ताकत से काम कर रहा था। दरअसल, मुझे बाद में पता चला कि मैं शैतान के हाथों में खेल रहा था क्योंकि इस तरह के विद्रोह के कारण यीशु को वहीं मार दिया जाता। हम भी मारे जाते, और यीशु ने हमारे उद्धार को क्रूस पर नहीं खरीदा होता!

जब यीशु ने मुझे डांटा और सुधारा, तो मैंने देखा कि मैंने उसे विफल कर दिया था। जैसा मेरा रास्ता था, मैं अपनी गलतियों से दूर भाग गया। मैं उसे ना छोड़ने का अपना वादा पूरी तरह से भूल गया और अन्य शिष्यों के साथ पेड़ों में भाग गया। मैं दौड़ा और यहुना के साथ छिप गया। बाद में मुझे पता चला कि क्या हुआ था और हमने जो कुछ भी सुना उसे एक साथ जोड़ दिया।

कारवाई 1- यीशु को बुरी तरह से बांधा गया और किद्रोन के पार घसीटा गया, जो हैकल में बलि किए जाने वाले फसह के मेमनों के खून से लाल था। उस को भेड़ के फाटक के माध्यम से यरूशलेम में ले जाया गया, जहां वे भेड़ों को बलि करने के लिए ले जाते थे । यीशु अपने स्वयं के वध के लिए गया था। सबसे पहले, उसे हन्ना के पास ले जाया गया जहाँ उस पर मुकदमा चलाया जाना था, दोषी पाया जाना , और उसे मार डाला जाना था । हालाँकि, उनके पास एकमात्र 'गवाह', यहूदा, ने उन्हें छोड़ दिया था। मुकदमा न्याय का मजाक था। रात में या किसी त्योहार की पूर्व संध्या पर अपराधी को आरोपित करना अवैध था। मुकदमे की पूर्व सूचना दी जानी चाहिए थी, और ना तो न्यायाधीशों की कर्यसाद्क संख्या थी और ना ही अभियुक्त के लिए कोई बचाव वकील। महायाजक को अभियुक्त का रक्षक होना था, अभियुक्त पर दोष लगाने वाला नहीं । यह मुकदमा नहीं था, सिर्फ एक हत्या की साजिश थी! उन्होंने यीशु से सवाल किया, उसे नष्ट करने के लिए एक जाल की तलाश में। जब उसने विनम्रता से मना किया, तो उन्होंने उसके चेहरे पर डंडे से प्रहार किया।

इनकार 1- इस बीच मैं बाहर था। मैं दूर नहीं रह सका। क्या हो रहा था यह पता लगाने के लिए मैंने यहुना को साथ खींच लाया था , लेकिन मैं यह सब अपने बल पर कर रहा था - कोई प्रार्थना या कुछ भी नहीं। इसलिए, जब लोगों को अंदर जाने के अनुमति देने वाली लड़की ने सोचा कि मैं यीशु के शिष्यों में से एक हूं, तो मैंने बिना सोचे-समझे इनकार कर दिया। आप देखिए, इसने उनकी नज़रें मुझ पर से हटा दीया था। मैं तब और वहां इसकी उम्मीद नहीं कर रहा था। हालाँकि, जैसे ही मैंने शब्द कहे, मुझे एहसास हुआ कि मेरे सभी सूरमे रुपी वादे खत्म हो गए थे। मेरा खुद पर से भरोसा डगमगा गया था। मैं सिर्फ एक अभिमानी कायर था!

बाद में, जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मैंने देखा कि यह वास्तव में वह घटना नहीं थी जो मेरे पाप का कारण बनी थी । मेरी समस्या बहुत पहले शुरू हो गई थी। यह तो बस उसकी परिणति थी। यह वास्तव में भोजन पर शुरू हुआ, जब आपने गर्व और आत्मविश्वास में, मैंने यीशु को अपने पैर धोने नहीं दिए और जोर देकर कहा कि वह मेरे इनकार करने के बारे में गलत था। फिर गतसमनी में, उसकी सलाह लेने और प्रार्थना करने के बजाय, मैं सो गया। मल्चस पर कीये हमले से मुझे इस तथ्य के प्रति सचेत होना चाहिए था कि मैं उसकी शक्ति पर निर्भर नहीं था, बल्कि अपनी शक्ति के अनुसार वही कर रहा था जो मैंने सही समझा था। साथ ही, मुझे यीशु के शत्रुओं के साथ आंगन में कभी नहीं घूमना चाहिए था। उस इनकार ने मुझे हिला कर रख दिया, लेकिन मुझे तोड़ नहीं सका।

कारवाई 2- इस बीच, यीशु को उसी घर के एक अलग हिस्से में ले जाया गया जहाँ कैफा ने एक और अदालती सत्र आयोजित किया था। कैफा महायाजक हन्ना का दामाद था, जिसे हन्ना महायाजक नियंत्रित करता था। वह एक धूर्त जोड़तोड़ करने वाला और आत्मकेंद्रित अवसरवादी था। कुछ महायाजक और कानून के शिक्षक वहां थे, लेकिन कोई गवाह नहीं था। अगर कोई गवाह नहीं था और कोई वास्तविक आरोप नहीं थे, तो उन्हें मौत की सजा के लिए रोम की मंजूरी कैसे मिल सकती थी? झूठे गवाहों को आगे आने और जो कुछ भी वे कर सकते थे बताने के लिए पैसा दीया गया था, लेकिन फिर भी, कोई भी किसी भी बात पर सहमत होने के लिए दो गवाह नहीं मिल सके। किसी भी आरोप को साबित करने के साथ-साथ पहला पत्थर फेंकने के लिए गवाहों की जरूरत थी। अंत में, उन्हें याद आया जब उसने कहा, "मैं इस मंदिर को नष्ट करने में सक्षम हूं और तीन दिनों में एक और बनाऊंगा।" वह अपने शरीर की बात कर रहा था, लेकिन उन्होंने इसे घुमाकर अपने मंदिर को नष्ट करने की धमकी समझ कर पेश कर दीया । उन्होंने उस पर परमेश्वर के बराबर होने का आरोप लगाया। जब यीशु ने इनकार नहीं किया कि वह परमेश्वर है तो उन्होंने ढोंग कीया था: उन्होंने परमेश्वर होने का दावा करने के लिए उसे मौत की सजा दी।

उसका शारीरिक शोषण किया गया। उन्होंने उसके चेहरे पर थूका, उसे थप्पड़ मारा, मुक्कों एंड घूसों से उसके चेहरे पर वार किया और उसे मारने से पहले उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी। फिर उन्होंने मज़ाक में उसे चुनौती दी कि 'भविष्यद्वाणी करो कि तुम्हें किसने मारा।'

इनकार 2- मैं उस हंगामे को सुन सकता था जहां मैं आंगन में था। खिड़कियों पर बैठे लोग देखते और चिल्लाते थे । मैं उन्हीं लोगों के साथ अपने हाथ गर्म कर रहा था, जिन पर मैंने गतसमनी में हमला किया था। नौकर लड़की, जो अब गेट पर ड्यूटी पूरी कर चुकी थी , उसने गुस्से में मुझ पर यीशु के साथ होने का आरोप लगाया। मुझे नहीं लगता कि वह परेशान थी कि मैं एक शिष्य था, लेकिन इस लिये कि मैंने उसे झूठा कहा था। फिर से, मैंने उसके आरोपों का खंडन किया। यह स्पष्ट था कि हर कोई उस पर विश्वास करता था, मुझ पर नहीं। हालाँकि, अंततः बातचीत अन्य बातों की ओर मुड़ गई, और मुझे राहत महसूस हुई। फिर हुआ।

इनकार 3 -आस-पास का समूह जोर-जोर से बात करता रहा, मुझे देख रहा था और मेरी तरफ इशारा कर रहा था। उनकी आवाजें इतनी तेज़ थी कि उनकी आवाज़ हर कोई सुन सकता था। उन्होंने मेरी पोशाक और उच्चारण से मुझे गैलीलियन के रूप में पहचान लिया (मैं अपना मुंह बंद नहीं रख सका!) मैं बता सकता था कि नौकर लड़की वहाँ थी, उनको उकसा रही थी। और फिर मैंने मलखुस के एक रिश्तेदार को देखा, और जान गया कि उसने मुझे पहचान लिया है! रात की ठिठुरन के बावजूद भी मेरी त्वचा पर ठंडा पसीना निकल आया। क्या आपने कभी गौर किया है कि कैसे आपके पाप वापस आकर आपको सताते हैं? मैंने शाप दिया और शपथ खाई कि मैं यीशु का अनुयायी नहीं हूं।

लेकिन फिर मैंने एक मुर्गा को बांग देते सुना और मुझे याद आ गया । मेरी आँखों से शिल्के गिरने लगे और जो मैंने किया था उसके लिये मेरे दिल में एक भयानक जागरूकता उठने लगी । मैंने अपनी आंख के कोने से कुछ हलचल देखी। किसी को आंगन से दूसरे कमरे में ले जाया जा रहा था। उसका चेहरा काला और नीला था और थूक से ढका हुआ था। उसकी आँखें सूजी हुई थीं और उसके चेहरे और खोपड़ी से खून टपक रहा था। वह भयानक लग रहा था! अचानक मैंने उसे पहचान लिया, कुछ इस बारे में कि जब वह चलता था तो वह अपने आप को कैसे खीचता था। मुझे उसके बारे में पता था। यह यीशु था। उसने मेरी तरफ देखा और समय रुककर रह गया । हमारी आँखें एक पल के लिए बंद हो गईं और मैंने उसके गहरे दर्द को पढ़ा। मुझे पता था कि यह शारीरिक मार से नहीं बल्कि मेरे शब्दों से था। आपके

सबसे करीबी लोग आप के लिये उनकी अस्वीकृति से आपको अधिक चोट पहुँचाते हैं, बजाये इसके कि कोई अजनबी आपके शरीर को पीट कर चोट पहुँचा सकता हो !

इस सब की वास्तविकता ने मुझे बहुत दुखी किया। मैंने क्या डींग मारी, मैंने क्या किया - मैं यह सब पहली बार स्पष्ट रूप से देख सकता था। मैं - डींग मारने वाला और असफल व्यक्ति था । तुरंत उसे धक्का दिया गया और जो आग के पास बैठे थे वे नई कारवाई स्थल का अनुसरण करने के लिए उठ खड़े हुए जब मैं रोते हुए गेट से बाहर भागा तो किसी ने ध्यान नहीं दिया।

मैं उस रात बहुत जोर से और फूट-फूट कर रोया था। बहुत देर तक मेरे आंसू बहने के बाद भी मैं रोता रहा। मैं रुक नहीं सका। मैं अपने मजबूत स्तर पर असफल हो हया था। इस सबका दोष और असफलता बहुत वास्तविक थी। उसकी रक्षा करने के बजाय, मैंने उसे चोट पहुँचाई। वह सही था! मैं टूट गया था।

कारवाई 3 - बाद में मुझे पता चला कि महासभा द्वारा तीसरी धार्मिक कारवाई ,पहले से ही किए गए निर्णय को आधिकारिक और मनान्य बनाने के लिए थी। पीलातुस का सामने उनके कमजोर मामले को पेश करने के लिए विवरणों का विशेष ध्यान रखा गया था।

इस दौरान मैं सड़कों पर घूमता रहा। मैं भयानक सा लग रहा था और मैं बहुत बुरा महसूस कर रहा था! इससे पहले कि मैं किसी और को दोष दे पाता। हमेशा यीशु ने मुझे बाहर निकालाता और मैं अपने आप को आश्वस्त करता कि मैं अगली बार बेहतर करूंगा। इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ। मुझे बुरी पलटी लगी थी । मैं टूट गया था। अगर मैं खुद पर निर्भर नहीं रह सकता, तो मैं किस पर निर्भर रह सकता था? फिर इस विचार ने मुझे तोड़ा ! ठीक यही वह मुझे सिखाने की कोशिश कर रहा था। मुझे अपने आप पर निर्भर रहना बंद करना पड़ा और पूरी तरह से और केवल उसी पर निर्भर रहना पड़ा!

कुछ दिनों बाद मैंने सुना कि वह जीवित है, और उसने मुझे ढूँढ़ा और आश्वस्त किया कि वह अब भी मुझसे प्रेम करता है। क्या आप इस पर विश्वास करोगे? मेरी असफलता के बावजूद वह अब भी मुझसे प्यार करता था! ऐसे प्यार को कौन समझ सकता है? मैं नहीं! वह पूरा अनुभव मेरे साथ अब तक हुई सबसे बुरी चीज थी। लेकिन क्या आप जानते हैं, यह सबसे अच्छा भी था। क्या यह आपके साथ हुआ है? क्या आपका आपना बल टूट है और क्या आप पूरी तरह से उस पर निर्भर हैं और उसकी ताकत में रहते हैं? एक जंगली घोड़े की तरह, जब तक आप टूट नहीं जाते, तब तक आप अपने स्वामी की सेवा नहीं करेंगे।

द्वारा: पिलातुस

उन यहूदियों को शासन करने के लिए उनको पृथ्वी पर सबसे बुरे लोग कहना चाहिए ! वे अभिमानी, आत्म-धर्मी, जिद्दी, जोड़-तोड़ करने वाले, कायर/बुजदिल और धोखेबाज थे। वे ले लेंगे लेकिन देंगे नहीं। अरे क्या हम रोमी लोगों की तरह तुम आदमी से आदमी का सामना नहीं करोगे । हम उनसे उतनी ही नफरत करते थे, जितनी वो हमसे करते थे, शायद उससे भी ज्यादा! मुझे पता होना चाहिए। मैं उनका शासक था। मेरा नाम पिलातुस है।

हम रोमी लोगों ने उनकी स्वतंत्रता और विशेषाधिकार छीन लिए, उन पर भारी कर लगाया और बिना अनुमति के किसी को भी जन से मारने की अनुमति नहीं दी थी । इसलिए उन्होंने मुझे अपनी नीचतापूर्ण हत्या की साजिश में शामिल किया! ओह, मैं उनसे कैसे नफरत करता हूँ! यह मेरे द्वारा किया गया सबसे

बुरा काम था! यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी और इस धरती पर और अनंत काल के लिए इसने सब कुछ बदल दिया! यह मेरी कहानी है।

कारवाई 4- मैं एक सफल पेशेवर सैनिक था जिसे यहूदिया का राज्यपाल बनाकर पुरस्कृत किया गया था। हालाँकि, मैं राजनीति और सरकार की तुलना में युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व करने में बेहतर था।

जिस दिन की मैं बात कर रहा था वह किसी आम दिन की तरह शुरू हुआ, लेकिन वह इतना लंबा नहीं रहा। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। 3 अप्रैल, 33 ईस्वी का शुक्रवार था। ड्यूटी ऑफिसर की सुबह 6 बजे की रिपोर्ट ने गथसमनी में गिरफ्तारी की बात कही गयी थी । तब मुझे धर्मगुरुओं और लोगों की भीड़ के आने की सूचना मिली। उनके साथ एक खूनी, पीटा हुआ आदमी था। वे अपने फसह के दिन मेरे पास क्यों आएंगे, जब वे जानते थे कि मेरे साम्हने रहने से वे अशुद्ध हो जाएंगे और फसह में भाग लेने में असमर्थ होंगे? यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होना चाहिए। जब वे अंदर नहीं आते थे, तो मैंने उनसे बात करने के लिए बाहर जाकर अपनी पहली गलती की। तब से, उनका हाथ ऊपर हो गया था। उस पहले समझौते ने पूरे दिन का नक्षा तैयार कर दीया। एक छोटा सा समझौता भयानक परिणाम की ओर ले जाता है!

आपको याद रखना चाहिए कि यहूदियों के साथ मेरे पिछले संघर्ष बहुत अच्छे नहीं रहे। दो बार मेरे हाथों में दंगे हुए और हर बार उन्होंने रोम से मेरे जुल्म के बारे में शिकायत की थी । रोम ने मुझसे कहा कि चीजों को शांत रखो नहीं मुझे हटा दीया जायेगा (मैं काम से गया)! इसका मतलब था कि अगर उन्होंने फिर से विरोध किया तो रोम मेरी वहां से हटा देगा। वास्तव में इससे उन्हें अपना रास्ता निकालने का लाभ मिला, और वे इसे जानते थे और इसका इस्तेमाल करते थे !

चलो , इस आदमी पे आते है जिसको वे लाए थे । उनकी गुस्ताखी की कल्पना कीजिए - उसके खिलाफ उनके खिलाफ कोई वास्तविक आरोप नहीं था! वे चाहते थे कि मैं आँखे बंद करके हाँ कर दूं ताकि वे अपनी मनमर्जी कर सकें! मैंने एक यहूदी तौर तरीके से मुकदमे/कारवाई के लिए मंजूरी दी - लेकिन यह पता चला कि उनकी कारवाई तो पहले ही हो चुकी थी ! वे जो चाहते थे वह था मौत की सजा के लिए मेरी अनुमति।

वे उसके सरकार विरोधी और कर-विरोधी होने के कुछ आरोपों के साथ आए - लेकिन वे सभी स्वयं इसके लिए दोषी थे। तब उन्होंने कहा कि वह एक राजा होने का दावा करता है, जो उसे कैसर के लिए एक खतरा बनाता था । मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। वह नुकसान करने में असमर्थ लग रहा था, लेकिन आरोप भी इतने गंभीर थे कि उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती थी।

मुझे सब कुछ वहीं खत्म कर देना चाहिए था लेकिन मैंने नहीं किया। मेरे अभिमान ने मुझे उनके आगे झुकने से रोका, लेकिन मेरे डर ने मुझे उन्हें दूर करने से रोक दिया। जब मैंने कैदी से पूछा कि क्या वह राजा है, तो उसने कहा कि वह था! यह जानते हुए कि मुझे और छानबीन करनी है, मैं उसे अंदर ले आया। उसने कहा कि वह एक राजा था, लेकिन रोम के लिए कोई खतरा नहीं था। उसके पास किसी अन्य प्रकार का राज्य था जिसका वह राजा था। क्या उलझा हुआ झमेला है! मेरे लिये यह काम करने के बजाय युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व करना आसान और भला होता !

जब मैंने यहूदियों से कहा कि मुझे उसे फाँसी देने का कोई कारण नहीं मिला, तो मुझे इस सब से मुंह मोड़ लेना चाहिए था। इसके बजाय, मैंने उनकी चिल्लाहट और धमकियाँ सुनीं। मैं इस झंझट से निकलने का कोई आसान रास्ता खोज रहा था। मुझे सही काम करना चाहिए था और उसे रिहा कर देना चाहिए था। इसके बजाय मैं एक योजना लेकर आया। मैंने इस मामले को हेरोदेस को सौंपने का फैसला किया,

क्योंकि मैंने उन्हें यह कहते सुना कि वह गलील का है। मुझे पता है कि यह गलत था और हेरोदेस के पास कोई अधिकार नहीं था, लेकिन शायद मैं इस जमेले से बाहर निकल सकता था।

कारवाई 5- पहले तो हेरोदेस डर गया था कि यह आदमी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था, जो उसके सिर काटने के लिए उसे पीड़ा देने के लिए वापस आया था। लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि ऐसा नहीं है तो उसने और उसके सैनिकों ने कैदी का मज़ाक उड़ाया और गाली दी और उसे मेरे पास वापस भेज दिया। हेरोदेस ने उसमें किसी अपराध का कोई दोष नहीं पाया। वह शामिल नहीं होना चाहता था।

कारवाई 6- मैं वास्तव में निराश था जब मुझे बताया गया कि हेरोदेस ने उसे मेरे पास लौटा दिया है। हालाँकि, हेरोदेस मेरे प्रस्ताव से इतना प्रभावित हुआ कि हमारे बीच की दरार ठीक हो गई। मुझे परवाह नहीं थी।

जब वह चला गया, तो मैंने अपने खुफिया अधिकारियों से बात की और पता चला कि उस आदमी का नाम येशू (यीशु) था। उसने कथित तौर पर चमत्कार किए और परमेश्वर के मसीहा होने का दावा किया। मेमने के चुनने के दिन लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया था जब वह गधे पर सवार होकर शहर में गया था, जबकि कुछ लोगों ने खजूर की शाखाओं को लहराया और उसे मसीहा और परमेश्वर कह कर उस की प्रशंसा की।

मुझे गलत मत समझो, मैं कोई धार्मिक व्यक्ति नहीं था, लेकिन सभी रोमियों की तरह मैं बहुत अंधविश्वासी था और मैं किसी भी 'ईश्वर' के साथ खिलवाड़ नहीं करने वाला था। इसलिए, मैंने धार्मिक शासकों से उसे जाने देने के लिए कहा क्योंकि हेरोदीस ने भी उसमे कोई दोष नहीं पाया था। मुझे इसे आश्चर्य नहीं हुआ जब मैंने देखा कि वे ऐसा नहीं करेंगे।

इस समय तक, मैं निराश और अधीर हो रहा था। जाहिर तौर पर शासकों को इसे पूरा करने की बड़ी जल्दी थी और मैं उनके लिए पर्याप्त तेजी से आगे नहीं बढ़ रहा था। उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को इकट्ठा करने और मुझ पर उसे मारने के लिए दबाव डालने के लिए भुगतान किया हुआ था। तभी मैंने एक और समझौता करने के बारे में सोचा जो मैं कर सकता हूं।

मैंने कोशिश की कि भीड़ उसे उस कैदी के रूप में चुने जो इस दिन रिहा कीया जाता था। मैंने सोचा कि जब मैंने बरअब्बा को दूसरे विकल्प के रूप में पेश किया तो मैं उन्हें कोई विकल्प नहीं दे रहा था। वह एक विद्रोही, एक हत्यारा, सार्वजनिक दुश्मन नंबर 1 था और सभी से नफरत करता था। पहले तो लगा कि मेरी योजना काम कर रही है, लेकिन जब मुझे अपनी पत्नी से एक नोट पढ़ने के लिए रोका गया, जिसमें मुझे इस कैदी को नुकसान ना पहुंचाने की चेतावनी दी गई थी, तो धार्मिक शासकों ने भीड़ को अपनी ओर मोड़ दिया। मुझे बरअब्बा को रिहा करने के लिए मजबूर किया गया था।

जब, हताशा में, मैंने उनसे पूछा कि वे क्या चाहते हैं कि मैं यीशु के साथ करूं, तो वे चिला -चिला कर कहने लगे "उसे क्रूस पर चढ़ाओ!" वे खून और मौत की लालसा से अपना दिमाग खो चुके थे। मुझे यह चाहने के बजाय कि मैं उन्हें पत्थरवाह करने दूं, अब वे मुझ पर दबाव डाल रहे थे कि मैं उनके गंदा काम को करूं! मेरे अभिमान ने मुझे वह नहीं करने दिया जो वे चाहते थे, लेकिन मेरे डर ने मुझे एक सही काम करने से रोक दिया।

फिर मैंने एक और समझौता करने के बारे में सोचा। अगर भीड़ कारण नहीं सुनती, तो शायद मैं उनकी सहानुभूति के लिए अपील कर सकता था। मैंने कैदी को छत से लटका दिया और कोड़े मारे। मेरा मतलब है कि यह एक भयानक कोड़ा-मार थी ! इसे 'आधी मौत' कहा गया क्योंकि इससे एक जीवित से ज्यादा कोई मरा हुआ हो जाता था, और चाहने लगता था कि काश वे मर जाता । चाबुकों को हड्डी और स्टील के साथ चमड़े के साथ बनाया गया था जो उसकी पीठ पर एक कम चालीस बार मारे गए थे। चमड़ी निकल कर हवा में उड़ने लगी थी और हडियाँ दिखने लगी थी । शरीर के तरल पदार्थ की कमी से पीड़ित तुरंत बेहोशी में चला गया था। पीड़ित को पुनर्जीवित करने के लिए नमक को पीठ में रगड़ा गया था, और खून के बहने से रोकने के लिए उस पर एक कपडा लपेट दीया गया था।

तब मेरे सैनिक उसे दूसरे कमरे में ले गए, उस चोगा को फाड़ दिया (जिससे फिर से खून बहना शुरू हो गया) और उसका मखौल उड़ाते हुए उसे बैंगनी रंग का चोगा पहना दिया। उन्होंने काँटों का मुकुट बनाया और लाठियों से उसकी खोपड़ी पर वार किया। तब उन्होंने उसे एक पुराना राजदण्ड दिया और उसकी पूजा करने का नाटक किया। उन्होंने उस पर थूका, उसे पीटा, और यह देखने के लिए कि यह एक प्रतियोगिता थी कि कौन उसे सबसे बुरी तरह मार सकता है और उसे और अधिक असहनीय बना सकता है। उन्होंने मुट्ठी भरके उसके बाल और दाढ़ी खींच निकाली। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हें इससे क्या मिला है। यह ऐसा था जैसे कोई दुष्टात्माएँ उन्हें चला रही हों, आसुरी शक्तियाँ। वे जंगली जानवर बन चुके थे, जितने की मैंने अनुमति दी थी उससे कहीं आगे जा रहे थे।

जब वह फिर से भीड़ के सामने आया, तो मुझे यकीन था कि लोगों को लगेगा कि उसे काफी सजा दी गई है। वह मुश्किल से खड़ा हो सकता था और उसे खींच कर बाहर निकालना पड़ा था। हालाँकि, उनमें वही उन्मादी जंगलीपन था जो मेरे सैनिकों में था। क्या हो रहा था? मैं बस इतना कर सकता था कि पूरी बात से अपने हाथ धो लूं , उन्हें बता दूं कि यह सब उनकी गलती थी और मेरी नहीं थी ।

मैंने उस दिन अपना सिर तो बचा लीया , लेकिन अपनी आत्मा खो दी। तीन साल बाद मुझे हटा दिया गया और मुझे अपने सम्मान की रक्षा के लिए अपनी जान लेने के लिए मजबूर किया गया। जब मैं परमेश्वर के सामने खड़ा हुआ, तो मुझे पता था कि वह वास्तव में ब्रह्मांड का राजा था। कब्र के दूसरी तरफ के सभी लोग जानते थे। काश मुझे पहले विश्वास हो गया होता...

छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: उन्हें बताएं कि कैसे लोगों ने यीशु को चुना और उनके साथ अन्याय किया, लेकिन वह उनके प्रति दयालु था और उन्होंने उन्हें चोट पहुंचाने की कोशिश नहीं की। वह उन सभी बुरी चीजों से गुजरा जिनसे हम गुजरते हैं। इस बारे में बात करें कि उन्हें उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जो उनके प्रति क्रूर हैं।

बड़े बच्चों के साथ प्रयोग के लिए: यीशु के साथ हुई अनुचित बातों के बारे में बात करें, लेकिन वह क्रोधित नहीं हुआ और उन्हें वापस चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं की। उसने उन्हें क्षमा किया और उन पर दया की। अपना बचाव करना और दूसरों की रक्षा करना ठीक है जिन्हें चुना जा रहा है, लेकिन हमेशा उन लोगों के प्रति प्रेम दिखाने के लिए यीशु के उदाहरण को याद रखें जो आपके प्रति निर्दयी हैं। याद रखें, यीशु को उठाया गया था और उसके साथ गलत व्यवहार किया गया था, इसलिए वह जानता है कि यह कैसा है। जब आपके साथ ऐसा हो, तो उससे बात करें क्योंकि वह समझता है। यीशु ने उन्हें उन चीजों को अपने साथ होने देने का कारण यह था कि वह हमसे प्यार करता था और क्रूस पर पाप के लिए हमारे दंड को लेने के लिए तैयार था। इस बारे में बात करें कि जो लोग उनके प्रति क्रूर हैं, उन्हें यीशु के

प्रेम को दिखाने के लिए वे क्या कर सकते हैं। आप पतरस और उसके डर के बारे में भी बात कर सकते हैं। डरने पर उन्हें क्या करना चाहिए? पतरस और पीलातुस दोनों ने समझौता किया लेकिन यह उन दोनों के लिए पाप और दुख का कारण बना। उनसे पूछें कि वे कब समझौता करने के लिए ललचाते हैं और इस भावना का विरोध करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए?

16. गिरफ्तारी और परीक्षण

उत्तर देने के लिए प्रशन

बजाय इसके कि जब तक बाहर से आए लोग यरूशलेम से बाहर ना चले गए होते, धार्मिक शासकों ने फसह के दौरान यीशु को गिरफ्तार करने का फैसला क्यों किया ?

क्योंकि उन्होंने यहूदा को एक जासूस के रूप में खो दिया। वह अकेला था जो जानता था कि वे यीशु को कहाँ पा सकते हैं और जब यीशु यह जानता था कि यहूदा क्या कर रहा था, यहूदा अब जासूसी करने के लिए उपलब्ध नहीं था। साथ ही, उसे उनका स्टार गवाह बनना था। उन्होंने उसे पहले ही भुगतान कर दिया था इसलिए उन्हें या तो अभी कार्य करना था या उसकी सहायता प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहते। ऐसा करके परमेश्वर ने उन्हें अब कार्य करने के लिए मजबूर कर दीया था ।

गतसमनी में प्रार्थना करते समय यीशु संघर्ष क्यों कर रहा था?

वह जानता था कि सारे संसार के पापों को उठाना भयानक होगा और वह स्वाभाविक रूप से पाप और उसके परिणामों से दूषित होने से पीछे हट गया। हालांकि वह इसके माध्यम से हमारे लिए गया।

यदि यीशु परमेश्वर था , तो उसने उन्हें गिरफ्तार क्यों करने दिया, वहां से क्यों नहीं हट गया ?

वह क्रूस पर हमारे पापों का भुगतान करने की परमेश्वर की योजना के लिए प्रतिबद्ध था और यह परमेश्वर की इच्छा थी।

यीशु के साथ रहने के बजाय चेले क्यों भाग गए?

वे डरे हुए थे इसलिए वे भाग कर छिप गए।

क्या आपको डर लगता है? डर लगने पर आपको क्या करना चाहिए?

सब डर जाते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारे भय से बड़ा है और वह वादा करता है कि वह हमेशा हमारे साथ है। परमेश्वर के हमारे भय से बड़े होने के बारे में बाइबल की आयतों को याद करें और उद्धृत करें (नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन संहिता 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14 :13; । शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41)

यीशु की गिरफ्तारी और सूली पर चढ़ाया जाना हमारे लिए उसके प्रेम को कैसे दर्शाता है?

उसने ऐसा हमारे लिए आपने प्रेम के कारण ही किया था। यह रोमी या यहां तक कि कीलें भी नहीं थे जो उसे सूली पर चढ़ाने में मददगर साबित होते। यह हमारे लिए उनका महान बलिदानी प्रेम था!

पतरस ने क्या डींग मारी कि चाहे कुछ भी हो जाये वह करेगा ?

उसने कहा था कि जो कुछ भी हो जाये और जो अन्य चेले भी करें , उसके बावजूद वह यीशु के प्रति वफादार रहेगा ।

इसके बजाय, उसने क्या किया और क्यों?

वह डर गया और झूठ बोलने लगा। उसने यीशु को जानने तक से भी इनकार किया। उसे डर था कि लोग उससे क्या कहेंगे। उसे विश्वासयोग्य रहना और यीशु पर भरोसा करना चाहिए था।

धार्मिक शासकों ने यीशु को निष्पक्ष, कानूनी सुनवाई क्यों नहीं दी?

वे बस उसे मारने का बहाना चाहते थे क्योंकि वे ईर्ष्यालु थे। उन्होंने शैतान को उसके लिए अपने दिलों में नफरत डालने की अनुमति दी।

पीलातुस ने यीशु को रिहा क्यों नहीं किया अगर वह जानता था कि यीशु निर्दोष है?

उसे डर था कि यहूदी रोम से शिकायत करेंगे और वह अपनी नौकरी और जीवन खो बैठेगा ।

यीशु ने अपने विरूद कारवाई के दौरान अपना बचाव क्यों नहीं किया?

वह जानता था कि उनका मन बना हुआ है और वह नहीं बदलेगा। वह जानता था कि उसके लिए मरना परमेश्वर की इच्छा थी और वह उसके अधीन समर्पण कर रहा था। अगर वह कहता कि वह परमेश्वर है तो वे उसका मज़ाक उड़ाते और वह नहीं चाहता था कि परमेश्वर की सच्चाई का मज़ाक उड़ाया जाए।

यह सोचकर आपको कैसा महसूस होता है जो कुछ यीशु ने आपके पापों के लिए कीया ?

(उत्तर अलग अलग होंगे)

17. सलीब पर चड़ाए जाना

(मत्ती 27:31-66; मरकुस 15:20-47; लूका 23:26-56; यूहन्ना 19:16-42)

जोर आवाज़ से पढ़ें: मरकुस 15:25-39

द्वारा:बरअब्बा

हैलो ! मेरा नाम बरअब्बा है। वास्तव में यह बार-अब्बा है। "बार" का अर्थ है "पुत्र" और "अब्बा" का अर्थ है "पिता।" मैं "पिता का पुत्र" था क्योंकि मेरा पिता एक प्रसिद्ध रब्बी था। मेरा पहला नाम बहुत सामान्य था - यीशु, जो पुराने नियम में यहोशू के समान है । इस प्रकार, मैं यीशु बर-अब्बा (पिता का पुत्र यीशु) था और मैं इस्राएल के भौतिक छुटकारे के लिए लड़ रहा था। मेरा जीवन एक और यीशु, बार-जोसेफ के साथ मिलकर निकल गया, जो इस्राएल के आध्यात्मिक उद्धार के लिए काम कर रहा था। हमारे रास्ते कैसे मिल गए थे !

पृष्ठभूमि : मैं एक विद्रोही था। मैं एक गुप्त नेता था। हम रोम के खिलाफ विद्रोह में थे और जब भी हम कर सकते थे हम सैनिकों की हत्या कर देते थे । हमने खुद को जोशीला कहते थे। आज आप हमें आतंकवादी कहेंगे। मैं हर किसी और सभी के लिए घृणा और कड़वाहट से भरा हुआ था। अगर कोई हमारे तरफ नहीं था, तो वह हमारा दुश्मन था। इसमें यह दूसरा यीशु भी शामिल था। मैंने सबसे पहले उसके बारे मेंने शमौन जोशीला से सुना, जिसने उसके शिष्यों में से एक होने के लिए हमें छोड़ दिया। जब उसने मुझे प्यार और शांति के इस बेहतर तरीके के बारे में बताने की कोशिश की, तो मैं ने उस पर थूका और चला गया। मुझे बात करने में बहुत लज्जा महसूस करता था ।

मैं उस यीशु से व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं मिला था। वह उसी जेल में था जिसमें मैं था लेकिन एक अलग जगह पर। तब जेल की कोई सजा नहीं थी। मुकदमे तक जेल सिर्फ एक अस्थायी बंदीगृह होता था , फिर किसी को कोड़े मारकर मार डाला जाता या रिहा कर दिया जाता। 13 अप्रैल, 33 ईस्वी का दिन था और मैं मौत के तख्ते पर चड़ाए जाने का इंतजार कर रहा था। मुझे गिरफ्तार कर लिया गया था और मुझे दोषी पाया गया था और मुझे उसी सुबह मरना था। यह दूसरों के लिए एक उदाहरण के रूप में एक सार्वजनिक, भयानक मौत की सजा का पूरा कीया जाना था।

रिहाई – मैकाबीयों के समय से ही फसह के दिन एक कैदी को रिहा करने का रिवाज था, जो यहूदियों को मिस्र के बंधन से मुक्त करने का एक प्रतीक था। रोम ने इस प्रथा को जारी रखा। यह तो साफ़ था कि पीलातुस ने प्रावदान का उपयोग दूसरे यीशु को छुड़ाने के लिए किया। मैं अपनी कोठरी से भीड़ को सुन सकता था, लेकिन पिलातुस को नहीं। मैंने सुना कि भीड़ "बरअब्बा" के नारे लगाती है, फिर एक विराम के बाद "सूली पर चढ़ायों ! सूली पर चढ़ाओ! सूली पर चढ़यों !" मैंने मान लिया कि मैं ही मरने वाला हूँ ।

एक सर्द ठंड ने मुझे झकझोर कर रख दिया क्योंकि सूली पर चढ़ने की वास्तविकता मुझ पर छा चुकी थी । मैं किसी की भी तरह सख्त और क्रूर था, लेकिन मैं फिर भी इंसान था! जब सैनिकों ने मेरे सेल के दरवाजे को तोड़ दिया और मुझे बाहर खींच लिया, तो मैंने मान लिया कि यह वही होने वाला है। जब उन्होंने एक साइड का दरवाजा खोला और मुझे बाहर गली में धकेल दिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ! मैं जल्दी से भाग गया, लेकिन बहुत दूर नहीं। मेरे दो दोस्त अभी भी वहीं थे, जो इस दिन मारे जाने वाले थे। मुझे लगा जैसे मैं उन्हें छोड़ कर जा रहा था, हालाँकि मैं वापस अंदर जाने वाला तो नहीं था। मैं बहुत उत्सुक था कि मुझे क्यों छोड़ा गया। क्या यह कोई कैदी फेर बदल तो नहीं था? यदि हां, तो मेरी जगह कौन ले रहा था?

जब मैंने देखा कि यह दूसरा यीशु था तो मुझे इसकी परवाह नहीं थी। मैं उससे नफरत करता था। वह कमजोर था। वह भीड़ को एक सेना में बदल सकता था और रोमियों से लड़ सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था । उस तरह की कायरता के लिए मेरे मन में कोई सम्मान नहीं था। फिर भी मेरे अंदर कुछ बदलने लगा। बचपन में पहली बार मुझे किसी दूसरे इंसान पर दया आई, दुख हुआ। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैं उसके साथ अपनी पहचान बना सका था। वह मेरे क्रूस पर मेरी जगह ले रहा था।

गुलगथा तक- तब मैंने उसे पहली बार मेरी सूली को गुलगथा की ओर ले जाते हुए देखा। इसका वजन 80 किलोग्राम था। परमेश्वर की ओर से एक भयानक श्राप उसके साथ जा रहा था (व्यवस्थाविवरण 21:23)। बेशक, उन्होंने उसे और मेरे दो दोस्तों को, ऊपर और नीचे की सड़कों पर घुमाते हुए एक लम्भा रास्ता तह करने को मजबूर कीया ताकि अधिक से अधिक लोग देख सकें कि शहर से बाहर निकलने से पहले रोम का विरोध करने वालों के साथ क्या हुआ था। उनके अपराध तख्तिओं पर लिखा जाते थे जिनको उनके आगे आगे ले जाया जाता था, फिर उन उन की सूली पर चिपका दीया जाता था। अजीब और हसने वाली बात यह है, जो उसकी तख्ती पर लिक्का था , वह था कि वह "यहूदियों का राजा" था।

शहर के बाहर जाने का मतलब किसी का बहिष्कार, और परमेश्वर द्वारा अस्वीकार किया गया चित्रित करता था । यहीं पर 'बलि का बकरा' भेजा गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई व्यक्ति जो ईश्वर होने का दावा करता है, वह इसे कैसे संभालेगा। उसके वहाँ पहुँचने से पहले, हालाँकि, यह सब उसके लिए शारीरिक रूप से बहुत अधिक था और वह वजन के नीचे गिर गया। साइरेन के शमोन को काम में लगाया गया था।

निष्पादन- गुलगथा एक भयानक जगह थी! इसका मतलब था 'खोपड़ी', और एक खोपड़ी जैसी वह जगह दिखती थी। हर तरफ मौत की महक और एहसास था। हालाँकि, एक मादक (पित्त या लोहबान) देकर उस पर कुछ दया दिखाई गई। आश्चर्यजनक रूप से, यीशु ने इसे अस्वीकार कर दिया। इससे मुझे उत्सुकता हुई।

मैं देखता हूं कि उसे नग्न किया गया था और उसे पीछे की ओर लकड़ी पर धकेल दिया गया था। मैं अनैच्छिक रूप से हिल गया क्योंकि उसकी कच्ची, खूनी पीठ खुरदरी लकड़ी से टकराई। जैसे ही उसकी बाँहें फैली हुई थीं और उनको कीलों से ठोंक दिया गया था, और फिर उसके में कील ठोक दीये गए । वह मेरी सूली थी । उस पर तो मुझे होना चाहिए था....

सूली को उठा लिया गया और एक झटके के साथ एक बड़े टोए में गिरा दिया गया। वहाँ वह था। उसके हाथ और घुटने थोड़े मुड़े हुए थे ताकि वह अपने आप को ऊपर खींच सके और अपने फेफड़ों में हवा

भर सके। शायद सूली की मौत के बारे में जो आप के समय का एक डाक्टर बता सकता है मैं उस से बेहतर बता सकता हूँ:

"सूली को जमीन पर रखा गया है और एक थके टूटे हए आदमी को लकड़ी के पर उसके कंधों के साथ जल्दी से पीछे की ओर फेंक दिया गया है। जालाद कलाई के सामने हिस्से पर घबराहट को महसूस करता है। वह कलाई के बीचो- बीच लकड़ी में गहरी एक भारी, चौकोर लोहे की कील ठोकता है। जल्दी से वह दूसरी तरफ जाता है और इस क्रिया को दोहराता है, इस बात का ध्यान रखते हुए कि यह बाहों को बहुत कसकर ना खींचे, बल्कि कुछ ढीला रखता है ताकि बांहें हिल- झूल सके। फिर सूली को उस जगह में उठा लिया जाता है। बाएं पैर को दाहिने पैर के खिलाफ पीछे की ओर दबाया जाता है, और दोनों पैरों को फैलाकर, पैर की उंगलियों को नीचे करके, प्रत्येक के चापाकर के माध्यम से एक कील को घुमाया जाता है, जिससे घुटनों को ढील मिल सकती है । पीड़ित को अब सूली पर चढ़ाया गया है। जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे कलाइयों में नाखूनों पर अधिक भार के साथ नीचे की ओर झुकता है, उंगलियों के साथ और बाजुओं के ऊपर मस्तिष्क में तेज दर्द फटने लगता है। कलाई के नाखून माध्यिका की नसों पर दबाव डाल रहे हैं। जैसे ही वह इस खिंचाव की पीड़ा से बचने के लिए खुद को ऊपर की ओर खींचता है, वह अपना पूरा भार अपने पैरों के माध्यम से कील पर रखता है। फिर से, वह अपने पैरों की हड्डियों के बीच की नसों के माध्यम से कील से फटने की भीषण पीड़ा को महसूस करता है। जैसे-जैसे बाहों में थकान होती है, ऐंठन उसकी मांसपेशियों में फैलती है, जिससे वे गहरी अथक, धड़कते हुए दर्द को और बढ़ता हैं। इन ऐंठन के साथ सांस लेने के लिए खुद को ऊपर की ओर खीचने में असमर्थता आती है। फेफड़ों में हवा खींची जा सकती है लेकिन साँस नहीं छोड़ी जा सकती। वह एक छोटी सी सांस लेने के लिए खुद को ऊपर उठाने के लिए संघर्ष करता है। अंत में, कार्बन डाइऑक्साइड फेफड़ों और रक्त प्रवाह में बनता है, और ऐंठन आंशिक रूप से कम हो जाती है। ऐठन के साथ बीच-बीच में , वह साँस छोड़ने और जीवन देने वाली ऑक्सीजन लाने के लिए खुद को ऊपर की ओर खीचने में सक्षम है। असीमित दर्द की घड़ियाँ, मस्पेशिओं का फटती रहना , जोड़ों के फटने पर बनी ऐंठन, रुक-रुक कर आंशिक श्वासावरोध, उसकी फटी हुई पीठ से असहनीय दर्द निकलता है क्योंकि वह खुरदरी लकड़ी के खिलाफ ऊपर और नीच हिलता है। फिर एक और पीड़ा शुरू होती है: छाती में गहरा, कुचलने वाला दर्द जब पेरीकार्डियम धीरे-धीरे सेरियम से भर जाता है और हृदय को संकुचित करना शुरू कर देता है। यह अब लगभग खत्म हो चुका है। ऊतक तरल पदार्थ की कमी एक महत्वपूर्ण स्तर पर पहुंच जाती है। संकुचित हृदय ऊतकों में भारी, गाढ़ा, सुस्त रक्त पंप करने के लिए संघर्ष कर रहा है। पीड़ित फेफड़े हवा के छोटे-छोटे झोंकों में हांफने की उन्मत्त कोशिश कर रहे हैं। वह अपने ऊतकों के माध्यम से रेंगती हुई मौत की ठंड को महसूस कर सकता है... अंत में, वह अपने शरीर को मरने दे सकता है..." (सी. ट्रूमैन डेविस, एम.डी. इन द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेंट्री, खंड 8 में अनुकूलित)। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने क्रूस पर बहुत कम बात की।

अंत आता है फिर अँधेरा हो गया, जैसे आधी रात। मैं भी हवा में एक बुरी ठंड महसूस कर सकता था। मैं यह सोचने से नहीं रोक सका कि शैतान और उसके राक्षस हर जगह थे, उस पर हमला कर रहे थे जब वह मेरे स्थान पर लटका हुआ था। वह चिल्लाया, सचमुच चिल्लाया, कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है। मुझे बाद में पता चला कि उस दौरान वे सचमुच नरक में मेरी जगह ले रहा था । फिर, 3 घंटे की गहन यातना के बाद, उसे शांति मिली। उसने कहा कि उसका काम पूरा हो गया था वह स्वेच्छा से मर गया। फिर सूरज फिर से चमक उठा, लेकिन उसी क्षण एक भूकंप आया। उसने मेरी जगह ले ली, जानिए मेरा क्या मतलब है?

छोटे बच्चों के साथ उपयोग के लिए: उन्हें बताएं कि यीशु ने हमारी सजा ली, जैसे कि आप ने अवज्ञा की हो और एक पिटाई के लायक थे, लेकिन कोई और आया और आपके लिए पिटाई खा ली ।

बड़े बच्चों के साथ उपयोग के लिए: स्पष्ट करें कि यीशु की मृत्यु क्यों हुई - हमारे पापों को भुगतने और भुगतान करने के लिए ताकि हमें ऐसा ना करना पड़े। इंगित करें कि उसने उनमें से प्रत्येक के नाम के बारे में सोचा था जब उसने उनके लिए दुख उठाया था। हमें पाप से फिरना चाहिए क्योंकि यह हमारा पाप था जिसने उसे पीड़ित किया। उसे हमारे लिए करने के लिए धन्यवाद।

17. सलीब पर चढ़ाया जाना

उत्तर के लिए प्रश्न

बरअब्बा कौन था?

अपराधियों के नेता जिस को यीशु के साथ सूली पर चढ़ाया गया। उसे यीशु की जगह रिहा कर दिया गया था।

बरअब्बा, जो एक दोषी था , ऐसे आदमी को क्यों आज़ाद किया गया?

फसह के दिन एक कैदी को रिहा करने की प्रथा थी। पिलातुस ने लोगों को एक विकल्प दिया, यह मानते हुए कि वे बरअब्बा से नफरत करने के बजाय यीशु को रिहा करेंगे। लेकिन धार्मिक शासकों ने भीड़ में से लोगों को रिश्वत दी थी और उन्होंने बरअब्बा को रिहा करने का आह्वान किया था।

एक निर्दोष व्यक्ति, यीशु की निंदा क्यों की गई?

यहूदी उसकी लोकप्रियता से ईर्ष्या करते थे और पिलातुस उसे रिहा करने से डरता था, भले ही वह दोषी ना हो। यह सब हमारे पापों के लिए यीशु के मरने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा था।

सूली पर चढ़ाए जाने की क्या बात थी, इसने इसे इतना दर्दनाक और भयानक बना दिया।

कलाई और टखनों की नसों के बीचो बीच मोटे मोटे कील ठोके हुए थे। पीठ जो कोड़ों की मार से कची पड़ चुकी थी, उसे खुरदरी लकड़ी की सूली से रगड़ा गया था। तेज धूप के सीधे नीचे था और बिना पानी के था। ऐसा व्यक्ति अच्छी तरह से सांस नहीं ले पा रहा होता था और अंत में, कई दिनों के बाद, ऑक्सीजन की कमी के कारण उसकी मृत्यु हो जाती थी ।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा यीशु की मृत्यु दूसरों से भी बदतर होने का क्या करण था ?

परमेश्वर ने उन घंटों के दौरान हमारे सभी पापों को यीशु पर रखा। फिर उसने यीशु को उस दण्ड से दण्डित किया जिसके हम हकदार थे और आपना अनंत काल नरक में बिताने के द्वारा हमने प्राप्त की होती। यीशु को हमारी जगह लेने के लिए एक आदमी बनना था। उसे पापरहित परमेश्वर भी होना था नहीं तो उसे अपने पापों के लिए मरना पड़ता।

यीशु का क्या अर्थ था जब उसने कहा, "हे मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है?"

परमेश्वर पिता और परमेश्वर पवित्र आत्मा ने यीशु से मुंह मोड़ लिया क्योंकि वह हमारे पापों का दोषी हो गया और परमेश्वर का पाप से कोई लेना-देना नहीं है। उसने पहले कभी पाप के अपराधबोध या परमेश्वर से अलग होने की भयावहता को महसूस नहीं किया था।

हर तरफ अँधेरा क्यों हो गया?

इससे पता चलता है कि अंधकार और बुराई की जीत होती दिख रही थी। शैतान और उसके दुष्टात्माएँ यीशु को नष्ट करने के लिए हर संभव कोशिश कर रहे थे। परमेश्वर प्रकाश है, लेकिन यीशु मर रहा था। इसने यीशु को अपनी पीड़ा से गुजरते हुए देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति से कुछ गोपनीयता भी रखा। हालाँकि, यह उसके लिए अंधेरे में अकेला रहने जैसा रहा होगा।

आपको क्या लगता है कि यीशु ने क्रूस पर मरते समय क्या सोचता होगा ?

जैसा कि वह पीड़ित हुआ और हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक पाप के लिए भुगतान किया उसने हम में से प्रत्येक के नाम के बारे में सोचा होगा। उसने हमारे बारे में प्रेम से सोचा, इसलिए वह क्रूस से नीचे नहीं आया।

यह आपको कैसा महसूस कराता है कि यीशु ने वास्तव में, आपने प्रेम में, सूली पर आपके बारे में पर सोचा था?

(उत्तर अलग अलग होंगे)

यदि यीशु ने आपके लिए वह सब किया है, तो क्या वह आपसे कुछ मांगता है जो बहुत अधिक है?

नहीं

आप उसके लिए क्या कर सकते हैं?

उसे प्यार कर सकतें है । हम उसे केवल अपना दिल दे सकते हैं, और यही वह हमसे सबसे अधिक चाहता है। क्योंकि वह हमारे लिए मरा, जिस से हम उसके करीब आ सकते हैं। हम उसकी आज्ञा मानने, उसकी स्तुति करने, उसका धन्यवाद करने और दूसरों को उसके बारे में बताने के द्वारा अपना प्रेम दिखा सकते हैं।

निष्कर्ष

मुझे आशा है कि आपको यह पुस्तक मददगार लगी होगी। इसका उद्देश्य आपको अपने स्वयं के उपदेशों और बाइबल अध्ययनों को बेहतर ढंग से विकसित करने में मदद करना है, ना कि आपके लिए अपना सारा काम करना। मैंने जो प्रदान किया है उसका उपयोग करें और इसे बदलें, इसमें जोड़ें, इसे अनुकूलित करें या जो कुछ भी परमेश्वर आपको करने के लिए प्रेरित करता है। यह आप को परमेश्वर के वचन को बेहतर ढंग से संप्रेषित करने में आपकी मदद करने के लिए एक शुरुआत के रूप में दिए गए है।

यदि आपके कोई प्रशन या सुझाव हैं तो कृपया मुझे बताएं। यदि आप इनमें से किसी भी उपदेश या अध्ययन का उपयोग करते हैं, तो मुझे आपसे सुनना अच्छा लगेगा। मुझे बताएं कि आपने किस किस का इस्तेमाल किया और लोगों ने इस पर क्या प्रतिक्रिया दी।

इस पुस्तक का उपयोग करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। परमेश्वर आपको आशीश देता रहे और अपनी महिमा के लिए आपका उपयोग करता रहे !

जैरी श्मोयर

Jerry@ChristianTrainingOrganization.org

SP-28.04.2022